प्राथमिक कक्षाओं का पठन शब्द भंडार

विमलेश आनन्द



पूर्व विद्यालय एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
श्री अरबिन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016.

सितम्बर 1990
आश्विन 1912
पी. आई. ई. डी. 3,000 VSA

प्रकाशन विभाग में, सचिव, शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली–110016 द्वारा प्रकाशित, लेजर टाइपसेट द्वारा कैल्पस (प्रथम तल), 72, राजेन्द्र नगर मार्केट, नई दिल्ली–110060 तथा जे. के. आफसैट प्रिन्ट्रज़, दिल्ली–110006 द्वारा मुद्रित

दो शब्द

पठन शिक्षण प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम का अत्याधिक महत्वपूर्ण अंग है । देश के हर राज्य में इन कक्षाओं के लिए पठन पुस्तकें तैयार की जाती हैं किन्तु इन पुस्तकों के शब्द भंडार की मात्रा और प्रकृति का निर्धारण कैसे किया जाए इसके संबंध में कोई निश्चित मत तथा परम्परा नहीं है । इस संबंध में शोध आधारित मार्गदर्शक बिन्दुओं का निर्धारण करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के पूर्व विद्यालय एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग ने 1986 में "प्राथमिक कक्षाओं का पठन शब्द भंडार" नामक शोध कार्य अपने हाथ में लिया । इस शोध कार्य के अन्तर्गत बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान और केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त कक्षा 1 से 5 तक की पुस्तकों का विश्लेषण किया गया और इनके आधार पर सर्वोपयोगी शब्दों की सूची बनाई गई । इसके अतिरिक्त प्राप्त जानकारी के आधार पर, हिन्दी पठन पुस्तकों के लेखकों के लिए कुछ मार्गदर्शक सुझाव भी तैयार किए गए । प्रस्तुत प्रकाशन कक्षा 1 से 5 तक की पठन पुस्तकों के विषय में है । इसमें इन पांचों कक्षाओं के शब्द भंडार संबंधी बहुआयामी तथा व्यापक जानकारी दी गई हैं । प्राथमिक कक्षाओं की पठन पुस्तकों के संबंध में इस प्रकार की जानकारी के कई अंश चौंका देने वाले हैं । आशा है संबंधित संस्थाएँ और लेखकगण भावी पुस्तकें बनाते समय इस जानकारी को ध्यान में रखेंगे ।

इस शोध कार्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि सर्वोपयोगी शब्दों की सूची है । इस सूची का निर्माण विभिन्न राज्यों की पुस्तकों में सम्मिलित शब्दों की बारम्बारिता के आधार पर किया गया है । विश्व की विभिन्न भाषाओं में बारम्बारिता के आधार पर ऐसी शब्द सूचियाँ तैयार की गई हैं जिनके आधार पर छात्रों के पठन शब्द भंडार का निर्धारण किया जा सकता है । ये सूचियाँ प्राथमिक कक्षाओं के लिए पठन सामग्री तैयार करने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो सकती है । सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश के लिए इस प्रकार की सूची तैयार करके परिषद की प्रोफेसर डा. (श्रीमती) विमलेश आनन्द ने हिन्दी पठन शिक्षा के क्षेत्र में एक आधारभूत कमी को पूरा किया है । अपने इस कार्य के लिए श्रीमती आनन्द बधाई की पात्र हैं ।

यह कार्य परिषद के पूर्व विद्यालय एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डा. पी. एन. दवे की देख-रेख में सम्पन्न हुआ । इतने महत्वपूर्ण और बृहत् कार्य के संयोजन के लिए मैं डा. दवे को बधाई देता हूँ ।

अंत में आशा करता हूँ कि प्रस्तुत प्रकाशन भविष्य में अच्छी पठन पुस्तकें तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाएगा । प्रस्तुत प्रकाशन के इस संस्करण के संबंध में आपके सुझावों का स्वागत है ।

डा. के. गोपालन,
निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

नई दिल्ली
1990

विषय-सूची

विषय–प्रवेश

बालक की शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। प्राथमिक विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा ही सम्पूर्ण भावी शिक्षा की आधारशिला है। छात्र आने वाले वर्षो में ठीक प्रकार से सुशिक्षित हो सकें, इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय के प्रारंभिक वर्षो में उनकी शिक्षा–दीक्षा की अच्छी नींव डाल दी जाये। विद्यालय में शिक्षा का मुख्य साधन पढ़ने तथा लिखने संबंधी कुशलतायें हैं इसीलिए प्राथमिक विद्यालय में बालक को सब से पहले पढ़ना–लिखना सिखाया जाता है। भावी वर्षों में छात्र विद्यालयी शिक्षा से कितना लाभ उठा पायेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसने पढ़ना–लिखना कितनी अच्छी तरह से सीखा है। विद्यालयी जीवन की सबसे महत्वपूर्ण कुशलता, पढ़ने–लिखने की नींव प्राथमिक कक्षाओं में ही पड़ती है। पढ़ने की इस शिक्षा में भाषा की पुस्तक का विशेष महत्व है। वस्तुतः छात्र को जो पहली पाठ्यपुस्तक मिलती है, वह है– भाषा की पुस्तक। इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर प्रयुक्त होने वाली भाषा की पठन पुस्तकें बहुत महत्वपूर्ण हैं और उनका निर्माण बहुत ही सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

हमारे देश मे प्राथमिक विद्यालयों में आधुनिक भारतीय भाषाऐं पढ़ाने की परम्परा लगभग 150 वर्ष पुरानी है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात प्रायः सभी राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम स्वीकार कर लिया गया और थोड़े ही समय में न केवल विद्यालय बल्कि विश्वविद्यालय स्तर पर भी क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाया जाने लगा। ऐसी स्थिति में प्राथमिक विद्यालय में क्षेत्रीय भाषा के समुचित शिक्षण का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया। परिणामस्वरूप इस बात को और भी तीव्रता से अनुभव किया जाने लगा कि प्राथमिक कक्षाओं में भाषा की पुस्तकें ऐसी होनी चाहिए कि छात्र जल्दी से जल्दी पढ़ना–लिखना सीख जायें, अपनी भाषा के प्रयोग में उन्हें अधिकतम कुशलता प्राप्त हो और उनका शब्द भंडार इतना बढ़ जाये कि वह उसके माध्यम से पाठ्यक्रम के अन्य विषयों को अच्छी तरह से पढ़ सकें।

बोलने सुनने की भांति पढ़ने लिखने की भी सबसे छोटी सार्थक इकाई शब्द है। छात्रों को पारम्परिक अक्षर ज्ञान पद्धति से पढ़ाया जाए, चाहे वाक्य पठन पद्धति से, पठन प्रक्रिया शब्दों की द्रुत पहचान तथा संदर्भानुसार उनका अर्थ बोध है। लेखन कार्य भी इन शब्द–इकाईयों से बने हुए वाक्यों का आलेखन है। अतः पढ़ना–लिखना सीखने का केन्द्र बिन्दु शब्द ही है। छात्र आवश्यक और उपयोगी शब्दों को द्रुतगति से पढ़ कर लिखी हुई बात का आशय समझ जायें और लिखते समय उपयोगी और उपयुक्त शब्दों के प्रभावपूर्ण प्रयोग द्वारा अपना आशय भली प्रकार व्यक्त कर सकें, प्राथमिक विद्यालयी स्तर पर यही भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम होना भाषा की पठन पुस्तक की उपयुक्तता की पहली और अनिवार्य शर्त है।

पिछले डेढ़ सौ वर्षों में सभी राज्यों में कक्षा 1 से 5 तक के लिए सभी भारतीय भाषाओं में पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए पुस्तकें लिखी गई हैं। किन्तु आज भी जब कोई लेखक किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा में प्राथमिक स्तर की पठन पुस्तक तैयार करने बैठता है तो बहुत से प्रश्न उसके सामने उठते हैं। इनमें से कतिपय प्रश्न इस प्रकार हैं:-

(1) कक्षा 5 के अंत तक बालक का लिखने-पढ़ने का शब्द भंडार कितना बड़ा होना चाहिए।

(2) कक्षा 1 से 5 तक, प्रत्येक कक्षा के लिए निर्धारित भाषा की पुस्तक में कितने शब्द होने चाहिए।

(3) कक्षा 1 से 5 तक प्रतिवर्ष कितने नए शब्द प्रत्येक कक्षा की भाषा पुस्तक में सम्मिलित किये जाने चाहिए।

(4) विभिन्न प्राथमिक कक्षाओं में किस शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक पद्धति से अच्छी पुस्तकें लिखने के लिए इन सब प्रश्नों के उत्तर लेखक के पास होने आवश्यक हैं किन्तु दुर्भाग्यवश इन प्रश्नों के संबंध में पर्याप्त शोध कार्य हमारे देश में नहीं हुआ। यह सही है कि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी में इस क्षेत्र में कुछ अधिक शोध कार्य हुआ है किन्तु आज भी कोई लेखक जब प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक विशेषतः प्रवेशिका लिखने बैठता है तो उसके सामने यही प्रश्न उठता है कि वह अपनी पुस्तक में कितने और कौन से शब्दों का प्रयोग करे और उसके इस महत्वपूर्ण प्रश्न का शोध आधारित समुचित उत्तर उसे आज भी नहीं मिलता। इस संबंध में अधिकांश निर्णय आज भी परम्परा, अनुभव तथा विशेषज्ञों की राय के आधार पर लिये जाते हैं।

सन् 1974 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद में प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम नवीनीकरण की एक परियोजना प्रारम्भ की गई। इस परियोजना के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों में परियोजना में सम्मिलित विद्यालयों में भाषायी योग्यता के विकास के लिए कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाओं की भाषा पुस्तकें बनाने का काम आरम्भ किया गया। इस कार्य को करते समय विभिन्न राज्यों के पाठ्य पुस्तक लेखकों के सामने उपरोक्त प्रश्न बार-बार उठे और हर बार लेखकों और अन्य शिक्षाविदों का यह आग्रह रहा कि प्राथमिक स्तर पर विभिन्न कक्षाओं के पठन शब्द भंडार के आकार-प्रकार का शोध आधारित निर्धारण जैसा आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद को शीघ्रातिशीघ्र अपने हाथ में लेना चाहिए। इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य की आवश्यकता राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर अत्यधिक तीव्रता से अनुभव की गई।

शिक्षा के माध्यम और सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक है। इसके अतिरिक्त राजभाषा होने के कारण हिन्दी

शिक्षण का कार्य विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य सर्वप्रथम हिन्दी भाषा में करने का निश्चय किया गया। अन्ततः सन् 1986 मे पूर्व विद्यालय एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य प्रारम्भ किया गया। इस शोध कार्य के अंतर्गत सभी हिन्दीभाषी राज्यों अर्थात बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान तथा दिल्ली और केन्द्रीय विद्यालयों की कक्षा 1 से 5 तक की हिन्दी भाषा की 45 पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन तथा विश्लेषण कर उसका मूल्यांकन किया गया। तत्पश्चात् प्राप्त आँकड़ों के आधार पर पठनपुस्तकों के लेखकों के पूर्वोक्त प्रश्नों के उत्तरस्वरूप कुछ सुझावों और निर्देशों का निर्धारण किया गया। इसके अतिरिक्त प्राथमिक कक्षाओं की पठन पुस्तकों के लिए सर्वोपयोगी और महत्वपूर्ण शब्दों की सूची तैयार की गई। इस सूची का निर्धारण शब्दों के प्रयोग की बारम्बारिता, उनके व्यापक प्रचलन तथा विद्वानों की राय के आधार पर किया गया। आशा है पाठ्य पुस्तक लेखकों के लिए यह सारी सामग्री विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी और हिन्दी शब्दवली अध्ययन के क्षेत्र में एक बड़ी कमी को पूरा किया जा सकेगा ।

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रगति की समय समय पर समीक्षा करने के लिए एक सलाहकार समिति बनाई गई। डा. कैलाशचन्द्र भाटिया, पूर्व प्रोफेसर, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाएँ, लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी आफ ऐडमिनिस्ट्रेशन, मसूरी, डा. वी. आर. जगन्नाथन, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, प्रो. उदय शंकर (सेवानिवृत) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, प्रो. म. गो. चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली और डा. जगमल्ल सिंह, प्रोफेसर, मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल, इस समिति के सदस्य थे। आप सभी विद्वतगण पूरे शोध कार्य का मार्गदर्शन करते रहे। इस अमूल्य सहयोग के लिए आप सब के प्रति परिषद् की ओर से तथा अपनी ओर से मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत लगभग चार लाख शब्दों का अध्ययन किया गया। इतने शब्दों का आकलन, विश्लेषण और उन्हें सूचीबद्ध करना अपने आप में एक बृहद कार्य था जिसे लगभग 30 अध्यापकों तथा शिक्षाविदों की सहायता से सम्पन्न किया गया। इन प्रतिभागियों की रुचि और कार्यनिष्ठा के बिना यह कार्य पूरा करना संभव ही न था। सन् 1988 में परिषद् भवन में लगी आग में, तब तक किए गए कार्य संबंधी अधिकांश सामग्री नष्ट हो गई। किन्तु इस अध्ययन में सम्मिलित प्रतिभागी इस विपत्ति से हतोत्साहित होने के स्थान पर, नष्ट हुए कार्य को दुबारा से करने के लिए जिस दृढ़ता से कटिबद्ध हो उठे वह अभूतपूर्व थी। इस सहयोग के लिए मैं इन प्रतिभागियों की ऋणी हूँ और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य परिषद के पूर्व विद्यालय एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. पी. एन. दवे की देख–रेख में किया गया। समय समय पर अपने उपयोगी सुझावों द्वारा इस कार्य को उचित दिशा प्रदान करने के लिए मैं प्रो. दवे के प्रति व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत अनुभव करती हूँ। पूर्व संपादक, 'यूनेस्कोदूत', श्री कृष्ण गोपाल के सम्पादकीय सुझावों के लिए उन्हें धन्यवाद देने मे मुझे प्रसन्नता है।

इस शोध कार्य की आधारभूत सामग्री को एकत्रित, व्यवस्थित और सूचीबद्ध करने का दायित्व मुख्य रूप से विभाग के प्रायोजना सहायकों डा. अमर सिंह सचान, सुश्री अंचला माथुर और श्रीमती सीता देवी पर था। इस प्रायोजना के पूरा होने में आप तीनों की कार्यनिष्ठा और लगन की भूमिका सर्वप्रमुख है। आप तीनों व्यक्ति धन्यवाद के पात्र हैं।

इस शोध कार्य द्वारा प्रस्तुत सामग्री पाठ्य पुस्तक निर्माण और [illegible] से संबंधित व्यक्तियों के लिए किसी भी रूप में उपयोगी सिद्ध हुई तो मैं अपने आप को कृतकृत्य समझूँगा।

वि. प्र. आनन्द

नई दिल्ली
हिन्दी दिवस
14 सितम्बर, 1990

—0—

अध्याय-1

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति तथा कार्य पद्धति

किसी व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त सारे शब्दों के समूह को उस व्यक्ति का शब्द भंडार कहा जाता है। उस शब्द भंडार में वे सभी शब्द सम्मिलित होते हैं जिनका प्रयोग वह व्यक्ति बोलने-सुनने अथवा पढ़ने लिखने में करता है किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह व्यक्ति अपने शब्द भंडार के सभी शब्द सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में समान रूप से प्रयोग में लाता है। उसके सम्पूर्ण शब्द भंडार में बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग वह बोलचाल में तो करता है किन्तु पढ़ने, लिखने में नहीं। इसी प्रकार लिखते समय वह बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जो उसकी साधारण बोलचाल के अंग नहीं होते। वह बहुत सारे शब्दों को अर्थबोध सहित पढ़ तो लेता है किन्तु उनमें से अधिकांश का प्रयोग अपने लेखन कार्य में नहीं करता। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का विभिन्न भाषा कौशलों--सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने--संबंधी शब्द भंडार भिन्न-भिन्न होता है।

साधारणतः हमारे बोलने-सुनने का शब्द भंडार काफी व्यापक तथा लिखित अभिव्यक्ति का शब्द भंडार सब से अधिक सीमित होता है। इन दोनों की तुलना में हमारा पठन भंडार कहीं अधिक बड़ा और वैभिन्नयपूर्ण होता है। प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों के पठन शब्द भंडार का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन उनकी हिन्दी भाषा की पुस्तकों पर आधारित है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत केवल उन शब्दों का अध्ययन किया गया है जो प्राथमिक कक्षाओं की हिन्दी भाषा की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए है तथा इन कक्षाओं के छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन शब्दों द्वारा निर्मित पठन सामग्री को अर्थबोध सहित पढ़ सकेंगे। भाषा की पुस्तकों के अतिरिक्त छात्र अन्य विषयों की पुस्तकें भी पढ़ते हैं। ऐसी पुस्तकों का शब्द भंडार प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है। किन्तु यदि तकनीकी शब्दों को छोड़ दिया जाए तो अन्य विषयों की पुंस्तकों के अधिकांश शब्द ऐसे होगें जो उनमें और भाषा की पुस्तकों में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि इस शब्द भंडार में वे सब शब्द सम्मिलित है जिन्हें छात्र सामान्य विषयों संबंधी सामग्री पढ़ने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

इस अध्ययन का मुख्य बल, प्राथमिक स्तर के छात्रों के पठन शब्द भंडार के आकार-प्रकार और उसकी शैक्षिक उपयुक्तता के परीक्षण पर है।

1.1 प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य

1.1.1 विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्राथमिक कक्षाओं के पठन भंडार की स्थिति ज्ञात करना।

1.1.2 विभिन्न राज्यों के कक्षावार तथा सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर के पठन शब्द भंडार की तुलनात्मक स्थिति ज्ञात करना।

1.1.3 सम्पूर्ण हिन्दीभाषी प्रदेश की प्राथमिक कक्षाओं में प्रयुक्त पठन पुस्तकों के शब्द भंडार का शिक्षण की दृष्टि से मूल्यांकन करना और उनकी उपयुक्तता निर्धारित करना।

1.1.4 सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5 तक) की पठन पुस्तकों के लिए सर्वोपयोगी तथा महत्वपूर्ण शब्दों की सूची तैयार करना।

1.1.5 प्राथमिक कक्षाओं की हिन्दी पठन पुस्तकों के लेखकों के लिए शब्द भंडार के चयन, स्तरीकरण और प्रयोग संबंधी शोध आधारित सुझाव तैयार करना।

1.2 शोध कार्य के आयाम

प्रस्तुत अध्ययन के शब्द भंडार के चार आयाम हैं :

1.2.1 शब्दों का परिमाण

1.2.2 शब्द भंडार की समृद्धता

1.2.3 शब्दों का स्तरीकरण

1.2.4 शब्दों की उपयुक्तता

1.2.1 शब्दों की परिमाण

कक्षा विशेष में तथा संपूर्ण प्राथमिक स्तर पर छात्र को पढ़ने के लिए कितने शब्द दिए जाते हैं, इसके आधार पर छात्र के पठन शब्द भंडार का निर्धारण किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत पठन सामग्री में प्रयुक्त शब्दों की गणना की गई। शब्दों की गणना के चार आयाम थे---राज्य, संपूर्ण हिन्दी प्रदेश, कक्षा विशेष और संपूर्ण प्राथमिक स्तर। इन चारों आयामों में से प्रत्येक के अंतर्गत शब्दों की संख्या की गणना दो दृष्टियों से की गई, कुल शब्दों की संख्या और विभिन्न शब्दों की संख्या। कुल शब्दों की संख्या पूरी पठन सामग्री की मात्रा दर्शाती है तथा विभिन्न शब्दों की संख्या इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि कक्षा विशेष, संपूर्ण प्राथमिक स्तर, राज्य तथा संपूर्ण हिन्दी प्रदेश में छात्रों को कितने शब्दों के संबंध में पठन योग्यता का विकास करना अभीष्ट है। इन दोनों प्रकार के

शब्दों की संख्या के आधार पर छात्रों के पठन भार और परिमाण की दृष्टि से पुस्तक का मूल्यांकन किया जा सकता है।

1.2.2 शब्द भंडार की समृद्धता

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित भाषा व्यवहार में सक्षम होने के लिए आवश्यक है कि छात्रों का शब्द भंडार खूब समृद्ध हो। पारिवारिक और शालीय परिवेश के अतिरिक्त वे विज्ञान, कला, खेलकूद, देश–विदेश और सामाजिक जीवन से संबंधित विषयों का पठन तभी कर सकेंगे जब उनका शब्द भंडार खूब समृद्ध होगा। अतः इस अध्ययन में इस बात की भी जांच की गई है कि विभिन्न पठन पुस्तकों का शब्द भंडार कितना समृद्ध है।

1.2.3 शब्दों का स्तरीकरण

उपरोक्त आयाम भाषा–शिक्षण के लक्ष्य से संबंधित हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि का प्रमुख अंग है–शिक्षण सामग्री का स्तरीकरण। किसी भी कक्षा की पुस्तक में जिस शब्द भंडार का समावेश किया जाए वह छात्रों के मानसिक स्तर के अतिरिक्त, पिछली और अगली कक्षा के पठन–पाठन को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए। यह स्तरीकरण केवल शब्दों का ही नहीं, उनकी संख्या और विभिन्न शब्दों की बारम्बारिता का भी होना चाहिए। एक कक्षा से दूसरी कक्षा के शब्द भंडार में वृद्धि तथा नए शब्दों की पुनरावृत्ति सही अनुपात में होनी चाहिए। नीचे की कक्षा में शब्दों की अधिक पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है किन्तु शब्द भंडार में वृद्धि की मात्रा कम रहती है। एक बार छात्र शब्द पहचानने की क्रिया मे दक्ष हो जाये तो शब्द भंडार में वृद्धि की मात्रा अधिक की जा सकती है तथा ऊँची कक्षाओं में और अधिक सामग्री भी पठन के लिए दी जा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत इस बात की परीक्षा करते समय कि पूरे प्राथमिक स्तर के शब्द भंडार का विभिन्न कक्षाओं में उपयुक्त स्तरीकरण किया गया है अथवा नहीं, इन दोनों बातों को ध्यान में रखा गया है।

1.2.4 शब्दों की उपयुक्तता

शब्दावली अध्ययन के अंतगर्त केवल यही जानना पर्याप्त नहीं है कि पठन सामग्री के रूप में छात्र को कितने शब्द पढ़ने के लिए दिए जाते हैं बल्कि यह जानना भी आवश्यक है कि उसे कौन से शब्द पढ़ने के लिए दिए जाते हैं। भाषा, विशेषतः मातृभाषा नित्य प्रति के प्रयोग की वस्तु है, ऐसे शब्दों का अध्ययन–अध्यापन ही उपयुक्त है जो छात्रों के नित्य प्रति के भाषाा–व्यवहार के संदर्भ में छात्र की वर्तमान और भावी दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करते हों। इस अध्ययन में शब्दों की उपयुक्तता का विवेचन इन सब बातों को ध्यान में रखकर किया गया है।

इस अध्ययन का मुख्य बल, प्राथमिक स्तर के छात्रों के पठन शब्द भंडार के आकार–प्रकार और उसकी शैक्षिक उपयुक्तता के परीक्षण पर है।

1.1 प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य

1.1.1 विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्राथमिक कक्षाओं के पठन भंडार की स्थिति ज्ञात करना।

1.1.2 विभिन्न राज्यों के कक्षावार तथा सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर के पठन शब्द भंडार की तुलनात्मक स्थिति ज्ञात करना।

1.1.3 सम्पूर्ण हिन्दीभाषी प्रदेश की प्राथमिक कक्षाओं में प्रयुक्त पठन पुस्तकों के शब्द भंडार का शिक्षण की दृष्टि से मूल्यांकन करना और उनकी उपयुक्तता निर्धारित करना।

1.1.4 सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5 तक) की पठन पुस्तकों के लिए सर्वोपयोगी तथा महत्वपूर्ण शब्दों की सूची तैयार करना।

1.1.5 प्राथमिक कक्षाओं की हिन्दी पठन पुस्तकों के लेखकों के लिए शब्द भंडार के चयन, स्तरीकरण और प्रयोग संबंधी शोध आधारित सुझाव तैयार करना।

1.2 शोध कार्य के आयाम

प्रस्तुत अध्ययन के शब्द भंडार के चार आयाम हैं :

1.2.1 शब्दों का परिमाण

1.2.2 शब्द भंडार की समृद्धता

1.2.3 शब्दों का स्तरीकरण

1.2.4 शब्दों की उपयुक्तता

1.2.1 शब्दों की परिमाण

कक्षा विशेष में तथा संपूर्ण प्राथमिक स्तर पर छात्र को पढ़ने के लिए कितने शब्द दिए जाते हैं, इसके आधार पर छात्र के पठन शब्द भंडार का निर्धारण किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत पठन सामग्री में प्रयुक्त शब्दों की गणना की गई। शब्दों की गणना के चार आयाम थे––राज्य, संपूर्ण हिन्दी प्रदेश, कक्षा विशेष और संपूर्ण प्राथमिक स्तर। इन चारों आयामों में से प्रत्येक के अंतर्गत शब्दों की संख्या की गणना दो दृष्टियों से की गई, कुल शब्दों की संख्या और विभिन्न शब्दों की संख्या। कुल शब्दों की संख्या पूरी पठन सामग्री की मात्रा दर्शाती है तथा विभिन्न शब्दों की संख्या इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि कक्षा विशेष, संपूर्ण प्राथमिक स्तर, राज्य तथा संपूर्ण हिन्दी प्रदेश में छात्रों को कितने शब्दों के संबंध में पठन योग्यता का विकास करना अभीष्ट है। इन दोनों प्रकार के

शब्दों की संख्या के आधार पर छात्रों के पठन भार और परिमाण की दृष्टि से पुस्तक का मूल्यांकन किया जा सकता है।

1.2.2 शब्द भंडार की समृद्धता

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित भाषा व्यवहार में सक्षम होने के लिए आवश्यक है कि छात्रों का शब्द भंडार खूब समृद्ध हो। पारिवारिक और शालीय परिवेश के अतिरिक्त वे विज्ञान, कला, खेलकूद, देश–विदेश और सामाजिक जीवन से संबंधित विषयों का पठन तभी कर सकेंगे जब उनका शब्द भंडार खूब समृद्ध होगा। अतः इस अध्ययन में इस बात की भी जांच की गई है कि विभिन्न पठन पुस्तकों का शब्द भंडार कितना समृद्ध है।

1.2.3 शब्दों का स्तरीकरण

उपरोक्त आयाम भाषा–शिक्षण के लक्ष्य से संबंधित हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि का प्रमुख अंग है–शिक्षण सामग्री का स्तरीकरण। किसी भी कक्षा की पुस्तक में जिस शब्द भंडार का समावेश किया जाए वह छात्रों के मानसिक स्तर के अतिरिक्त, पिछली और अगली कक्षा के पठन–पाठन को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए। यह स्तरीकरण केवल शब्दों का ही नहीं, उनकी संख्या और विभिन्न शब्दों की बारम्बारिता का भी होना चाहिए। एक कक्षा से दूसरी कक्षा के शब्द भंडार में वृद्धि तथा नए शब्दों की पुनरावृत्ति सही अनुपात में होनी चाहिए। नीचे की कक्षा में शब्दों की अधिक पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है किन्तु शब्द भंडार में वृद्धि की मात्रा कम रहती है। एक बार छात्र शब्द पहचानने की क्रिया मे दक्ष हो जाये तो शब्द भंडार में वृद्धि की मात्रा अधिक की जा सकती है तथा ऊँची कक्षाओं में और अधिक सामग्री भी पठन के लिए दी जा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत इस बात की परीक्षा करते समय कि पूरे प्राथमिक स्तर के शब्द भंडार का विभिन्न कक्षाओं में उपयुक्त स्तरीकरण किया गया है अथवा नहीं, इन दोनों बातों को ध्यान में रखा गया है।

1.2.4 शब्दों की उपयुक्तता

शब्दावली अध्ययन के अंतर्गत केवल यही जानना पर्याप्त नहीं है कि पठन सामग्री के रूप में छात्र को कितने शब्द पढ़ने के लिए दिए जाते हैं बल्कि यह जानना भी आवश्यक है कि उसे कौन से शब्द पढ़ने के लिए दिए जाते हैं। भाषा, विशेषतः मातृभाषा नित्य प्रति के प्रयोग की वस्तु है, ऐसे शब्दों का अध्ययन–अध्यापन ही उपयुक्त है जो छात्रों के नित्य प्रति के भाषा–व्यवहार के संदर्भ में छात्र की वर्तमान और भावी दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करते हों। इस अध्ययन में शब्दों की उपयुक्तता का विवेचन इन सब बातों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1.3 शोध कार्य की परिसीमाएँ

1.3.1 पठन शब्द भंडार के आकलन, विश्लेषण और मूल्यांकन का क्षेत्र बड़ा व्यापक है अतः प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उसे परिसीमित कर लिया गया है। इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों के लेखकों के लिए उपयोगी शब्द सूची तैयार करना और प्रयोग कियो जाने वाले शब्द भंडार के संबंध में अन्य जानकारी देना है। अतः इस शोध से संबंधित शब्दावली का आकलन विभिन्न राज्यों में प्रयुक्त होने वाली कक्षा 1 से 5 तक की पठन पुस्तकों तक ही सीमित रखा गया है। शब्दावली को अन्तिम रूप देते समय छात्रों के मौखिक, लिखित शब्द भंडार तथा प्रौढ़ों के लिए आवश्यक शब्द भंडार को भी ध्यान में रखा गया है किन्तु मुख्य स्रोत हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तकें ही हैं।

1.3.2 इस शोध कार्य में बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचलप्रदेश, हरियाणा और दिल्ली में तैयार की गई कक्षा 1 से 5 तक की पठन पुस्तकों का विश्लेषण किया गया है। इन राज्यों के अतिरिक्त केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई पुस्तकों को भी सम्मिलित किया गया है। इस निर्णय का आधार यह था कि एक तो इन पुस्तकों के द्वारा सभी–राज्यों के केन्द्रीय विद्यालयों में एक ही प्रकार की शब्दावली को पढ़ना सिखाया जाता है, दूसरे ये पुस्तकें राष्ट्रीय स्तर पर प्रयुक्त शब्दावली का नमूना प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार इस अध्ययन के अंतर्गत कक्षा 1 से 5 तक की हिन्दी पाठ्य पुस्तकों के आठ सेटों की कुल 45 पुस्तकों का विश्लेषण किया गया है।

1.3.3 शोध कार्य में सम्मिलित की गई पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन न्यादर्श पद्धति से नहीं किया गया है। कक्षा 1 और 2 में चूंकि पाठ्य पुस्तक का हर शब्द छात्र को पढ़ना सीखने का अभ्यास प्रदान करता है, कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में प्रयुक्त हर शब्द को इन कक्षाओं के शब्द भंडार के रूप में आकलित किया गया है। कक्षा 3 से 5 तक की पुस्तकों मे से भी संरचनात्मक शब्दों को छोड़कर सभी शब्दों का आकलन किया गया है। इन पुस्तकों में आए मुहावरों, पदबंधों और विशेष प्रयोगों का भी आकलन अलग से किया गया है।

1.3.4 इस शोध कार्य का आधार हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें है। ये पाठ्य पुस्तकें मानक हिन्दी में लिखी गई हैं अतः प्रस्तुत अध्ययन के परिणामस्वरूप तैयार किया गया शब्द भंडार मानक हिन्दी का ही है किन्तु इस अध्ययन के अंतर्गत विश्लेषित अधिकांश पुस्तकें प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना के अंतगर्त बनाई गई थीं, उनमें स्थानीय शब्दों और प्रयोगों का होना स्वाभाविक ही था तथा उसे गुणकारी भी माना गया था। इस प्रकार यह अध्ययन विभिन्न राज्यों में प्रयुक्त स्थानीय प्रयोगों का भी निर्धारण करता है।

1.3.5 इस शोध–कार्य के अंतगर्त भाषा की जिन पाठ्य पुस्तकों को लिया गया है उनके केवल पाठों में प्रयुक्त शब्दों का ही आकलन किया गया है। अभ्यासों, निर्देशों तथा अन्य सामग्री में प्रयुक्त शब्दों को आकलित नहीं किया गया है।

1.4 कार्य पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य के छः सोपान हैं :

1.4.1 शब्द मंडार का आकलन

1.4.2 शब्दों की गणना

1.4.3 शब्द मंडार का विश्लेषण

1.4.4 शब्द मंडार का मूल्यांकन

1.4.5 पाठ्य पुस्तक लेखकों और अध्यापकों के लिए शब्द मंडार चयन संबंधी निर्देशों का निर्धारण

1.4.6 पाठ्य पुस्तक लेखकों के लिए सर्वोपयोगी शब्दों का सूचीकरण

1.4.1 शब्द मंडार का आकलन

शब्दों का आकलन बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान तथा केन्द्रीय विद्यालय में प्रयुक्त होने वाली कक्षा 1 से 5 तक की भाषा पुस्तकों में से किया गया है।

1.4.2 शब्दों की गणना

शब्दों का आकलन कर उन्हें सूचीबद्ध किया गया तथा कुल और विभिन्न शब्दों की गणना की गई। इन दोनों सोपानों संबंधी कार्य की विस्तार पूर्वक चर्चा अध्याय तीन में प्रस्तुत की गई है।

1.4.3 शब्द मंडार का विश्लेषण

इन दो सोपानों के परिपूर्ण होने पर प्राप्त सामग्री का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण बिन्दुओं का विवरण अध्याय चार में प्रस्तुत किया गया है।

1.4.4 शब्द मंडार का मूल्यांकन

विश्लेषण उपरान्त प्राप्त आँकड़ों का शैक्षिक तथा भाषायी दृष्टि से मूल्यांकन किया गया। अध्याय पाँच में इन आँकड़ों, मूल्यांकन निकर्षों तथा निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

1.4.5 पाठ्य पुस्तक लेखकों और अध्यापकों के लिए शब्द भंडार चयन संबंधी निर्देशों का निर्धारण

विश्लेषण और मूल्यांकन के आधार पर शिक्षाविदो की सहायता से लेखकों के लिए भाषा की पाठ्य पुस्तकों के निर्माण संबंधी कुछ सुझावों और निर्देशों का निर्धारण किया गया जो अध्याय छः के अन्तर्गत दिए गए हैं।

1.4.6 पाठ्य पुस्तक लेखकों के लिए सर्वोपयोगी शब्दों का सूचीकरण

आकलित शब्द भंडार के विश्लेषण तथा मूल्यांकन, हिन्दी शब्दावली संबंधी अन्य शोध कार्यो तथा शिक्षाविदों की राय के आधार पर, पठन योग्यता के विकास के लिए हिन्दी के बहुप्रयुक्त और सर्वोपयोगी शब्दों की सूची तैयार की गई। इस प्रक्रिया का विवरण अध्याय सात के अन्तर्गत दिया गया है।

इन अध्यायों में की गई चर्चा को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने के लिए अध्याय दो में अब तक हुए हिन्दी शब्दावली संबंधी शोध कार्यो का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

अन्त में अध्याय आठ में सिहांवलोकन के अन्तर्गत समस्त अध्ययन का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

— 0 —

अध्याय-2

हिन्दी में शब्दावली अध्ययन

पहले कहा जा चुका है कि भारतीय भाषाओं की पठन पुस्तकें लिखने की परम्परा सौ डेढ़ सौ साल पुरानी है किन्तु अत्यन्त खेद की बात है कि भाषा की पुस्तकें लिखने की परम्परा इतनी पुरानी होते हुए भी आज भी यह कार्य न तो किसी शोध के आधार पर किया जाता है और न ही किसी वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार। भाषा की पुस्तक का सर्वप्रथम उद्देश्य छात्रों में पठन योग्यता का विकास करना तथा उन्हें पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने में सक्षम बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भाषा की पुस्तकों के शब्द भंडार और विषय वस्तु का चुनाव बहुत सोच समझकर तथा भलीभांति परीक्षण किए गए तथ्यों के आधार पर होना चाहिए। दुर्भाग्यवश पिछले सौ डेढ़ सौ साल में भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के शब्द भंडार संबंधी जो कार्य हुए हैं उनकी संख्या बहुत ही कम है।

प्राप्त तथ्यों के अनुसार शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न भारतीय भाषाओं में अब तक शब्द–भंडार संबंधी कुल 40 शोध कार्य हुए हैं। इनमें से बीस से अधिक शोध कार्य हिन्दी शब्द भंडार से संबंधित हैं और शेष अन्य भाषाओं से। हिन्दी को छोड़ कर अन्य भारतीय भाषाएं जिनमें छात्रों के शब्द भंडार संबंधी शोध कार्य हुआ है, वे हैं बंगला, गुजराती, कन्नड़, मराठी, पंजाबी, असमिया और तमिल। इनमें से गुजराती में पांच और मराठी में सात शोध कार्य हुए हैं। अन्य भाषाओं में एक-एक शोध कार्य हुआ है।

हिन्दी शब्दावली अध्ययन के संबंध में जितने कार्य हुए हैं, वे दो प्रकार के हैं: एक तो विद्यालयी छात्रों के शब्द भंडार से संबंधित तथा दूसरे हिन्दी क्षेत्र में प्रयुक्त बोलचाल तथा लिखने पढ़ने के शब्द भंडार के अध्ययन से संबंधित हैं। विद्यालयी बालकों के हिन्दी शब्द भंडार का अध्ययन संभवतः सबसे पहले मध्यप्रदेश में हुआ। फादर कोयईग नाम के व्यक्ति ने प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की आधारभूत शब्दावली सूची तैयार करने के लिए उस समय प्रचलित पाठ्य पुस्तकों तथा अन्य स्रोतों का विश्लेषण करके चार हजार महत्त्वपूर्ण हिन्दी शब्दों की सूची तैयार की। इस अध्ययन के अनुसार यह चार हजार शब्द हिन्दी के अध्यापकों और पाठ्य पुस्तक लेखकों के लिए बहुत महत्त्व के थे। फादर कोयईग का यह अध्ययन (1933) बहुत महत्त्वपूर्ण है और हिन्दी में वैज्ञानिक ढंग से किया गया पहला प्रयास है। हिन्दी का दुर्भाग्य है कि फादर कोयईग के महत्त्वपूर्ण कार्य का लाभ आज तक किसी भी

हिन्दी राज्य अथवा पाठ्यपुस्तक लेखकों ने नहीं उठाया। यही नहीं, अधिकांशतः लेखक, अध्यापक और इस कार्य से संबंधित संस्थाऐं, फादर कोयईंग के कार्य के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ हैं। अपनी पुस्तक के विषय प्रवेश के अंतर्गत डा. कोयईंग ने लिखा है कि 'यूरोप की अधिकांश भाषाओं में उन सब शब्दों को सूचीगत कर लिया गया है जो सामान्यतः साहित्य में सर्वाधिक प्रयुक्त होते हैं। इन सूचियों ने छात्रों और बालकों के लिए तैयार होने वाली पठन सामग्री में क्रांति ला दी है। इन सूचियों की सहायता से बालकों के लिए श्रेणीकृत साहित्य की रचना की गई। ये रचनाएं बड़े शौक से पढ़ी जाती हैं और वे बालकों में साहित्य रसास्वादन, ज्ञानार्जन और मनोरंजन के लिए पढ़ने की आदत का विकास बड़ी द्रुत गति से करती हैं। प्रस्तुत हिन्दी शब्दावली, हिन्दी साहित्य और प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों तथा अर्धसाक्षर लोगों के लिए उसी प्रकार का कार्य करने के लिए तैयार की गई है।' सन् 1937 में इस पुस्तक का दूसरा संस्करण निकला किन्तु उसके बाद इस कार्य को किसी ने आगे नहीं बढ़ाया। प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए फादर कोयईंग जैसा गहन कार्य आज तक दुबारा नहीं हो पाया है।

प्राथमिक स्तर के छात्रों के शब्द भंडार के एक अन्य पक्ष का अध्ययन, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में 1972 से 1980 के बीच हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सात शोध विद्यार्थियों ने कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों के शब्द भंडार का अध्ययन किया तथा उनकी सूची बनाई। डा. उदय शंकर तथा डा. कौशिक (1980) ने अंत में सभी सूचियों को मिलाकर एक बड़ी सूची बनाई। इस कार्य के अंतर्गत विभिन्न स्त्रोतों से लगभग सात हजार शब्द इकट्ठे किए गए और उन्हें कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को लेकर इस बात की परीक्षा की गई कि कौन से शब्दों के अर्थ वे समझते हैं तथा प्रत्येक शब्द की कठिनाई का स्तर क्या है? इन सात हजार शब्दों में से कुछ शब्दों को पाठ्यपुस्तकों से लिया गया था, कुछ छात्रों की बोलचाल की भाषा से और कुछ उनके लेखन कार्य से। शब्द भंडार एकत्रित करने का कार्य मुख्य रूप से हरियाणा राज्य से संबंधित था और इसका लक्ष्य आकलित शब्दों की कठिनाई का स्तर निर्धारित करना था।

प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों के मौखिक, पठित और लिखित शब्द भंडार संबंधी एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य डा. के. जी. रस्तोगी का है। रस्तोगी ने हिन्दी प्रदेश में कक्षा 1 से 5 तक पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों तथा हिन्दी की 22 उपभाषाओं के क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों के दो हजार बालक-बालिकाओं के मौखिक और लिखित शब्द भंडार संबंधी लगभग पंद्रह हजार शब्दों का आकलन किया तथा उनकी बारम्बारिता का निर्धारण किया। तत्पश्चात आकलित शब्द भंडार का संरचनात्मक, व्याकरणिक तथा आर्थी दृष्टि से विश्लेषण भी किया गया। आकलित शब्द भंडार में नगर और ग्रामीण बालक-बालिकाओं की मौखिक, लिखित तथा पठित शब्दावली को सम्मिलित किया गया।

पाठ्यपुस्तकों के लेखकों के लिए उपयोगी शब्दों की शब्दावली बनाने का काम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग द्वारा भी किया गया। इस विभाग द्वारा तैयार की गई शब्दावली में लगभग 16 हजार शब्द हैं। ये सूची तीन भागों में विभक्त है: शिशु सूची, बाल सूची और किशोर-सूची। ये सूचियाँ क्रमशः प्राथमिक, मिडिल तथा हाई स्कूल के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। ये सूचियाँ विद्वानों और

अध्यापकों की राय से बनाई गई हैं। कौन सा शब्द अधिक प्रयोग में होता है, कौन सा नहीं– इस बात का निर्णय भी अनुभव के आधार पर किया गया, बारम्बारिता की गणना के आधार पर नहीं। इसी प्रकार कौन सा शब्द सरल और कौन सा कठिन, इसका आधार भी अनुभव ही रहा है, कोई शोध कार्य नहीं।

संपूर्ण प्राथमिक स्तर के शब्द भंडार का अध्ययन करने के अतिरिक्त कुछ शोधकर्ताओं ने कक्षा विशेष के छात्रों के शब्द भंडार का भी अध्ययन किया। पसरीचा और दास ने (1959) दिल्ली के कक्षा 6 के छात्रों के लिखित शब्द भंडार का अध्ययन किया। रूकमणि ने (1970) राजस्थान के और विनय गुप्ता ने (1985) जम्मू–कश्मीर के कक्षा 2 के छात्रों के शब्द भंडार का अध्ययन किया। विनय गुप्ता के अध्ययन का मुख्य आधार कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तकें और छात्रों का लिखित कार्य है। उन्होंने भी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हुए कार्य की भांति आकलित शब्दों का कठिनाई स्तर निर्धारित किया है। इसके विपरीत रूकमणि का शोध कार्य कक्षा 2 के छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति पर आधारित है और उन्होंने प्रयुक्त शब्दों की बारम्बारिता को महत्त्व दिया है। रूकमणि के कार्य का महत्त्व इस बात में है कि पहली बार किसी शोध कार्य के द्वारा यह दर्शाया गया कि कक्षा 1 और 2 में जब छात्र पढ़ना सीख रहे होते हैं उनकी पाठ्यपुस्तक और उनके स्वयं के मौखिक शब्द भंडार में अपेक्षित तालमेल नहीं होता। रूकमणि के अनुसार कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित 821 शब्दों में से केवल 436 ही छात्रों की मौखिक शब्द भंडार का अंग थे, शेष शब्द नए थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी के राष्ट्रभाषा पद पर आसीन हो जाने पर, एकाधिक संदर्भों में इस बात की आवश्यकता महसूस की जाने लगी कि ऐसे शब्दों की सूची तैयार की जाए जो हिन्दी में सर्वाधिक प्रयोग में आते हैं तथा हिन्दी में साधारण काम–काज चलाने के लिए जिनका सीखना सबके लिए आवश्यक है। भारत सरकार के शिक्षा–मंत्रालय ने सन् 1958 में क्रमशः दो हजार और 500 शब्दों की सूचियाँ "बेसिक हिन्दी शब्दावली" के नाम से प्रकाशित कीं। पहले प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य ऐसे शब्दों को सूचीगत करना था जो सभी अहिन्दी राज्यों में हिन्दी की पठन पुस्तकें तैयार करने में प्रयुक्त किए जा सकें। दूसरी प्रकाशित सूची (500–शब्द) का उद्देश्य हिन्दी पढ़ने लिखने का अनिवार्य मापदण्ड प्रस्तुत करना था। हिन्दी में साक्षरता का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए इन 500 शब्दों का ज्ञान होना अनिवार्य माना गया। ये दोनों सूचियाँ मुख्य रूप से अहिन्दी भाषियों की आवश्यकताएँ ध्यान में रखकर बनाई गई थीं और शब्दों का चयन संकल्पनाओं की सर्वव्यापकता तथा प्रयोग के बाहुल्य के आधार पर किया गया। ये सूचियाँ भी अनुभव के आधार पर बनाई गईं, किसी शोध कार्य के आधार पर नहीं।

राजभाषा बन जाने पर हिन्दी में होने वाले सरकारी काम–काज के सिलसिले में भी आवश्यक हिन्दी शब्दों की सूची की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। इन्हीं दिनों गणेशदत्त गौड़ ने एक सूची "हिन्दी शब्द तथा उनकी अनुपातक प्रयोग गति" के नाम से तैयार की। इस सूची में दो हजार शब्द थे और यह सूची हिन्दी आशुलिपि सीखने वालों के लिए तैयार की गई थी। इस सूची में शब्दों को सम्मिलित करने का आधार भी यही था कि कौन से शब्द अधिक प्रयोग में आते हैं। बद्रीनाथ कपूर (1965) ने ग्यारह सौ शब्दों की एक सूची प्रकाशित की और उसे "बेसिक हिन्दी" का नाम दिया।

हिन्दी शब्द भंडार अध्ययन के क्षेत्र में दो अन्य महत्वपूर्ण कार्य डा. कैलाशचन्द्र भाटिया (1968) तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के डा. जगन्नाथन के हैं। ये दोनों कार्य साहित्यक रचनाओं, समसामयिक समाचार-पत्रों तथा पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्दावली के आधार पर आधारित हैं और प्रत्येक शब्द की उपयोगिता का निर्धारण उसकी बारम्बारिता की गणना के आधार पर किया गया है। भाटिया द्वारा तैयार की गई सूची में दो हजार शब्द हैं और उन्होंने इसे "हिन्दी की बेसिक शब्दावली" का नाम दिया है। भाटिया की अध्ययन सामग्री में कुल 50,000 शब्द थे, जिसमें 10,000 विभिन्न शब्द थे, इन 10,000 शब्दों में से सर्वाधिक आवृत्ति वाले शब्दों को सूचीगत किया गया। जगन्नाथन ने भी इसी प्रकार लगभग पांच लाख शब्दों की सामग्री का अध्ययन किया और 10,000 विभिन्न शब्दों का आलेखन किया। इनमें से पांच हजार शब्दों की एक सूची तैयार की जिसे उन्होंने दो हजार और तीन हजार शब्दों की दो सूचियों में बांटा। पहली सूची में बारम्बारिता के आधार पर उन शब्दों को रखा जो हर हिन्दी सीखने वाले को अवश्य आने चाहिए। इन दो हजार शब्दों को उन्होंने हिन्दी की कोर अथवा आधारभूत शब्दावली माना है।

मुख्य रूप से भाषा शिक्षण और भाषा शिक्षकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, शब्द भंडार अध्ययन संबंधी एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा किया गया। इस कार्य के अंतर्गत हिन्दी और बारह अन्य भारतीय भाषाओं की प्रत्यास्मरण शब्दावली सूचियाँ तैयार की गईं। ये सूचियाँ संबंधित भाषाओं में शिक्षण सामग्री बनाने में उपयोगी सिद्ध हुई हैं। ये कार्य विभिन्न भारतीय भाषाओं को इतर भाषा के रूप में सीखने संबंधी प्रौढ़ विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है।

उपरोक्त शोध कार्यों को देखते हुए निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैंः

क. विद्यालयी छात्रों के शब्द भंडार अध्ययन संबंधी अधिकांश कार्य चयित शब्दों के कठिनाई स्तर को निर्धारित करने से संबंधित हैं।

ख. बारम्बारिता और उपयोगिता के आधार पर जो शब्द सूचियाँ तैयार की गई हैं वे अधिकांशतः इतर भाषा के रूप में हिन्दी सीखने वाले प्रौढ़ विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं।

अभी तक कोई भी शोध कार्य ऐसा नहीं हुआ जिसके आधार पर प्राथमिक स्तर के लिए हिन्दी की पठन पुस्तकें बनाने वाले लेखकों को ये ज्ञात हो सके कि उन्हें अपनी पुस्तकों में प्रत्येक कक्षा के लिए कितने और किन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर हिन्दी की पठन पुस्तकों के लेखकों और अध्यापकों की आवश्यकताओं को देखते हुए यदि कोई कार्य उपयोगी है तो वह फादर कोयईग का ही है। किन्तु एक तो यह कार्य काफी पुराना हो चुका है और उसे समसामयिक बनाना नितान्त आवश्यक है। दूसरे फादर कोयईग ने बारम्बारिता के आधार पर केवल चार हजार उपयोगी शब्दों को ही सूचीगत किया। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का संपूर्ण शब्द भंडार इससे कहीं अधिक बड़ा होता है। इस संपूर्ण भंडार की क्या स्थिति है और उसमें इन चार हजार अत्याधिक महत्वपूर्ण शब्दों के अतिरिक्त और कौन से शब्द पठन पुस्तकों में शामिल किए जा सकते हैं, इस संबंध

में शोध कार्य करने की अभी भी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त इस बात का अध्ययन करने की आवश्यकता भी अनुभव की गई है कि विभिन्न हिन्दी राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में हिन्दी शब्द भंडार की क्या स्थिति है। प्रत्येक कक्षा में कितने शब्द पढ़ाये जाते हैं। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में ज़ाने पर छात्र को औसतन कितने नए शब्द पढ़ने और सीखने पड़ते हैं तथा विभिन्न कक्षाओं में कौन-कौन से शब्द सभी राज्यों में पढ़ाए जाते हैं इत्यादि। हिन्दी शब्द भंडार अध्ययन के क्षेत्र में इन सब बातों के संबंध में शोध करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

— o —

अध्याय-3

शब्द भंडार का आकलन एवं शब्दों की गणना

हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में किन शब्दों को पठन के लिए सम्मिलित किया जाना चाहिए, इस बात का निर्धारण करने के लिए यह आवश्यक था कि पहले यह जाना जाए कि इन पुस्तकों में किन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त यह जानने के लिए कि अध्ययन के अंतर्गत ली गई पुस्तकों का शब्द भंडार उपयुक्त है अथवा नहीं, यह जानना भी आवश्यक है कि उनमें प्रयुक्त शब्द भंडार है क्या ? वस्तुतः इस बात का निर्धारण करने से पहले कि प्राथमिक स्तर के लिए हिन्दी की पठन सामग्री का शब्द भंडार क्या होना चाहिए इस बात का निर्धारण करना बहुत आवश्यक है कि इस शब्द भंडार की स्थिति क्या है ? अतः प्रस्तुत शोध कार्य का पहला सोपान विभिन्न राज्यों में प्रयुक्त हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन करना था। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान और केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा 1 से 5 में प्रयुक्त पुस्तकों का अध्ययन किया गया। इस प्रकार पांचों कक्षाओं की नौ-नौ पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन किया गया।

(दिल्ली को छोड़कर बाकी सब राज्यों में प्रत्येक कक्षा में केवल एक ही पाठ्यपुस्तक का व्यवहार होता है। दिल्ली में क्योंकि समाहित पाठ्यक्रम के अंतर्गत पुस्तकें बनी थीं, इसलिए सभी विषयों के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए दो पुस्तकें बनाई गई थीं। इस प्रकार दिल्ली में कक्षा 1 से 5 तक के लिए बनाई गई दस पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन किया गया । इन पुस्तकों में कुछ पाठ पूर्णतया अंकगणित और परिवेश अध्ययन से संबंधित हैं। उन पाठों के शब्दों की गणना नहीं की गई तथा अन्य 7 राज्यों की पाँच-पाँच (प्रत्येक कक्षा में प्रयुक्त होने वाली एक) पठन पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन किया गया।)

3.1 शब्दों का आकलन

कक्षा 1 में छात्र पढ़ना सीखना प्रारम्भ करता है और कक्षा 3 तक पहुंचते–पहुंचते नये शब्दों को बिना किसी सहायता के पढ़ने में सक्षम हो जाता है। इस प्रकार पहली दो कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक का प्रत्येक शब्द उसके लिए एक शिक्षण बिन्दु होता है। अतः इन कक्षाओं की पुस्तकों के शब्द भंडार का आकलन करते समय किसी भी शब्द को छोड़ा नहीं गया। इस शब्द भंडार का आकलन अपने आप में एक बृहत कार्य था, जो कि विभागीय लोगों के लिए अकेले करना कठिन था। अतः इस कार्य को करने के लिए अनुभवी अध्यापकों और शिक्षाविदों की सहायता ली गई। इन लोगों की सहायता से इन अठारह पुस्तकों के प्रत्येक शब्द को सूचीबद्ध किया गया तथा उसकी बारम्बारिता नोट की गई। ये कार्य आठ–आठ दिन की चार कार्यगोष्ठियों में सम्पन्न किया गया। इस कार्य के अन्तर्गत लगभग पचपन हजार शब्दों का अध्ययन किया गया।

विवेच्य पुस्तकों में दिए गए अभ्यासों इत्यादि को छोड़कर प्रत्येक पाठ के प्रत्येक शब्द को अलग–अलग चिट पर लिखा गया। तत्पश्चात एक ही शब्द वाली सारी चिटों को इकट्ठा करके उस शब्द विशेष की बारंबारिता ज्ञात कर ली गई। सम्पूर्ण पुस्तक के शब्दों का इस प्रकार आकलन कर लेने पर उन्हें अकारादि क्रम से लिख लिया गया। इस प्रकार प्रत्येक राज्य की प्रत्येक कक्षा के संबंध में उन शब्दों की सूची बन गई जो उसके लिए निर्धारित पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं तथा प्रत्येक शब्द के सामने यह अंकित कर दिया गया कि पूरी पुस्तक में वह शब्द कितनी बार प्रयुक्त हुआ है। विभिन्न राज्यों की इन कक्षावार सूचियों के आधार पर एक मास्टर लिस्ट बनायी गई जिसमें कक्षा 1 और 2 की सभी राज्यों की पुस्तकों में प्रयुक्त शब्दों को अकारादि क्रम से लिखा गया और प्रत्येक शब्द के सामने विभिन्न राज्यों में प्रयोग की बारंबारिता दर्शायी गई। राज्यवार और मास्टर लिस्ट बनाते समय मूल तथा निर्मित दोनों प्रकार के शब्दों को अलग अलग इकाई के रूप में सूचीगत किया गया। इस पहली सूची में व्यक्तिवाचक नाम, संख्यावाचक संख्याएँ, स्थानीय प्रयोग इत्यादि को भी सम्मिलित किया गया। सारांश यह है कि कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों के शब्द भंडार को सूचीगत करते समय किसी भी शब्द को छोड़ा नहीं गया। ऐसा करने का आधार यही था कि इन कक्षाओं में प्रत्येक नया शब्द चाहे वह अपने मूल रूप में हो अथवा व्यक्तिवाचक नाम हो अथवा संख्या शब्द, छात्र के लिए एक नया शिक्षण बिन्दु होता है। कक्षा 3 से 5 तक की पुस्तकों के संबंध में भी यही प्रक्रिया दुहराई गई किन्तु इन पुस्तकों के संरचनात्मक शब्दों को सूचीबद्ध नही किया गया। इस प्रकार इन कक्षाओं के संबंध में जो शब्द सूचियाँ बनाई गई, उनमें संबंधित पुस्तकों का हर शब्द संकलित नहीं था। इन पुस्तकों के कुल शब्दों की गणना, कुल पृष्ठों की संख्या को एक सामान्य पृष्ठ पर प्रयुक्त शब्दों की संख्या से गुणा कर के ज्ञात की गई। इस प्रकार वह वास्तव में कुल प्रयुक्त शब्दों की लगभग संख्या है जो पुस्तक के आकार के संबंध में संकेत करती है।

कक्षा 3 से 5 तक की पुस्तकों के शब्द भंडार में से संरचनात्मक शब्दों, विशेष प्रयोगों तथा मुहावरों इत्यादि को छोड़कर शेष शब्दों को उनकी बारंबाररिता सहित सूचीबद्ध कर लिया गया और

उन्हें 'अधीत' शब्दों की संज्ञा दी गई । इन कक्षाओं के शब्द भंडार का विशलेषण–मूल्यांकन इन 'अधीत' शब्दों पर ही आधारित है।

3.2 शब्दों की गणना

शब्दों की राज्यवार सूची और मास्टर लिस्ट बन जाने पर प्रत्येक शब्द को एक क्रमांक प्रदान किया गया। इस प्रकार विभिन्न राज्यों में तथा सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की कक्षावार संख्या ज्ञात हो गई। विभिन्न शब्दों की संख्या ज्ञात कर लेने के पश्चात प्रत्येक राज्य की पठन सामग्री में प्रयुक्त कुल शब्दों की संख्या ज्ञात की गई। ऐसा करने के लिए प्रत्येक शब्द के साथ–साथ उसकी बारंबारिता की भी गणना की गई।

शब्दों का सूचीकरण और गणना कर लेने के पश्चात उसका विश्लेषण करना प्रारम्भ किया गया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि गणना तथा विश्लेषण का कार्य चार स्तरों पर किया गया कक्षावार, राज्यवार, सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर तथा संपूर्ण हिन्दी प्रदेश ।

अध्याय-4

शब्द भंडार का विश्लेषण

आकलित शब्द भंडार का विश्लेषण प्रस्तुत शोध कार्य के पूर्वकथित चार आयामों, शब्द भंडार के परिमाण, समृद्धता, स्तरीकरण और उपयुक्तता से संबंधित है। इसके दस पक्ष हैं। इन दसों पक्षों संबंधी विश्लेषणजनित आँकड़े सब से पहले प्रत्येक राज्य के लिए कक्षावार तैयार किए गए। तत्पश्चात विभिन्न राज्यों के तुलनात्मक आँकड़े सूचीबद्ध किए गए। कक्षावार आँकड़ों के अतिरिक्त प्रत्येक राज्य के सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर संबंधी आँकड़ों को भी सार रूप में तैयार किया गया। अन्त में विभिन्न राज्यों के सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर के आँकड़ों को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत कर प्रत्येक पक्ष के संबंध में सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश के औसत आँकड़े ज्ञात किए गए।

शब्द भंडार विश्लेषण के ये दस पक्ष इस प्रकार है :

4.1 कुल शब्दों की संख्या

4.2 विभिन्न शब्दों की संख्या

4.3 शब्द भंडार में वृद्धि

4.4 शब्द भार

4.5 शब्दों की बारम्बारिता

4.6 पुराने और नए शब्दों की संख्या

4.7 एकाधिक राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द

4.8 आधारभूत और सर्वोपयोगी शब्दों की सूचियों में पाए जाने वाले शब्द

4.9 विभिन्न संरचना वाले शब्दों की संख्या

4.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्दों की संख्या

4.1–4.2 कुल और विभिन्न शब्द

पठन शिक्षण का पहला और महत्वपूर्ण चरण यह है कि प्रारम्भ में जो पठन सामग्री दी जाये, उसमें कम से कम विभिन्न शब्द हों जिससे छात्र शीघ्र ही उन्हें अनायास रूप से पहचानने लगे और उसका ध्यान शब्द की पहचान पर कम और उससे ध्वनित होने वाले अर्थ पर अधिक रह सके । ऐसा होने पर पठन प्रक्रिया छात्र के लिए मनोरंजक और रूचिकर हो सकेगी । इस संबंध में "कुल शब्द" और "विभिन्न शब्द" के अर्थो को एक बार फिर स्पष्ट कर देना उचित होगा । पठन सामग्री में जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उनमें से कुछ शब्द तो एक बार प्रयुक्त होते हैं और कुछ बार–बार। इस प्रकार किसी भी पठन सामग्री में प्रयुक्त कुल शब्दों की संख्या भले ही ज्यादा हो, उसमें प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की संख्या सीमित होती है। उदाहरणतः पुस्तक के किसी पृष्ठ पर यदि कुल 80 शब्द हों तो उसमें विभिन्न शब्द शायद दस–पन्द्रह ही होंगे जिनमें से कुछ का प्रयोग बार–बार हुआ होगा। इस प्रकार कुल शब्दों की संख्या पठन सामग्री का आकार बताती है और उसमें हर शब्द की बारंबारिता शामिल रहती है। इसके स्थान पर विभिन्न शब्दों की संख्या उनकी बारंबारिता को गिने बिना ज्ञात की जाती है । उदाहरणतः किसी पृष्ठ पर "है" शब्द शायद दस बार आये और कुल शब्दों की संख्या गिनते समय "है" दस शब्दों के रूप में गिना जाये किन्तु विभिन्न शब्दों की सूची में उसकी गिनती एक ही शब्द के रूप में होगी। जिस पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों को बार–बार दोहराया जायेगा, उसमें कुल शब्दों की संख्या तो ज्यादा होगी लेकिन विभिन्न शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम होगी। परिणामस्वरूप छात्र बहुत सारी सामग्री पढ़ेगें किन्तु पहचानने के लिए उनके पास शब्द कम होंगे। ऐसा होने पर दो लाभ होंगे। एक तो यह कि जब थोड़े से शब्द बार–बार पहचानने के लिए उसके सामने आयेंगे तो छात्र उन्हें शीघ्र ही पहचानने लगेगा। दूसरे जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है उसका ध्यान उनके प्रयोग से ध्वनित होने वाले अर्थो पर होने के कारण पठन क्रिया उसके लिए अधिक रूचिकार हो जायेगी। शब्द भंडार संबंधी आँकड़ों के अन्तर्गत कुल प्रयुक्त शब्दों और विभिन्न की संख्या क्रमशः सूची नम्बर एक और दो में दी गई है।

4.3 शब्द भंडार में वृद्धि तथा उसका कक्षावार स्तरीकरण

पठन शिक्षण का एक अन्य सिद्धान्त यह है कि विभिन्न कक्षाओं के पठन शब्द भंडार का प्रस्तुतीकरण भी समुचित रूप से स्तरीकृत होना चाहिए। पहली कक्षा में पांच सौ शब्द पढ़ना सिखाने के बाद यदि उसे एक दम पन्द्रह सौ शब्द पहचानने के लिए दे दिए जाएँ तो पढ़ने की योग्यता के विकास में कठिनाई उत्पन्न होगी। इस अध्ययन में पाठ्यपुस्तक के शब्द भंडार के स्तरीकरण का विश्लेषण शब्दों की संख्या की दृष्टि से ही किया गया है। ज्यों–ज्यों छात्र निचली कक्षाओं से ऊँची कक्षाओं में जाते जाएं, उनकी पठन सामग्री में प्रयुक्त कुल और विभिन्न शब्दों की संख्या में योजनाबद्ध ढंग से वृद्धि होनी चाहिए। स्तरीकरण की दृष्टि से यह जानकारी सूची नम्बर 3 में दी गई है।

4.4 शब्द भार

विभिन्न शब्दों और कुल शब्दों के अनुपात के आधार पर पठन सामग्री में पठन भार का निर्धारण किया जाता है। यदि पठन–साम्ग्री में लगभग हर बीसवां शब्द नया होगा तो अनुपात एक और बीस का होगा। ऐसी स्थिति में विवेच्य पठन सामग्री में पठन भार बीस माना जायेगा जो प्रायः आदर्श माना जाता है। अन्य देशों में लिखी गई पठन पुस्तकों में सामान्यतः यह पठन भार बारह से पन्द्रह तक पाया गया है। इससे कम पठन भार होने पर छात्र के लिए पठन संबंधी कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं और यह स्थिति शैक्षिक दृष्टि से अवांछनीय है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन के अंतगर्त चौथी सूची में, कुल और विभिन्न शब्दों की संख्या दर्शा कर शब्द भार संबंधी आँकड़े प्रस्तुत किये गये है ।

4.5 शब्दों की बारंबारिता

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पठन शिक्षण के प्रारम्भ में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों को बार–बार दुहराना बहुत आवश्यक है, अतः पाठ्य पुस्तक के शब्द भंडार के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह भी है कि विभिन्न शब्दों की बारंबारिता कितनी है। पुस्तक में कुल शब्दों की संख्या, विभिन्न शब्दों की संख्या तथा उनका प्रतिशत, पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों की बारंबारिता के संबंध में एक सामान्य जानकारी दे देते हैं। किन्तु यह बिन्दु इतना महत्वपूर्ण है कि इसके संबंध में विशिष्ट जानकारी अर्थात कितने शब्दों की कितनी बारंबारिता है, प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। अतः सूची नं. 5 में शब्दों की बारंबारिता दर्शायी गई है।

वैसे तो किसी भी शब्द की दस बार की बारंबारिता पर्याप्त मानी जाती है किन्तु सरंचनात्मक शब्दों की बारंबारिता इस से भी अधिक हो सकती है। दस बार से अधिक बारंबारिता वाले शब्दों का आधिक्य न होना इस बात का सूचक है कि पुस्तक में सरंचनात्मक शब्द अपर्याप्त हैं। अतः इस सूची में 11 से 20 तथा उससे अधिक बारंबारिता वाले शब्दों की संख्या अलग–अलग दर्शायी गई हैं। स्पष्ट है, कि एक अथवा दो बारंबारिता वाले शब्दों का अधिक्य इस बात का सूचक है कि पुस्तक में शब्दों की वांछनीय बारंबारिता की ओर ध्यान नही दिया गया है और शैक्षिक दृष्टि से पुस्तक में यह कमी है अतः एक दो बारंबारिता वाले शब्दों की संख्या भी अलग से दर्शायी गई है। तीन से पांच तक बारंबारिता वाले शब्दों की संख्या का आधिक्य भी पूर्णतया संतोषजनक नहीं माना जायेगा। अतः उनकी संख्या भी अलग से दर्शायी गई है। किसी भी पाठ्यपुस्तक के संबंध में यह जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताती है कि पठन शिक्षा की दृष्टि से पाठ्यपुस्तक कितनी अच्छी है।

4.6 पुराने और नए शब्दों की संख्या

जैसे एक पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों को बार–बार दोहराने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार एक कक्षा की पुस्तक के महत्वपूर्ण शब्दों को अगली कक्षा की पुस्तक में दोहराने की आवयकता

होती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द विशेष रूप से उपयोगी होते है और सर्वाधिक उपयोगी शब्दों को प्रारम्भिक कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयोग करना उचित माना जाता है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि पहली कक्षा के उपयोगी शब्द दूसरी कक्षा की पुस्तक में स्वतः आ जायें। किसी भी कक्षा की पठन पुस्तक में यदि ऐसे शब्दों की पर्याप्त संख्या होगी जो उससे पहले की कक्षा की पुस्तक में प्रयुक्त हो चुके हों तो वह इस बात की सूचक होगी कि पूर्व कक्षाओं में सचमुच ही उपयोगी शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त ऐसे शब्दों की पर्याप्त संख्या होने पर छात्र को पढ़ने में सुविधा होगी और पठन योग्यता के विकास में सहायता मिलेगी। यही नहीं, हर पठन पुस्तक के शब्द भंडार में ऐसे नए शब्द होने चाहिए जो अगली कक्षा की पठन पुस्तक के लिए भी आवश्यक हों, जो छात्र को अगली पठन पुस्तक पढ़ने के लिए तैयार करें। सूची नम्बर छः शब्द भंडार के इसी पक्ष को स्पष्ट करने के लिए बनाई गई है। इसके आधार पर यह जाना जा सकता है कि प्रत्येक कक्षा में कितने प्रतिशत शब्द पिछली कक्षा की पुस्तक से लिए गए हैं और कितने शब्द ऐसे सम्मिलित किए गये है जो अगली कक्षा की पुस्तक में भी प्रयुक्त हुए है । इस प्रकार इस सूची से शब्दों की उपयोगिता विदित होती है। सूची नम्बर तीन और छः शब्दों की उपयुक्तता बताने के अतिरिक्त संयुक्त रूप से विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में शब्द भंडार के स्तरीकरण की परीक्षा भी करती हैं।

4.7 एकाधिक राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द

मातृभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का एक लक्ष्य यह है कि छात्र हिन्दी के सर्वप्रचलित शब्दों को समझें और उन्हें अपने भाषा-व्यवहार का अंग बना लें। इस लक्ष्य की पूर्ति तभी सम्भव है जब पाठ्य पुस्तक में ऐसे शब्दों का व्यवहार हुआ हो जो अधिकांश हिन्दी राज्यों में प्रचलित हों। इस संबंध में प्राप्त आँकड़े सूची नम्बर सात में दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त इस सूची में स्थानीय शब्दों के प्रयोग संबंधी आँकड़े भी प्रस्तुत किए गए है। स्थानीय प्रयोगों संबंधी जानकारी दो कारणों से बहुत महत्त्वपूर्ण है—एक तो यह कि छात्रों की तत्कालीन रूचि और आवश्यकता की दृष्टि से पाठ्य पुस्तकों के शब्दों की प्रासंगिकता का अनुमान लगाया जा सकता है, दूसरे पाठ्यक्रम नवीनीकरण प्रयोजना के अंतर्गत स्थानीय भाषायी और अन्य सामग्री का प्रयोग कितना सफलतापूर्वक हुआ है, इस बात की परीक्षा की जा सकती है।

4.8 आधारभूत और सर्वोपयोगी शब्दों की सूचियों में पाए जाने वाले शब्द

पाठ्यपुस्तकों में हिन्दी के सर्वोपयोगी शब्दों का समावेश किस सीमा तक हुआ है, इस बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रत्येक पुस्तक में प्रयुक्त शब्दावली का मिलान तीन सर्वोपयोगी शब्दों की सूचियों से किया गया । यह सूचियाँ हैं—फादर कोयईंग की सूची, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सूची और शिक्षा मंत्रालय की सूची ।

फ़ादर कोयईंग ने प्राथमिक कक्षाओं की पुस्तकों के विश्लेषण के आधार पर हिन्दी के चार हजार सर्वाधिक उपयोगी शब्दों की सूची बनाई थी। इस सूची में जिस शब्द की बारंबारिता सबसे अधिक थी उसको क्रमांक एक दिया गया और जिसकी बारंबारिता सबसे कम थी उसको क्रमांक चार हजार दिया गया और शेष शब्दों को उनकी बारंबारिता के आधार पर इस सूची के अंतर्गत रखा गया है। इस प्रकार डा. कोयईंग ने माना कि उनके अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इन सूचीगत चार हजार शब्दों की बारंबारिता हिन्दी भाषा की पुस्तकों में अन्य शब्दों से अधिक है अतः वे सर्वाधिक उपयोगी हैं । इन चार हजार शब्दों को फादर कोयईंग ने चार उपसूचियों में सूचीगत किया। पहली सूची में वे हजार शब्द थे जिनकी उपयोगिता अन्य तीन हजार शब्दों की तुलना में बारंबारिता के आधार पर सर्वाधिक थी और उसके पश्चात् क्रमशः सूची दो, तीन, चार की उपयोगिता थी। इस अध्ययन में हमने पुस्तकों में प्रयुक्त शब्दों की तुलना इस सूची से की जिसके आधार पर यह जाना जा सके कि डा. कोयईंग के अध्ययन के अनुसार जिन शब्दों को सर्वाधिक उपयोगी पाया गया है, उनमें से कितने शब्द प्रस्तुत पुस्तकों में प्रयुक्त हुए है। अध्ययन की सुविधा के लिए हमने फादर कोयईंग की चार सूचियों को दो–दो हजार की दो सूचियों में परिवर्तित कर लिया। प्रथम और द्वितीय एक–एक हजार की उपसूचियां एक वर्ग में रख लीं और तृतीय और चौथी दूसरे वर्ग में लीं गईं।

डा. जगन्नाथन ने बारंबारिता के आधार पर हिन्दी के बहुप्रयुक्त पांच हजार शब्दों को दो सूचियों में वर्गीकृत किया। पहली सूची में सर्वाधिक बारंबारिता वाले दो हजार शब्दों को रखा और दूसरी सूची में अपेक्षाकृत कम बारबांरिता वाले तीन हजार शब्दों को रखा। डा. जगन्नाथन की सूची केवल प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों पर ही आधारित नहीं है, उसमें हिन्दी के व्यापक प्रयोगों को भी ध्यान में रखा गया है। इस प्रकार बालक की भावी आवश्यकताओं की दृष्टि से यह सूची काफी महत्वपूर्ण है। इसलिए प्रत्येक पाठ्यपुस्तक की शब्दावली की तुलना इस सूची से भी की गई।

कोयईंग और जगन्नाथन की सूचियों की भांति दो सूचियां शिक्षा मंत्रालय ने भी प्रकाशित की हैं। पहली सूची में 500 शब्द है और दूसरी सूची में 2000 शब्द। यह सूचियां शब्दों की बारंबारिता के आधार पर नहीं बल्कि विद्वानों के मत के आधार पर बनाई गई है अर्थात जिन शब्दों को विद्वानों ने सर्वोपयोगी माना, उन्हें सूचीबद्ध किया गया है। पाठ्यपुस्तक शब्दावली की तुलना इन सूचियों से भी की गई है।

इन तीनों सूचियों से तुलना के उपरान्त प्राप्त जानकारी सूची नम्बर 8 में दी गई है। इस सूची में पहले संबंधित पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की संख्या दी गई है तत्पश्चात् यह बताया गया है कि इनमें से कितने शब्द कोयईंग, जगन्नाथन अथवा शिक्षा मंत्रालय की दोनों सूचियों में भी सूचीबद्ध किए गए है। इन शब्दों की संख्या का महत्व दर्शाने के लिए तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए इस बात की जानकारी प्राप्त की गई कि ये शब्द संबंधित पुस्तक के शब्द भंडार का कितना प्रतिशत है तथा स्वयं संबंधित बेसिक शब्दावली का कितना प्रतिशत है। इस जानकारी को और भी अच्छी तरह से देखने के लिए उनका दोनो उपसूचियों संबंधी प्रतिशत भी ज्ञात किया गया है।

4. 9 विभिन्न संरचना वाले शब्दों की संख्या

कक्षा 1 और 2 में इस बात का भी महत्व है कि संरचनात्मक दृष्टि से सरल शब्दों को पहले दिया जाए और कठिन शब्दों को बाद में, जिससे छात्र सरल से कठिन की ओर बढ़ सकें। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत विवेच्य शब्दों का विश्लेषण इस दृष्टि से भी किया गया कि उनमें से कितने दो, तीन अथवा अधिक आक्षरी युक्त शब्द हैं, कितने मात्राविहीन तथा कितने एक, दो अथवा अधिक मात्रा युक्त हैं। इसके अतिरिक्त इस बात की भी परीक्षा की गई कि कितने शब्दों में संयुक्ताक्षरों तथा अनुस्वार आदि का प्रयोग हुआ है। इस संबंध में प्राप्त सूचना सूची नम्बर 9 के अतंर्गत दी गई है। संरचना के आधार पर शब्द भंडार का यह विशलेषण केवल कक्षा 1 और 2 के संबंध में ही किया गया है, अन्य कक्षाओं के संबंध में नहीं। अतः अन्य कक्षाओं के संबंध में सूची न. 9 की जानकारी शून्य है।

4.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्दों की संख्या

प्रस्तुत अध्ययन के अंतगर्त शब्द भंडार का तीसरा आयाम इसकी समृद्धता थी। किसी भी कक्षा की पठन सामग्री में कितने विभिन्न नए और पुराने शब्द हैं, इस आधार पर शब्द भंडार की समृद्धता के संबंध में अनुमान लगाया जा सकता है किन्तु इतने से ही छात्र के शब्द भंडार की समृद्धता के संबंध में पूरी जानकारी नहीं ज्ञात होती। सही अर्थों में समृद्ध शब्द भंडार में न केवल शब्दों की संख्या ही अधिक होनी चाहिए बल्कि उसमें विविधता भी होनी चाहिए अर्थात शब्द भंडार के विभिन्न शब्द जीवन के विभिन्न संदर्भों से संबंधित होने चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन में इस बात को जानने का प्रयत्न किया गया है कि प्रत्येक पुस्तक में सम्मिलित शब्द भंडार में से कितने प्रतिशत शब्द परिवार, समाज, विज्ञान, प्राकृतिक परिवेश, खेलकूद इत्यादि से संबंधित है। यह जानकारी सूची नम्बर 10 में प्रस्तुत की गई है।

— o —

अध्याय- 5

शब्द भंडार का मूल्यांकन

पठन योग्यता के समुचित विकास के लिए आवश्यक है कि प्राथमिक कक्षाओं की भाषा पुस्तकों के शब्द भंडार का चयन और प्रयोग योजनाबद्ध ढंग से आवश्यक पुनरावृत्ति के साथ अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाए। इस संबंध में कोयईग द्वारा लगभग अर्द्ध शताब्दी पूर्व कही गई बात आज भी उतनी ही सच्ची है जितनी उस समय थी। कोयईग ने लिखा है कि संसार में आधुनिक पठन पुस्तकें बनाने में प्रयुक्त शब्दावली के संबंध में विशेष सावधानी बरती जाती है। यह बात छोटी कक्षाओं की पठन पुस्तकों के संबंध में विशेष रूप से सत्य है। यूरोपियन विद्यार्थियों की तुलना में भारतीय विद्यार्थियों की शब्द ज्ञान तथा पढ़ने संबंधी कठिनाईयाँ सामान्य रूप से बहुत ज्यादा हैं। इसका एक कारण यह है कि देश के अधिकांश भागों में घर में बोली जाने वाली भाषा, स्कूल में प्रयुक्त भाषा से बहुत भिन्न होती है । अतः भारतीय भाषाओं की पठन पुस्तकें बनाते समय शब्द चयन के संबंध में और भी अधिक सावधानी बरतनी आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इसी बात की जाँच करना था कि विभिन्न हिन्दी राज्यों में प्राथमिक कक्षाओं के लिए हिन्दी की पठन पुस्तकें तैयार करने में आवश्यक सावधानी बरती गई है अथवा नहीं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित मूल्यांकन निकष निर्धारित किए गए। इन निकषों का निर्धारण भाषा शिक्षण के उद्देश्यों, छात्रों की आयु और रुचि संबंधी आवश्यकताओं के साथ साथ पठन शिक्षण के सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर किया गया।

मूल्यांकन निकष

शब्द भंडार का परिमाण

शब्द भंडार में योजनाबद्ध वृद्धि और उसका स्तरीकरण

शब्दों की आवृत्ति और शब्द भार

शब्द भंडार की उपयुक्तता

शब्द भंडार की समृद्धता

इन मूल्यांकन निकषों की सहायता से, विश्लेषण द्वारा प्राप्त आँकड़ों का मूल्यांकन तीन स्तरों पर किया गया।

क. प्रत्येक राज्य के शब्द भंडार का स्वतंत्र मूल्यांकन।

ख. विभिन्न राज्यों के शब्द भंडार का तुलनात्मक मूल्यांकन।

ग. सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश के समग्र शब्द भंडार का मूल्यांकन।

आगामी पृष्ठों में विभिन्न स्तरों संबंधी आँकडे तथा निष्कर्ष निम्नलिखित क्रम में प्रस्तुत किए गए हैः

रा. 5. राज्यवार आँकड़े और निष्कर्ष :

सबसे पहले सभी राज्यों की कक्षा 1 और 2 तथा दोनों कक्षाओं के संयुक्त शब्द भंडार संबंधी आँकड़े तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। तत्पश्चात कक्षा 3, 4, 5 के राज्यवार आँकड़े तथा निष्कर्ष दिए गए हैं।

रा. सा. 5. सार :

कक्षावार आंकड़ों के पश्चात प्रत्येक राज्य के कक्षा 1 से 5 तक के शब्द भंडार संबंधी आँकड़ों तथा निष्कर्षों को सार रूप में दे दिया गया है।

तु. 5. तुलनात्मक आँकड़े :

प्रत्येक राज्य के आँकड़ों की अलग-अलग प्रस्तुति के पश्चात उन्हें तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पहले विभिन्न राज्यों के कक्षा 1 और 2 के शब्द भंडार संबंधी आँकड़ों को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है और तत्पश्चात कक्षा 3, 4, 5 के आँकड़ों को। इसके पश्चात सभी राज्यों की शब्द भंडार संबंधी औसत तथा रेंज तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

सा. 5. समग्र हिन्दी प्रदेश संबंधी आँकड़े तथा मूल्यांकन

तुलनात्मक प्रस्तुति के पश्चात सम्पूर्ण प्राथमिक स्तर के शब्द भंडार के विभिन्न पक्षों के संबंध में समग्र हिन्दी प्रदेश की औसत और रेंज ज्ञात की गई है।

तु. 5. 11. अन्त में सभी राज्यों के शब्द भंडार का तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

आँकड़ों तथा निष्कर्षों संबंधी सूचियों की क्रम संख्या इस प्रकार है।

राज्य	राज्य तथा कक्षावार आँकड़े तथा निष्कर्ष	राज्यवार सार : आँकड़े तथा निष्कर्ष
बिहार	रा. 5.1.1 – 5.1.11	रा. सा. 5.1.1 – 5.1.3
उत्तरप्रदेश	रा. 5.2.1 – 5.2.11	रा. सा. 5.2. 1.– 5.2.3
मध्यप्रदेश	रा. 5.3.1 – 5.3.11	रा. सा. 5.3. 1.– 5.3.3
दिल्ली	रा. 5.4.1 – 5.4.11	रा. सा. 5.4.1 – 5.4.3
हरियाणा	रा. 5.5.1 – 5.5.11	रा. सा. 5.5.1 – .5.5.3
हिमाचलप्रदेश	रा. 5.6.1 – 5.6.11	रा. सा. 5.6.1 – 5.6.3
राजस्थान	रा. 5.7.1 – 5.7.11	रा. सा. 5.7.1 – 5.7.3
केन्द्रीय विद्यालय	रा. 5.8.1 – 5.8.11	रा. सा. 5.8.1 – 5.8.3

कक्षावार तुलनात्मक आँकड़े : तु. 5.1 – 5.10.3.2
शब्द भंडार की तुलनात्मक औसत तथा रैंज : 5.1 – 5.10.2
समग्र हिन्दी प्रदेश का पठन शब्द भंडार :
सार रूप आँकड़ें : सा. 5.1 – 5.5
समग्र हिन्दी प्रदेश के शब्द भंडार का तुलनात्मक मूल्यांकन : तु. 5.11.1 – 5.11.5.4

राज्यवार
आँकड़े तथा निष्कर्ष
(कक्षा 1 से 2)

कक्षा 1 और 2

रा. 5.1 बिहार

रा. 5.1.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	1623
कक्षा 2	6848
कुल	8471

रा. 5.1.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	697
कक्षा 2	1690
कुल	2387
वे शब्द जो दोनों कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए	− 250
	= 2137

रा. 5.1.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	1623	6848	5225	321.9%
विभिन्न शब्द	697	1690	993	142.46%

रा. 5.1.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	1623	697	2.32
कक्षा 2	6848	1690	4.05
कक्षा 1 + 2	8471	2387	3.54

रा. 5.1.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1+2)	
आवृत्ति संख्या	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	520	74.60	1185	70.1	1705	71.42
3 से 5	138	19.79	247	14.61	385	16.12
6 से 10	22	3.15	134	7.92	156	6.53
11 से 20	13	1.86	73	4.32	86	3.6
21 और अधिक	4	0.57	51	3.01	55	2.3
	697		1690		2387	

रा. 5.1.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द		अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 1	697	—		250	35.86
कक्षा 2	1690	250	14.79	144	8.52

ता. 5.1.7.1अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
केवल बिहार में प्रयुक्त शब्द	242	34.72	516	30.53	758	31.75
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	186	26.68	178	10.53	364	15.24
तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	184	26.39	549	32.48	733	30.70

ता. 5.1.7.2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	697	1690	2387
केवल बिहार में प्रयुक्त शब्द	242	516	758
प्रतिशत	34.72	30.53	31.75
सामान्य शब्द	196	471	667
प्रतिशत	28.12	27.86	27.94
स्थानीय शब्द	46	45	91
प्रतिशत	6.59	2.66	3.81

रा. 5.1.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द
रा. 5.1.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	2137	-----	-------
दोनों सूचियों में पाये जाने वाले शब्द	778	36.40	19.45
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाये जाने वाले शब्द	651	30.46	32.55
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	127	5.94	6.35

रा. 5.1.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथ की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	2137	----	-------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	874	40.89	17.48
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	631	29.52	31.55
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	243	11.37	8.1

रा. 5.1.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	2137	——	——
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	792	37.6	31.68
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में समान रूप से पाए जाने वाले शब्द	556	26.01	27.8
द्वितीय पांच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	236	11.04	47.2

रा. 5.1.9 विभिन्न संरचना वाले शब्दों की संख्या

			कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.1.9.1	(i)	मूल शब्दों की संख्या	169	223	392
	(ii)	तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	266	846	1112
रा. 5.1.9.2	(i)	एक मात्रा वाले शब्द	303	448	751
	(ii)	दो मात्रा वाले शब्द	239	736	975
	(iii)	तीन या तीन से अधिक मात्रा वाले शब्द	45	110	155
	(iv)	एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	23	44	67
	(v)	एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	153	165	318
	(vi)	एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	122	340	462
	(vii)	दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	115	269	384
	(viii)	दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	119	355	474
	(ix)	बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	32	47	79
	(x)	बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	17	48	65
	(xi)	बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	10	33	43

रा. 5.1.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	697	1690	2387
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	39	145	184
प्रतिशत	5.59	8.57	7.9
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	88	308	396
प्रतिशत	12.62	18.22	17.01

रा. 5.1.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

		कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	कुल योग	प्रतिशत
(i)	प्राकृतिक परिवेश	51	7.31	125	7.39	176	7.37
(ii)	मनोभाव सूचक	12	1.72	51	3.00	63	2.63
(iii)	रंगो से संबंधित	07	1.00	06	0.35	13	0.54
(iv)	कृषि संबंधी	37	5.30	34	2.00	71	2.97
(v)	पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	23	3.29	24	1.42	47	1.96
(vi)	शरीर के अंग–उपांग	12	1.72	14	0.82	26	1.08
(vii)	गणना एवं संख्यावाची	9	1.29	22	1.30	31	1.29
(viii)	घर–परिवार संबंधी	20	2.86	30	1.77	50	2.09
(ix)	खानपान संबंधी	74	10.6	75	4.43	149	6.24
(x)	शिक्षा संबंधी	22	3.15	46	2.72	68	2.84
(xi)	विज्ञान संबंधी	11	1.58	27	1.59	38	1.59
(xii)	वस्त्रादि संबंधी	05	0.71	24	1.42	29	1.21
(xiii)	औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	05	0.71	24	1.42	29	1.21
(xiv)	यात्रा संबंधी	10	1.43	06	0.35	16	0.67
(xv)	सामाजिक परिवेश संबंधी	191	27.40	275	16.27	466	19.5
(xvi)	खेल–कूद	4	0.57	13	0.76	17	0.71

रा. 5.1.11 उपर्युक्त आंकडों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5.1.11.1 कक्षा दो की पठित सामग्री कक्षा एक की पठित सामग्री से लगभग चौगुनी है। यह अनुपात वांछनीय नहीं है।

रा. 5.1.11.2 कक्षा एक में सीखे गए शब्दों में से केवल 250 अर्थात 35.8% शब्दों का प्रयोग कक्षा दो की पुस्तक में हुआ है जो कि उस पुस्तक के शब्द भंडार का 15% अंश है।

रा. 5.1.11.3 कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त नवीन शब्दों की संख्या कक्षा एक के नवीन शब्दों से दुगनी है जोकि वांछनीय नहीं है।

रा. 5.1.11.4 कक्षा दो में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की औसत पुनरावृत्ति कक्षा एक की तुलना में अधिक है जबकि होना इसके विपरीत चाहिए था।

रा. 5.1.11.5 कक्षा एक और दो, दोनों की संयुक्त पठित सामग्री में प्रयुक्त शब्दों की औसत आवृत्ति 4 है जो कि बहुत कम है।

रा. 5.1.11.6 दोनों पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम है जिनकी पुनरावृत्ति 5 से अधिक बार हुई है।

रा. 5.1.11.7 दोनों कक्षाओं में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत अधिक है जिनका प्रयोग केवल एक अथवा दो बार हुआ है।

रा. 5.1.11.8 स्थानीय शब्दों की संख्या दोनों में ही बहुत कम है।

रा. 5.1.11.9 लगभग एक चौथाई शब्द ऐसे हैं जो कि हैं तो मानक प्रयोग ही किन्तु जिनका प्रयोग अन्य राज्यों की पुस्तकों में नहीं हुआ है।

रा. 5.1.11.10 संयुक्ताक्षरों, नासिक्य व्यंजनों, उपसर्ग, प्रत्यय युक्त शब्दों की संख्या कक्षा एक की तुलना में कक्षा दो की पुस्तक में अधिक है जो कि उचित है किन्तु इस वृद्धि का अनुपात बहुत अधिक है।

रा. 5.1.11.11 विभिन्न व्याकरणिक श्रेणियों के शब्दों का प्रयोग दोनों कक्षाओं में हुआ है और उनका अनुपात उचित ही है। मूल और तिर्यक शब्दों की भी यही स्थिति है।

रा. 5.1.11.12 शब्दों का चयन उनकी संरचना को ध्यान में रखकर नहीं किया गया है परिणामस्वरूप दोनों कक्षाओं में मात्रायुक्त मात्रा विहीन, और एक तथा दो वर्ण वाले शब्दों का प्रयोग सहज रूप में हुआ है ।

रा. 5.1.11.13 संदर्भों की दृष्टि से इन दोनों पुस्तकों में काफी विविधता है। किन्तु रंगों, संख्याओं, वस्त्रों तथा शरीर के अंगो–उपांगों संबंधी शब्दों की संख्या वांछनीय रूप से कम है।

रा. 5.1.11.14 दोनों पुस्तकों के 51% शब्द ऐसे हैं जिन्हें किसी भी शोध ने हिन्दी की आधारभूत शब्दावली अथवा अधिक उपयोगी शब्दों की सूची में नहीं रखा है।

रा. 5.1.11.15 कक्षा दो के अंत तक छात्रों की पठन शब्दावली और कुल पठन सामग्री का आकार किसी पूर्वनिश्चित आधार पर किया प्रतीत नहीं होता।

रा. 5.1.11.16 पहली से दूसरी कक्षा की पठन शब्दावली में सही अनुपात नहीं है।

रा. 5.1.11.17 पठन सामग्री में शब्द भार बहुत अधिक हैं।

रा. 5.1.11.18 अधिकांश शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं के बराबर है। कुछ शब्दों की जो पुनरावृत्ति हुई है वह संतोषजनक नहीं है।

रा. 5.1.11.19 शब्दों का चयन उपयोगिता और महत्व की दृष्टि से नहीं किया गया।

रा. 5.2 उत्तरप्रदेश

रा. 5.2.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	1683
कक्षा 2	5271
कुल	6954

रा. 5.2.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	675
कक्षा 2	1582
कुल	2257
वे शब्द जो दोनो कक्षाओं की पुस्तको में प्रयुक्त हुए	− 328
	= 1929

रा. 5.2.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	1683	5271	3588	213.19
विभिन्न शब्द	675	1582	9 07	134.37

रा. 5.2.4 शब्द भार(प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	1683	675	2.49
कक्षा 2	5271	1582	3.33
कक्षा 1 + 2	6954	2257	3.08

रा. 5.2.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
आवृत्ति सं.	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	530	78.51	1113	70.35	1643	72.49
3 से 5	89	13.18	252	15.92	341	15.1
6 से 10	37	5.48	112	7.07	149	6.6
11 से 20	14	2.07	60	3.79	74	3.27
21 और अधिक बार	5	0.74	45	2.84	50	2.21
	675		1582		2257	

रा. 5.2.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द		अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 1	675	——		328	48.5
कक्षा 2	1582	328	20.9	659	41.65

रा. 5.2.7.1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
केवल उ.प्र. में प्रयुक्त शब्द	186	27.55	454	28.69	640	26.56
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	189	28.00	181	11.44	370	16.39
अन्य तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	200	29.627	552	34.89	752	33.31

रा. 5.2.7.2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	675	1582	2257
केवल उ. प्र. में प्रयुक्त शब्द	186	454	640
प्रतिशत	27.55	28.79	28.35
सामान्य शब्द	168	423	591
प्रतिशत	24.88	26.73	26.18
स्थानीय शब्द	18	31	49
प्रतिशत	2.66	1.95	2.17

रा. 5.2.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.2.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1929	—	----
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	706	36.6	17.65
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	593	30.74	29.65
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	113	5.85	5.65

रा. 5.2.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथ की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1929	——	———
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	735	38.1	14.7
प्रथमदोहजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	542	28.09	27.1
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	193	10.0	6.43

रा. 5.2.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1929	———	————
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	693	35.92	27.72
दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	480	24.88	24.0
पांच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	213	11.04	42.6

5.2.9 विभिन्न संरचना वाले शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा.5.2.9.1 (i) मूल शब्दों की संख्या	150	231	381
(ii) तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	321	816	1137
रा.5.2.9.2 (i) एक मात्रा वाले शब्द	333	609	942
(ii) दो मात्रा वाले शब्द	237	587	824
(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	29	146	175
(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	36	42	78
(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	172	241	413
(vi) एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	126	322	448
(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	131	257	388
(viii) दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	91	328	419
(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	52	47	99
(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	27	42	69
(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	12	31	43

रा. 5.2.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	675	1582	2257
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	65	155	220
प्रतिशत	9.62	9.79	9.74
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	73	275	348
प्रतिशत	10.81	17.38	15.41

रा. 5.2.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

		कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	कुल योग	प्रतिशत
(i)	प्राकृतिक परिवेश	31	4.59	82	4.18	113	5.00
(ii)	मनोभाव सूचक	26	3.85	39	2.46	65	2.87
(iii)	रंगो से संबंधित	02	0.29	11	0.69	13	0.57
(iv)	कृषि संबंधी	16	2.37	31	1.95	47	2.08
(v)	पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	24	3.55	55	3.47	79	3.50
(vi)	गणना एवं संख्यावाची	09	1.33	14	0.88	23	1.00
(vii)	शरीर के अंग–उपांग	15	2.22	33	2.08	48	2.12
(viii)	घर–परिवार संबंधी	23	3.40	30	1.89	53	2.34
(ix)	खानपान संबंधी	29	4.29	47	2.97	76	3.36
(x)	शिक्षा संबंधी	13	1.92	43	2.71	56	2.48
(xi)	विज्ञान संबंधी	09	1.33	20	1.26	29	1.28
(xii)	वस्त्रादि संबंधी	01	0.14	03	0.18	04	0.17
(xiii)	औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	06	0.88	12	0.75	18	0.79
(xiv)	यात्रा संबंधी	07	1.00	12	0.75	19	0.84
(xv)	सामाजिक परिवेश संबंधी	156	23.11	321	20.29	477	21.00
(xvi)	खेलकूद	11	1.62	9	0.56	20	0.88

रा. 5.2.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5.2.11.1 कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त कुल शब्दों और विभिन्न शब्दों की संख्या कक्षा एक की पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों की तुलना में क्रमशः तीन और ढाई गुणा अधिक है। यह वृद्धि सही अनुपात में नहीं है।

रा. 5.2.11.2 कक्षा एक में कुल शब्दों और विभिन्न शब्दों की संख्या का अनुपात (शब्द भार अंक) 2.49 : 1 और कक्षा दो में 3.33 : 1 है। दोनों कक्षाओं की पुस्तकों का संयुक्त अनुपात 3.08 : 1 है जो कि बहुत अधिक है।

रा. 5.2.11.3 कक्षा एक की पुस्तक में प्रयुक्त 50% विभिन्न शब्दों का प्रयोग कक्षा दो की पुस्तक में हुआ है जो इस पुस्तक के शब्दों का 21 प्रतिशत है। यही स्थिति कक्षा दो की पुस्तक के शब्द भंडार की है जो संतोषजनक कही जा सकती है ।

रा. 5.2.11.4 ऐसे शब्दों की संख्या बहुत अधिक है जिनका प्रयोग पूरी पुस्तक में केवल एक या

दो बार हुआ है। इस प्रकार छात्रों के पठन–अभ्यास के लिए संतोषजनक सामग्री नहीं है। पांच से अधिक पुनरावृत्ति वाले शब्द भी बहुत कम है।

रा. 5.2.11.5 लगभग एक तिहाई शब्द ऐसे हैं जो कि केवल उत्तर प्रदेश की पुस्तकों में ही प्रयुक्त हुए हैं। स्थानीय शब्दों की संख्या तो केवल 2% है जो कि बहुत ही कम है।

रा. 5.2.11.6 लगभग दो तिहाई शब्द ऐसे हैं जो शोध आधारित हिन्दी की आधारभूत शब्दावली अथवा उपयोगी शब्दों की सूची में नहीं है।

रा. 5.2.11.7 कक्षा एक और दो के शब्द भंडार के पारस्परिक अनुपात को देखते हुए कक्षा एक में संयुक्ताक्षर युक्त शब्दों की संख्या बहुत अधिक है।

रा. 5.2.11.8 कक्षा दो की तुलना में कक्षा एक की पुस्तक में बिना मात्रा वाले शब्दों का प्रयोग कम हुआ है। यह स्थिति बहुत असंतोषजनक व असंगत है।

रा. 5.2.11.9 संदर्भों की दृष्टि से शब्द भंडार में काफी विविधता है किन्तु कक्षा एक में रंग व संख्या संबंधी शब्द बहुत कम है। वस्त्रादि संबंधी शब्द दोनों कक्षाओं में कम हैं।

रा. 5.3 मध्यप्रदेश

रा.5.3.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	1937
कक्षा 2	5362
कुल	7299

रा. 5.3.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	799
कक्षा 2	1529
कुल	2328
वे शब्द जो दोनों कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए	− 389
	= 1939

रा. 5.3.3 शब्द भंडार में वृद्धि

कक्षा	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	1937	5362	3425	176.81
विभिन्न शब्द	799	1529	730	91.36

रा. 5.3.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	1937	799	2.41
कक्षा 2	5362	1529	3.50
कक्षा 1 + 2	7289	2328	3.03

रा. 5.3.5 शब्दों की बारंबारिता

आवृत्ति	कक्षा-1 शब्द सं.	कक्षा-1 प्रतिशत	कक्षा-2 शब्द सं.	कक्षा-2 प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2) शब्द सं.	संयुक्त (कक्षा 1 + 2) प्रति.
1–2	639	79.97	1202	78.6	1841	79.08
3–5	95	11.88	152	9.94	247	10.60
6–10	37	4.63	85	5.55	122	5.24
11–20	20	2.50	51	3.33	71	3.04
21 से अधिक	8	1.00	39	2.55	47	2.01
कुल	799		1529		2328	

रा. 5.3.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त	प्रतिशत
कक्षा 1	799	——	——	389	48.68
कक्षा 2	1529	389	25.44	524	34.27

रा. 5.3.7.1अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

नोट : अन्य राज्यों की सामग्री नष्ट हो जाने के कारण मध्यप्रदेश के संबंध में उक्त शब्दों की संख्या ज्ञात नहीं की जा सकी।

रा. 5.3.7.2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	799	1529	2328
केवल मध्यप्रदेश मे प्रयुक्त शब्द	271	483	754
प्रतिशत	33.91	31.58	32.38
सामान्य शब्द	263	471	734
प्रतिशत	32.91	30.8	31.52
स्थानीय शब्द	8	12	20
प्रतिशत	1	0.78	0.85

रा. 5.3.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.3.8.1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1+2 की शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1929	----	--------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	678	35.14	16.95
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	548	28.40	27.4
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	130	6.73	3.25

रा. 5.3.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1929	---	------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	715	37.06	14.03
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	587	30.43	29.35
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	128	6.63	4.26

रा. 5.3.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1929	---	---------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	727	37.68	29.08
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	474	24.57	23.7
द्वितीय पाँच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	253	13.11	50.06

रा. 5.3.9 विभिन्न संरचना वाले शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.3.9.1 (i) मूल शब्दों की संख्या	123	220	343
(ii) तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	285	789	1074

रा. 5.3.9.2	(i) एक मात्रा वाले शब्द	323	589	912
	(ii) दो मात्रा वाले शब्द	238	580	818
	(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	30	140	170
	(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	34	44	78
	(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	166	242	408
	(vi) एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले	122	325	447
	(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	140	250	390
	(viii) दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	81	322	403
	(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	48	46	94
	(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	27	44	71
	(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	12	34	46

रा. 5.3.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार-अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	799	1529	2328
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	20	153	173
प्रतिशत	2.5	10	7.43
अनुस्वार-अनुनासिक युक्त शब्द	45	160	205
प्रतिशत	5.63	10.46	8.8

5.3.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
(i) प्राकृतिक परिवेश	44	5.50	86	5.62	130	5.58
(ii) मनोभाव सूचक	24	3.00	37	2.41	61	2.62
(iii) रंगों से संबंधित	5	0.62	14	0.91	19	0.81
(iv) कृषि संबंधी	17	2.12	28	1.83	45	1.93

(v)	पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	30	3.75	35	2.28	65	2.79
(vi)	शरीर के अंग–उपांग	13	1.62	12	0.78	25	0.93
(vii)	गणना एवं संख्यावाची	8	1.00	30	1.96	38	1.63
(viii)	घर–परिवार संबंधी	22	2.78	28	1.83	50	2.14
(ix)	खानपान संबंधी	30	3.75	49	3.20	79	3.39
(x)	शिक्षा संबंधी	12	1.50	40	2.61	52	2.23
(xi)	विज्ञान संबंधी	7	0.87	18	1.17	25	1.07
(xii)	वस्त्रादि संबंधी	5	0.62	4	0.26	09	0.38
(xiii)	औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	4	0.50	13	0.85	17	0.73
(xiv)	यात्रा संबंधी	5	0.62	13	0.85	18	0.77
(xv)	सामाजिक परिवेश संबंधी	160	20.02	318	20.79	478	20.53
(xvi)	खेलकूद संबंधी	6	0.75	10	0.65	16	0.68

रा. 5.3.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष

रा. 5.3.11.1 कक्षा एक की तुलना में कक्षा दो की पुस्तक में कुल शब्दों तथा विभिन्न शब्दों की संख्या बहुत अधिक अर्थात क्रमशः लगभग ढाई तथा डेढ़ गुणा है।

रा. 5.3.11.2 कक्षा एक में सीखे हुए लगभग 50% शब्दों का प्रयोग कक्षा दो की पुस्तक में किया गया है। यह स्थिति संतोषजनक है किन्तु कक्षा दो के केवल 34% शब्द ही कक्षा तीन की पुस्तक में प्रयुक्त हो पाए हैं।

रा. 5.3.11.3 कक्षा एक की पठित सामग्री में नए तथा पुराने शब्दों का अनुपात अनुपयुक्त है। इस कक्षा की पुस्तक में शब्द भार 2.41 है अर्थात इस पुस्तक का औसतन हर तीसरा शब्द नया है। कक्षा एक की तुलना में कक्षा दो की पुस्तक में शब्द भार अधिक है जबकि होना इसके विपरीत चाहिए था। किन्तु कक्षा दो में पुराने तथा नए शब्दों का अनुपात 3 : 1 है अर्थात पुस्तक का औसतन हर चौथा शब्द नया

है। इस प्रकार कक्षा दो की पुस्तकों में शब्द भार 3.5 है जो कि कक्षा एक की पुस्तक से अधिक अवश्य है किन्तु फिर भी इसे संतोषजनक नहीं माना जा सकता है।

रा. 5.3.11.4 पठित सामग्री में न केवल नए शब्दों की भरमार है, इन नए शब्दों की पुनरावृत्ति भी बहुत कम हुई है। कक्षा एक की पुस्तक में 80% शब्द ऐसे हैं तो कि पूरी पुस्तक में केवल एक या दो बार प्रयुक्त हुए है। यही स्थिति कक्षा दो की पुस्तक के संबंध में भी है। यह स्थिति पठन शिक्षण की दृष्टि से बहुत ही असंतोषजनक है।

रा. 5.3.11.5 कक्षा एक तथा दो के शब्द भंडार को संयुक्त रूप में लेने पर हम पाते हैं कि इन पुस्तकों के 35% शब्द कोयईग की शब्द सूची में भी पाये जाते हैं किन्तु यह शब्द कोयईग की शब्द सूची के केवल 16% हैं। ऐसे शब्दों की संख्या अधिक होनी चाहिए थी। विशेषतः इस संदर्भ में कि कोयईग की सूची मध्यप्रदेश की पुस्तकों को ही आधार बनाकर बनाई गई थी।

जगन्नाथन की सूची से मिलान करने पर भी यही तथ्य प्राप्त होता है कि पुस्तक के 37% शब्द जगन्नाथन ने भी सर्वोपयोगी माने हैं किन्तु ये शब्द जगन्नाथन की सूची के केवल 14% ही हैं। जहां तक शिक्षा मंत्रालय की सूची का सवाल है कि उसके 29% शब्दों का प्रयोग इन दोनों पुस्तकों में हुआ है जो कि इन पुस्तकों के शब्द भंडार का 37% है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि मध्यप्रदेश की पुस्तकों में प्रयुक्त शब्द भंडार सर्वोपयोगिता की दृष्टि से संतोषजनक है।

रा. 5.3.11.6 कक्षा दो की पुस्तक में मूल तथा तिर्यक दोनों प्रकार के शब्दों की संख्या कक्षा एक की तुलना में दुगनी है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ है कि कक्षा दो की पठन सामग्री कक्षा एक की तुलना में ढाई गुना अधिक है।

रा. 5.3.11.7 संदर्भानुसार विश्लेषण करने के पश्चात पाया गया कि दोनों कक्षाओं में सर्वाधिक शब्द सामाजिक परिवेश से हैं तत्पश्चात प्राकृतिक परिवेश को महत्व दिया गया है किन्तु विज्ञान, वस्त्रादि तथा खेलकूद संबंधी शब्दों की संख्या बहुत कम है। इस प्रकार शब्दों के चयन में संदर्भ विविधता तो है किन्तु वह पूर्णतया संतोषजनक नहीं है।

रा. 5.4 दिल्ली

रा. 5.4.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द
कक्षा 1	1670
कक्षा 2	5963
कुल	7633

रा. 5.4.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	905
कक्षा 2	1504
कुल	2409
वे शब्द जो दोनो कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए	− 306
	= 2103

रा. 5.4.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	1670	5963	4293	257.06
विभिन्न शब्द	905	1504	599	66.18

रा. 5.4.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	1670	905	1.84
कक्षा 2	5963	1504	3.96
कक्षा 1 + 2	7633	2409	3.16

रा. 5.4.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
आवृत्ति सं.	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	750	82.87	1043	69.34	1793	74.43
3 से 5	109	12.04	281	18.68	390	14.23
6 से 10	27	2.98	99	6.58	126	4.61
11 से 20	16	1.76	40	2.65	56	2.32
21 से अधिक	3	0.33	41	2.23	44	1.86
कुल	905		1504		2409	

रा. 5.4.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द		अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 1	905	----		306	33.8
कक्षा 2	1504	306	20.34	893	59.37

रा. 5.4.7.1अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
केवल दिल्ली में प्रयुक्त शब्द	353	39.00	433	28.78	786	32.62
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	104	11.49	186	12.36	290	12.03
तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	250	27.62	516	34.30	766	31.79

रा. 5.4.7 .2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	905	1504	2409
केवल दिल्ली में प्रयुक्त शब्द	353	433	786
प्रतिशत	39	28.71	32.62
सामान्य शब्द	311	419	730
प्रतिशत	34.36	22.84	30.3
स्थानीय शब्द	42	14	56
प्रतिशत	4.64	0.76	2.32

रा. 5.4.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.4.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1+2 की शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	2103	----	----------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	803	38.18	20.07
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	644	30.62	32.2
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	159	7.56	7.95

रा. 5.4.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	2103	----	--------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	871	41.41	17.42
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	631	30.00	31.55
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	240	11.41	8.0

रा. 5.4.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	2103	----	----------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	839	42.46	33.56
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	591	28.10	29.55
द्वितीय पाँच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	248	11.79	49.6

रा. 5.4.9. विभिन्न संरचना वाले शब्द

		कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.4.9.1 (i)	मूल शब्दों की संख्या	191	192	383
(ii)	तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	299	809	1108
रा. 5.4.9.2 (i)	एक मात्रा वाले शब्द	405	580	985
(ii)	दो मात्रा वाले शब्द	284	589	873
(iii)	तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	43	136	179
(iv)	एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	33	41	74
(v)	एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	176	226	402
(vi)	एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले	191	247	438
(vii)	दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	157	247	404
(viii)	दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	128	333	461
(ix)	बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	33	37	70
(x)	बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	33	38	71
(xi)	बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	23	28	51

रा. 5.4.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार-अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	905	1504	2409
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	87	152	239
प्रतिशत	9.61	10.1	9.92
अनुस्वार-अनुनासिक युक्त शब्द	93	247	340
प्रतिशत	10.27	16.42	14.11

5.4.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
(i) प्राकृतिक परिवेश	48	5.30	93	6.18	141	5.85

(ii) मनोभाव सूचक	18	1.98	33	2.19	51	2.11
(iii) रंगों से संबंधित	01	0.11	11	0.73	12	0.49
(iv) कृषि संबंधी	32	3.53	44	2.92	76	3.15
(v) पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	33	3.64	26	1.72	59	2.44
(vi) शरीर के अंग–उपांग	18	1.98	12	0.79	30	1.24
(vii) गणना एवं संख्यावाची	26	2.87	26	1.72	52	2.15
(viii) घर–परिवार संबंधी	35	3.86	23	1.52	58	2.40
(ix) खानपान संबंधी	78	8.6	60	3.98	138	5.72
(x) शिक्षा संबंधी	38	4.19	32	2.12	70	2.90
(xi) विज्ञान संबंधी	15	1.65	20	1.32	35	1.45
(xii) वस्त्रादि संबंधी	05	0.55	04	0.26	09	0.37
(xiii) औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	11	1.21	18	1.19	19	0.78
(xiv) यात्रा संबंधी	11	1.21	15	0.99	26	1.07
(xv) सामाजिक परिवेश संबंधी	250	27.65	156	10.37	406	16.85
(xvi) खेलकूद संबंधी	10	1.10	9	0.59	19	0.78

रा. 5.4.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष

रा. 5.4.11.1 कक्षा एक की तुलना में कक्षा दो में प्रयुक्त कुल शब्दों और विभिन्न शब्दों की संख्या बहुत अधिक अर्थात क्रमशः लगभग ढाई तथा डेढ़ गुणा है।

रा. 5.4.11.2 कक्षा एक में सीखे हुए लगभग एक तिहाई शब्दों का ही प्रयोग कक्षा दो में हो पाया है। कक्षा दो के लगभग 50% शब्द कक्षा तीन की पठित सामग्री में काम आ सके हैं।

रा. 5.4.11.3 कक्षा एक की पठित सामग्री में शब्द भंडार बहुत अधिक है जो कि बिल्कुल ही

अनुपयुक्त है। कक्षा दो में शब्द भंडार अपेक्षाकृत कुछ कम अवश्य है किन्तु वह भी असंतोषजनक है। कक्षा एक और दो की संयुक्त पठित सामग्री में शब्द भंडार भार 2.78 है अर्थात इस सामग्री का हर तीसरा चौथा शब्द नया है।

रा. 5.4.11.4 पठित सामग्री में न केवल नए शब्दों की भरमार ही है, इन नए शब्दों की पुनरावृत्ति भी बहुत कम हुई है। लगभग 75% शब्द एक अथवा दो से अधिक बार प्रयुक्त नहीं हुए हैं। केवल 10% शब्द ऐसे है जिनकी पुनरावृत्ति पांच से अधिक बार हुई है। कक्षा एक में तो ऐसे शब्दों की संख्या 5% ही है। पठन अभ्यास की दृष्टि से यह स्थिति बिल्कुल ही अनुपयुक्त है।

रा. 5.4.11.5 कक्षा एक की पठित सामग्री में 39% शब्द ऐसे हैं जो किसी अन्य हिन्दी राज्य की पुस्तक में नहीं प्रयुक्त हुए। इनमें स्थानीय शब्द केवल 4% हैं। कक्षा दो की पठित सामग्री इस दृष्टि से और भी अधिक अनुपयुक्त है।

रा. 5.4.11.6 कक्षा एक की पठन सामग्री में कक्षा दो के अनुपात में संयुक्ताक्षरों की संख्या बहुत अधिक है जो कि अनुपयुक्त है। शेष व्याकरणिक श्रेणियों के शब्द उपयुक्त अनुपात में है।

रा. 5.4.11.7 कक्षा एक में अधिकांशतः मूल शब्दों का प्रयोग हुआ है जबकि कक्षा दो में तिर्यक शब्दों की संख्या अधिक है।

रा. 5.4.11.8 कक्षा एक और दो में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों के अनुपात की दृष्टि से कक्षा दो में बिना मात्रा वाले तथा एक वर्ण, दो वर्ण और तीन वर्ण वाले शब्द अधिक हैं जबकि होना इसके विपरीत चाहिए था ।

रा. 5.4.11.9 दोनों कक्षाओं की पठन सामग्री में सर्वाधिक शब्द सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं। प्राकृतिक परिवेश और खान पान संबंधी शब्द भी पर्याप्त मात्र में है। रंगो और वस्त्रों संबंधी शब्दों की संख्या बहुत कम है।

रा. 5.4.11.10 शब्दों के चयन में संदर्भ संबंधी विविधता संतोषजनक है।

रा. 5.5 हरियाणा

रा.5.5.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	863
कक्षा 2	3672
कुल	4535

रा. 5.5.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	504
कक्षा 2	1130
कुल	16[illegible]
वे शब्द दोनों कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए	[illegible]
	– 1148

रा. 5.5.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	863	3672	2809	325.49
विभिन्न	504	1130	626	124.20

[illegible] भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	863	504	1.71
कक्षा 2	3672	1130	3.24
कक्षा 1 + 2	45[illegible]	1634	2.77

रा. 5.5.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
आवृत्ति सं.	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	433	85.91	800	71.59	1242	76.00
3 से 5	56	11.11	180	15.92	236	14.44
6 से 10	12	2.38	78	6.09	90	5.50
11 से 20	3	0.59	37	3.27	40	2.44
21 से अधिक	0	0	26	2.03	26	1.59
	504		1130		1634	

रा. 5.5.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त	प्रतिशत
कक्षा 1	504	----		186	36.9
कक्षा 2	1130	186	16.46	529	46.41

रा. 5.5.7.1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
केवल हरियाणा राज्य में प्रयुक्त शब्द	107	21.23	306	27.07	413	25.27
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	128	25.39	117	10.35	245	14.99
तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	189	37.5	452	40.00	641	39.22

रा. 5.5.7 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल प्रयुक्त शब्द	504	1130	1634
केवल हरियाणा मे प्रयुक्त शब्द	107	306	413
प्रतिशत	21.23	26.98	25.27
सामान्य शब्द	96	291	387
प्रतिशत	19.04	25.75	23.68
स्थानीय शब्द	11	15	26
प्रतिशत	2.18	1.32	1.59

रा. 5.5.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.5.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1448	----	--------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	662	45.17	16.55
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	532	36.74	26.6
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	130	8.97	6.5

रा. 5.5.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1448	----	--------

दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	664	45.8	13.28
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	484	33.42	24.2
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	180	12.43	6.0

रा. 5.5.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1448	---	---------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	608	41.98	24.32
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	421	29.07	21.5
द्वितीय पाँच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	187	21.91	37.4

रा. 5.5.9 विभिन्न संरचना वाले शब्द

		कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.5.9.1 (i)	मूल शब्दों की संख्या	113	199	312
(ii)	तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	201	597	798
रा. 5.5.9.2 (i)	एक मात्रा वाले शब्द	219	408	627
(ii)	दो मात्रा वाले शब्द	165	435	600
(iii)	तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	18	83	101
(iv)	एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	26	48	74
(v)	एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	120	197	317
(vi)	एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले	69	256	325
(vii)	दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	103	204	307
(viii)	दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	53	232	285
(ix)	बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	45	32	77
(x)	बिना मात्रा के तीन वर्ण-वाले शब्द	31	30	61
(xi)	बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	19	23	42

रा. 5.5.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	504	1130	1634
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	3	112	115
प्रतिशत	0.59	9.91	7.03
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	59	186	245
प्रतिशत	11.7	16.46	14.99

रा. 5.5.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबधित शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
(i) प्राकृतिक परिवेश	36	7.14	58	5.13	94	5.75
(ii) मनोभाव सूचक	08	1.58	41	3.62	49	2.99
(iii) रंगों से संबंधित.	02	0.39	07	0.6	09	6.05
(iv) कृषि संबंधी	28	5.55	19	1.68	47	2.87
(v) पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	21	4.16	23	2.00	44	2.69
(vi) शरीर के अंग–उपांग	17	3.37	18	1.59	35	2.14
(vii) गणना एवं संख्यावाची	05	0.99	25	2.21	30	1.83
(viii) घर–परिवार संबंधी	14	2.77	18	1.59	32	1.95
(ix) खानपान संबंधी	49	9.72	27	2.38	76	4.65

(x)	शिक्षा संबंधी	20	3.96	49	4.33	69	4.[illegible]
(xi)	विज्ञान संबंधी	09	1.78	24	2.12	33	[illegible]
(xii)	वस्त्रादि संबंधी	01	0.19	03	0.20	04	0.2[illegible]
(xiii)	औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	03	0.59	10	0.88	13	0.79
(xiv)	यात्रा संबंधी	07	1.38	10	0.88	17	1.04
(xv)	सामाजिक परिवेश संबंधी	140	0.27	256	22.65	396	24.23
(xvi)	खेलकूद संबंधी	8	1.58	5	0.44	13	0.79

रा. 5.5.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5.5.11.1 कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त कुल और विभिन्न शब्दों की संख्या कक्षा एक की पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों की तुलना में क्रमशः चार और दो गुणा अधिक है। यह वृद्धि सही अनुपात में नहीं है।

रा. 5.5.11.2 कक्षा एक में कुल और विभिन्न शब्दों का अनुपात (शब्द भार अंक) 2.49:1 तथा कक्षा दो में 3.33:1 है। दोनों कक्षाओं की पुस्तकों का संयुक्त शब्द भार 3.08 : 1 है अर्थात औसतन हर चौथा शब्द नया है। यह स्थिति अवांछनीय है।

रा. 5.5.11.3 कक्षा एक की पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों के लगभग एक तिहाई (36.9%) शब्दों का प्रयोग कक्षा दो की पुस्तक में हुआ है। कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों में इन शब्दों का अंश केवल 16% है जो कि बहुत कम है। इसके विपरीत कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों में से अधिक शब्द लगभग (46.8%) कक्षा तीन की पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं।

रा. 5.5.11.4 कक्षा एक की पुस्तक में लगभग 86% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति पूरी पुस्तक में एक दो बार से अधिक नहीं हुई। पठन शिक्षण की दृष्टि से यह स्थिति बहुत ही आपत्तिजनक है। संयुक्त रूप से भी देखा जाए तो दोनों कक्षा की पुस्तकों में तीन चौथाई शब्द एक दो बार से अधिक बार प्रयुक्त नहीं हुए है। पाच बार से अधिक बार प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या बहुत ही कम है।

रा. 5.5.11.5 कक्षा एक की पुस्तक में लगभग एक चौथाई शब्द ऐसे हैं जोकि केवल हरियाणा राज्य में ही प्रयुक्त हुए हैं। अन्य हिन्दी राज्यों की पुस्तकों में नहीं किन्तु इनमें

स्थानीय शब्द केवल दो प्रतिशत ही हैं। कक्षा एक की पुस्तक इस दृष्टि से काफी संतोषजनक है कि इसमें प्रयुक्त दो तिहाई शब्द ऐसे हैं जो अन्य तीन अथवा अधिक राज्यों की पहली पुस्तक में प्रयुक्त हुए है। किन्तु कक्षा दो की पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या केवल आधी ही रह गई है।

रा. 5.5.11.6 यदि शोध आधारित सूचियों की दृष्टि से देखें तो हरियाणा राज्य की पुस्तकों के दो तिहाई शब्द ऐसे हैं जो कि बहुत उपयोगी नहीं है।

रा. 5.5.11.7 संरचना की दृष्टि से शब्दों का चयन संतोषजनक है। कक्षा एक की पुस्तक में बिना मात्रा वाले, एक और दो वर्णों वाले तथा एक और दो मात्रा वाले शब्द सही अनुपात में है। तीन वर्णों व तीन मात्रायुक्त शब्द बहुत कम है।

रा. 5.5.11.8 कक्षा एक की पुस्तक में संयुक्ताक्षर, उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है। संज्ञा शब्दों का अनुपात अधिक है।

रा. 5.5.11.9 कक्षा एक की पुस्तक में शब्दों के तिर्यक रूपों का अनुपात अधिक है।

रा. 5.5.11.10 अधिकांश शब्द सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश से संबधित हैं। रंगों, संख्याओं, विज्ञान, वस्त्रों, स्वास्थ्य संबंधी शब्द बहुत कम हैं।

रा. 5.6 हिमाचलप्रदेश

रा.5.6.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	500
कक्षा 2	5310
कुल	5810

रा. 5.62 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	364
कक्षा 2	1396
कुल	1760
वे शब्द जो दोनों कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए	– 116 = 1644

रा. 5.6.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	500	5310	4810	962
विभिन्न शब्द	364	1396	1032	283.5

रा. 5.6.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	500	364	1.37
कक्षा 2	5310	1396	3.81
कक्षा 1 + 2	5810	1760	3.31

रा. 5.6.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
आवृत्ति सं.	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	335	92.03	1017	72.85	1352	76.8
3 से 5	22	6.04	199	14.25	221	12.5
6 से 10	4	1.09	102	7.30	106	6.02
11 से 20	2	0.54	48	3.43	50	2.8
21 से अधिक	1	0.27	30	2.14	61	3.46
	364		1396		1760	

रा. 5.6.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त	प्रतिशत
कक्षा 1	364	——		116	31.86
कक्षा 2	1396	116	8.3	472	33.8

रा. 5.6.7 .1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
केवल हिमाचल प्रदेश में प्रयुक्त शब्द	100	27.47	392	28.1	492	27.95
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	104	28.57	100	7.16	204	11.59
तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	103	28.29	453	32.44	556	31.59

रा. 5.6.7.2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	364	1396	1760
केवल हि. प्र. में प्रयुक्त शब्द	100	392	492
प्रतिशत	27.47	28.08	27.95
सामान्य शब्द	90	366	456
प्रतिशत	24.72	26.75	25.90
स्थानीय शब्द	10	26	36
प्रतिशत	2.74	1.86	2.04

रा. 5.6.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.6.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1644	----	--------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	663	40.32	16.57
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	538	32.72	26.09
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	125	7.60	6.25

रा. 5.6.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1644	----	-------

दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	664	40.37	13.28
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	520	31.63	26.09
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	144	8.75	4.08

रा. 5.6.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूचीका प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1644	——	——————
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	617	37.53	24.68
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	422	25.66	21.1
द्वितीय पाँच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	195	11.86	39

रा. 5.6.9. विभिन्न संरचना वाले शब्द

		कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.69.1	(i) मूल शब्दों की संख्या	77	193	270
	(ii) तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	135	587	722
रा. 5.6.9.2	(i) एक मात्रा वाले शब्द	150	523	673
	(ii) दो मात्रा वाले शब्द	128	486	614
	(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	21	107	128
	(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	16	44	60
	(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	75	195	270
	(vi) एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले	60	277	337
	(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	72	198	270
	(viii) दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	53	276	329
	(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	25	44	69
	(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	17	31	48
	(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	5	35	40

ता. 5.6.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	364	1396	1760
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	4	216	220
प्रतिशत	1.09	15.47	12.5
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	40	85	125
प्रतिशत	10.98	6.08	7.10

ता. 5.6.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
(i) प्राकृतिक परिवेश	24	9.34	50	3.58	84	4.77
(ii) मनोभाव सूचक	06	1.64	40	2.86	46	2.61
(iii) रंगों से संबंधित	03	0.82	07	0.56	10	0.56
(iv) कृषि संबंधी	15	4.12	23	1.64	38	2.15
(v) पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	17	4.67	20	1.43	37	2.10
(vi) शरीर के अंग–उपांग	10	2.74	09	0.64	19	1.07
(vii) गणना एवं संख्यावाची	04	1.00	36	2.57	40	2.27
(viii) घर–परिवार संबंधी	11	3.00	20	1.43	31	1.76
(ix) खानपान संबंधी	28	7.69	31	2.22	59	3.35
(x) शिक्षा संबंधी	11	3.00	50	3.58	61	3.46
(xi) विज्ञान संबंधी	08	2.19	17	1.21	25	14.20

(xii) वस्त्रादि संबंधी	00	00	06	0.42	06	0.34
(xiii) औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	02	0.54	13	0.93	15	0.85
(xiv) यात्रा संबंधी	06	1.64	05	0.35	11	0.62
(xv) सामाजिक परिवेश संबंधी	114	31.3	338	24.2	452	25.68
(xvi) खेलकूद्र संबंधी	4	1.0	8	0.57	12	0.68

रा. 5.6.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5.6.11.1 कक्षा एक में प्रयुक्त कुल शब्दों की संख्या बहुत ही कम है और कक्षा दो मे बहुत अधिक। कक्षा दो की पुस्तक में एक कक्षा एक ही पुस्तक से दस गुणा शब्द हैं। विभिन्न शब्द कक्षा दो में लगभग चार गुणा अधिक हैं।

रा. 5.6.11.2 कक्षा एक की पुस्तक में विभिन्न शब्द और कुल शब्दों का अनुपात बहुत असंतोषजनक है। कक्षा एक का शब्द भार अंक बहुत अधिक है लगभग हर चार शब्दों में तीन शब्द नए हैं।

रा. 5.6.11.3 कक्षा एक की पुस्तक में प्रयुक्त एक तिहाई शब्द कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं जो इस पुस्तक के शब्द भंडार का लगभग 8 प्रतिशत है। कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों का भी लगभग एक तिहाई अंश कक्षा तीन की पुस्तक में प्रयुक्त हुआ है।

रा. 5.6.11.4 कक्षा एक में 92% शब्द ऐसे हैं जो पूरी पुस्तक में एक दो से अधिक बार नहीं प्रयुक्त हुए। कक्षा दो की पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या लगभग 73% कहने का तात्पर्य यह है कि कक्षा दो तक के पठन शब्द भंडार के तीन चौथाई शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति दो वर्षों में केवल एक दो बार हुई है। पठन अभ्यास की दृष्टि से यह स्थिति नितान्त अवांछनीय है।

रा. 5.6.11.5 कक्षा एक और दो की पुस्तकों में लगभग एक तिहाई शब्द ऐसे हैं जो केवल हिमाचल राज्य की पुस्तक में प्रयुक्त हुए है किन्तु इनमें से अधिकांशतः शब्द ऐसे हैं जो हिन्दी प्रदेश में सामान्य रूप से प्रयुक्त होते हैं। स्थानीय शब्द केवल एक दो प्रतिशत हैं।

रा. 5.6.11.6 दोनों पुस्तकों में प्रयुक्त लगभग आधे शब्द ऐसे हैं जो किसी भी शोध आधारित सूची में सम्मिलित नहीं है। दो अथवा अधिक सूचियों में सम्मिलित शब्द केवल एक तिहाई हैं।

रा. 5.6.11.7 कक्षा दो की तुलना में कक्षा एक की पुस्तक में मूल शब्दों का अनुपात अधिक है।

रा. 5.6.11.8 कक्षा एक की पुस्तक में रूप की दृष्टि से कम जटिल शब्दों का प्रयोग हुआ है।

रा. 5.6.11.9 कक्षा एक की पुस्तक में संयुक्ताक्षर, उपसर्गयुक्त शब्दों का प्रयोग बहुत कम हुआ है। संज्ञा पद क्रिया पदों से अधिक अनुपात में है।

रा. 5.6.11.10 अधिकांश शब्द सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश से संबंधित हैं। कक्षा एक की पुस्तक में रंगों, मनोभावों, विज्ञान, वस्त्रादि, स्वास्थ्य, यात्रा संबंधी और संख्यावाचक शब्द बहुत कम हैं। अतः पठन शिक्षण की दृष्टि से कक्षा एक की पुस्तक नितान्त अनुपयुक्त है। उसमें प्रयुक्त शब्दों की संख्या, आवृत्ति बिल्कुल अपर्याप्त है। इसके अतिरिक्त जिन शब्दों का प्रयोग किया है वे आगामी वर्षों की आवश्यकता की दृष्टि से उपयोगी नहीं है। पठन पुस्तकों का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से नहीं किया गया।

रा. 5.7 राजस्थान

रा. 5.7.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	2560
कक्षा 2	3726
कुल	6286

रा. 5.7.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	856
कक्षा 2	1153
कुल	2009
वे शब्द जो दोनों राज्यों	− 314
की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए =	1695

रा. 5.7.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	2560	3726	1166	45.54
विभिन्न शब्द	856	1153	297	34.69

रा. 5.7.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	2560	856	2.99
कक्षा 2	3726	1153	3.23
कक्षा 1 + 2	6286	2009	3.12

रा. 5.7.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
आवृत्ति सं.	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	628	73.36	804	69.73	1432	71.29
3 से 5	144	16.82	206	17.86	350	17.42
6 से 10	42	4.9	81	7.02	123	6.12
11 से 20	25	2.92	36	3.12	61	3.03
21 से अधिक	17	1.98	26	2.25	43	2.14
	856		1153		2009	

रा. 5.7.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द		अगली कक्षा में प्रयुक्त	प्रतिशत
कक्षा 1	856	——		314	36.68
कक्षा 2	1153	314	27.23	616	53.42

रा. 5.7.7.1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
केवल राजस्थान राज्य में प्रयुक्त शब्द	235	27.45	275	23.85	510	25.38
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	275	32.12	104	9.01	379	18.86
तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	206	24.06	451	39.11	657	32.7

रा. 5.7.7.2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	856	1153	2009
केवल राजस्थान में प्रयुक्त शब्द	235	275	510
प्रतिशत	27.45	23.85	25.38
सामान्य शब्द	207	263	470
प्रतिशत	24.18	22.81	23.39
स्थानीय शब्द	28	12	40
प्रतिशत	3.27	1.04	1.99

रा. 5.7.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.7.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1695	----	--------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	643	37.93	16.07
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	515	30.38	25.75
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	128	7.55	6.4

रा. 5.7.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1695	----	-------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	679	40.05	13.58
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	516	30.44	25.8
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	163	9.61	5.43

रा. 5.7.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1695	----	----------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	636	37.52	25.44
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	438	25.84	21.9
द्वितीय पाँच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	198	11.68	39.6

रा. 5.7.9 विभिन्न संरचना वाले शब्द

		कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.7.9.1 (i)	मूल शब्दों की संख्या	160	165	325
(ii)	तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	409	590	999
रा. 5.7.9.2 (i)	एक मात्रा वाले शब्द	352	443	795
(ii)	दो मात्रा वाले शब्द	365	438	803
(iii)	तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	50	96	146
(iv)	एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	37	36	73
(v)	एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	152	166	318
(vi)	एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले	154	236	390
(vii)	दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	188	177	365
(viii)	दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	169	244	413
(ix)	बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	34	38	72
(x)	बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	26	19	45
(xi)	बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	14	26	40

रा. 5.7.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	856	1153	2009
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	36	127	163
प्रतिशत	4.02	11.01	8.17
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	85	162	247
प्रतिशत	9.92	14.05	12.29

रा. 5.7.10 विभिन्न जीवन संदर्भो से संबधित शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
(i) प्राकृतिक परिवेश	37	4.32	39	3.38	76	3.78
(ii) मनोभाव सूचक	18	2.10	30	2.60	48	2.38

(iii)	रंगों से संबंधित	04	0.46	03	0.26	07	3.34
(iv)	कृषि संबंधी	21	2.45	20	1.73	41	2.04
(v)	पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	19	2.21	26	2.25	45	2.23
(vi)	शरीर के अंग–उपांग	07	0.81	10	0.86	17	0.84
(vii)	गणना एवं संख्यावाची	15	1.75	24	2.08	39	1.94
(viii)	घर–परिवार संबंधी	23	2.60	25	2.16	48	2.38
(ix)	खानपान संबंधी	40	4.67	29	2.51	69	3.43
(x)	शिक्षा संबंधी	31	3.62	38	3.29	29	3.43
(xi)	विज्ञान संबंधी	15	1.75	14	1.21	29	1.44
(xii)	वस्त्रादि संबंधी	02	0.23	04	0.34	06	0.29
(xiii)	औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	03	0.35	11	0.95	14	0.69
(xiv)	यात्रा संबंधी	14	1.63	04	0.34	18	0.89
(xv)	सामाजिक परिवेश संबंधी	221	25.8	258	22.37	479	23.84
(xvi)	खेलकूद संबंधी	8	0.93	10	0.86	18	0.89

रा. 5.7.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा.5.7.11.1 कक्षा दो की पठन सामग्री कक्षा एक की पठन सामग्री से लगभग डेढ़ गुनी है, यह अनुपात वांछनीय नहीं है। कक्षा–2 की पुस्तक की पठन सामग्री को और अधिक किया जा सकता है।

रा.5.7.11.2 कक्षा दो की पुस्तकों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की संख्या भी कक्षा एक की तुलना में केवल 34% अधिक है जो कि उचित नहीं है। इसे भी बढ़ाया जा सकता है।

रा.5.7.11.3 जहां तक शब्द भार का प्रश्न है दोनों कक्षाओं की पठित शब्दावली को संयुक्त रूप में देखने पर पुराने और नए शब्दों का अनुपात 3 : 1 हैं अर्थात राजस्थान की पुस्तकों का शब्द भार 3 है। यह शब्द भार संतोषजनक तो नहीं कहा जा सकता किन्तु अन्य कई राज्यों की तुलना में कहीं अच्छा है।

रा.5.7.11.4 कक्षा एक की पुस्तक में 73% शब्द ऐसे हैं जो केवल एक अथवा दो बार प्रयुक्त हुए

है। शब्दों की इतनी कम आवृत्ति नितान्त अनुपयुक्त है। कक्षा दो में ऐसे शब्दों की संख्या कुछ कम अवश्य है किन्तु फिर भी स्थिति उपयुक्त रही है। कक्षा एक और दो की पुस्तकों में प्रति शब्द की आवृत्ति कम से कम 6 बार तो अवश्य ही होनी चाहिए किन्तु कक्षा एक की पुस्तक में ऐसे शब्दों का प्रतिशत केवल 4 है और कक्षा दो की पुस्तक में 7%।

रा.5.7.11.5 यह संतोष की बात है कि कक्षा एक की पुस्तक के 36% शब्द कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं फिर भी यह संख्या और बढ़ाई जा सकती थी। कक्षा दो की पुस्तक के 53% शब्द कक्षा तीन की पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं, जो कि काफी अच्छी स्थिति है।

रा.5.7.11.6 राजस्थान की पुस्तकों में लगभग चौथाई शब्द ऐसे हैं जो केवल राजस्थान की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए हैं शेष शब्द अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी प्रयुक्त हुए हैं, यह स्थिति संतोषप्रद है।

रा.5.7.11.7 इस पुस्तकों में लगभग 40% शब्द ऐसे हैं जिन्हें कोयईग, जगन्नाथन और शिक्षा मंत्रालय ने महत्वपूर्ण माना है। इसप्रकार इस दृष्टि से इन पुस्तकों का शब्द भंडार काफी संतोषजनक है।

रा.5.7.11.8 जहां तक जीवन के विभिन्न संदर्भो कर प्रश्न है इन पुस्तकों के शब्द भंडार में काफी विविधता दृष्टिगोचर होती है, सबसे अधिक शब्द सामाजिक परिवेश से संबधित हैं। अन्य राज्यों की भाँति राजस्थान की पुस्तकों में भी खेलकूद, वस्त्रादि, शरीर के अंगों तथा रंगों से संबधित शब्द बहुत कम है जो कि संतोषप्रद नहीं है।

रा.5.7.11.9 संरचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो तिर्यक शब्दों की संख्या मूल शब्दों की संख्या से कहीं अधिक है और दोनों कक्षाओं में स्थिति लगभग समान है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजस्थान की पुस्तकों में शब्दों का चयन सहज ढंग से आवश्यकतानुसार किया गया है और इस बात पर अनावश्यक बल नहीं दिया गया है कि मूल शब्दों पर ही अधिक बल दिया जाए।

रा.5.7.11.10 कक्षा एक और दो में एक मात्रा वाले, एक वर्ण वाले तथा एकाधिक मात्रा व वर्ण वाले शब्दों की संख्या लगभग समान है। इस तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि पठन शिक्षण विधि की दृष्टि से शब्दों का चयन कक्षा एक में उपयुक्त नहीं है।

रा.5.7.11.11 समग्र रूप से देखने पर हम पाते हैं कि जहां तक बारंबारिता तथा स्तरीकरण आदि का प्रश्न है, लेखकगण काफी सावधान रहे हैं किन्तु शब्दों की वृद्धि उपयुक्त अनुपात में नहीं हो पाई है।

रा. 5.8 केन्द्रीय विद्यालय

रा.5.8.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द
कक्षा 1	2676
कक्षा 2	4613
कुल	7289

रा. 5.8.2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 1	696
कक्षा 2	1313
कुल	2009
वे शब्द जो दोनों कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए	− 290
	= 1719

रा. 5.8.3 शब्द भंडार में वृद्धि

	कक्षा 1	कक्षा 2	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कुल प्रयुक्त शब्द	2676	4613	1937	72.38
विभिन्न शब्द	696	1313	617	88.64

रा. 5.8.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	प्रयुक्त कुल शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 1	2676	696	3.84
कक्षा 2	4613	1313	3.51
कक्षा 1 + 2	7289	2009	3.62

रा. 5.8.5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 1		कक्षा 2		संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
आवृत्ति सं.	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत	शब्द सं.	प्रतिशत
1 से 2	498	71.55	865	65.87	1363	67.84
3 से 5	89	12.78	213	16.22	302	15.03
6 से 10	38	5.45	114	8.68	152	7.56
11 से 20	47	6.75	76	5.78	123	6.12
21 से अधिक	24	3.44	45	3.42	69	3.43
	696		1313		2009	

रा. 5.8.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	अगली कक्षा में प्रयुक्त	प्रतिशत
कक्षा 1	696	——	290	41.66
कक्षा 2	1313	290 22.08%	583	44.4

रा. 5.8.7.1अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)	
केवल केन्द्रीय विद्यालय में प्रयुक्त शब्द	164	23.56	325	24.75	489	24.34
अन्य तीन राज्यों में प्रयुक्त शब्द	189	27.15	117	8.91	306	15.23
तीन से अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	229	32.9	434	33.05	663	33.0

रा. 5.8.7.2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	696	1313	2009
केवल के. विद्यालय में प्रयुक्त शब्द	164	325	489
प्रतिशत	23.56	24.75	24.34
सामान्य शब्द	159	317	476
प्रतिशत	22.84	24.14	26.69
स्थानीय शब्द	35	8	13
प्रतिशत	0.07	0.6	0.64

रा . 5.8.8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5.8.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 शब्द सूची	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1719	———	———————
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	624	36.30	15.06
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	531	30.89	26.55
द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	93	5.18	4.65

रा. 5.8.8.2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1719	———	———————

दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	665	38.68	13.03
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	515	29.95	25.75
द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	150	8.72	3.00

रा. 5.8.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

	कक्षा 1 + 2 की शब्द सूची	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
कुल विभिन्न शब्द	1719	----	----------
दोनों सूचियों में पाए जाने वाले शब्द	688	40.02	27.52
प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	460	26.75	23
द्वितीय पाँच सौ शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	228	13.26	45.6

रा. 5.8.9. विभिन्न संरचना वाले शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	योग
रा. 5.8.9.1 (i) मूल शब्दों की संख्या	134	178	312
(ii) तिर्यक या विकृत रूपों की संख्या	237	671	908
रा. 5.8.9.2 (i) एक मात्रा वाले शब्द	317	483	800
(ii) दो मात्रा वाले शब्द	268	448	716
(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	44	148	192
(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	34	40	74
(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	151	173	324
(vi) एक मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	120	260	380
(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	146	151	297
(viii) दो मात्रा तीन या तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	106	257	363
(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	38	27	65
(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	18	25	43
(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	10	38	48

रा. 5.8.9.3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
कुल विभिन्न शब्द	696	1313	2009
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	25	99	124
प्रतिशत	3.59	7.53	6.17
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	82	190	272
प्रतिशत	11.78	14.47	13.53

रा. 5.8.10 विभिन्न जीवन संदर्भो से संबधित शब्द

	कक्षा 1	प्रतिशत	कक्षा 2	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
(i) प्राकृतिक परिवेश	45	6.46	69	5.25	114	5.67
(ii) मनोभाव सूचक	11	1.58	34	2.58	45	2.23
(iii) रंगों से संबंधित	10	1.43	09	0.68	19	0.94
(iv) कृषि संबंधी	27	3.87	28	2.13	55	2.73
(v) पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	20	2.87	27	2.00	47	2.33
(vi) शरीर के अंग–उपांग	11	1.587	10	0.76	21	1.04
(vii) गणना एवं संख्यावाची	08	1.14	37	2.81	45	2.23
(viii) घर–परिवार संबंधी	19	2.72	25	1.90	44	2.19
(ix) खानपान संबंधी	46	6.60	56	4.26	54	5.07
(x) शिक्षा संबंधी	23	3.30	48	3.65	71	3.53

(xi) विज्ञान संबंधी	09	1.29	22	1.67	31	1.54
(xii) वस्त्रादि संबंधी	06	0.86	02	0.15	08	0.39
(xiii) औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	00	00	08	0.60	08	0.39
(xiv) यात्रा संबंधी	17	2.44	06	0.45	23	1.14
(xv) सामाजिक परिवेश संबंधी	157	22.55	198	15.0	355	17.67
(xvi) खेलकूद संबंधी	9	1.29	7	0.53	16	0.79

रा. 5.8.11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5.8.11.1 अन्य राज्यों की तुलना में इन पुस्तकों में कुल और विभिन्न शब्दों की संख्या अधिक अवश्य है किन्तु अनुपयुक्त नहीं।

रा. 5.8.11.2 कक्षा दो की पुस्तक में एक कक्षा एक की तुलना में 72% कुल और 88 प्रतिशत विभिन्न शब्द अधिक हैं। होना इसके विपरीत चाहिए था। कुल शब्दों का प्रतिशत अधिक व विभिन्न शब्दों का प्रतिशत कम होना चाहिए था।

रा. 5.8.11.3 शब्द भार अंक अन्य राज्यों की अपेक्षा कम है। अधिकांशतः हर पांचवा शब्द नया है किन्तु यह स्थिति भी अधिक संतोषजनक नहीं है।

रा. 5.8.11.4 कक्षा एक की पुस्तक के लगभग 41% शब्द कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त हो सके हैं जबकि कक्षा दो के ऐसे शब्दों की संख्या 44% है। किन्तु कक्षा एक की पुस्तक के कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त शब्द इस पुस्तक के शब्द भंडार का केवल 22% है अथवा केवल पांचवा अंश पुराना है शेष सब नए शब्द हैं।

रा. 5.8.11.5 शब्दों की आवृत्ति की दृष्टि से यह पुस्तक माला भी अधिक संतोषजनक प्रतीत नहीं होती। कक्षा एक के लगभग 71% शब्द ऐसे हैं जो पूरी पुस्तक में एक अथवा दो बार प्रयुक्त हुए। दोनों पुस्तकों में संयुक्त रूप से दो-तिहाई शब्द ऐसे ही हैं। केवल 16% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति दो वर्षों की पठन सामग्री में पांच बार से अधिक हुई। पठन शिक्षण की दृष्टि से यह स्थिति अच्छी नहीं है।

रा. 5.8.11.6 दोनों पुस्तकों में केवल एक चौथाई शब्द ऐसे है जो इन्हीं पुस्तकों में पाए जाते हैं। 60% शब्द ऐसे है जो अन्य तीन अथवा अधिक राज्यों की पुस्तकों में पाए जाते हैं। इस प्रकार ये पुस्तकें राष्ट्रीय स्तर का प्रतिनिधित्व करती हैं।

रा. 5.8.11.7 किन्तु शोध आधारित सूचियों को देखने पर ज्ञात होता है कि स्थिति संतोषजनक नहीं है। 53% शब्द ऐसे हैं जो किसी भी शोध आधारित सूची में प्राप्त नहीं होते। तीनों सूचियों में प्राप्त होने वाले शब्दों की संख्या केवल 20% है अर्थात शब्दों की व्यापक उपयोगिता का ध्यान यहाँ भी नहीं रखा गया है।

रा. 5.8.11.8 कक्षा एक की तुलना में कक्षा दो की पुस्तक में तिर्यक शब्दों का अनुपात बहुत अधिक है।

रा. 5.8.11.9 कक्षा एक की पुस्तक में दो वर्ण वाले तथा मात्रा विहीन अथवा एक मात्रा युक्त शब्दों का अपेक्षाकृत बाहुल्य है।

रा. 5.8.11.10 कक्षा एक की पुस्तक में नासिक्य व्यंजन युक्त शब्द काफी अधिक मात्रा में विद्यमान है। संयुक्ताक्षर और प्रत्यय युक्त शब्दों का भी कक्षा एक की पुस्तक में पर्याप्त समावेश है। संज्ञा और क्रिया पदों की संख्या समुचित है।

रा. 5.8.11.11 सर्वाधिक संख्या सामाजिक परिवेश संबंधी शब्दों की है। प्राकृतिक परिवेश संबंधी शब्दों के बाद तीसरे नम्बर पर खान–पान संबंधी शब्दों की संख्या है। केवल इन्हीं पुस्तकों में रंग सूचक शब्दों की समुचित संख्या प्राप्त होती है। संख्यावाची शब्द कक्षा एक में जरूर कम हैं किन्तु कक्षा दो की पुस्तक में इस अभाव की पूर्ति हो गयी है। यही बात विज्ञान संबंधी शब्दों की संख्या के संबंध में कही जा सकती है। वस्त्रादि तथा स्वास्थ्य संबंधी शब्दों की संख्या दोनों पुस्तकों में पर्याप्त है।

राज्यवार
आँकड़े तथा निष्कर्ष
(कक्षा 3 से 5)

कक्षा 3, 4, और 5

रा. 5. 1 बिहार

रा. 5. 1. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	13563	7151
कक्षा 4	22016	9932
कक्षा 5	24206	12379

रा. 5. 1. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	2448
कक्षा 4	3087
कक्षा 5	3183

रा. 5. 1. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 1. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	13,563	6848	6615	96.59
कक्षा 4	22016	13563	8453	62.32
कक्षा 5	24206	22016	2190	9.94

ता. 5. 1. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	2448	1690	758	44.85
कक्षा 4	3087	2448	639	26.1
कक्षा 5	3183	3087	96	3.10

ता. 5. 1. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	7151	2448	2.92
कक्षा 4	9932	3087	3.21
कक्षा 5	12379	3183	3.88

ता. 5. 1. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	1805	73.73	2290	74.18	2238	70.31
3 से 5	328	13.39	445	14.41	537	16.87
6 से 10	193	7.88	189	6.12	214	6.72
11 से 20	81	3.3	100	3.23	110	3.45
21 से अधिक	41	1.67	63	2.04	84	2.63
	2448		3087		3183	

रा. 5. 1. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	2448	144	5.88	1795	73.32
कक्षा 4	3087	1795	58.14	2063	66.82
कक्षा 5	3183	2063	64.81	–	–

रा. 5. 1. 7.1. अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल बिहार में प्रयुक्त शब्द	913	37.29	1070	34.66	897	28.18
2. बिहार के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	428	17.51	504	16.32	510	16.02
3. बिहार के अतिरिक्त दो राज्यों मे प्रयुक्त शब्द	268	10.94	341	11.04	394	12.37
4. बिहार के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	839	34.27	1172	37.96	1382	43.41

ता. 5. 1. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	2448	3087	3186
केवल बिहार में प्रयुक्त शब्द	913	1070	897
प्रतिशत	37.29	34.66	28.18
सामान्य शब्द	1535	2017	2289
प्रतिशत	62.70	65.33	71.84
स्थानीय शब्द	49	52	86
प्रतिशत	2.00	1.68	2.69

रा. 5. 1. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 1. 8. 1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2448	1079	44.09	26.9	838	34.23	41.9	241	9.08	12.5
कक्षा 4	3087	1277	41.36	31.92	897	29.05	29.05	380	1.23	19.00
कक्षा 5	3183	1359	42.69	33.97	957	30.67	47.85	402	12.62	20.1

रा. 5. 1. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2448	1163	47.5	23.26	786	32.1	39.3	377	15.4	12.56
कक्षा 4	3087	1547	50.1	30.94	954	30.9	47.7	593	19.2	19.76
कक्षा 5	3183	1540	48.38	30.8	918	28.84	45.9	622	19.54	20.73

रा. 5. 1. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2448	718	29.33	35.9
कक्षा 4	3087	725	23.48	36.25
कक्षा 5	3183	755	23.71	36.75

रा. 5. 1. 9 शून्य

ता. 5. 1. 10. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	227	9.27	298	9.65	246	7.72
2. मनोभाव सूचक	39	1.59	78	2.52	93	2.92
3. रंगों से संबंधित	11	0.44	34	1.1	13	.4
4. कृषि संबंधी	23	.93	40	1.29	40	1.25
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	52	2.12	52	1.68	36	1.13
6. शरीर के अंग–उपांग	112	4.57	107	3.46	68	2.13
7. गणना एवं संख्यावाची	136	5.55	180	5.83	124	3.89
8. घर–परिवार संबंधी	55	2.24	77	2.49	56	1.75
9. खान–पान संबंधी	58	2.36	55	1.78	30	.94
10. शिक्षा संबंधी	27	1.1	49	1.58	75	2.35
11. विज्ञान संबंधी	30	1.22	36	1.16	41	1.28
12. वस्त्रादि संबंधी	13	.53	41	1.32	16	.5
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	14	.57	27	.87	31	.97
14. यात्रा संबंधी	26	1.06	19	.61	14	.43
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	512	20.91	1738	56.3	1393	43.76
16. खेल–कूद	12	.49	19	.61	12	.37
17. ऐतिहासिक	65	2.65	140	4.53	162	5.08

रा. 5. 1. 11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा . 5. 1. 11. 1 कक्षा तीन और चार में पठन सामग्री में वृद्धि उचित अनुपात में ही की गई है किन्तु कक्षा पांच की पठन सामग्री में वृद्धि का अनुपात बहुत कम है जो कि वांछनीय नहीं है।

रा . 5. 1. 11. 2 संतोष का विषय है कि कक्षा दो में जिस प्रकार असंतुलित अनुपात में कुल पठन सामग्री और विभिन्न शब्दों में वृद्धि की गई थी वैसा इन कक्षाओं की पुस्तकों में नहीं किया गया है।

रा . 5. 1. 11. 3 कक्षा पांच की पुस्तक में कुल पठन सामग्री की भांति विभिन्न शब्दों में वृद्धि का अनुपात वांछनीय नहीं है।

रा . 5. 1. 11. 4 कक्षा एक और दो की भांति शब्द भार के संबंध में स्थिति किसी भी पुस्तक में संतोषजनक नहीं है। कक्षा पांच में कक्षा चार की तुलना में अधिक शब्द भार है और कक्षा चार में कक्षा तीन की तुलना में अधिक, जबकि होना इसके विपरीत चाहिए था।

रा . 5. 1. 11. 5 कक्षा पांच का शब्द भार उचित है।

रा . 5. 1. 11. 6 तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में लगभग 11-12% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृति पांच बार से अधिक हुई। यह स्थिति संतोषजनक है विशेषतः तब जबकि इन में संरचनात्मक शब्दों की गणना सम्मिलित नहीं की गई है।

रा . 5. 1. 11. 7 लगभग 70-74 प्रतिशत शब्दों का प्रयोग केवल एक अथवा दो बार करना अत्यन्त आपत्तिपूर्ण स्थिति है।

रा . 5. 1. 11. 8 प्रत्येक कक्षा के लगभग 60 प्रतिशत शब्दों का अगली कक्षा में प्रयुक्त होने की स्थिति के आधार पर कहा जा सकता है कि शब्द सामग्री का स्तरीकरण उचित प्रकार से किया गया है।

रा . 5. 1. 11. 9 प्रत्येक कक्षा की पुस्तक में लगभग दो तिहाई शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी हुआ है। यह स्थिति संतोषजनक है।

रा . 5. 1. 11. 10 कक्षा दो के पश्चात पाठ्यपुस्तकों में स्थानीय शब्दों का प्रयोग उत्तरोत्तर कम होना चाहिए किन्तु इतना कम नहीं होना चाहिए जितना इन पुस्तकों में हुआ है।

रा . 5. 1. 11. 11 संक्षेप में कहा जा सकता है कि समग्र रूप से देखने पर हम पाते हैं कि कक्षा एक और दो की तुलना में कक्षा तीन से पांच तक की पुस्तकों का निर्माण शब्द चयन और प्रयोग की दृष्टि से अधिक सावधानीपूर्वक हुआ है।

रा . 5. 1. 11. 12 तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में जिन सामान्य शब्दों का प्रयोग हुआ है वे कोयईंग और जगन्नाथन की सूचियों के 55-60% शब्द हैं। इस सूचना के आधार पर कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों में वास्तव में उपयोगी और मानक शब्द भंडार का प्रयोग हुआ है।

रा . 5. 1. 11. 13 कक्षा एक और दो की भांति इन कक्षाओं की पुस्तकों में सर्वाधिक संख्या सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश से संबंधित शब्दों की है जो कि सर्वथा उचित है किन्तु अन्य संदर्भों से संबंधित शब्दों का अनुपात प्रत्येक कक्षा की पठन सामग्री में लगभग समान ही है जो कि उचित नहीं है। उदाहरणतः मनोभावों, विज्ञान, यात्रा इत्यादि से संबंधित शब्दों का कक्षा पांच की पुस्तक में कक्षा एक की तुलना में वर्तमान स्थिति से अधिक होना चाहिए था। इसी प्रकार स्वास्थ्य और खेलकूद संबंधी शब्द कक्षा तीन की पुस्तक में अधिक होने चाहिए थे।

रा. 5. 2 उत्तर प्रदेश

रा. 5. 2. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	8586	5987
कक्षा 4	11906	8884
कक्षा 5	11879	7761

रा. 5. 2. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	2071
कक्षा 4	2326
कक्षा 5	2493

रा. 5. 2. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 2. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	8586	5271	3315	62. 89
कक्षा 4	11906	8586	3320	38.66
कक्षा 5	11879	11906	− 27	− .22

ता. 5. 2. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	2071	1582	489	30.91
कक्षा 4	2326	2071	255	12.31
कक्षा 5	2493	2326	167	6.69

ता. 5. 2. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	5987	2071	2.89
कक्षा 4	8884	2326	3.81
कक्षा 5	7761	2493	3.11

ता. 5. 2. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	1447	69.86	1566	67.32	1855	74.40
3 से 5	388	18.37	417	17.92	361	14.48
6 से 10	122	5.89	180	7.73	153	6.13
11 से 20	75	3.62	107	4.60	93	3.73
21 से अधिक	39	1.88	56	2.40	31	1.24
	2071		2326		2493	

रा. 5. 2. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	2071	659	31.82	1493	72.09
कक्षा 4	2326	1493	64.18	1652	71.02
कक्षा 5	2493	1652	66.26	—	—

रा. 5. 2. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल उत्तरप्रदेश में प्रयुक्त शब्द	599	28.92	489	21.02	641	25.71
2. उत्तरप्रदेश के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	358	17.28	342	14.70	393	15.76
3. उत्तरप्रदेश के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	259	12.50	276	11.86	273	10.95
4. उत्तरप्रदेश के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	855	41.33	1219	52.40	1183	47.57

ग. 5. 2. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	2071	2326	2493
केवल उत्तरप्रदेश में प्रयुक्त शब्द	599	489	641
प्रतिशत	28.92	21.02	25.71
सामान्य शब्द	1483	1837	1852
प्रतिशत	71.60	78.97	72.28
स्थानीय शब्द	48	37	55
प्रतिशत	2.31	1.59	2.06

रा. 5. 2. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 2. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2071	996	48.09	24.9	771	27.22	38.35	225	10.86	11.25
कक्षा 4	2326	1136	48.83	28.4	840	36.11	42.00	296	12.72	14.8
कक्षा 5	2493	1110	44.52	27.75	802	32.17	40.1	308	12.35	15.4

रा. 5. 2. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2071	1019	49.20	20.38	681	32.88	34.5	338	16.32	11.26
कक्षा 4	2336	1313	56.44	26.26	838	36.02	41.9	475	20.42	15.83
कक्षा 5	2493	1188	47.65	23.76	730	29.28	36.5	458	18.37	15.26

रा. 5. 2 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2071	563	27.18	28.15
कक्षा 4	2326	653	28.07	32.65
कक्षा 5	2493	623	24.98	31.15

रा. 5. 2. 9 शून्य

ता. 5. 2. 10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	194	9.37	215	9.24	331	13.27
2. मनोभाव सूचक	27	1.30	63	2.70	95	3.81
3. रंगों से संबंधित	11	0.53	12	0.51	16	0.64
4. कृषि संबंधी	21	1.01	37	1.78	37	1.48
5. पशु–पक्षी तथा जीव जंतु संबंधी	40	1.93	42	1.80	42	1.68
6. शरीर के अंग–उपांग	85	4.13	86	3.68	84	3.36
7. गणना एवं संख्यावाची	112	5.41	120	5.15	197	7.90
8. घर–परिवार संबंधी	33	1.59	59	2.53	74	2.96
9. खान–पान संबंधी	61	2.94	58	2.49	30	1.20
10. शिक्षा संबंधी	28	1.35	32	1.37	84	3.36
11. विज्ञान संबंधी	13	0.62	37	1.78	137	5.49
12. वस्त्रादि संबंधी	13	0.62	21	0.90	30	1.20
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	21	1.01	19	0.81	23	0.92
14. यात्रा संबंधी	27	1.30	13	0.55	26	1.04
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	1261	60.91	1236	53.13	1489	59.72
16. खेल–कूद	05	0.24	10	0.42	10	0.40
17. ऐतिहासिक	89	4.29	145	6.23	109	4.37

रा. 5. 2. 11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5. 2. 11. 1 कक्षा तीन और चार में पठन सामग्री मे वृद्धि उचित अनुपात में ही की गई है किन्तु कक्षा पांच की पठन सामग्री में वृद्धि का अनुपात बहुत कम है। कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा एक और दो की तुलना में 20% शब्द अधिक है और कक्षा चार की पुस्तक में कक्षा तीन की पुस्तक की तुलना में लगभग 25% शब्द अधिक हैं किंतु कक्षा पांच की पुस्तक में कक्षा चार की तुलना में .2% शब्द कम हैं, यह स्थिति विचारणीय है। आशा की जाती है कि कक्षा दो के अंत तक छात्र नए शब्दों को स्वयं पढ़ना सीख जायेंगे। इस दृष्टि से कक्षा तीन की पुस्तक कक्षा एक और दो के सम्मिलित आकार से कहीं अधिक बड़ी होनी चाहिए किन्तु उत्तरप्रदेश में यह वृद्धि केवल 20% है जो कि संतोषजनक नहीं कही जा सकती। हमारे विद्यालयों में कक्षा तीन से लिखित परीक्षा प्रारम्भ हो जाती है। भाषा पर इतना अधिकार हो जाने पर कक्षा चार में आशा की जाती है कि उनकी पठन सामग्री काफी अधिक हो किन्तु कक्षा चार की पुस्तक में कक्षा तीन की तुलना में केवल 30% की ही वृद्धि हुई है जो कि संतोषजनक नहीं है। कक्षा एक से पांच तक की पांचो पुस्तकों में आशा की जाती है कि कक्षा पांच की पुस्तक सबसे बड़ी होगी किन्तु इस अध्ययन के अनुसार कक्षा पांच की पुस्तक कक्षा चार की तुलना में कुछ छोटी ही बैठती है। यह तथ्य इस बात की ओर संकेत करता है कि विभिन्न कक्षाओं की पठन सामग्री का निर्माण करते समय उनकी मात्रा का स्तरीकरण नहीं किया गया।

रा. 5. 2. 11. 2 छात्र विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है आशा की जाती है कि उसके शब्द भंडार में वृद्धि की गति तेज होती जायेगी किन्तु प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार उत्तरप्रदेश की कक्षा तीन में 24%, कक्षा चार में 11% और कक्षा पांच में केवल 7% विभिन्न शब्दों की वृद्धि हुई है।

रा. 5. 2. 11. 3 जहां तक शब्द भार की स्थिति है वह कक्षा एक और दो की पुस्तकों के समान ही असंतोषजनक है।

रा. 5. 2. 11. 4 कक्षा चार और पाँच में 60% से अधिक शब्द ऐसे हैं जो पिछली कक्षाओं में प्रयुक्त हो चुके हैं। इसी प्रकार प्रत्येक पुस्तक के तीन चौथाई शब्द अगली कक्षाओं में प्रयुक्त हुए हैं। जहां तक स्तरीकरण का प्रश्न है यह स्थिति संतोषजनक है किन्तु साथ ही इस बात का भी संकेत करती है कि प्रत्येक कक्षा की पुस्तकों में नए शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। कक्षा चार और पांच की पुस्तकों में नए शब्दों का प्रतिशत कहीं अधिक होना चाहिए था।

रा. 5. 2. 11. 5 कक्षा एक और दो की भांति इन तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में भी 70% शब्दों ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल एक या दो बार ही हुआ है। पठन अभ्यास और अर्थ बोध के विकास के लिए यह स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती।

रा. 5. 2. 11. 6 तीनों कक्षाओं में 20-30% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल इस प्रदेश की पुस्तक में हुआ है, अन्य प्रदेशों की पुस्तकों में नहीं।

रा. 5. 2. 11. 7 इन शब्दों में केवल 2% शब्द ही ऐसे हैं जिन्हें स्थानीय कहा जा सकता है शेष हिन्दी के मानक शब्द हैं किन्तु शायद इतने उपयोगी और बहुप्रयुक्त नहीं है कि अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी उनका व्यवहार हुआ हो। ऐसे शब्दों की संख्या और भी कम होनी चाहिए थी। संतोष की बात है कि इन तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में लगभग 45% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी हुआ है। पुस्तक की उपयोगिता बढ़ाने के लिए ऐसे शब्दों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए।

रा. 5. 2. 11. 8 पिछली कक्षाओं की भांति इन कक्षाओं में भी सर्वाधिक संख्या ऐसे शब्दों की है जिनका संबंध सामाजिक परिवेश से है और उसके बाद प्राकृतिक परिवेश से संबंधित शब्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा की पुस्तकों में इतने अधिक सामाजिक और प्राकृतिक संदर्भ होने स्वाभाविक तथा संतोषप्रद है किन्तु उच्चतर प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान, खेलकूद और मनोभाव आदि शब्दों की संख्या सामाजिक और प्राकृतिक शब्दों की संख्या से अधिक होती तो ज्यादा अच्छा रहता।

रा. 5. 3 मध्यप्रदेश

रा. 5. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	11655	5530
कक्षा 4	16978	7765
कक्षा 5	13554	9996

रा. 5. 3. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	1776
कक्षा 4	2255
कक्षा 5	2781

रा. 5. 3. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 3. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	प्रतिशत
कक्षा 3	11655	5362	6293	117.36
कक्षा 4	16978	11655	5323	45.67
कक्षा 5	13558	16978	−3420	−20.14

रा. 5. 3. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	1776	1529	247	16.15
कक्षा 4	2255	1776	479	26.97
कक्षा 5	2781	2255	526	23.32

रा. 5. 3. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	5530	1776	3.11
कक्षा 4	7765	2255	3.44
कक्षा 5	9996	2781	3.59

रा. 5. 3. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	1293	72.80	1591	70.55	2113	75.97
3 से 5	281	15.82	370	16.40	381	13.70
6 से 10	105	5.91	152	6.74	168	6.04
11 से 20	61	3.43	83	3.68	70	2.51
21 से अधिक	36	2.02	59	2.61	49	1.76
	1776		2255		2781	

रा. 5. 3. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	1776	524	29.51	1381	77.75
कक्षा 4	2255	1381	61.24	1673	74.19
कक्षा 5	2781	1673	60.15	—	—

रा. 5. 3. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल मध्यप्रदेश में प्रयुक्त शब्द	535	30.12	451	20.00	808	29.05
2. मध्यप्रदेश के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	279	15.70	384	17.02	471	16.93
3. मध्यप्रदेश के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	198	11.14	307	13.61	305	10.96
4. मध्यप्रदेश के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	764	43.13	1113	49.35	1197	43.04

रा. 5. 3. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	1776	2255	2781
केवल मध्यप्रदेश में प्रयुक्त शब्द	535	451	808
प्रतिशत	30.12	20.00	29.5
सामान्य शब्द	1241	1804	1973
प्रतिशत	69.87	80.00	70.94
स्थानीय शब्द	48	37	117
प्रतिशत	2.70	1.64	4.20

रा. 5. 3. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 3. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1776	855	48.14	21.37	686	38.62	34.3	169	9.51	8.45
कक्षा 4	2255	1073	47.58	26.82	811	35.96	40.55	262	11.61	13.1
कक्षा 5	2781	1105	39.73	27.62	774	27.83	38.7	331	11.90	16.55

रा. 5. 3. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1776	856	48.19	17.12	615	34.62	30.75	241	13.56	8.03
कक्षा 4	2255	1251	55.47	25.02	831	36.85	41.55	420	18.62	14.00
कक्षा 5	2781	1144	41.24	22.88	776	27.90	38.8	368	13.23	12.26

रा. 5. 3. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1776	518	29.16	25.9
कक्षा 4	2255	644	28.55	32.2
कक्षा 5	2781	732	26.32	36.6

रा. 5. 3. 9

शून्य

5. 3. 10. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	162	9.12	189	8.38	163	5.86
2. मनोभाव सूचक	28	1.57	51	2.26	89	3.20
3. रंगों से संबंधित	11	0.61	08	0.35	17	0.61
4. कृषि संबंधी	12	0.67	18	0.79	32	1.15
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	38	2.13	54	2.39	49	1.76
6. शरीर के अंग–उपांग	82	4.61	91	4.03	93	3.34
7. गणना एवं संख्यावाची	81	4.56	138	6.11	122	4.38
8. घर–परिवार संबंधी	53	2.98	45	1.99	67	2.40
9. खान–पान संबंधी	32	1.80	25	1.10	28	1.00
10. शिक्षा संबंधी	30	1.68	32	1.41	46	1.65
11. विज्ञान संबंधी	7	0.39	13	057	46	1.65
12. वस्त्रादि संबंधी	12	0.67	12	0.53	15	0.53
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	12	0.67	12	0.53	26	0.92
14. यात्रा संबंधी	8	0.45	12	0.53	15	0.53
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	1073	60.41	1166	51.70	1265	45.48
16. खेल–कूद	14	0.78	08	0.35	15	0.53
17. ऐतिहासिक	53	2.98	97	4.30	94	3.38

रा. 5. 3. 11. उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5. 3. 11. 1 मध्यप्रदेश में कक्षा एक और दो की पुस्तकों में शब्द भंडार की वृद्धि के संबंध में सावधानी नहीं बरती गई है किन्तु जहां तक कक्षा तीन और चार की पुस्तकों का प्रश्न है उनके शब्द भंडार में 30-37% तक शब्दों की वृद्धि की गई जो कि संतोषजनक मानी जा सकती है; किन्तु जहां तक कक्षा पांच की पुस्तकों का प्रश्न है उसका आकार कक्षा चार की पुस्तकों से छोटा है। अतः कक्षा पांच के शब्द भंडार में वृद्धि होने के स्थान पर उसमें कमी आई है जो कि वांछनीय नहीं है।

रा. 5. 3. 11. 2 जहां तक विभिन्न शब्दों का प्रश्न है, कक्षा दो में तो बहुत सारे विभिन्न शब्दों की वृद्धि की गई है किन्तु कक्षा तीन से पांच तक वृद्धि की यह गति इतनी तीव्र नहीं है। कक्षा तीन में लगभग 16% और कक्षा पांच में लगभग 23% विभिन्न शब्दों की वृद्धि हुई है जिसे कि कुछ और बढ़ाया जा सकता है। कक्षा चार की पुस्तकों में 26% शब्दों की वृद्धि हुई है जिसे संतोषजनक कहा जा सकता है।

रा. 5. 3. 11. 3 कक्षा दो की भांति कक्षा तीन, चार और पांच में भी शब्द भार लगभग 3 : 1 ही रहा है किन्तु कक्षा तीन-पांच तक चूँकि संरचनात्मक शब्दों की गणना नहीं की गई, इन कक्षाओं के लिए यह शब्द भार उपयुक्त माना जा सकता है।

रा. 5. 3. 11. 4 मध्यप्रदेश की कक्षा एक और दो की पुस्तकों में 80% शब्द ऐसे थे जिनका प्रयोग पूरी पुस्तक में केवल एक या दो बार ही हुआ था किन्तु कक्षा तीन और चार में ऐसे शब्दों का प्रतिशत घटकर 72-70 प्रतिशत हो गया है और इन में संरचनात्मक शब्दों की गणना नहीं की गई अतः इसे संतोषजनक माना जायेगा। कक्षा पांच में ऐसे शब्दों की संख्या लगभग 76% है जो काफी अधिक है किन्तु प्राथमिक विद्यालय की सबसे ऊँची पुस्तक होने के नाते कम बारम्बारिता वाले इतने शब्दों का होना हानिकारक नहीं है। हाँ, तीन-पांच आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या तीनों ही कक्षाओं की पुस्तकों में बढ़ाई जानी चाहिए थी।

रा. 5. 3. 11. 5 मध्यप्रदेश की पुस्तकें एक अन्य दृष्टि से भी बहुत संतोषजनक कही जा सकती हैं। कक्षा तीन की पुस्तकों में 86% शब्द ऐसे हैं जो कक्षा दो की पुस्तकों में प्रयुक्त हो चुके है और 77% शब्द ऐसे हैं जो कि कक्षा चार की पुस्तकों में भी प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार कक्षा चार और पांच की पुस्तकों

में लगभग 60% शब्द ऐसे हैं जिन्हें छात्र पिछली कक्षाओं में पढ़ चुके हैं। यह स्थिति बहुत अच्छी है।

रा. 5. 3. 11. 6 विभिन्न शब्दों की संख्या, शब्दों की बारम्बारिता तथा अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्दों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मध्यपदेश में पठन सामग्री का विभिन्न कक्षाओं का स्तरीकरण संतोषजनक ढंग से किया गया है।

रा. 5. 3. 11. 7 इन तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में लगभग 40–50% शब्द ऐसे हैं जो कि अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी प्रयुक्त हुए हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश की पुस्तकों में शब्दों का चयन संतोषजनक है।

रा. 5. 3. 11. 8 जहां तक स्थानीय शब्दों के प्रयोग की बात है उनका प्रतिशत बहुत कम है। विशेष रूप से कक्षा चार की पुस्तक मे। इसके साथ ही यह तथ्य स्मरणीय है कि मध्यप्रदेश में प्राथमिक पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना के अंतर्गत पुस्तकें नहीं बनायी गई थी। अतः इन पुस्तकों में स्थानीयकरण पर बल ही नहीं दिया गया था।

रा. 5. 3. 11. 9 जहां तक शब्दों की उपयुक्तता का प्रश्न है इन तीनों कक्षाओं में 40–50% शब्द ऐसे हैं जिन्हें कोयईग ने अपनी 4 हजार उपयोगी शब्दों की सूची में रखा। इसमें 30–35% शब्द ऐसे हैं जिसे उनकी प्रथम सूची में स्थान मिला है। यही बात केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सूची से मिलान करने पर ज्ञात होती है। इन पुस्तकों के 40–55% शब्द ऐसे हैं जिन्हें जगन्नाथन ने अपनी बेसिक शब्दावली में स्थान दिया है किन्तु आश्चर्य की बात है कि इन पुस्तकों के लगभग 30% शब्द ही ऐसे हैं जो शिक्षा मंत्रालय की सूची में भी महत्वपूर्ण माने गये हैं।

रा. 5. 3. 11. 10 मध्यप्रदेश की पुस्तकों में संदर्भ की काफी विविधता दृष्टिगोचर होती है। कक्षा तीन और चार में लगभग 50–60% शब्द सामाजिक परिवेश से संबंधित है किन्तु प्राकृतिक परिवेश से संबंधित शब्द प्रत्येक राज्य की भांति द्वितीय स्थान पर आते हैं तभी उनका प्रतिशत बहुत कम है। संभवतः बहुत सारे संदर्भों से शब्दों को लेने के कारण ऐसा हुआ है कि प्रत्येक संदर्भ संबंधी प्रतिशत कम हो गया है किन्तु संदर्भ की विविधता को देखते हुए इसे दोष नहीं माना जाना चाहिए।

रा. 5. 4 दिल्ली

रा. 5. 4. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	22512	11273
कक्षा 4	24286	16103
कक्षा 5	26616	15670

रा. 5. 4. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	2809
कक्षा 4	3237
कक्षा 5	2853

रा. 5. 4. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 4. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	22512	5963	16549	277.52
कक्षा 4	24286	22512	1774	7.88
कक्षा 5	26616	24286	2330	9.59

रा. 5. 4. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	2809	1504	1305	86.76
कक्षा 4	3237	2809	428	15.23
कक्षा 5	2853	3237	−484	−14.95

रा. 5. 4. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	11273	2809	4.01
कक्षा 4	16103	3237	4.97
कक्षा 5	15670	2853	5.49

रा. 5. 4. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृत्ति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	1823	64.89	2020	62.40	1743	61.09
3 से 5	525	18.68	584	18.04	529	18.54
6 से 10	251	8.93	320	9.88	274	9.60
11 से 20	116	4.93	170	5.25	160	5.60
21 से अधिक	94	3.34	143	4.41	147	5.15
	2809		3237		2853	

रा. 5. 4. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	2809	893	31.79	1905	67.81
कक्षा 4	3237	1905	58.85	1846	57.02
कक्षा 5	2853	1846	64.70	—	—

रा. 5. 4. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल दिल्ली में प्रयुक्त शब्द	1104	39.30	948	29.28	766	26.84
2. दिल्ली के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	512	18.22	551	17.02	466	16.33
3. दिल्ली के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	296	10.53	410	12.66	327	11.46
4. दिल्ली के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	897	31.93	1328	41.02	1294	45.35

रा. 5. 4. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	2809	3237	2853
केवल दिल्ली में प्रयुक्त शब्द	1104	948	766
प्रतिशत	39.30	29.48	26.84
सामान्य शब्द	1705	2288	2087
प्रतिशत	60.69	70.68	73.15
स्थानीय शब्द	39	43	63
प्रतिशत	1.38	1.32	2.20

रा. 5. 4. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 4. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2809	1107	39.40	27.67	828	29.47	41.94	279	9.93	13.95
कक्षा 4	3237	1315	40.62	32.87	952	29.40	47.6	363	11.21	18.15
कक्षा 5	2852	2092	73.32	73.32	1715	60.11	85.75	377	13.21	18.85

रा. 5. 4. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2809	1229	43.75	24.48	797	28.37	39.85	432	15.37	14.4
कक्षा 4	3237	1510	46.64	30.2	974	30.08	48.7	536	16.55	17.86
कक्षा 5	2853	1368	47.94	27.36	850	29.79	42.5	518	18.15	17.26

रा. 5. 4. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2809	720	25.63	36.00
कक्षा 4	3237	794	24.52	39.7
कक्षा 5	2853	727	25.48	36.35

रा. 5. 4. 9. शून्य

सा. 5. 4. 10. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	260	9.25	338	10.44	331	11.60
2. मनोभाव सूचक	25	0.88	55	1.69	95	3.32
3. रंगों से संबंधित	17	0.60	13	0.40	16	0.56
4. कृषि संबंधी	24	0.85	51	1.57	37	1.29
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	72	2.56	37	1.14	42	1.47
6. शरीर के अंग–उपांग	97	3.45	100	3.08	84	2.94
7. गणना एवं संख्यावाची	167	5.94	188	5.80	197	6.90
8. घर–परिवार संबंधी	64	2.27	92	2.84	74	2.59
9. खान–पान संबंधी	114	4.05	73	2.25	30	1.05
10. शिक्षा संबंधी	56	1.99	58	1.79	84	2.94
11. विज्ञान संबंधी	48	1.70	80	2.47	137	4.80
12. वस्त्रादि संबंधी	39	1.38	52	1.60	30	1.05
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	23	0.81	23	0.71	23	0.80
14. यात्रा संबंधी	41	1.45	27	0.83	26	0.91
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	1510	53.75	1499	46.30	1489	52.19
16. खेल–कूद	15	0.53	22	0.67	10	0.35
17. ऐतिहासिक	139	4.94	272	8.40	109	3.82

रा. 5. 4. 11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5. 4. 11. 1 कक्षा तीन की पठन सामग्री कक्षा दो से लगभग तीन गुनी है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ है कि अधिक पुस्तकें केवल भाषा की ही पुस्तकें रही है जो समाहित पाठ्यक्रम के अंतर्गत बनी थीं। उनमें भाषा और पर्यावरण शिक्षा को समाहित रूप में लिया है। कक्षा तीन में पर्यावरण शिक्षा का पाठ्यक्रम कक्षा दो की तुलना में बहुत अधिक है तथा उससे संबंधित पठन सामग्री का भी अधिक होना स्वाभाविक है। फिर भी छात्रों को यह सामग्री पढ़नी तो पड़ेगी ही। कक्षा चार, पांच की पठन सामग्री इस दृष्टि से दोषपूर्ण है कि उसमें केवल 8, 9 % की ही वृद्धि हुई है। इस प्रकार एक ओर तो कक्षा तीन में 200% की वृद्धि और दूसरी ओर कक्षा चार, पांच में केवल 8, 9% की वृद्धि बहुत ही असंतुलित प्रतीत होती है।

रा. 5. 4. 11. 2 विभिन्न शब्दों की गणना केवल उन पाठों के आधार पर की गई है जो मुख्य रूप से भाषा शिक्षण से संबंधित हैं। कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा दो की तुलना में लगभग 87% विभिन्न शब्द अधिक है; किन्तु कक्षा चार की पुस्तक में यह वृद्धि केवल 15% तक ही सीमित होकर रह गई है और कक्षा पांच की पुस्तक में तो कक्षा चार की तुलना में 15% शब्द कम। इस प्रकार हम पाते हैं कि समाहित परियोजना के अंतर्गत तैयार की गई इन पुस्तकों में शब्द भंडार की दृष्टि से कोई स्तरीकरण नहीं किया गया है।

रा. 5. 4. 11. 3 कक्षा तीन की पुस्तक में शब्द भार चार और कक्षा चार, पांच की पुस्तकों में शब्द भार लगभग पांच है जो कि इन कक्षाओं के लिए संतोषजनक कहा जा सकता है।

रा. 5. 4. 11. 4 तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में 60-65% शब्द ऐसे हैं जिनका पूरी पुस्तक में प्रयोग केवल एक या दो बार हुआ है। ऐसे शब्दों की संख्या कुछ कम रही होती तो अच्छा था । 27% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति 3-10 बार हुई है और इनमें संरचनात्मक शब्द सम्मिलित हैं। अतः कहा जा सकता है कि लगभग 30% ऐसे हैं जिनकी बारम्बारिता उचित कही जा सकती है। इन पुस्तकों में से प्रत्येक में लगभग 60% शब्द ऐसे हैं जो अगली कक्षाओं में भी प्रयुक्त हो सके हैं।

रा. 5. 4. 11. 5 कक्षा तीन की पुस्तक में 30% शब्द ऐसे हैं जो अन्य सभी राज्यों में भी प्रयुक्त हुए हैं। कक्षा चार, पांच में ऐसे शब्दों की संख्या क्रमशः 41% 45% है। केवल इन्हीं पुस्तकों में ही प्रयुक्त नए शब्दों की संख्या 30% के आसपास है।

रा. 5. 4. 11. 6 पाँचवें और छठे बिन्दु के आधार पर कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों में ऐसे शब्दों को अधिक संख्या में प्रयुक्त किया गया है जो विभिन्न स्थितियों और स्तरों के लिए उपयोगी हैऔर जिनका प्रयोग संपूर्ण हिन्दी प्रदेश में बहु प्रचलित है। परिणामस्वरूप स्थानीय शब्दों में बहुत कमी आ गई है। कक्षा तीन, चार में लगभग 1% तथा कक्षा पांच में लगभग 2% स्थानीय शब्दों का प्रयोग हुआ है।

रा. 5. 4. 11. 7 विभिन्न सूचियों से मिलान करने पर पाया गया है कि कक्षा तीन और चार की पुस्तकों में लगभग 40% शब्द ऐसे हैं जिन्हें कोयड़ैग ने हिन्दी के सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द माना है। कक्षा पांच की पुस्तक में तो ऐसे शब्दों की संख्या लगभग 73% है यही स्थिति केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की बेसिक शब्दावली से तुलना करने पर ज्ञात होती है। इन पुस्तकों में 40-50% शब्द ऐसे हैं जो केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की बेसिक शब्दावली का अंग हैं। शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची के 35-40% शब्दों का प्रयोग इन पुस्तकों में हुआ है किन्तु वे इन पुस्तकों के शब्द भंडार का कुल 25% ही हैं।

रा. 5. 4. 11. 8 5, 6 और 8 बिन्दु के आधार पर कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों के शब्द भण्डार का चयन संतोषजनक है। इनमें अधिकांशतः उपयोगी एवं बहुप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है।

रा. 5. 4. 11. 9 इन पुस्तकों में भी सर्वाधिक संख्या सामाजिक परिवेश से संबंधित शब्दों की है। प्राकृतिक परिवेश के शब्द भी बड़ी संख्या में है और ऐसा तब है जब यह विश्लेषण केवल भाषा संबंधी पाठों के आधार पर किया गया। सामाजिक और प्राकतिक परिवेश के अन्य पाठ भी पुस्तक में है जिनका अध्ययन नहीं किया गया है। अन्य संदर्भों पर भी बड़ी संख्या में शब्द हैं जिससे ज्ञात होता है कि पुस्तक में संदर्भों की विविधता समुचित है।

रा. 5. 5 हरियाणा

रा. 5. 5. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	8798	3425
कक्षा 4	14432	6201
कक्षा 5	11064	5830

रा. 5. 5. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	1234
कक्षा 4	1808
कक्षा 5	1941

रा. 5. 5. 3. शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 5. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	8798	3672	5126	139.59
कक्षा 4	14432	8798	5654	64.26
कक्षा 5	11064	14432	−3368	−23.33

रा. 5. 5. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	1234	1130	104	9.20
कक्षा 4	1808	1234	574	46.51
कक्षा 5	1941	1808	133	7.35

रा. 5. 5. 3. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	3425	1234	2.77
कक्षा 4	6201	1808	3.42
कक्षा 5	5830	1941	3.00

रा. 5. 5. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृत्ति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	845	68.34	1289	71.29	1456	75.01
3 से 5	237	19.20	292	16.15	302	15.55
6 से 10	89	7.21	127	7.02	99	5.10
11 से 20	42	3.40	60	3.18	67	3.45
21 से अधिक	21	1.70	40	2.12	17	0.87
	1234		1808		1941	

रा. 5. 5. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	1234	529	42.86	1044	84.60
कक्षा 4	1808	1044	57.74	1356	75.00
कक्षा 5	1941	1356	69.86	—	—

रा. 5. 5. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल हरियाणा में प्रयुक्त शब्द	239	19.36	281	15.54	356	18.34
2. हरियाणा के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	183	14.82	227	12.55	275	14.16
3. दिल्ली के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	138	11.18	211	11.67	240	12.10
4. दिल्ली के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	672	54.61	1089	60.23	1070	55.12

रा. 5. 5. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	1234	1808	1941
केवल हरियाणा में प्रयुक्त शब्द	239	281	356
प्रतिशत	19.36	15.54	18.34
सामान्य शब्द	995	1527	1585
प्रतिशत	80.63	84.45	81.65
स्थानीय शब्द	17	26	63
प्रतिशत	1.37	1.43	3.24

रा. 5. 5. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 5. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1234	681	55.18	17.02	553	44.81	27.65	128	10.37	6.4
कक्षा 4	1808	935	51.71	23.37	718	39.71	35.9	217	12.00	10.85
कक्षा 5	1941	988	50.90	24.7	714	36.78	35.7	274	14.11	13.7

रा. 5. 5. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1234	702	56.88	14.04	520	42.13	26	182	14.74	6.06
कक्षा 4	1808	1061	58.68	21.22	739	40.87	36.95	322	17.80	10.73
कक्षा 5	1941	1045	53.83	20.9	645	33.23	32.25	400	20.60	13.33

रा. 5. 5. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1234	399	32.33	19.95
कक्षा 4	1808	550	30.42	27.05
कक्षा 5	1941	561	28.90	28.05

रा. 5. 5. 9. शून्य

रा. 5. 5. 10. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	105	8.50	159	8.79	187	9.63
2. मनोभाव सूचक	19	1.53	51	2.82	103	5.30
3. रंगों से संबंधित	8	0.64	9	0.49	12	0.61
4. कृषि संबंधी	16	1.29	22	1.21	17	0.87
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	33	2.67	28	1.54	35	1.80
6. शरीर के अंग–उपांग	45	3.64	94	5.19	72	3.70
7. गणना एवं संख्यावाची	73	5.91	110	6.08	72	3.70
8. घर–परिवार संबंधी	21	1.70	41	2.26	36	1.85
9. खान–पान संबंधी	26	2.10	37	2.04	20	1.03
10. शिक्षा संबंधी	23	1.86	26	1.43	55	2.83
11. विज्ञान संबंधी	06	0.48	8	0.44	20	1.03
12. वस्त्रादि संबंधी	13	1.05	13	0.71	18	0.92
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	7	0.56	12	0.66	17	0.87
14. यात्रा संबंधी	6	0.48	15	0.82	8	0.41
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	752	60.94	995	55.03	1119	57.65
16. खेल–कूद	5	0.40	7	0.38	13	0.66
17. ऐतिहासिक	57	4.61	77	4.25	110	5.66

रा. 5. 5. 11 उपर्युक्त आंकड़ो के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5. 5. 11. 1 हरियाणा राज्य की पुस्तकों में शब्द भंडार के आकार का स्तरीकरण नहीं किया गया है। इस राज्य की कक्षा तीन की पुस्तक में कुल प्रयुक्त शब्दों की संख्या कक्षा दो की पुस्तक के लगभग बराबर है। यदि कक्षा एक और दो की पुस्तकों के कुल प्रयुक्त शब्दों को संयुक्त रूप से भी देखा जाए तो कक्षा तीन की पुस्तकों में कक्षा एक और दो की तुलना में लगभग 24% शब्द कम हैं किन्तु इसके तुरन्त बाद कक्षा चार की पुस्तक में कुल प्रयुक्त शब्दों की संख्या कक्षा तीन की तुलना में 53% अधिक है और कक्षा पांच की पुस्तक में कक्षा चार की तुलना में 38% शब्द अधिक हैं। इस प्रकार कुल प्रयुक्त शब्दों की संख्या में किसी योजनाबद्ध ढंग से वृद्धि दृष्टिगोचर नहीं होती।

रा. 5. 5. 11. 2 विभिन्न शब्दों के प्रयोग के संबंध में भी कहीं कोई योजना दृष्टिगोचर नहीं होती। कक्षा तीन और पांच की पुस्तकों में पिछली कक्षाओं की पुस्तकों से केवल 6 से 7% विभिन्न शब्दों की वृद्धि हुई है जबकि कक्षा चार की पुस्तक में कक्षा तीन की तुलना में लगभग 32% शब्द अधिक हैं। कक्षा एक और दो की भांति इन तीनों कक्षाओं में भी शब्द भार बहुत अधिक है।

रा. 5. 5. 11. 3 तीनों कक्षाओं की पुस्तकों में 70% से अधिक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग इन पुस्तकों में एक अथवा दो बार हुआ है। कक्षा तीन के संदर्भ में यह स्थिति विशेषरूप से आपत्तिजनक कही जा सकती है। तीन से दस बार तक प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या केवल 20-25% ही है, यह बहुत कम है, इसमें वृद्धि करनी चाहिए थी।

रा. 5. 5. 11. 4 इन कक्षाओं में शब्द भार, कक्षा एक और दो की तुलना में ज्यादा अच्छा है। कक्षा चार और पांच की पुस्तकों में शब्द भार अपेक्षाकृत अधिक है। वस्तुतः कक्षा एक से पांच की ओर शब्द भार अधिक होता चला गया है जबकि होना इसके विपरीत चाहिए था।

रा. 5. 5. 11. 5 हरियाणा राज्य की तीनों पुस्तकों में 55 से लेकर 60% शब्द अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी आए हैं। केवल हरियाणा राज्य में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या 20% से कम है और यह स्थिति काफी संतोषजनक है।

रा. 5. 5. 11. 6 स्थानीय शब्दों की संख्या केवल 1-2% ही है जो कि परियोजना के उद्देश्यों के अनुकूल नहीं है। राज्य की तीनों पुस्तकों में 50% से अधिक शब्द ऐसे

है जिनको कोयईग ने उपयोगी माना है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सूची से मिलान करने पर पाया गया कि लगभग 55% शब्द ऐसे हैं जो कि बेसिक शब्दावली का अंग हैं; किन्तु इन पुस्तकों में केवल 30% शब्द ही ऐसे हैं जिन्हें शिक्षा मंत्रालय ने भी बेसिक माना है। इस प्रकार जहां तक उपयोगी एवं मानक शब्दों के प्रयोग का प्रश्न है इन पुस्तकों का शब्द भंडार बहुत संतोषजनक है।

रा. 5. 5. 11. 7 इन पुस्तकों में भी अन्य राज्यों की भांति सर्वाधिक शब्द सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं किन्तु जहां तक प्राकृतिक परिवेश का प्रश्न है कक्षा तीन, चार में कक्षा पांच की तुलना में कुछ कम शब्द हैं। अच्छा होता यदि नीचे की कक्षाओं में प्राकृतिक परिवेश से अधिक शब्द लिए जाते। कक्षा तीन, चार में संख्यावाची और कक्षा पांच में मनोभाव, सामाजिक शब्दों का बाहुल्य है।

रा. 5. 6 हिमाचल प्रदेश

रा. 5. 6. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	8601	2779
कक्षा 4	7897	4721
कक्षा 5	12200	5410

रा. 5. 6. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	1197
कक्षा 4	1633
कक्षा 5	1770

रा. 5. 6. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 6. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	8601	5310	3291	61.97
कक्षा 4	7897	8601	−804	−9.34
कक्षा 5	12200	7897	4303	54.48

रा. 5. 6. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	1197	1396	−199	−14.25
कक्षा 4	1633	1197	436	36.42
कक्षा 5	1770	1633	137	8.38

रा. 5. 6. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	2779	1197	2.32
कक्षा 4	4721	1633	2.89
कक्षा 5	5410	1770	3.05

रा. 5. 6. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृत्ति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	887	74.10	1186	72.62	1294	73.10
3 से 5	196	16.37	253	15.49	284	16.04
6 से 10	71	5.93	114	6.98	118	6.66
11 से 20	33	2.75	57	3.49	58	3.27
21 से अधिक	10	0.83	23	1.40	16	0.90
	1197		1633		1770	

रा. 5. 6. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	1197	472	39.43	1061	88.63
कक्षा 4	1633	1061	64.97	1271	77.83
कक्षा 5	1770	1271	71.80	—	—

रा. 5. 6. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल हिमाचल प्रदेश में प्रयुक्त शब्द	309	25.81	292	17.88	307	17.34
2. हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	176	14.70	185	11.32	247	13.95
3. हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	144	12.03	175	10.71	189	10.67
4. हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	568	47.45	981	60.07	1027	58.02

ता. 5. 6. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	1197	1633	1770
केवल हिमाचल प्रदेश में प्रयुक्त शब्द	309	292	307
प्रतिशत	25.81	17.88	17.34
सामान्य शब्द	888	1441	1363
प्रतिशत	74.18	88.24	77.00
स्थानीय शब्द	22	04	38
प्रतिशत	1.83	0.24	2.14

रा. 5. 6. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 6. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1197	583	48.70	14.57	477	39.84	23.85	106	8.55	5.3
कक्षा 4	1633	873	53.45	21.82	685	41.94	34.25	188	11.51	9.4
कक्षा 5	1790	904	51.07	22.06	677	38.24	33.85	227	12.82	11.35

रा. 5. 6. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1197	642	53.63	12.84	463	38.68	23.15	179	14.95	5.95
कक्षा 4	1633	979	59.95	19.58	655	66.90	32.75	324	19.84	10.8
कक्षा 5	1770	924	52.20	18.48	621	31.05	31.05	303	17.11	10.1

रा. 5. 6. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1197	347	28.98	17.35
कक्षा 4	1633	536	32.86	26.8
कक्षा 5	1770	492	27.79	24.6

रा 5. 6. 9. शून्य

रा. 5. 6. 10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	121	10.10	149	9.12	144	8.13
2. मनोभाव सूचक	18	1.56	39	2.38	19	1.07
3. रंगों से संबंधित	4	0.33	7	0.42	14	0.79
4. कृषि संबंधी	8	0.66	16	0.97	19	1.07
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	33	2.75	27	1.65	30	1.69
6. शरीर के अंग–उपांग	52	4.34	52	3.18	45	2.54
7. गणना एवं संख्यावाची	63	5.26	105	6.42	96	5.42
8. घर–परिवार संबंधी	27	2.25	31	1.89	26	1.42
9. खान–पान संबंधी	16	1.33	34	2.08	19	1.07
10. शिक्षा संबंधी	21	1.75	28	1.71	50	2.82
11. विज्ञान संबंधी	3	0.25	12	0.73	16	0.90
12. वस्त्रादि संबंधी	13	1.08	9	0.55	15	0.84
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	6	0.50	13	0.79	12	0.67
14. यात्रा संबंधी	8	0.66	11	0.67	10	0.56
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	701	58.56	901	55.17	1042	58.87
16. खेल–कूद	11	0.91	7	0.42	14	0.79
17. ऐतिहासिक	62	5.17	97	5.93	100	5.64

रा. 5. 6. 11 उपर्युक्त आंकड़ो के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5. 6. 11. 1 पिछली कक्षाओं की भाँति इन तीनों कक्षाओं में भी शब्दो का चयन इत्यादि योजनाबद्ध ढंग से किया प्रतीत नहीं होता। कक्षा तीन मे प्रयुक्त कुल शब्द कक्षा एक और दो की तुलना में लगभग 61% अधिक हैं किन्तु कक्षा चार की पुस्तक कक्षा तीन से अधिक बड़ी होने के स्थान पर छोटी है। कक्षा चार की पुस्तक में कक्षा तीन की तुलना में 9% शब्द कम हैं और कक्षा पांच की पुस्तक कक्षा तीन की तुलना में केवल 42% बड़ी है।

रा. 5. 6. 11. 2 विभिन्न शब्दों की भी वही स्थिति है। कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा एक और दो की पुस्तको की तुलना में 27% शब्द कम हैं। कक्षा चार की पुस्तक में विभिन्न शब्दों में 36% की वृद्धि हुई है किन्तु कक्षा पांच की पुस्तक में केवल 8% शब्द अधिक हैं। यह स्थिति इस बात को दर्शाती है कि पुस्तको का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से नहीं हुआ है।

रा. 5. 6. 11. 3 कक्षा तीन की पुस्तक का शब्द भार अंक दो और कक्षा चार, पांच की पुस्तकों का लगभग तीन है। चूँकि इन पुस्तकों की शब्द भार संबंधी गणना केवल अधीत शब्दों के आधार पर की गई है वर्तमान शब्द भार अंक अधिक असंतोषजनक नहीं कहा जा सकता है; किन्तु फिर भी अच्छा रहता कि कम से कम कक्षा तीन की पुस्तक का तो शब्द भार अंक कुछ अधिक होता।

रा. 5. 6. 11. 4 जहां तक विभिन्न शब्दों की आवृत्ति का प्रश्न है, हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों की स्थिति भी अन्य प्रदेशें की पुस्तकों की भाति ही असंतोषजनक है। इन तीनों पुस्तकों में लगभग तीन चौथाई शब्द केवल एक या दो बार ही प्रयुक्त हुए है। 3 से 10 बार प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या भी केवल 20% ही है। इस प्रकार 10 बार से अधिक बार प्रयुक्त होने वाले शब्द नहीं के बारबर ही है। संभवतः ऐसा इसलिए हुआ है कि अधीत शब्दों में संरचनात्मक शब्दों की गणना नही की गई है। इस दृष्टि से देखा जाए तो इन पुस्तकों में विभिन्न शब्दों की आवृत्ति की स्थिति अधिक असंतोषजनक नहीं है। फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि कम से कम कक्षा तीन की पुस्तक में विभिन्न शब्दों की आवृत्ति और अधिक बार होनी चाहिए थी।

रा. 5. 6. 11. 5 आश्चर्य की बात है कि हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में अधिक आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या तो कम है किन्तु एक कक्षा से दूसरी कक्षा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या काफी अधिक है। कक्षा तीन की पुस्तक मे 40% शब्द ऐसे हैं जो कि कक्षा दो में भी प्रयुक्त हो चुके हैं और 80% शब्द ऐसे

हैं जिन्हें छात्र कक्षा चार की पुस्तक में भी पढ़ेंगे। इस प्रकार कक्षा चार की पुस्तक में 65% शब्द कक्षा तीन की पुस्तक से आये हुए हैं और 77% शब्द कक्षा पांच की पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं। कक्षा पांच की पुस्तक की भी लगभग यही स्थिति है।

रा. 5. 6. 11. 6 कक्षा एक और दो की पुस्तकों की भाँति कक्षा तीन, चार और पांच में भी मानक शब्दों का ही प्रयोग अधिक हुआ है। कक्षा तीन की पुस्तक में केवल 26% शब्द ऐसे हैं जो केवल हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में ही प्रयुक्त हुए हैं। कक्षा चार और पांच की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या और भी कम है। तीनों पुस्तकों में 50-60% शब्द ऐसे है जो कि अधिकांश हिन्दी राज्यों की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए हैं।

रा. 5. 6. 11. 7 मानक शब्दों का अधिक प्रयोग होने का परिणाम यह हुआ है कि कक्षा तीन और पांच में लगभग 2% स्थानीय शब्दों का प्रयोग हुआ है और कक्षा चार की पुस्तकों में .2% का।

रा. 5. 6. 11. 8 हिमाचल की पुस्तकों में एक अन्य विशेष बात देखने में आती है। एक ओर तो इनमें मानक हिन्दी के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग हुआ है, दूसरी ओर ऐसे शब्दों की संख्या केवल 15-20% के ही लगभग है जिन्हें कोयईंग ने हिन्दी के सर्वोपयोगी शब्दों की सूची में रखा है। हां, यह अवश्य है कि इन पुस्तकों के 50-60% शब्द ऐसे हैं जिन्हें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की आधारभूत शब्दावली ने महत्त्वपूर्ण माना है। लगभग 30% शब्द शिक्षा मंत्रालय की सूची में भी पाये गए हैं।

रा. 5. 6. 11. 9 इस प्रदेश की पुस्तकों में जिस शब्द भंडार का प्रयोग हुआ है उसमें संदर्भ संबंधी काफी विविधता है। अन्य राज्यों की भाँति यहाँ भी सबसे अधिक शब्द सामाजिक परिवेश से संबधित हैं और उसके बाद प्राकृतिक परिवेश का नंबर है। हां, ऐतिहासिक संदर्भों से जुड़े हुए शब्दों की संख्या अन्य राज्यों की तुलना में काफी अधिक है। यही बात गणना एवं संख्यावाची शब्दों के संबंध में कही जा सकती है। विज्ञान, औषधि एवं स्वास्थ्य तथा यात्रा संबंधी शब्द बहुत कम है।

रा. 5. 7 राजस्थान

रा. 5. 7. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	13332	7377
कक्षा 4	15114	7960
कक्षा 5	23907	12521

रा. 5. 7. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	2217
कक्षा 4	2170
कक्षा 5	3280

रा. 5. 7. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 7. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	13332	3726	9606	257.80
कक्षा 4	15114	13332	1782	13.36
कक्षा 5	23907	15114	8793	58.17

रा. 5. 7. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	2217	1153	1064	92.28
कक्षा 4	2170	2217	−47	2.11
कक्षा 5	3280	2170	110	5.06

रा. 5. 7. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	7377	2217	3.32
कक्षा 4	7960	2170	3.66
कक्षा 5	12521	3280	3.81

रा. 5. 7. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृत्ति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	1398	63.05	1524	70.23	2338	71.28
3 से 5	558	25.16	346	15.94	500	15.24
6 से 10	158	7.12	168	7.74	240	7.31
11 से 20	62	2.79	76	3.50	119	3.62
21 से अधिक	41	1.84	56	2.58	83	2.53
	2217		2170		3280	

रा. 5. 7. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	2217	616	27.78	1356	61.16
कक्षा 4	2170	1356	62.48	1969	49.26
कक्षा 5	3280	1969	60.03	—	—

रा. 5. 7. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल राजस्थान में प्रयुक्त शब्द	798	35.99	471	21.70	990	30.18
2. राजस्थान के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	388	17.50	324	14.93	569	17.34
3. राजस्थान के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	245	11.05	251	11.56	381	11.61
4. राजस्थान के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	786	35.45	1124	51.79	1340	40.85

रा. 5. 7. 7. 2. स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	2217	2170	3280
केवल राजस्थान में प्रयुक्त शब्द	798	471	990
प्रतिशत	35.99	21.70	30.18
सामान्य शब्द	1419	1679	23.90
प्रतिशत	64.00	77.37	72.86
स्थानीय शब्द	58	38	136
प्रतिशत	2.61	1.75	4.14

रा. 5. 7. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 7. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2217	1041	46.95	26.02	795	35.85	39.75	246	11.09	12.3
कक्षा 4	2170	1031	47.51	25.77	777	35.80	38.85	254	11.70	12.7
कक्षा 5	3280	1313	40.03	32.82	958	29.20	47.9	355	10.82	17.75

रा. 5. 7. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2217	1126	50.78	22.52	748	33.73	37.4	378	17.05	12.6
कक्षा 4	2170	1203	55.43	24.06	782	36.02	39.1	421	19.40	14.03
कक्षा 5	3280	1415	43.14	28.3	895	27.28	44.75	520	15.85	17.33

रा. 5. 7. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	2217	603	27.19	30.15
कक्षा 4	2170	593	27.32	29.65
कक्षा 5	3280	758	23.45	37.9

रा. 5. 7. 9

शून्य

सा. 5. 7. 10. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	198	8.93	196	9.03	262	7.98
2. मनोभाव सूचक	31	1.39	58	2.67	129	3.93
3. रंगों से संबंधित	12	0.54	12	0.55	15	0.45
4. कृषि संबंधी	17	0.76	20	0.92	44	1.34
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	63	2.84	45	2.07	54	1.64
6. शरीर के अंग–उपांग	95	4.28	89	4.10	94	2.86
7. गणना एवं संख्यावाची	133	5.99	134	6.17	154	4.69
8. घर–परिवार संबंधी	46	2.07	57	2.62	77	2.34
9. खान–पान संबंधी	50	2.25	32	1.47	49	1.49
10. शिक्षा संबंधी	21	0.94	27	1.24	82	2.05
11. विज्ञान संबंधी	40	1.80	19	0.87	40	1.21
12. वस्त्रादि संबंधी	18	0.81	14	0.64	47	1.43
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	8	0.36	15	0.69	18	0.54
14. यात्रा संबंधी	20	0.90	16	0.73	17	0.51
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	1322	59.63	1215	55.99	1892	57.68
16. खेल–कूद	14	0.63	13	0.59	20	0.60
17. ऐतिहासिक	59	2.66	86	3.96	147	4.48

रा. 5. 7. 11 उपर्युक्त आंकड़ो के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

रा. 5. 7. 11. 1 कक्षा एक और दो की भाँति राजस्थान की कक्षा तीन से पांच तक की पुस्तकों में भी शब्द भंडार का चयन और प्रयोग योजनाबद्ध ढंग से हुआ प्रतीत होता है। कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा एक और दो की तुलना में 115% शब्द अधिक हैं जबकि कक्षा चार में यह वृद्धि घटकर केवल 13% ही रह गई है किन्तु कक्षा पांच की पुस्तक में कक्षा चार की तुलना में लगभग 58% शब्द अधिक हैं।

रा. 5. 7. 11. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि कुल प्रयुक्त शब्दों की वृद्धि के अनुपात में नहीं हुई। कक्षा तीन में लगभग 92% शब्द अधिक हैं जबकि कक्षा चार में 2% और कक्षा पांच में केवल 5% शब्द। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पूरी योजना में कक्षा तीन की पुस्तक ही कुछ असंतुलित प्रतीत होती है।

रा. 5. 7. 11. 3 कई राज्यों की तुलना में राजस्थान में शब्द भार कुछ अधिक संतोषजनक है।

रा. 5. 7. 11. 4 कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा चार और पांच की तुलना में अधिक आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या अधिक है। कक्षा चार, पांच की पुस्तकों में 70% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति केवल एक या दो बार हुई है।

रा. 5. 7. 11. 5 कक्षा तीन की पुस्तक में 27% शब्द ऐसे हैं जो कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त हो चुके थे और 61% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग कक्षा चार की पुस्तक में भी हुआ है। कक्षा चार और पांच की पुस्तक की भी लगभग यही स्थिति है इसके आधार पर कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों में शब्द भंडार का स्तरीकरण उचित ढंग से हुआ है।

रा. 5. 7. 11. 6 कक्षा तीन की पुस्तक में 36% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल राजस्थान में ही हुआ है और लगभग इतने ही शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग अधिकांश हिन्दी राज्यों में होता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो इन पुस्तकों के लिए शब्दों का चयन उपयोगिता की दृष्टि से भली-भाँति नहीं हुआ है। कक्षा चार, पांच की पुस्तकों की स्थिति इस दृष्टि से बेहतर है।

रा. 5. 7. 11. 7 राजस्थान में कक्षा पांच की पुस्तकों में सबसे अधिक स्थानीय शब्द हैं और कक्षा चार की पुस्तक में सबसे कम। पठन शिक्षण की दृष्टि से स्थानीय शब्दों का प्रयोग नीचे की कक्षाओं में अधिक उपयोगी रहता है। हां, यदि स्थानीय संदर्भों पर अधिक पाठ होंगे तो स्थानीय शब्दों का प्रयोग कक्षा पांच में भी बढ़ जाना स्वाभाविक है।

रा. 5. 7. 11. 8 राजस्थान की पुस्तकों के 40–45% शब्द कोयईग की शब्द सूची में भी पाये जाते हैं और लगभग 50–55% शब्द ऐसे हैं जिन्हें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने आधारभूत शब्दावली का अंग माना है। इसके अतिरिक्त लगभग 27% शब्द शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में भी सम्मिलित हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि उपयोगिता की दृष्टि से शब्द भंडार का चयन उचित ढंग से हुआ है।

रा. 5. 7. 11. 9 शब्द भंडार में संदर्भों संबंधी विविधता पर्याप्त है। सबसे अधिक शब्द सामाजिक परिवेश से संबधित है। उसके बाद प्राकृतिक परिवेश से संबधित शब्द हैं। शरीर के अंगों–उपांगों तथा गणना एवं संख्यावाची शब्द भी काफी हैं।

रा. 5. 8 केन्द्रीय विद्यालय

रा. 5. 8. 1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारंबारिता सहित)

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	अधीत शब्द
कक्षा 3	10292	5578
कक्षा 4	16492	10011
कक्षा 5	20240	9294

रा. 5. 8. 2 विभिन्न शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द
कक्षा 3	1385
कक्षा 4	1880
कक्षा 5	2267

रा. 5. 8. 3 शब्द भंडार में वृद्धि

रा. 5. 8. 3. 1 कुल प्रयुक्त शब्दों में वृद्धि

कक्षा	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त कुल शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	10292	4613	5679	123.10
कक्षा 4	16492	10292	6200	60.24
कक्षा 5	20240	16492	3748	22.72

ता. 5. 8. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

कक्षा	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
कक्षा 3	1385	1313	72	5.48
कक्षा 4	1880	1385	505	36.46
कक्षा 5	2267	1880	387	20.58

ता. 5. 8. 4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

कक्षा	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	शब्द भार
कक्षा 3	5578	1385	4.02
कक्षा 4	10011	1880	5.32
कक्षा 5	9294	2267	4.09

ता. 5. 8. 5 शब्दों की बारंबारिता

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
आवृति संख्या	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1 से 2	729	52.63	912	48.51	1492	65.81
3 से 5	394	22.44	541	28.77	436	19.23
6 से 10	141	10.18	233	12.39	162	7.14
11 से 20	78	5.63	114	6.06	97	4.27
21 से अधिक	43	3.10	180	4.25	80	3.52
	1385		1880		2267	

रा. 5. 8. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

कक्षा	विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा से आए शब्द	प्रतिशत	अगली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत
कक्षा 3	1385	583	42.09	1274	91.98
कक्षा 4	1880	1274	67.76	1555	82.71
कक्षा 5	2267	1555	68.59	—	—

रा. 5. 8. 7. 1 अन्य राज्यों में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत	शब्द संख्या	प्रतिशत
1. केवल केन्द्रीय विद्यालय में प्रयुक्त शब्द	240	17.32	278	14.78	472	20.82
2. केन्द्रीय विद्यालय के अतिरिक्त एक अन्य राज्य में प्रयुक्त शब्द	206	14.87	240	12.76	353	15.57
3. केन्द्रीय विद्यालय के अतिरिक्त दो राज्यों में प्रयुक्त शब्द	177	12.77	232	12.34	366	16.14
4. केन्द्रीय विद्यालय के अतिरिक्त तीन अथवा अधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	762	55.01	1130	60.10	1076	47.46

रा. 5. 8. 7. 2 स्थानीय शब्द

	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल विभिन्न शब्द	1385	1880	2781
केवल केन्द्रीय विद्यालय में प्रयुक्त शब्द	240	278	808
प्रतिशत	17.32	14.78	29.5
सामान्य शब्द	1145	1602	1973
प्रतिशत	82.67	85.21	70.94
स्थानीय शब्द	12	20	117
प्रतिशत	0.86	1.06	4.20

रा. 5. 8. 8 विभिन्न बेसिक शब्दावलियों में पाए जाने वाले शब्द

रा. 5. 8. 8. 1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1385	761	54.94	19.02	628	45.34	31.4	133	9.60	6.65
कक्षा 4	1880	1019	54.20	25.47	805	42.81	40.25	214	11.38	10.7
कक्षा 5	2267	1092	48.16	27.3	848	37.40	42.4	244	10.76	12.2

रा. 5. 8. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1385	789	56.96	15.78	584	42.16	29.2	205	14.80	6.83
कक्षा 4	1880	1133	60.26	22.66	778	41.38	38.9	355	18.88	11.83
कक्षा 5	2267	1144	50.46	22.88	776	34.23	38.8	368	16.23	12.26

रा. 5. 8. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
कक्षा 3	1385	474	34.22	23.7
कक्षा 4	1880	609	32.39	30.45
कक्षा 5	2267	655	28.89	32.75

रा 5. 8. 9. शून्य

ता. 5. 8. 10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

	कक्षा 3	प्रतिशत	कक्षा 4	प्रतिशत	कक्षा 5	प्रतिशत
1. प्राकृतिक परिवेश	130	9.38	182	9.68	173	7.63
2. मनोभाव सूचक	22	1.58	38	2.02	80	3.52
3. रंगों से संबंधित	10	0.72	8	0.42	9	0.39
4. कृषि संबंधी	11	0.79	19	1.01	26	1.14
5. पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु संबंधी	50	3.61	44	2.34	42	1.85
6. शरीर के अंग–उपांग	60	4.33	80	4.25	88	3.88
7. गणना एवं संख्यावाची	88	6.35	124	6.59	156	6.88
8. घर–परिवार संबंधी	37	2.67	50	2.05	78	3.44
9. खान–पान संबंधी	60	4.33	23	1.22	43	1.89
10. शिक्षा संबंधी	18	1.29	41	2.18	73	3.22
11. विज्ञान संबंधी	7	0.50	17	0.90	35	1.54
12. वस्त्रादि संबंधी	15	1.08	21	1.11	23	1.01
13. औषधि एवं स्वास्थ्य संबंधी	9	0.64	10.0	0.53	20	0.88
14. यात्रा संबंधी	6	0.43	9	0.47	15	0.66
15. सामाजिक परिवेश संबंधी	793	57.25	955	50.79	1625	71.68
16. खेल–कूद	9	0.64	11	0.58	10	0.44
17. ऐतिहासिक	31	2.23	91	4.84	123	5.42

रा. 5. 8. 11 उपर्युक्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष :

रा. 5. 8. 11. 1 इन पुस्तकों में शब्द भंडार की वृद्धि सबसे कम कक्षा चार की पुस्तक में हुई है कक्षा तीन की पुस्तक की तुलना में इस पुस्तक में केवल 6% शब्द अधिक हैं जबकि कक्षा तीन और पांच में यह वृद्धि क्रमशः 41% और 22% है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि कुल पठन शब्द भंडार का स्तरीकरण उचित ढंग से नहीं किया गया है।

रा. 5. 8. 11. 2 जहां तक विभिन्न शब्दों का प्रश्न है कक्षा तीन की पुस्तक में लगभग 19% शब्द कक्षा दो से कम है किन्तु यह स्थिति इस दृष्टि से अधिक असंतोषजनक नहीं लगती कि कक्षा तीन की विभिन्न शब्दों में संरचनात्मक शब्दों की गणना नहीं की गई है। कक्षा चार की पुस्तक में 36% शब्द अधिक हैं और कक्षा पांच में केवल 20%। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कक्षा पांच की पुस्तक में विभिन्न शब्दों की संख्या में वृद्धि की जा सकती है।

रा. 5. 8. 11. 3 कक्षा 3 से 5 की पुस्तकों में शब्द भार की मात्रा उपयुक्त है।

रा. 5. 8. 11. 4 शब्द भार का संबंध शब्द की बारम्बारिता से जुड़ा हुआ है। शब्द भार अधिक होने पर शब्दों की बारम्बारिता के भी अधिक होने की संभावना रहती है। कक्षा तीन और चार की पुस्तकों में लगभग 50% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति एक या दो बार हुई है और 30-40% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति 3 से 10 बार अधिक हुई। कम आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या कक्षा पांच की पुस्तक में अपेक्षाकृत अधिक है; किन्तु प्राथमिक विद्यालय की अन्तिम कक्षा की दृष्टि से भी उसे संतोषजनक माना जा सकता है।

रा. 5. 8. 11. 5 केन्द्रीय विद्यालय की सभी पुस्तकों में ऐसे शब्दों की प्रचुरता है जो एक से अधिक कक्षाओं में प्रयुक्त हो सके हैं। इस दृष्टि से ये पुस्तकें बहुत अच्छी हैं।

रा. 5. 8. 11. 6 इन पुस्तकों में 50-60% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग संपूर्ण हिन्दी प्रदेश में होता है। केवल केन्द्रीय विद्यालय की पुस्तकों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या 20% से कम ही है।

रा. 5. 8. 11. 7 कक्षा तीन में स्थानीय शब्दो का प्रयोग नहीं के बराबर हुआ है किन्तु कक्षा चार और पांच में ऐसे शब्दों की संख्या अधिक है। ऐसा संभवतः स्थानीय संदर्भों के कारण हुआ है।

रा. 5. 8. 11. 8 इन तीनों पुस्तकों में 50-60% शब्द ऐसे हैं जिन्हें कौयईग तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की आधारभूत शब्दावली ने महत्त्वपूर्ण माना है। शिक्षा मंत्रालय की सूची के भी लगभग 30% शब्दों का प्रयोग इन पुस्तकों में हुआ है।

रा. 5. 8. 11. 9 बिन्दु 5 से 8 के आधार पर कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों मे हिन्दी के मानक स्वरूप और उपयोगिता की दृष्टि से शब्दों का चयन बहुत अच्छा हुआ है।

रा. 5. 8. 11. 10 शब्द भंडार में संदर्भों संबंधी विविधता भी काफी है। सर्वाधिक संख्या तो सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश संबंधी शब्दों की ही है किन्तु मनोभाव, शरीर के अंग-उपांग तथा गणना और संख्यावाची शब्दों की संख्या भी पर्याप्त हैं।

राज्यवार सार

रा. सा. 5. 1 बिहार

रा. सा. 5. 1. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	1623	–	1623	697	–	2.32	74.6	5.8
कक्षा 2	6848	321.9	6848	1690	142.46	4.05	70.1	15.25
कक्षा 3	13563	96.59	7151	2448	44.85	2.92	73.73	12.85
कक्षा 4	22016	62.32	9932	3087	26.1	3.21	74.18	11.39
कक्षा 5	24206	9.94	12379	3183	3.10	3.88	70.31	12.80

रा. सा. 5. 1. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भों से संबंधित शब्द			
				कोयईंग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	35.86	65.28	6.59	–	–	–	27.4	7.31	1.58	63.71
कक्षा 2	8.52	69.47	2.66	19.45	40.89	37.6	16.27	7.39	1.59	74.75
कक्षा 3	73.32	62.71	2	44.07	47.5	29.33	20.91	9.27	1.22	68.6
कक्षा 4	66.82	65.34	1.68	41.36	50.1	23.48	56.3	9.65	1.16	32.89
कक्षा 5	64.81	71.82	2.69	42.69	48.38	23.71	43.76	7.72	1.28	47.24

रा. सा. 5. 1. 3 सार

1. कक्षा एक तथा दो की पुस्तकें शब्द भण्डार के परिमाण और शब्द भार तथा आवृत्ति की दृष्टि से सर्वाधिक अनुपयुक्त हैं।

2. ऐसा प्रतीत होता है कि संपूर्ण पुस्तक माला की योजना पहले से नहीं बनायी गई। परिणामस्वरूप शब्द भण्डार में कक्षावार वृद्धि तथा नए शब्दों की आवृत्ति तथा पिछली कक्षा की तुलना में अगली कक्षा का कुल शब्द भण्डार कितना होना चाहिए जैसी महत्वपूर्ण बातों के संबंध में कोई पूर्व निश्चित योजना दिखाई नहीं देती।

3. सबसे अधिक अनुपयुक्त बात शब्दों की आवृत्ति से संबंधित है। सभी पुस्तकों में तीन चौथाई शब्द ऐसे हैं जो पूरी पुस्तक में केवल एक या दो बार प्रयुक्त हुए हैं। पठन शिक्षण की दृष्टि से यह बहुत ही अवांछनीय स्थिति है।

4. शब्द भण्डार उपयुक्तता की दृष्टि से ये पुस्तकें काफी संतोषजनक हैं। इनमें ऐसे शब्द पर्याप्त संख्या में हैं जो अन्य हिन्दी भाषी राज्यों तथा बिहार राज्य की ही अन्य कक्षाओं में भी प्रयुक्त हुए हैं इसके अतिरिक्त ऐसे शब्द भी पर्याप्त मात्रा में हैं जिन्हें कोयईग, जगन्नाथन और शिक्षा मंत्रालय ने हिन्दी के महत्वपूर्ण तथा उपयोगी शब्द माना है।

5. शब्दों का चयन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से किया गया है परिणामस्वरुप शब्द भण्डार में संदर्भों की पर्याप्त विविधता प्राप्त होती है।

रा. सा. 5. 2 उत्तरप्रदेश

रा सा. 5. 2. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	1683	–	1683	675	–	2.49	78.51	8.29
कक्षा 2	5271	213.19	5271	1582	134.37	3.33	72.49	13.70
कक्षा 3	8586	62.89	5987	2071	30.91	2.89	69.86	11.39
कक्षा 4	11906	38.66	8884	2326	12.31	3.81	67.32	14.73
कक्षा 5	11879	– .22	7761	2493	6.69	3.11	74.40	11.10

रा. सा. 5. 2. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भो से संबंधित शब्द			
				कोयईंग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	48.5	72.45	2.66	–	–	–	23.11	4.59	1.33	70.97
कक्षा 2	41.65	71.31	2.17	17.65	14.7	27.2	20.29	4.18	1.26	74.33
कक्षा 3	72.09	71.08	2.31	48.09	49.2	27.18	60.91	9.37	0.62	29.10
कक्षा 4	71.02	78.98	1.59	48.83	56.44	28.07	53.13	9.24	0.9	36.73
कक्षा 5	66.26	74.29	2.06	44.52	47.65	24.98	59.72	13.27	1.2	25.81

रा. सा. 5. 2. 3 सार

1. कक्षा एक से पांच तक की सभी पुस्तकें शब्द भण्डार के परिमाण, शब्द भार तथा आवृत्ति की दृष्टि से एक दूसरे से तालमेल में नहीं हैं। कक्षा दो की पुस्तक के पठन भण्डार में 213% की वृद्धि हुई है तो कक्षा पांच में 22% की कटौती। यही बात विभिन्न शब्दों के संबंध में कही जा सकती है।

2. शब्द भार की दृष्टि से भी यह पुस्तक माला असंतोषजनक लगती है। कक्षा चार और पांच की पुस्तक में औसतन हर पांचवां शब्द नया है। जबकि कक्षा एक और दो में हर तीसरा शब्द नया है। कक्षा एक और दो में तो छात्रों को पठन अभ्यास के लिए पुराने शब्दों की आवृति की बहुत आवश्यकता होती है। इतने अधिक नये शब्द होने पर उनका आवश्यक अभ्यास नहीं हो सकता।

3. जहां तक शब्द चयन की उपयुक्तता का प्रश्न है ऐसा प्रतीत होता है कि उपयुक्त शब्दों का चयन हो सका है क्योंकि एकाधिक राज्यों की एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या 70% के आसपास है। किन्तु जिन शब्दों को विद्वानों ने हिन्दी की बेसिक शब्दावली माना है। उनमें से केवल 50% शब्दों का ही प्रयोग इन पुस्तकों में हो पाया है।

4. कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि इन पुस्तकों के लिए शब्दों और संदर्भो का चयन तो ठीक किया गया है परन्तु उनका प्रस्तुतीकरण और स्तरीकरण ठीक प्रकार से नहीं हो पाया। इन पुस्तकों में न तो शब्द भंडार सम्बंधी योजनाबद्ध वृद्धि नजर आती है और न ही स्तरीकरण।

रा. सा. 5. 3 मध्यप्रदेश

रा. सा. 5. 3. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	1937	–	1937	799	–	2.41	79.97	8.13
कक्षा 2	5362	176.81	5362	1529	91.36	3.50	78.6	11.43
कक्षा 3	11655	117.36	5530	1776	16.15	3.11	72.80	11.36
कक्षा 4	16978	45.67	7765	2255	26.97	3.44	70.55	13.03
कक्षा 5	13558	–20.14	9996	2781	23.32	3.59	75.97	10.31

रा. सा. 5. 3. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भो से संबंधित शब्द			
				कोयईंग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	48.68	–	1.00	–	–	–	20.02	5.5	0.87	73.61
कक्षा 2	34.27	–	0.78	35.14	37.06	37.68	20.79	5.62	1.17	72.42
कक्षा 3	77.75	69.88	2.70	48.14	48.19	25.9	60.41	9.12	0.39	30.08
कक्षा 4	74.19	80.00	1.64	47.58	55.47	32.2	51.70	8.38	0.57	39.35
कक्षा 5	60.15	70.95	4.20	39.73	41.24	36.6	45.48	5.86	1.65	47.01

रा. सा. 5. 3. 3 सार

1. शब्द भण्डार परिमाण, वृद्धि की दर तथा आवृत्ति संख्या को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस पुस्तक माला का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से नहीं हुआ है।

2. कक्षा एक और दो की पुस्तकें शेष पुस्तकों की तुलना में अधिक असंतोषजनक है क्योंकि उनमें शब्द भार बहुत कम है। कम आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या सबसे अधिक है तथा कक्षा दो की पठन सामग्री कक्षा एक की तुलना में 176% अधिक है।

3. जहां तक शब्द भण्डार में संदर्भो संबंधी विविधता का प्रश्न है वह काफी है किन्तु कक्षा एक तथा दो की पुस्तकों में अन्य कक्षाओं की तुलना में प्रयुक्त शब्दों की संख्या कम है।

रा. सा. 5. 4 दिल्ली

रा. सा. 5. 4. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	1670	–	1670	905	–	1.84	82.87	5.07
कक्षा 2	5963	257.06	5963	1504	66.18	3.96	69.34	11.46
कक्षा 3	22512	277.52	11273	2809	86.76	4.01	64.89	17.20
कक्षा 4	24286	7.88	16103	3237	15.23	4.97	62.40	19.54
कक्षा 5	26616	9.59	15670	2853	−14.95	5.49	61.09	20.35

रा. सा. 5. 4. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भों से संबधित शब्द			
				कोयईंग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	33.8	61	4.64	–	–	–	27.65	5.3	1.65	65.4
कक्षा 2	59.37	71.22	0.76	38.18	41.41	42.46	10.37	6.18	1.32	82.13
कक्षा 3	67.81	60.7	1.38	39.40	43.75	36	53.75	9.25	1.7	35.3
कक्षा 4	57.02	70.72	1.32	40.62	46.64	39.7	46.30	10.44	2.47	40.79
कक्षा 5	64.70	73.16	2.20	73.32	47.94	36.35	52.19	11.6	4.8	31.41

रा. सा. 5. 4. 3 सार

1. दिल्ली की पुस्तकें समाहित पाठयक्रम के अंतर्गत बनी थी अतः उनमें भाषा शिक्षण सामग्री के अतिरिक्त अन्य विषयों यथा सामाजिक परिवेश, गणित आदि से संबंधित पठन साम्रगी भी सम्मिलित थी। उस दृष्टि से देखें तो कुल पठन सामग्री का परिमाण प्रत्येक कक्षा में कम है।

2. कक्षा तीन के बाद का शब्द भार फिर भी कुछ ठीक है किन्तु कक्षा एक का शब्द भार तो सबसे अनुपयुक्त है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कक्षा एक की पुस्तकों में हर तीसरा शब्द नया है तथा लगभग 83% शब्द पूरी पुस्तक में एक या दो बार प्रयुक्त हुए हैं जिससे उन्हें पढ़ने का आवश्यक अभ्यास छात्रों को नहीं मिल सकता।

3. जहां तक शब्दों के चयन का प्रश्न है एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या लगभग 70% है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ है कि दिल्ली की पुस्तकों में मानक भाषा का अधिक प्रयोग हुआ है। ऐसे शब्दों की कमी है जिन्हें हिन्दी की बेसिक शब्दावली का अंग माना गया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि इन पुस्तकों में मानक शब्दों का प्रयोग तो हुआ किन्तु अधिक प्रचलित शब्दों का प्रयोग कम हो पाया है। यह पुस्तकें सभी विषयों के अध्यापन के लिए बनाई गई है। इसलिए इनमें विभिन्न विषयों से संबंधित शब्दों का होना स्वाभाविक था।

रा. सा. 5. 5 हरियाणा

रा. सा. 5. 5. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	863	–	863	504	–	1.71	85.91	2.97
कक्षा 2	3672	325.49	3672	1130	124.20	3.24	71.59	11.39
कक्षा 3	8798	139.59	3425	1234	9.20	2.77	68.34	12.31
कक्षा 4	14432	64.26	6201	1008	46.51	3.42	71.29	12.32
कक्षा 5	11064	−23.33	5830	1941	7.35	3.00	75.01	9.42

रा. सा. 5. 5. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भों से संबंधित शब्द			
				कोयईग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	36.9	78.77	2.18	–	–	–	.27	7.14	1.78	90.81
कक्षा 2	46.41	72.93	1.32	45.17	45.8	41.98	22.65	5.13	2.12	69.10
कक्षा 3	84.6	80.64	1.37	55.18	56.88	32.33	60.94	8.5	.48	30.08
कक्षा 4	75	84.46	1.43	51.71	58.68	30.42	55.3	8.79	.44	35.74
कक्षा 5	69.86	81.66	3.24	50.9	53.83	28.9	57.65	9.63	1.03	31.69

रा. सा. 5. 5. 3 सार

1. हरियाणा राज्य का कुल शब्द भण्डार काफी कम है। इस पुस्तक माला में कुल और विभिन्न दोनों प्रकार के शब्द भी कम हैं और उनकी आवृत्ति भी कम हुई है।

2. कक्षा तीन, चार और पांच में तो नीचे की कक्षाओं के काफी शब्दों का प्रयोग किया गया है किन्तु कक्षा दो में ऐसा नहीं हो पाया जो अवांछनीय है।

3. लगभग 80% शब्द ऐसे हैं जो अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी पाये जाते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन पुस्तकों में हिन्दी के मानक शब्दों का प्रयोग पर्याप्त संख्या में हुआ है। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी होती है कि इन पुस्तकों के 50-60% शब्द बेसिक शब्दावली के अंग हैं तथा स्थानीय शब्दों की बहुत कमी है ।

4. संदर्भों की विविधता संतोषजनक है ।

5. कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हरियाणा राज्य की पुस्तकमाला में सबसे बड़ी कमी यही है कि इसमें पठन सामग्री बहुत कम है ।

रा. सा. 5. 6. हिमाचलप्रदेश

रा. सा. 5. 6. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	500	—	500	364	—	1.37	92.03	1.9
कक्षा 2	5310	962	5310	1396	283.5	3.81	72.85	12.87
कक्षा 3	8601	61.97	2779	1197	−14.25	2.32	74.1	9.51
कक्षा 4	7897	−9.34	4721	1633	36.42	2.89	72.62	11.87
कक्षा 5	12200	54.48	5410	1770	8.38	3.05	73.10	10.83

रा. सा. 5. 6 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भो से संबधित शब्द			
				कोयईंग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	31.86	72.53	2.74	—	—	—	31.3	9.34	2.19	57.17
कक्षा 2	33.8	71.9	2.04	40.32	40.37	37.53	24.2	3.58	1.21	71.01
कक्षा 3	88.63	74.19	1.83	48.7	53.63	28.98	58.56	10.1	.25	31.9
कक्षा 4	77.83	82.12	.24	53.45	59.95	32.86	55.17	9.12	.73	34.98
कक्षा 5	71.80	82.66	2.14	51.07	52.20	27.79	58.87	8.13	.9	32.1

रा . सा. 5. 6. 3 सार

1. एक ही पुस्तक माला की विभिन्न पुस्तकों में इतनी अधिक विश्रृंखलता केवल हिमाचलप्रदेश में ही देखने को मिलती है। जहां कक्षा एक की पुस्तक में केवल 500 शब्द हैं तो कक्षा दो की पुस्तक में 5000 से भी अधिक। इसी प्रकार कक्षा तीन और चार की पुस्तकों के शब्द भण्डार के परिमाण में भी कोई तालमेल नहीं है ।

2. कक्षा एक और दो को छोड़कर शेष कक्षाओं की पुस्तकों में विभिन्न शब्दों की संख्या में वृद्धि योजनाबद्ध ढंग से की गई है ।

3. सभी पुस्तकों में 70% से अधिक शब्द ऐसे हैं जो पूरी पुस्तक में केवल एक या दो बार ही प्रयुक्त हो पाये हैं। कक्षा एक की पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या 92% है जो कि नितान्त अवांछनीय है।

4. कक्षा तीन, चार और पांच में तो पिछली कक्षाओं के शब्दों का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है किन्तु कक्षा दो में ऐसा नहीं हो पाया। ऐसे शब्दों की संख्या जो एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त हुए हैं, बेसिक शब्दावलियों के अंग है इस बात की ओर संकेत करती हैं कि इन पुस्तकों में मानक भाषा का प्रयोग विशेष रूप से हुआ है ।

5. संदर्भो की विविधता संतोषजनक है ।

6. कक्षा एक और दो की पुस्तकें सब से अधिक अनुपयुक्त बनी है ।

रा. सा. 5. 7 राजस्थान

रा. सा. 5. 7. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	2560	–	2560	856	–	2.99	73.36	9.8
कक्षा 2	3726	45.54	3726	1153	34.69	3.23	69.73	12.39
कक्षा 3	13332	257.80	7377	2217	92.28	3.32	63.05	11.75
कक्षा 4	15114	13.36	7960	2170	–2.11	3.66	70.23	13.82
कक्षा 5	23907	58.17	12561	3280	5.06	3.81	71.28	13.46

रा. सा. 5. 7. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भो से संबंधित शब्द			
				कोयईंग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	36.68	72.55	3.27	–	–	–	25.8	4.32	1.75	68.13
कक्षा 2	53.42	76.15	1.04	37.93	40.05	37.52	22.37	3.38	1.21	73.04
कक्षा 3	61.16	64.01	2.61	46.95	50.78	27.19	59.63	8.93	1.8	29.64
कक्षा 4	49.26	78.3	1.75	47.51	55.43	27.32	55.99	9.03	.87	34.11
कक्षा 5	60.03	79.82	4.14	40.03	43.14	23.45	57.68	7.98	1.21	33.13

रा. सा. 5. 7. 3 सार

1. विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से नहीं किया गया है। कक्षा तीन में पिछली कक्षा की तुलना में लगभग दुगने शब्द हैं तो कक्षा चार में 2% कम ।

2. सारी पुस्तक माला के कुल शब्द भण्डार का परिमाण भी कम है ।

3. शब्द भार कक्षा एक को छोड़कर अन्य कक्षाओं में एक सीमा तक संतोषजनक कहा जा सकता है और एक या दो आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या भी अपेक्षाकृत कम है ।

4. शब्द चयन संतोषजनक है। उसमें संदर्भो की विविधता है तथा मानक शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा होते हुए भी स्थानीय शब्दों का प्रयोग भी पर्याप्त रूप में किया गया है ।

रा. सा. 5. 8 केन्द्रीय विद्यालय

रा. सा. 5. 8. 1 शब्द भंडार का परिमाण

	कुल प्रयुक्त शब्द	वृद्धि प्रतिशत	अधीत शब्द	विभिन्न शब्द	वृद्धि प्रतिशत	शब्द भार	1–2 आवृति वाले शब्द	5 से अधिक आवृति वाले शब्द
कक्षा 1	2676	–	2676	696	–	3.84	71.55	15.64
कक्षा 2	4613	72.38	4613	1313	88.64	3.51	65.87	17.88
कक्षा 3	10292	123.10	5578	1385	−5.48	4.02	52.63	18.91
कक्षा 4	16492	60.24	10011	1880	36.46	5.32	48.51	22.70
कक्षा 5	20240	22.72	9294	2267	20.58	4.09	65.81	14.93

रा. सा. 5. 8. 2 शब्द भंडार की उपयुक्तता

	एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द	एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	स्थानीय शब्द	विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द			विभिन्न संदर्भो से संबंधित शब्द			
				कोयड़ीग की सूची	जगन्नाथन की सूची	शिक्षा मंत्रालय की सूची	सामाजिक परिवेश	प्राकृतिक परिवेश	विज्ञान	अन्य
कक्षा 1	41.66	76.44	0.07	–	–	–	22.55	6.46	1.29	69.70
कक्षा 2	44.4	75.25	0.06	36.30	38.68	40.02	15	5.25	1.67	78.08
कक्षा 3	91.98	82.68	.86	54.94	56.96	34.22	57.25	9.38	.51	32.86
कक्षा 4	82.71	85.22	1.06	54.20	60.26	32.39	50.79	9.68	.90	38.63
कक्षा 5	68.59	89.18	4.2	48.16	50.46	28.89	71.68	7.63	1.54	19.15

रा. सा. 5. 8. 3 सार

5. 8. 3. 1 केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली पांचों पुस्तकों के शब्द भण्डार का विश्लेषण करने पर सबसे प्रमुख बात जो दृष्टिगोचर होती है वह है-स्तरीकरण का अभाव । प्रत्येक कक्षा में पिछली कक्षा की तुलना में कितनी अधिक सामग्री दी जाए, विभिन्न शब्दों की संख्या में वृद्धि का क्रम क्या हो तथा प्रत्येक नए शब्द को कितनी बार दुहराया जाए इत्यादि बातों का निर्धारण किसी पूर्व निश्चित योजना के अनुसार किया गया प्रतीत नहीं होता ।

5. 8. 3. 2 कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा दो की तुलना में 123% शब्द अधिक है किन्तु कक्षा पांच की पुस्तक में पिछली कक्षा से केवल 23% शब्द ही अधिक ।

5. 8. 3. 3 यही स्थिति विभिन्न शब्दों की है कक्षा दो की पुस्तक में कक्षा एक की पुस्तक से लगभग दुगने विभिन्न शब्दों का प्रयोग हुआ है जबकि कक्षा तीन की पुस्तक में कक्षा दो की तुलना में केवल 72 शब्द अधिक है । कक्षा 4-5 की पुस्तकों की स्थिति इससे बेहतर है किन्तु फिर भी कक्षा दो की पुस्तक में विभिन्न शब्दों की सर्वाधिक वृद्धि हुई है। पठन शिक्षण की दृष्टि से यह स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती ।

5. 8. 3. 4 कक्षा एक की पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या सबसे अधिक है जिनकी आवृत्ति पूरी पुस्तक में केवल 1-2 बार ही हुई है । पठन शिक्षण की दृष्टि से यह स्थिति अत्यन्त आपत्तिजनक है ।

5. 8. 3. 5 कक्षा चार में शब्द भार सर्वाधिक संतोषजनक है किन्तु कक्षा एक और दो में सर्वाधिक अनुपयुक्त ।

5. 8. 3. 6 जहां तक शब्दों के चयन का प्रश्न है, वह काफी सावधानीपूर्वक किया गया प्रतीत होता है। प्रत्येक पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या पर्याप्त है जिनका प्रयोग अन्य कक्षाओं की पुस्तकों में भी किया गया है। पठन शिक्षण की दृष्टि से यह स्थिति संतोषजनक है।

5. 8. 3. 7 पुस्तकों में ऐसे शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है, जो अन्य राज्यों की पुस्तकों में भी प्रयुक्त हुए है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि पुस्तकों में हिन्दी के मानक रूप का ही अधिक प्रयोग हुआ है। इस निष्कर्ष की

पुष्टि इस बात में भी होती है कि स्थानीय शब्दों का काफी अभाव है। इस संदर्भ में सब से अधिक आश्चर्य की बात यह है कि अन्य सब पुस्तकों में तो स्थानीय शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर ही हुआ है किन्तु कक्षा पांच की पुस्तक में चार प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जिन्हें स्थानीय कहा जा सकता है। कक्षा एक और दो की पुस्तकों में स्थानीय शब्दों का महत्व इसलिए है कि उनके द्वारा पठन शिक्षण में सहायता मिलती है किन्तु प्राथमिक स्तर की अंतिम कक्षा की पुस्तक में स्थानीय शब्द विशेष रूप से क्यों सम्मिलित किए गए ? संभवतः ये शब्द अनायास ही पठन-सामग्री में आ गए हैं और फिर इस बात की ओर संकेत करते हैं कि प्रत्येक कक्षा के लिए पठन शब्द भण्डार का चयन किसी पूर्व निश्चित योजना के आधार पर नहीं किया गया ।

5.8.3.8 इन पुस्तकों में प्रयुक्त शब्द भंडार संबंधी एक अन्य असाधारण बात यह दृष्टिगोचर होती है कि एक ओर तो इनमें बहुपचलित शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है किन्तु दूसरी ओर ऐसे शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत कम है जो हिन्दी की बेसिक शब्दावलियों के अंग है ।

5.8.3.9 इन पुस्तकों में विज्ञान संबंधी शब्दों का प्रयोग कक्षा तीन से पांच तक विशेष रूप से कम है ।

तुलनात्मक आँकड़े

(कक्षा 1 और 2)

कक्षा 1 और 2

तु. 5.1 कुल प्रयुक्त शब्द (बारम्बारिता सहित)

राज्य	कक्षा 1	कक्षा 2	योग
बिहार	1623	6848	8471
उत्तरप्रदेश	1683	5271	6954
मध्यप्रदेश	1937	5362	7299
दिल्ली	1670	5963	7633
हरियाणा	863	3672	4535
हिमाचलप्रदेश	500	5310	5810
राजस्थान	2560	3726	6286
केन्द्रीय विद्यालय	2676	4613	7289

तु. 5.2 विभिन्न शब्द

राज्य	कक्षा 1	कक्षा 2	कुल विभिन्न शब्द	दोनों कक्षाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त शब्द	कुल नए विभिन्न शब्द
बिहार	697	1690	2387	− 250	2137
उत्तरप्रदेश	675	1582	2257	− 328	1929
मध्यप्रदेश	799	1529	2328	− 389	1939
दिल्ली	905	1504	2409	− 306	2103
हरियाणा	504	1130	1634	− 186	1448
हिमाचलप्रदेश	364	1396	1760	− 116	1644
राजस्थान	856	1153	2009	− 314	1695
केन्द्रीय विद्यालय	696	1313	2009	− 290	1719

तु. 5.3 शब्द भंडार में वृद्धि
तु. 5.3.1 प्रयुक्त कुल शब्दों में वृद्धि

राज्य	कक्षा 1	कक्षा 2	कक्षा 2 में शब्द वृद्धि	प्रतिशत वृद्धि
बिहार	1623	6848	5225	321.9
उत्तरप्रदेश	1683	5271	3588	213.19
मध्यप्रदेश	1937	5362	3425	176.81
दिल्ली	1670	5963	4293	257.06
हरियाणा	863	3672	2809	325.49
हिमाचलप्रदेश	500	5310	4810	962
राजस्थान	2560	3726	1166	45.54
केन्द्रीय विद्यालय	2676	4613	1937	72.0

तु. 5.3.2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

राज्य	कक्षा 1	कक्षा 2	कक्षा 2 में शब्द वृद्धि	प्रतिशत वृद्धि
बिहार	697	1690	993	142 .46
उत्तरप्रदेश	675	1582	907	134.37
मध्यप्रदेश	799	1529	730	91.36
दिल्ली	905	1504	599	66.18
हरियाणा	504	1130	626	124.85
हिमाचलप्रदेश	364	1396	1032	283.5
राजस्थान	856	1153	297	34.6
केन्द्रीय विद्यालय	696	1313	617	88.64

तु. 5.4 शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)

राज्य	कक्षा 1	कक्षा 2	संयुक्त (कक्षा 1 + 2)
बिहार	2.32	4.05	3.54
उत्तरप्रदेश	2.49	3.33	3.08
मध्यप्रदेश	2.41	3.50	3.03
दिल्ली	1.84 ,	3.96	3.16
हरियाणा	1.71	3.24	2.77

हिमाचलप्रदेश	1.37	3.81	3.31
राजस्थान	2.99	3.23	3.12
केन्द्रीय विद्यालय	3.84	3.51	3.62

तु. 5.5 शब्द बारंबारिता

तु. 5.5.1 कक्षावार शब्द बारंबारिता

तु. 5.5.1.1 कक्षा-1

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	520	138	22	13	4
उत्तरप्रदेश	530	89	37	14	5
मध्यप्रदेश	639	95	37	20	8
दिल्ली	750	109	27	16	3
हरियाणा	433	56	12	3	0
हिमाचलप्रदेश	335	22	4	2	1
राजस्थान	628	144	42	25	17
केन्द्रीय विद्यालय	498	89	38	47	24

तु. 5.5.1.2 कक्षा-2

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	1185	247	134	73	51

उत्तरप्रदेश	1113	252	112	60	45
मध्यप्रदेश	1202	152	85	51	39
दिल्ली	1043	281	99	40	41
हरियाणा	809	180	78	37	26
हिमाचलप्रदेश	1017	199	102	48	30
राजस्थान	804	206	81	36	26
केन्द्रीय विद्यालय	865	213	114	76	45

तु. 5.5.1.3 कक्षा 1 और 2 की संयुक्त शब्द बारंबारिता

राज्य	1और2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	1705	385	156	86	55
उत्तरप्रदेश	1643	341	149	74	50
मध्यप्रदेश	1841	247	122	71	47
दिल्ली	1793	390	126	56	44
हरियाणा	1242	236	90	40	26
हिमाचलप्रदेश	1352	221	106	50	61
राजस्थान	1432	350	123	61	43
केन्द्रीय विद्यालय	1363	302	152	123	69

तु. 5.5.2 शब्द बारंबारिता का प्रतिशत

तु. 5:5.2.1 कक्षा-1

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	74.60	19.79	3.15	1.86	0.57
उत्तरप्रदेश	78.51	13.18	5.48	2.07	0.74
मध्यप्रदेश	79.97	11.88	4.63	2.50	1.00
दिल्ली	82.87	12.04	2.98	1.76	0.33
हरियाणा	85.91	11.11	2.38	0.59	शून्य
हिमाचलप्रदेश	92.03	6.04	1.09	0.54	0.27
राजस्थान	73.36	16.82	4.9	2.92	1.98
केन्द्रीय विद्यालय	71.55	12.78	5.45	6.75	3.44

तु. 5.5.2.2 कक्षा-2

राज्य	1-2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	70.01	14.61	7.92	4.32	3.01
उत्तरप्रदेश	70.35	15.92	7.07	3.79	2.84
मध्यप्रदेश	78.6	9.94	5.15	3.33	2.55
दिल्ली	69.34	18.68	6.58	2.65	2.23
हरियाणा	71.59	15.92	6.09	3.27	2.03

हिमाचलप्रदेश	72.85	14.25	7.3	3.43	2.14
राजस्थान	69.73	17.86	7.02	3.12	2.25
केन्द्रीय विद्यालय	65.87	16.22	8.68	5.78	3.42

तु. 5.5.2.3 कक्षा 1और 2 संयुक्त रूप में

राज्य	1-2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	71.42	16.12	6.53	3.6	2.3
उत्तरप्रदेश	72.49	15.1	6.6	3.27	2.21
मध्यप्रदेश	79.08	10.60	5.24	3.04	2.01
दिल्ली	74.43	14.23	4.6	2.32	1.6
हरियाणा	76	14.44	5.5	2.44	1.59
हिमाचलप्रदेश	76.8	12.5	6.02	2.8	3.46
राजस्थान	71.29	17.42	6.12	3.03	2.14
केन्द्रीय विद्यालय	67.84	15.03	7.56	6.12	3.43

तु. 5.5.3 समग्र हिन्दी प्रदेश में शब्द बारंबारिता

तु. 5.5.3.1 कक्षा-1

बारम्बारिता	संख्या	प्रतिशत
1	1183	46.30
2	477	18.69

3–5	472	18.47
6–10	202	7.90
11–20	118	4.61
21–40	65	2.54
41–60	18	0.70
61–80	9	0.35
81–100	2	.07
100 से अधिक	9	0.35
	2555	

तु. 5.5.3.2 कक्षा-2

बारंबारिता	संख्या	प्रतिशत
1	2163	45.68
2	822	17.36
3–5	772	16.30
6–10	438	9.25
11–20	274	5.78
21–40	135	2.85
41–60	46	0.97

61–80	30	0.63
81–100	11	0.23
100 से अधिक	44	0.92
	4735	

तु. 5.5.3.3 कक्षा 1 और 2 की संयुक्त शब्द बारंबारिता

बारम्बारिता	संख्या	प्रतिशत
1	3346	45.89
2	1299	17.81
3–5	1244	17.06
6–10	640	8.77
11–20	392	5.03
21–40	200	2.74
41–60	64	0.87
61–80	39	0.53
81–100	13	0.17
100 से अधिक	53	0.72
	7290	

तु. 5.6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

	कक्षा दो में प्रयुक्त शब्द		कक्षा तीन में प्रयुक्त शब्द	
राज्य	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बिहार	250	35.86	144	8.52

उत्तरप्रदेश	328	20.9	659	41.65
मध्यप्रदेश	389	25.44	524	34.27
दिल्ली	306	20.34	893	59.37
हरियाणा	186	16.46	529	46.41
हिमाचलप्रदेश	116	8.3	472	33.8
राजस्थान	314	27.23	616	53.4
केन्द्रीय विद्यालय	290	22.08	583	44.4

तु 5.7.1 अन्य राज्यों की पुस्तकों में पाए जाने वाले विभिन्न शब्द

तु. 5.7.1.1 कक्षा–1

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल एक राज्य में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	केवल दो राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	केवल तीन राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	तीन से अधिक राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत
बिहार	697	242	34.72	85	12.19	186	26.68	184	26.39
उत्तरप्रदेश	675	186	27.55	100	14.81	189	28.00	200	29.62
दिल्ली	905	353	39.00	198	21.87	104	11.49	250	27.62
हरियाणा	504	107	21.23	80	15.87	128	25.39	189	37.5
हिमाचलप्रदेश	364	100	27.47	56	15.65	104	28.57	103	28.29
राजस्थान	856	235	27.45	140	16.35	275	32.12	206	24.06
केन्द्रीय विद्यालय	696	164	23.56	114	16.37	189	27.15	229	32.90

तु. 5.7.1.2 कक्षा–2

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल एक राज्य में पाए जाने वाले शब्द		केवल दो राज्यों में पाए जाने वाले शब्द		केवल तीन राज्यों में पाए जाने वाले शब्द		तीन से अधिक राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	
			प्रतिशत		प्रतिशत		प्रतिशत		प्रतिशत
बिहार	1690	516	30.53	447	26.44	178	10.53	549	32.48
उत्तरप्रदेश	1582	454	28.69	395	24.96	181	11.44	552	34.89
दिल्ली	1504	433	28.78	699	46.47	186	12.36	516	34.30
हरियाणा	1130	306	27.07	255	22.56	117	10.35	452	40.00
हिमाचलप्रदेश	1396	392	28.08	451	32.30	100	7.16	453	32.44
राजस्थान	1153	275	23.85	323	28.01	104	9.01	451	39.11
केन्द्रीय विद्यालय	1313	325	24.75	437	32.28	117	8.91	434	33.05

तु. 5.7.2 स्थानीय शब्द

तु. 5.7.2.1 कक्षा–1

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वही प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	सामान्य शब्द	प्रतिशत	स्थानीय शब्द	प्रतिशत
बिहार	697	242	34.72	196	28.12	46	6.59
उत्तरप्रदेश	675	286	27.55	168	24.88	18	2.66
मध्यप्रदेश	799	271	33.91	263	32.91	8	1.00
दिल्ली	905	353	39	311	34.36	42	4.64
हरियाणा	504	107	21.23	96	19.04	11	2.18
हिमाचलप्रदेश	364	100	27.47	90	24.72	10	2.74
राजस्थान	856	235	27.45	207	24.18	28	3.27
केन्द्रीय विद्यालय	696	164	23.56	159	22.84	5	0.07

तु. 5.7.2.2 कक्षा–2

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वही प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	सामान्य शब्द	प्रतिशत	स्थानीय शब्द	प्रतिशत
बिहार	1690	516	30.53	471	27.86	45	2.66
उत्तरप्रदेश	1582	454	28.69	423	26.73	31	1.95
मध्यप्रदेश	1529	454	31.58	471	30.8	12	0.78
दिल्ली	1504	433	28.71	419	22.84	14	0.76
हरियाणा	1130	306	26.98	291	25.75	15	1.32
हिमाचलप्रदेश	1396	392	28.08	366	26.75	26	1.86
राजस्थान	1153	275	23.85	263	22.81	12	1.04
केन्द्रीय विद्यालय	1313	325	24.75	317	24.14	8	0.6

तु. 5.7.2.3 कक्षा–1 + 2

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	केवल वही प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	सामान्य शब्द	प्रतिशत	स्थानीय शब्द	प्रतिशत
बिहार	2387	758	31.75	667	27.94	91	3.81
उत्तरप्रदेश	2257	640	28.35	591	26.18	49	2.17
मध्यप्रदेश	2328	754	32.38	734	31.52	20	0.85
दिल्ली	2409	786	32.62	730	30.3	56	2.32
हरियाणा	1634	413	25.27	387	23.68	26	1.59
हिमाचलप्रदेश	1760	492	27.95	456	25.9	36	2.04
राजस्थान	2009	510	25.38	470	23.39	40	1.99
केन्द्रीय विद्यालय	2009	489	24.34	476	26.69	13	0.64

तु. 5.8.1 कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

कक्षा 1 + 2

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत
बिहार	2137	778	36.4	19.45	651	30.46	32.55	127	5.94	6.35
उत्तरप्रदेश	1929	706	36.06	17.65	593	30.74	29.65	113	5.85	5.65
मध्यप्रदेश	1929	678	35.14	16.95	548	28.40	27.4	130	6.73	3.25
दिल्ली	2103	803	38.18	20.75	644	30.62	32.2	159	7.56	7.95
हरियाणा	1448	662	45.71	16.55	532	36.74	26.6	130	8.97	6.50
हिमाचलप्रदेश	1644	663	40.32	16.57	538	32.72	26.09	125	7.6	6.25
राजस्थान	1695	643	37.93	16.07	515	30.38	25.75	128	7.55	6.4
केन्द्रीय विद्यालय	1719	624	36.30	15.06	531	30.89	26.55	93	5.18	4.65

तु. 5. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची मे पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 2. 1 कक्षा 1 + 2

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
बिहार	2137	874	40.08	17.48	631	29.52	31.55	243	11.37	8.01
उत्तरप्रदेश	1929	735	38.1	14.7	542	28.09	27.1	193	10	6.43
मध्यप्रदेश	1929	715	37.06	14.03	687	35.61	34.35	128	6.63	4.26
दिल्ली	2103	871	30.00	17.42	631	41.41	31.55	240	11.41	8
हरियाणा	1448	664	45.8	13.28	484	33.42	24.2	180	12.43	6
हिमाचलप्रदेश	1644	664	40.37	13.28	520	31.63	26.09	144	8.75	4.08
राजस्थान	1695	679	40.05	13.58	516	30.44	25.8	163	9.61	5.43
केन्द्रीय विद्यालय	1719	665	36.68	13.03	515	29.95	25.75	150	8.72	3

तु. 5.8.3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5.8.3.1 कक्षा 1 + 2

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम सूची मे पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची का प्रतिशत
बिहार	2137	792	37.06	31.68	556	26.01	27.8	236	11.04	47.02
उत्तरप्रदेश	1929	693	35.92	27.72	480	24.88	24	213	11.04	42.6
मध्यप्रदेश	1929	727	37.68	29.08	474	24.57	23.7	253	13.11	50.6
दिल्ली	2103	839	39.89	33.56	591	28.10	29.55	248	11.79	49.6
हरियाणा	1448	608	41.98	24.32	421	29.07	21.05	187	12.91	37.4
हिमाचलप्रदेश	1644	617	37.53	24.68	422	25.66	21.1	195	11.86	39.4
राजस्थान	1695	636	37.52	25.44	438	25.84	21.9	198	11.68	39.6
केन्द्रीय विद्यालय	1719	688	40.02	27.52	460	26.75	23	228	13.26	45.6

तु. 5.9 विभिन्न संरचना वाले शब्द

तु. 5.9.1 मूल और तिर्यक शब्द

	मूल शब्द			तिर्यक शब्द			कुल
	कक्षा 1	कक्षा 2	कुल	कक्षा 1	कक्षा 2	कुल	
बिहार	169	223	392	266	846	1112	1504
उत्तरप्रदेश	123	220	343	285	789	1074	1417
मध्यप्रदेश	150	231	381	321	816	1137	1518
दिल्ली	191	192	383	299	809	1108	1491
हरियाणा	113	199	312	201	597	798	1110
हिमाचलप्रदेश	77	193	270	135	587	722	922
राजस्थान	160	165	325	409	590	999	1324
केन्द्रीय विद्यालय	134	178	312	237	671	908	1220

तु 5.9.2 शब्दों में वर्ण और मात्राओं की संख्या

तु. 5.9.2.1 कक्षा–1

	बिहार	उत्तर प्रदेश	मध्य प्रदेश	दिल्ली	हरियाणा	हिमाचल प्रदेश	राजस्थान	केन्द्रीय विद्यालय
(i) एक मात्रा वाले शब्द	303	333	323	405	219	150	352	317
(ii) दो मात्रा वाले शब्द	239	237	238	284	165	128	365	268
(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	45	29	30	43	18	21	50	44
(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	23	36	34	33	26	16	37	34
(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	153	172	166	176	120	75	152	151
(vi) एक मात्रा तीन अथवा अधिक वर्ण वाले शब्द	122	126	122	191	69	60	154	120
(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	115	131	140	157	103	72	188	146
(viii) दो मात्रा तीन/अधिक वर्ण वाले शब्द	119	91	81	128	53	53	169	106
(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	32	52	48	33	45	25	34	38
(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	17	27	27	33	31	17	26	18
(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	10	12	12	23	19	5	14	10

तु. 5.9.2.2 कक्षा–2

	बिहार	उत्तर प्रदेश	मध्य प्रदेश	दिल्ली	हरियाणा	हिमाचल प्रदेश	राजस्थान	केन्द्रीय विद्यालय
(i) एक मात्रा वाले शब्द	448	609	589	580	408	523	443	483
(ii) दो मात्रा वाले शब्द	736	587	580	589	435	486	438	448
(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	110	146	140	136	83	107	96	148
(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	44	42	44	41	48	44	36	40
(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	165	241	242	226	197	195	166	173
(vi) एक मात्रा तीन अथवा अधिक वर्ण वाले शब्द	340	322	325	247	256	277	236	260
(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	269	257	250	247	204	198	177	151
(viii) दो मात्रा तीन/अधिक वर्ण वाले शब्द	355	328	322	333	232	276	244	257
(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	47	47	46	37	32	44	38	27
(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	48	42	44	38	30	31	19	25
(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	33	31	34	28	23	35	26	38

तु. 5.9.2.3 कक्षा–1 + 2

	बिहार	उत्तर प्रदेश	मध्य प्रदेश	दिल्ली	हरियाणा	हिमाचल प्रदेश	राजस्थान	केन्द्रीय विद्यालय
(i) एक मात्रा वाले शब्द	751	942	912	985	627	673	795	800
(ii) दो मात्रा वाले शब्द	975	824	818	873	600	614	803	716
(iii) तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द	155	175	170	179	101	128	146	192
(iv) एक मात्रा एक वर्ण वाले शब्द	67	78	78	74	74	60	73	74
(v) एक मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	318	413	408	402	317	270	318	324
(vi) एक मात्रा तीन अथवा अधिक वर्ण वाले शब्द	462	448	447	438	325	337	390	380
(vii) दो मात्रा दो वर्ण वाले शब्द	384	388	390	404	307	270	365	297
(viii) दो मात्रा तीन/अधिक वर्ण वाले शब्द	474	419	403	461	285	329	413	363
(ix) बिना मात्रा के दो वर्ण वाले शब्द	79	99	94	70	77	69	72	65
(x) बिना मात्रा के तीन वर्ण वाले शब्द	65	69	71	71	61	48	45	43
(xi) बिना मात्रा के तीन से अधिक वर्ण वाले शब्द	43	43	46	51	42	40	40	48

तु. 5.9.3 संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द

	कक्षा 1			कक्षा 2			(कक्षा 1 + 2)		
राज्य	विभिन्न शब्द	संयुक्त शब्द	प्रतिशत	विभिन्न शब्द	संयुक्त शब्द	प्रतिशत	विभिन्न शब्द	संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	प्रतिशत
बिहार	697	39	5.59	1690	145	8.85	2387	184	7.9
उत्तरप्रदेश	675	65	9.62	1582	155	9.79	2257	220	9.74
मध्यप्रदेश	799	20	2.5	1529	153	10	2328	173	7.43
दिल्ली	905	87	9.61	1504	152	10	2409	239	9.92
हरियाणा	504	3	0.59	1130	112	9.91	1634	115	7.03
हिमाचलप्रदेश	364	4	1.09	1396	216	15.47	1760	220	12.5
राजस्थान	856	36	4.02	1153	127	11.01	2009	163	8.17
केन्द्रीय विद्यालय	696	25	3.59	1313	99	7.53	2009	124	6.17

तु. 5.9.4 अनुस्वार - अनुनासिक युक्त शब्द

	कक्षा 1			कक्षा 2			(कक्षा 1 + 2)		
राज्य	विभिन्न शब्द	अुन. शब्द	प्रतिशत	विभिन्न शब्द	अनु. शब्द	प्रतिशत	विभिन्न शब्द	अनु. अनुना. युक्त शब्द	प्रतिशत
बिहार	697	88	12.62	1690	308	18.22	2387	396	17.01
उत्तरप्रदेश	675	73	10.81	1582	275	17.38	2257	348	15.41
मध्यप्रदेश	799	45	5.63	1529	160	10.46	2328	205	8.8
दिल्ली	905	93	10.27	1504	247	16.42	2409	340	14.11
हरियाणा	504	59	11.7	1130	186	16.46	1634	245	14.99
हिमाचलप्रदेश	364	40	10.98	1396	85	6.08	1760	125	7.10
राजस्थान	856	85	9.92	1153	162	14.05	2009	247	12.29
केन्द्रीय विद्यालय	696	82	11.78	1313	190	14.47	2009	272	13.53

तु. 5.10 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द

कक्षा – 1 + 2

क्षेत्र/राज्य	प्राकृतिक परिवेश	प्रति	सामाजिक परिवेश	प्रति.	घर परिवार	प्रति.	पशु–पक्षी	प्रति.	मनोभाव सूचक	प्रति.	खेल–कूद संबंधी	प्रति.	विज्ञान	प्रति.	शिक्षा	प्रति.	स्वास्थ्य	प्रति
बिहार	159	7.44	417	19.5	207	9.68	43	2.00	58	2.71	15	0.70	35	1.68	62	2.90	28	1.31
उत्तरप्रदेश	101	5.23	443	22.96	153	7.93	67	3.47	55	2.35	12	0.62	27	1.39	50	2.59	17	0.88
मध्यप्रदेश	130	5.58	478	20.53	138	5.92	65	2.79	61	2.61	16	0.68	25	1.07	52	2.23	17	0.72
दिल्ली	120	4.93	345	14.18	205	8.42	47	1.93	49	2.01	18	0.73	30	1.23	60	2.46	18	0.73
हरियाणा	85	5.87	364	25.13	112	7.73	37	2.55	47	3.24	12	0.82	29	2.00	62	4.08	12	0 82
हिमाचलप्रदेश	75	5.85	425	33.20	96	7.5	35	2.73	44	3.43	12	0.93	24	18.75	60	4.00	14	1.0
राजस्थान	69	4.0	424	25.0	123	7.25	37	2.18	43	2.53	17	1.0	28	1.65	59	3.48	14	0.82
केन्द्रीय विद्यालय	94	6.57	311	21.76	154	10.77	28	2.65	43	3.0	16	1.11	28	1.95	63	4.40	8	0.35

तुलनात्मक आँकड़े

(कक्षा 3 से 5)

कक्षा 3, 4 और 5

तु 5.1 कुल तथा अधीत शब्द

राज्य	कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5	
	कुल शब्द	अधीत शब्द	कुल शब्द	अधीत शब्द	कुल शब्द	अधीत शब्द
बिहार	13563	7151	22016	9932	24206	12379
उत्तरप्रदेश	8586	5987	11906	8884	11879	7761
मध्यप्रदेश	11655	5530	16978	7765	13554	9996
दिल्ली	22512	11273	24286	16103	26616	15676
हरियाण	3645	3425	7812	6201	11064	5830
हिमाचल प्रदेश	8601	2779	7897	4721	5902	5410
राजस्थान	13332	7377	15114	7960	23907	12521
केन्द्रीय विद्यालय	10292	5578	16492	10011	20240	9294

तु. 5. 2 विभिन्न शब्द

राज्य	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5	योग
बिहार	2448	3087	3183	8718
उत्तरप्रदेश	2071	2326	2493	6890
मध्यप्रदेश	1776	2255	2781	6812
दिल्ली	2809	3237	2853	8899
हरियाणा	1234	1808	1941	4983
हिमाचलप्रदेश	1197	1633	1770	4600
राजस्थान	2217	2170	3280	7667
केन्द्रीय विद्यालय	1385	1880	2267	5532

तु 5. 3 शब्द भंडार में वृद्धि
5. 3. 1 प्रयुक्त कुल शब्दों में वृद्धि

राज्य	कक्षा 3				कक्षा 4				कक्षा 5			
	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत	कुल प्रयुक्त शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
बिहार	13563	6848	6615	96.59	22016	13563	8453	62.32	24206	22016	2190	9.94
उत्तरप्रदेश	8586	6954	1632	23.46	11906	8586	3320	38.08	11879	11906	−27	−22
मध्यप्रदेश	11655	7299	4356	59.67	16978	11655	5323	45.67	13558	16978	−3420	−20.14
दिल्ली	22512	5963	16549	277.52	24286	22512	1774	7.88	26616	24286	2330	9.59
हरियाणा	8798	3672	5126	139.59	7812	3645	4167	114.32	11064	7812	4252	54.42
हिमाचलप्रदेश	8601	5310	3291	61.97	7897	8601	−804	−9.34	5902	7897	−1995	−25.26
राजस्थान	13332	3726	9606	257.80	15114	13332	1782	3.36	23907	15114	7793	51.56
केन्द्रीय विद्यालय	10292	4613	5679	123.10	16492	10292	6200	60.2	20240	16492	3748	22.72

तु 5. 3. 2 विभिन्न शब्दों में वृद्धि

राज्य	कक्षा 3				कक्षा 4				कक्षा 5			
	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत	प्रयुक्त विभिन्न शब्द	पिछली कक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शब्द	वृद्धि	वृद्धि प्रतिशत
बिहार	2448	1690	758	44.85	3087	2448	639	26.1	3183	3087	96	3.1
उत्तरप्रदेश	2071	1582	489	30.91	2326	2071	255	10.96	2493	2326	167	6.69
मध्यप्रदेश	1776	1529	247	13.90	2255	1776	479	21.24	2781	2255	526	18.91
दिल्ली	2809	1504	1305	86.76	3237	2809	428	13.32	2853	3237	−484	−16.96
हरियाणा	1234	1130	104	9.20	1808	1234	574	31.74	1941	1808	133	6.85
हिमाचलप्रदेश	1197	1396	−199	−16.62	1633	1197	436	26.47	1770	1633	137	7.74
राजस्थान	2217	1153	1064	47.99	2170	2217	−47	−2.16	3280	2170	110	3.35
केन्द्रीय विद्यालय	1385	1313	72	5.19	1880	1385	505	27.93	2267	1880	387	17.07

तु. 5. 4 शब्द भार (प्रति नए शबद के अनुपात में पुराने शब्द)

राज्य	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
बिहार	2.92	3.21	3.88
उत्तरप्रदेश	2.89	3.81	3.11
मध्यप्रदेश	3.11	3.44	3.59
दिल्ली	4.01	4.97	5.49
हरियाणा	2.77	3.42	3.00
हिमाचलप्रदेश	2.32	2.89	3.05
राजस्थान	3.32	3.66	3.81
केन्द्रीय विद्यालय	4.02	5.32	4.09

तु. 5. 5 शब्द बारंबारिता

तु. 5. 5. 1 कक्षावार शब्द बारंबारिता

तु. 5. 5. 1. 1 कक्षा 3

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	1805	328	193	81	41
उत्तरप्रदेश	1447	388	122	75	39
मध्यप्रदेश	1293	281	105	61	36
दिल्ली	1823	525	251	116	94
हरियाणा	845	237	89	42	21
हिमाचलप्रदेश	887	196	71	33	10
राजस्थान	1398	558	158	62	41
केन्द्रीय विद्यालय	729	394	141	78	43

तु. 5. 5. 1. 2 कक्षा 4

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	2290	445	189	100	63
उत्तरप्रदेश	1566	417	180	107	56
मध्यप्रदेश	1591	370	152	83	59
दिल्ली	2020	584	320	170	143
हरियाणा	1289	292	127	60	40
हिमाचलप्रदेश	1186	253	114	57	23
राजस्थान	1524	346	168	76	56
केन्द्रीय विद्यालय	912	541	233	144	80

तु. 5. 5. 1. 3 कक्षा 5

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	2238	537	214	110	84
उत्तरप्रदेश	1855	361	153	93	31
मध्यप्रदेश	2113	381	168	70	49
दिल्ली	1743	529	274	160	147
हरियाणा	1456	302	99	67	17
हिमाचलप्रदेश	1294	284	118	58	16
राजस्थान	2338	500	240	119	83
केन्द्रीय विद्यालय	1492	436	162	97	80

5. 5. 2 शब्द बारंबारिता का प्रतिशत

तु. 5. 5. 2. 1 कक्षा 3

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	73.73	13.39	7.88	3.30	1.67
उत्तरप्रदेश	69.86	18.37	5.89	3.62	1.88
मध्यप्रदेश	72.80	15.82	5.91	3.43	2.02
दिल्ली	64.89	18.68	8.93	4.12	3.34
हरियाणा	68.34	19.20	7.21	3.40	1.70
हिमाचलप्रदेश	74.10	16.37	5.93	2.75	0.83
राजस्थान	63.05	25.16	7.12	2.79	1.84
केन्द्रीय विद्यालय	52.63	28.44	10.18	5.63	3.10

तु. 5. 5. 2. 2 कक्षा 4

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	74.18	14.41	6.12	3.23	2.04
उत्तरप्रदेश	67.32	17.92	7.73	4.60	2.40
मध्यप्रदेश	70.55	16.40	6.74	3.68	2.61
दिल्ली	62.40	18.04	9.88	5.25	4.41
हरियाणा	71.29	16.15	7.02	3.18	2.12
हिमाचलप्रदेश	72.62	15.49	6.98	3.49	1.40
राजस्थान	70.23	15.94	7.74	3.50	2.58
केन्द्रीय विद्यालय	48.51	28.77	12.39	6.06	4.25

तु. 5. 5. 2. 3 कक्षा 5

राज्य	1 और 2	3-5	6-10	11-20	21 से अधिक
बिहार	70.31	16.87	6.72	3.45	2.63
उत्तरप्रदेश	74.40	14.48	6.13	3.73	1.24
मध्यप्रदेश	75.97	13.70	6.04	2.51	1.76
दिल्ली	61.09	18.54	9.60	5.60	5.15
हरियाणा	75.01	15.55	5.10	3.45	0.87
हिमाचलप्रदेश	46.71	10.25	4.25	2.09	0.57
राजस्थान	71.28	15.24	7.31	3.62	2.53
केन्द्रीय विद्यालय	65.81	19.23	7.14	4.27	3.52

तु 5. 6 अन्य कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द (पिछली कक्षा से आए शब्द)

	कक्षा 3 में		कक्षा 4 में		कक्षा 5 में	
राज्य	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बिहार	144	5.88	1795	58.14	2063	64.81
उत्तरप्रदेश	659	31.82	1493	64.18	1652	66.26
मध्यप्रदेश	524	29.51	1381	61.24	1673	60.15
दिल्ली	893	31.79	1905	58.85	1846	64.70
हरियाणा	529	42.86	1044	57.74	1356	69.86
हिमाचलप्रदेश	472	39.43	1061	64.97	1271	71.80
राजस्थान	616	27.78	1356	62.48	1969	60.03
केन्द्रीय विद्यालय	583	42.09	1274	67.76	1555	68.59

तु 5. 7. 1 अन्य राज्यों की पुस्तकों में पाए जाने वाले विभिन्न शब्द

तु. 5. 7. 1. 1 कक्षा 3

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वही प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	केवल एक अन्य राज्य में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	केवल दो राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	तीन अथवा अधिक राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत
बिहार	2448	913	37.29	428	17.51	268	10.94	839	34.27
उत्तरप्रदेश	2071	599	28.92	358	17.28	259	12.50	855	41.33
मध्यप्रदेश	1776	535	30.12	279	15.70	198	11.14	764	43.13
दिल्ली	2809	1104	39.30	512	18.22	296	10.53	897	31.93
हरियाणा	1234	239	19.36	183	14.82	138	11.18	672	54.61
हिमाचलप्रदेश	1197	304	25.81	176	14.70	144	12.03	568	47.45
राजस्थान	2217	798	35.99	388	17.50	245	11.05	786	35.45
केन्द्रीय विद्यालय	1385	240	17.32	206	14.87	177	12.77	762	55.01

तु. 5. 7. 1. 2 कक्षा 4

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वहीं प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	केवल एक अन्य राज्य में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	केवल दो राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	तीन अथवा अधिक राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत
बिहार	3087	1070	34.66	504	16.32	341	11.04	1172	37.96
उत्तरप्रदेश	2326	489	21.02	342	14.70	276	11.86	1219	52.40
मध्यप्रदेश	2255	451	20.00	384	17.02	307	13.61	1113	49.35
दिल्ली	3237	948	29.28	551	17.02	410	12.66	1328	41.02
हरियाणा	1808	281	15.54	227	12.55	211	11.67	1089	60.23
हिमाचलप्रदेश	1633	292	17.88	185	11.32	175	10.71	981	60.07
राजस्थान	2170	471	21.70	324	14.93	251	11.56	1124	51.79
केन्द्रीय विद्यालय	1880	278	14.78	240	12.76	232	12.34	1130	60.10

तु. 5. 7. 1. 3 कक्षा 5

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वही प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	केवल एक अन्य राज्य में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	केवल दो राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	तीन अथवा अधिक राज्यों में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत
बिहार	3183	897	28.18	510	16.02	394	12.31	1382	43.41
उत्तरप्रदेश	2493	641	25.71	393	15.76	276	10.95	1183	47.57
मध्यप्रदेश	2781	808	29.95	471	16.92	305	10.96	1197	43.04
दिल्ली	2853	766	26.84	466	16.33	327	11.46	1294	45.35
हरियाणा	1941	356	18.34	275	14.16	240	12.10	1070	55.12
हिमाचलप्रदेश	1770	307	17.34	247	13.95	189	10.67	1027	58.02
राजस्थान	3280	990	30.18	569	17.34	381	11.61	1340	40.85
केन्द्रीय विद्यालय	2267	472	20.82	353	15.57	366	16.14	1076	47.46

तु 5. 7. 2 स्थानीय शब्द

तु. 5. 7. 2. 1 कक्षा 3

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वहीं प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	सामान्य शब्द	प्रतिशत	स्थानीय शब्द	प्रतिशत
बिहार	2448	913	37.29	1535	62.70	49	2.00
उत्तरप्रदेश	2071	599	28.92	1483	71.60	48	2.31
मध्यप्रदेश	1776	535	30.12	1241	69.87	39	2.70
दिल्ली	2809	1104	39.30	1705	60.69	39	1.38
हरियाणा	2234	239	19.36	995	80.63	17	1.37
हिमालयप्रदेश	1197	309	25.81	888	74.18	22	1.83
राजस्थान	2217	789	35.99	1419	64.00	58	2.61
केन्द्रीय विद्यालय	1385	240	17.32	1145	82.67	12	0.86

तु. 5. 7. 2. 2 कक्षा 4

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वहीं प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	सामान्य शब्द	प्रतिशत	स्थानीय शब्द	प्रतिशत
बिहार	3087	1070	34.66	2017	65.33	52	1.68
उत्तरप्रदेश	2326	489	21.02	1837	78.79	37	1.59
मध्यप्रदेश	2255	451	20.00	1804	80.00	37	1.64
दिल्ली	3237	948	29.48	2288	70.68	43	1.32
हरियाणा	1808	281	15.54	1527	84.45	26	1.43
हिमालयप्रदेश	1633	292	17.88	1441	88.24	04	0.24
राजस्थान	2170	471	21.70	1679	77.37	38	1.75
केन्द्रीय विद्यालय	1880	278	14.78	1602	85.21	20	1.06

तु. 5. 7. 2. 3 कक्षा 5

राज्य	विभिन्न शब्द	केवल वहीं प्रयुक्त शब्द	प्रतिशत	सामान्य शब्द	प्रतिशत	स्थानीय शब्द	प्रतिशत
बिहार	3183	897	28.18	2289	71.84	86	2.69
उत्तरप्रदेश	2493	641	25.71	1852	72.28	55	2.06
मध्यप्रदेश	2781	808	29.05	1973	70.94	117	4.20
दिल्ली	2853	766	26.84	2087	73.15	63	2.20
हरियाणा	1941	356	18.34	1585	81.65	63	3.24
हिमालयप्रदेश	1770	307	17.34	1363	77.00	38	2.14
राजस्थान	3280	990	30.18	2390	72.86	136	4.14
केन्द्रीय विद्यालय	2267	472	20.82	1795	79.17	41	1.80

तु. 5. 8 विभिन्न सूचियों में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 1 कोयईग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 1. 1 कक्षा 3

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईग की सूची का प्रतिशत
बिहार	2448	1079	44.07	26.09	838	34.23	41.09	241	9.08	12.05
उत्तरप्रदेश	2071	996	48.09	24.09	771	27.22	38.55	225	10.86	11.25
मध्यप्रदेश	1776	855	48.14	21.37	686	38.62	34.30	167	9.51	8.45
दिल्ली	2809	1107	39.40	27.67	828	29.47	41.40	279	9.93	13.95
हरियाणा	1234	681	55.18	17.02	553	44.81	27.65	128	10.37	6.40
हिमाचलप्रदेश	1197	583	48.70	14.97	477	39.84	23.85	106	8.55	5.30
राजस्थान	2217	1041	46.95	26.02	795	35.85	39.75	246	11.09	12.30
केन्द्रीय विद्यालय	1385	761	54.94	19.02	628	45.34	31.40	133	9.60	6.65

तु. कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 1. 2 कक्षा 4

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत
बिहार	3087	1277	41.36	31.92	897	44.85	44.85	380	1.23	19.00
उत्तरप्रदेश	2326	1136	48.83	28.04	840	36.11	42.00	296	12.72	14.8
मध्यप्रदेश	2255	1073	47.58	26.82	811	35.96	40.55	262	11.61	13.01
दिल्ली	3237	1315	40.62	32.87	952	29.40	47.6	363	11.21	18.15
हरियाणा	1808	935	51.71	23.37	718	39.71	35.9	217	12.00	10.85
हिमाचलप्रदेश	1633	873	53.45	21.82	685	41.94	34.25	188	11.51	9.4
राजस्थान	2170	1031	47.51	25.77	777	35.80	38.85	254	11.70	12.7
केन्द्रीय विद्यालय	1880	1019	54.20	25.47	805	42.81	40.25	214	11.38	10.7

तु. कोयईंग की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 1. 3 कक्षा 5

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत	द्वितीय दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	कोयईंग की सूची का प्रतिशत
बिहार	3183	1359	42.69	33.97	957	30.67	47.85	402-	12.62	20.1
उत्तरप्रदेश	2493	1110	44.52	27.75	802	32.17	40.1	308	12.35	15.4
मध्यप्रदेश	2781	1105	39.73	27.62	774	27.83	38.7	331	11.90	16.55
दिल्ली	2853	2092	73.32	73.32	1715	60.11	85.75	377	13.21	18.85
हरियाणा	1941	988	50.90	24.7	715	36.78	35.7	274	14.11	13.7
हिमाचलप्रदेश	1770	904	51.07	22.06	677	38.24	33.85	227	12.82	11.35
राजस्थान	3280	1313	40.03	32.82	958	29.20	47.9	355	10.82	17.75
केन्द्रीय विद्यालय	2267	1092	48.16	27.3	848	37.40	42.4	244	10.76	12.2

तु. 5. 8. 2 जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 2. 1 कक्षा 3

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
बिहार	2448	1163	47.5	23.26	786	32.1	39.3	377	15.4	12.56
उत्तरप्रदेश	2071	1019	49.20	20.38	681	32.88	34.5	338	16.32	11.26
मध्यप्रदेश	1776	856	48.19	17.12	615	34.62	30.75	241	13.56	8 03
दिल्ली	2809	1229	43.75	24.48	797	28.37	39.85	432	15.37	14.4
हरियाणा	1234	702	56.88	14.04	520	42.13	26.00	182	14.74	6.06
हिमाचलप्रदेश	1197	642	53.63	12.84	463	38.68	23.15	179	14.95	5.95
राजस्थान	2217	1126	50.78	22.52	748	33.73	37.04	378	17.05	12.06
केन्द्रीय विद्यालय	1385	789	56.96	15.78	584	42.16	29.02	205	14.80	6.83

तु. जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 2. 2 कक्षा 4

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
बिहार	3087	1547	50.1	30.94	954	30.9	47.7	5.93	19.2	19.76
उत्तरप्रदेश	2326	1313	56.44	26.26	838	36.02	41.9	475	20.42	15.83
मध्यप्रदेश	2255	1251	5547	25.02	831	36.85	41.55	420	18.62	14.00
दिल्ली	3237	1510	46.64	30.2	974	30.08	48.7	536	16.55	17.86
हरियाणा	1808	1061	58.68	21.22	739	40.87	36.95	322	17.80	10.73
हिमाचलप्रदेश	1633	979	59.95	19.88	655	66.90	32.75	324	19.84	10.80
राजस्थान	2170	1203	55.43	24.06	78236.02	39.1	421	19.40	14.03	
केन्द्रीय विद्यालय	1880	1133	60.26	22.66	77841.38	38.9	355	18.88	11.83	

तु. जगन्नाथन की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 2. 3 कक्षा 5

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	प्रथम दो हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत	द्वितीय तीन हजार शब्दों की सूची में पाए जाने वाले शब्द	प्रतिशत	जगन्नाथन की शब्द सूची का प्रतिशत
बिहार	3183	1540	48.38	30.8	918	28.84	45.9	622	19.54	20.73
उत्तरप्रदेश	2493	1188	47.65	23.76	730	29.28	36.5	458	18.37	15.26
मध्यप्रदेश	2781	1144	41.24	22.88	776	27.90	38.8	368	13.23	12.26
दिल्ली	2853	1368	47.94	27.36	850	29.79	42.5	518	18.15	17.26
हरियाणा	1941	1045	53.83	20.9	645	33.23	32.25	400	20.60	13.33
हिमाचलप्रदेश	1770	924	52.20	18.48	621	31.05	31.05	303	17.11	10.1
राजस्थान	3280	1415	43.14	28.3	895	27.28	44.75	520	15.85	17.33
केन्द्रीय विद्यालय	2267	1144	50.46	22.88	776	34.23	38.8	368	16.23	12.26

तु. 5. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 3. 1 कक्षा 3

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	सूची का प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
बिहार	2448	718	29.33	35.9
उत्तरप्रदेश	2071	563	27.18	28.15
मध्यप्रदेश	1776	518	29.16	25.9
दिल्ली	2809	720	25.63	36.00
हरियाणा	1234	399	32.33	19.95
हिमाचलप्रदेश	1197	347	28.98	17.35
राजस्थान	2217	603	27.19	30.15
केन्द्रीय विद्यालय	1385	474	34.22	23.7

तु. 5. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 3. 2 कक्षा 4

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	सूची का प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
बिहार	3087	725	23.48	36.25
उत्तरप्रदेश	2326	653	28.07	32.65
मध्यप्रदेश	2255	644	28.55	32.2
दिल्ली	3237	794	34.52	39.7
हरियाणा	1808	550	30.42	27.5
हिमाचल प्रदेश	1633	536	32.66	26.8
राजस्थान	2170	593	27.32	29.65
केन्द्रीय विद्यालय	1880	609	32.39	30.45

तु . 5. 8. 3 शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्द

तु. 5. 8. 3. 3 कक्षा 5

राज्य	कुल विभिन्न शब्द	कुल पाए जाने वाले शब्द	सूची का प्रतिशत	शिक्षा मंत्रालय की सूची का प्रतिशत
बिहार	3183	755	23.71	36.75
उत्तरप्रदेश	2493	623	24.98	31.15
मध्यप्रदेश	2781	732	26.32	36.6
दिल्ली	2853	727	25.48	36.35
हरियाणा	1941	561	28.90	28.05
हिमाचलप्रदेश	1770	492	27.79	24.6
राजस्थान	3280	758	23.45	37.9
केन्द्रीय विद्यालय	2267	655	28.89	32.75

तु. 5. 10. 1. 1. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबधित शब्द (संख्या) कक्षा 3

राज्य	प्राकृतिक परिवेश	सामाजिक परिवेश	घर परिवार	पशु पक्षी	मनोभाव सूचक	खेल कूद संबंधी	विज्ञान	शिक्षा	स्वास्थ्य	ऐति. ह्मसिक
बिहार	227	512	126	52	39	12	30	27	14	65
उत्तरप्रदेश	194	1261	107	40	27	05	13	28	21	89
मध्यप्रदेश	162	1073	97	38	28	14	7	30	12	53
दिल्ली	260	1510	217	72	25	15	48	56	23	139
हरियाणा	105	752	60	33	19	5	6	23	7	57
हिमाचलप्रदेश	121	701	56	33	18	11	3	21	6	62
राजस्थान	198	1322	114	63	31	14	40	21	8	59
केन्द्रीय विद्यालय	130	793	112	50	22	9	7	18	9	31

तु. 5. 10. 1. 2 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबधित शब्द (प्रतिशत) कक्षा 3

राज्य	प्राकृतिक परिवेश	सामाजिक परिवेश	घर परिवार	पशु पक्षी	मनोभाव सूचक	खेल कूद संबंधी	विज्ञान	शिक्षा	स्वास्थ्य	ऐति. ह्मसिक
बिहार	9.27	20.91	5.14	2.12	1.59	.49	1.22	1.1	.57	2.65
उत्तरप्रदेश	9.37	60.91	5.16	1.93	1.30	.24	.62	1.35	1.01	4.29
मध्यप्रदेश	9.12	60.41	5.46	2.13	1.57	.78	.39	1.68	.67	2.98
दिल्ली	9.25	53.75	7.72	2.56	.88	.53	1.70	1.99	.81	4.9
हरियाणा	8.50	60.94	4.86	2.67	1.53	.40	.48	1.86	.56	4.61
हिमाचलप्रदेश	10.10	58.56	4.67	2.75	1.56	.91	.25	1.75	.50	5.17
राजस्थान	8.93	59.69	5.14	2.84	1.39	.63	1.80	.94	.36	2.66
केन्द्रीय विद्यालय	9.38	57.24	8.08	3.61	1.58	.64	.50	1.29	.64	2.23

तु. 5. 10. 2. 1. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द (संख्या) कक्षा 4

राज्य	प्राकृतिक परिवेश	सामाजिक परिवेश	घर परिवार	पशु पक्षी	मनोभाव सूचक	खेल कूद संबंधी	विज्ञान	शिक्षा	स्वास्थ्य	ऐति. हासिक
बिहार	298	1738	173	52	78	19	36	49	27	140
उत्तरप्रदेश	215	1236	138	42	63	10	37	32	19	145
मध्यप्रदेश	189	1166	82	54	51	8	13	32	12	97
दिल्ली	338	1499	217	37	55	22	80	58	23	272
हरियाणा	159	995	86	28	51	7	8	26	12	77
हिमाचलप्रदेश	149	901	74	27	39	7	12	28	13	97
राजस्थान	196	1215	103	45	58	13	19	27	15	86
केन्द्रीय विद्यालय	182	955	94	45	38	11	17	41	10	91

तु. 5. 10. 2. 2 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द (प्रतिशत) कक्षा 4

राज्य	प्राकृतिक परिवेश	सामाजिक परिवेश	घर परिवार	पशु पक्षी	मनोभाव सूचक	खेल कूद संबंधी	विज्ञान	शिक्षा	स्वास्थ्य	ऐति. हासिक
बिहार	9.65	56.3	5.60	1.68	2.52	.61	1.16	1.58	.87	4.53
उत्तरप्रदेश	9.24	53.13	5.93	1.80	2.70	.42	1.78	1.37	.81	6.23
मध्यप्रदेश	8.38	51.70	3.63	2.39	2.26	.35	.57	1.41	.53	4.30
दिल्ली	10.44	46.30	6.70	1.14	1.69	.67	2.47	1.79	.71	8.40
हरियाणा	8.79	55.03	4.75	1.54	2.82	.38	.44	1.43	.66	4.25
हिमाचलप्रदेश	9.12	55.17	4.53	1.65	2.38	.42	0.73	1.71	.79	5.93
राजस्थान	9.03	55.99	4.74	2.07	2.67	.59	.87	1.24	.64	3.96
केन्द्रीय विद्यालय	9.68	50.79	5.00	2.34	2.02	.58	.90	2.18	.53	4.84

तु. 5. 10. 3. 1. विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द (संख्या) कक्षा 5

राज्य	प्राकृतिक परिवेश	सामाजिक परिवेश	घर परिवार	पशु पक्षी	मनोभाव सूचक	खेल कूद संबंधी	विज्ञान	शिक्षा	स्वास्थ्य	ऐति. ह्रासिक
बिहार	246	1339	173	36	93	12	41	75	31	162
उत्तरप्रदेश	331	1489	134	42	95	10	137	84	23	109
मध्यप्रदेश	163	1265	110	49	89	15	46	46	26	94
दिल्ली	331	1489	134	42	95	10	137	137	23	109
हरियाणा	187	1119	74	35	103	13	20	20	17	110
हिमाचलप्रदेश	144	1042	60	30	19	14	16	16	12	100
राजस्थान	262	1892	173	54	129	20	40	40	18	147
केन्द्रीय विद्यालय	173	1625	144	42	80	10	36	35	20	123

तु. 5. 10. 3. 2 विभिन्न जीवन संदर्भों से संबंधित शब्द (प्रतिशत) कक्षा 5

राज्य	प्राकृतिक परिवेश	सामाजिक परिवेश	घर परिवार	पशु पक्षी	मनोभाव सूचक	खेल कूद संबंधी	विज्ञान	शिक्षा	स्वास्थ्य	ऐति. ह्रासिक
बिहार	7.72	43.76	4.16	1.13	2.92	.37	1.28	2.35	.97	5.08
उत्तरप्रदेश	13.27	59.72	5.37	1.68	3.81	.40	5.49	3.36	.92	4.37
मध्यप्रदेश	5.86	45.48	3.95	1.76	3.20	.53	1.65	1.65	.93	.38
दिल्ली	11.60	52.19	4.69	1.47	3.32	.35	4.80	2.04	.80	3.82
हरियाणा	9.63	57.19	3.81	1.80	5.30	.66	1.03	2.83	.87	5.66
हिमाचलप्रदेश	8.13	57.65	3.38	1.69	1.07	.79	.90	2.82	.67	5.64
राजस्थान	7.98	58.87	5.27	1.64	3.93	.60	1.21	2.5	.54	4.48
केन्द्रीय विद्यालय	7.63	57.68	6.35	1.85	3.52	.44	1.54	3.22	.88	5.42

शब्द भंडार
की
तुलनात्मक औसत तथा रेंज

5. 1. कुल प्रयुक्त शब्द

राज्य	कक्षा 1 से 5 तक	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	68256	13651.2	1623 — 24206
उत्तरप्रदेश	39325	7865.9	1683 — 11906
मध्यप्रदेश	49456	9897.2	1937 — 16978
दिल्ली	81047	16209.4	1670 — 28616
हरियाणा	38820	7765.8	863 — 14432
हिमाचलप्रदेश	34508	6901.6	500 — 12200
राजस्थान	67639	11727.8	2560 — 23907
केन्द्रीय विद्यालय	54313	10862.6	2676 — 20240
औसत (प्रति राज्य)	54170.5	10610.2	
रेंज	34508 — 68256	6901.6 — 16209.4	

5. 2. विभिन्न शब्द

राज्य	कक्षा 1 से 5 तक कुल विभिन्न शब्द	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	11105	2221	697 – 3183
उत्तरप्रदेश	9147	1829.4	675 – 2493
मध्यप्रदेश	9140	1828	799 – 2781
दिल्ली	11308	2261.6	905 – 3237
हरियाणा	6617	1323.2	504 – 1941
हिमाचलप्रदेश	6360	1272	364 – 1770
राजस्थान	9576	1935.2	856 – 3280
केन्द्रीय विद्यालय	7541	1508.2	696 – 2267
औसत (प्रति राज्य)	8849.25	1772.34	
रेंज	6360 – 11308	1272 – 2261.6	

5. 3. 1 कुल शब्द वृद्धि प्रतिशत

राज्य	औसत वृद्धि (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	113.57	9.94 – 321.91
उत्तरप्रदेश	68.91	.22 – 213.19
मध्यप्रदेश	75.57	20.14 – 176.81
दिल्ली	117.36	7.88 – 257.06
हरियाणा	115.97	23.33 – 325.00
हिमाचलप्रदेश	269.32	9.34 – 962.00
राजस्थान	55.61	13.36 – 112.09
केन्द्रीय विद्यालय	49.5	22.72 – 72.08
औसत (प्रति राज्य)	108.17	
रेंज	49.5 – 269.32	

5. 3. 2 विभिन्न शब्द वृद्धि प्रतिशत

राज्य	औसत वृद्धि (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	37.58	-3.10 – 66.59
उत्तरप्रदेश	51.57	6.69 – 134.37
मध्यप्रदेश	36.26	13.56 – 91.36
दिल्ली	41.60	14.95 – 102.65
हरियाणा	44.34	6.85 – 124
हिमाचलप्रदेश	88.87	27.18 – 283.5
राजस्थान	18.14	2.11 – 34.6
केन्द्रीय विद्यालय	41.13	18.84 – 88.64
औसत (प्रति राज्य)	44.93	
रेंज	18.14 – 88.87	

5. 4. शब्द भार

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	3.27	2.92 – 4.05
उत्तरप्रदेश	3.12	2.49 – 3.81
मध्यप्रदेश	3.21	2.41 – 3.59
दिल्ली	4.01	1.84 – 5.59
हरियाणा	2.82	1.71 – 3.42
हिमाचलप्रदेश	2.60	1.37 – 3.41
राजस्थान	3.99	2.97 – 3.81
केन्द्रीय विद्यालय	3.57	3.51 – 5.32
औसत (प्रति राज्य)	2.95	
रेंज	2.6 – 4.01	

5. 5.1 एक और दो आवृत्ति वाले शब्दों का प्रतिशत

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	72.58	70.1 – 74.6
उत्तरप्रदेश	72.51	67.32 – 78.51
मध्यप्रदेश	75.77	70.55 – 79.97
दिल्ली	68.11	61.09 – 82.87
हरियाणा	74.42	68.34 – 85.91
हिमाचलप्रदेश	76.94	72.62 – 92.03
राजस्थान	69.53	63.05 – 73.36
केन्द्रीय विद्यालय	60.87	48.51 – 71.55
औसत (प्रति राज्य)	71.77	
रेंज	60.87 – 76.94	

5. 5. 2 पांच से अधिक आवृत्ति वाले शब्दों का प्रतिशत

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	11.61	5.8 – 15.25
उत्तरप्रदेश	11.84	8.29 – 14.73
मध्यप्रदेश	53.97	8.13 – 13.03
दिल्ली	14.12	5.07 – 20.35
हरियाणा	9.68	2.97 – 12.32
हिमाचलप्रदेश	9.37	1.9 – 12.87
राजस्थान	12.24	9.8 – 13.82
केन्द्रीय विद्यालय	18.01	14.93 – 22.70
औसत (प्रति राज्य)	12.28	
रेंज	9.37 – 53.97	

5. 6. एकाधिक कक्षाओं में प्रयुक्त शब्द

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	49.86	8.52 — 73.32
उत्तरप्रदेश	59.90	41.65 — 72.09
मध्यप्रदेश	58.90	34.27 — 77.75
दिल्ली	56.53	33.8 — 67.81
हरियाणा	62.55	3.69 — 84.6
हिमाचलप्रदेश	60.78	31.86 — 88.63
राजस्थान	52.11	36.68 — 61.16
केन्द्रीय विद्यालय	65.86	41.66 — 91.98
औसत (प्रति राज्य)	58.32	
रेंज	49.86 — 65.86	

5. 7. 1 एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	66.92	62.71 – 71.82
उत्तरप्रदेश	73.62	71.08 – 78.98
मध्यप्रदेश	73.61	69.88 – 80.00
दिल्ली	67.36	60.70 – 73.16
हरियाणा	79.69	72.93 – 84.46
हिमाचलप्रदेश	76.68	71.9 – 82.66
राजस्थान	72.16	64.01 – 78.30
केन्द्रीय विद्यालय	81.77	75.25 – 89.18
औसत (प्रति राज्य)	73.93	
रेंज	66.92 – 81.77	

5. 7. 2 स्थानीय शब्द प्रतिशत

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	3.12	1.68 — 659
उत्तरप्रदेश	2.15	1.59 — 2.66
मध्यप्रदेश	2.06	0.78 — 4.2
दिल्ली	2.06	0.76 — 4.64
हरियाणा	1.90	3.24 — 1.32
हिमाचलप्रदेश	1.79	.24 — 2.74
राजस्थान	2.36	1.04 — 4.14
केन्द्रीय विद्यालय	1.05	.06 — 4.2
औसत (प्रति राज्य)	2.06	
रेंज	1.05 — 3.12	

5. 8. 1 विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द (कोयईग)

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
बिहार	36.89	19.45 – 44.07
उत्तरप्रदेश	39.77	17.65 – 48.84
मध्यप्रदेश	42.64	35.14 – 48.14
दिल्ली	47.85	38.18 – 73.32
हरियाणा	50.74	45.17 – 55.18
हिमाचलप्रदेश	38.38	40.32 – 53.45
राजस्थान	43.10	37.93 – 47.51
केन्द्रीय विद्यालय	46.81	36.30 – 54.94
औसत (प्रति राज्य)	45.97	
रेंज	36.89 – 50.74	

5. 8. 2 विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द (जगन्नाथन)

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रैंज
बिहार	46.71	40.89 – 50.1
उत्तरप्रदेश	40.24	14.7 – 56.44
मध्यप्रदेश	35.49	37.06 – 55.47
दिल्ली	44.93	41.41 – 47.64
हरियाणा	53.79	45.8 – 58.68
हिमाचलप्रदेश	51.53	40.37 – 59.95
राजस्थान	47.45	40.05 – 55.43
केन्द्रीय विद्यालय	51.59	38.68 – 60.26
औसत (प्रति राज्य)	47.39	
रैंज	35.49 – 53.79	

5. 8. 3 विभिन्न सूचियों में प्रयुक्त शब्द (शिक्षा मंत्रालय)

राज्य	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज
विहार	28.53	23.48 – 37.6
उत्तरप्रदेश	26.85	24.98 – 20.97
मध्यप्रदेश	33.09	25.90 – 37.68
दिल्ली	38.62	36.00 – 42.46
हरियाणा	33.40	28.9 – 41.98
हिमाचलप्रदेश	31.79	27.79 – 37.53
राजस्थान	28.87	23.45 – 37.52
केन्द्रीय विद्यालय	33.98	28.89 – 40.02
औसत (प्रति राज्य)	31.89	
रेंज	26.85 – 38.62	

5. 9. विभिन्न संरचना वाले शब्द

5. 9. 1 मूल और तिर्यक शब्द (कक्षा 1 + 2)

राज्य	मूल शब्द	तिर्यक शब्द
बिहार	392	1112
उत्तरप्रदेश	343	1074
मध्यप्रदेश	381	1137
दिल्ली	383	1108
हरियाणा	312	798
हिमाचलप्रदेश	270	722
राजस्थान	325	999
केन्द्रीय विद्यालय	312	908
औसत (प्रति राज्य)	339.75	982.25
रेंज	270–392	722–1137

5. 9. 2 शब्दों में वर्ण और मात्राओं की संख्या (कक्षा 1 + 2)

राज्य	बिना मात्रा वाले शब्द	एक मात्रा वाले शब्द	दो मात्रा वाले शब्द	तीन और अधिक मात्रा वाले शब्द
बिहार	187	751	975	155
उत्तरप्रदेश	211	942	824	175
मध्यप्रदेश	211	912	818	170
दिल्ली	192	985	873	179
हरियाणा	180	627	600	101
हिमाचलप्रदेश	157	673	614	128
राजस्थान	157	795	803	146
केन्द्रीय विद्यालय	156	800	716	192
औसत प्रति राजस्व	181.37	810.62	777.87	155.75
रेंज	156–211	627–942	600–975	101–192

5. 9. 3 संयुक्ताक्षर और अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द (कक्षा 1 + 2)

राज्य	संयुक्ताक्षर शब्द	अनु. अनुना. शब्द
बिहार	184	396
उत्तरप्रदेश	220	348
मध्यप्रदेश	173	205
दिल्ली	239	340
हरियाणा	115	245
हिमाचलप्रदेश	220	125
राजस्थान	163	247
केन्द्रीय विद्यालय	124	272
औसत (प्रति राज्य)	179.75	272.87
रेंज	124–239	125–396

5. 10. 1 विभिन्न संदर्भो से संबंधित शब्द (सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश)

राज्य	सामाजिक परिवेश		प्राकृतिक परिवेश	
	औसत (प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिकक्षा)	औसत (प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिकक्षा)
बिहार	32.92	16.27–56.03	8.26	7.31–9.65
उत्तरप्रदेश	43.43	20.29–60.91	8.13	4.18–13.27
मध्यप्रदेश	39.66	20.02–60.41	6.89	5.5–9.12
दिल्ली	38.45	10.37–53.75	8.55	5.3–11.6
हरियाणा	39.30	.27–60.94	7.83	5.13–9.63
हिमाचलप्रदेश	45.62	24.2–58.87	8.05	3.58–10.1
राजस्थान	44.29	22.37–59.63	6.72	3.38.9.03
केन्द्रीय विद्यालय	40.48	.15–71.68	7.68	5.25–9.68
औसत (प्रति राज्य)	40.46	–	7.76	–
रेंज	32.92–45.62	–	6.72–8.55	–

5. 10. 2 विभिन्न संदर्भों से संबधित शब्द

राज्य	विज्ञान		अन्य शब्द	
	औसत (प्रति कक्षा)	रेंज प्रतिकक्षा	औसत (प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिकक्षा)
बिहार	1.36	1.16–1.59	57.45	32.89–74.75
उत्तरप्रदेश	.86	0.62–1.33	47.38	25.81–74.33
मध्यप्रदेश	.91	.39–1.65	50.49	30.08–73.61
दिल्ली	2.38	1.32–4.80	50.98	31.41–82.13
हरियाणा	1.17	.44–2.12	51.48	30.08–90.81
हिमाचलप्रदेश	.69	.25–2.19	45.27	31.09–71.01
राजस्थान	1.36	.87–1.80	47.61	29.64–73.04
केन्द्रीय विद्यालय	1.18	.9–1.67	47.68	19.15–78.08
औसत (प्रति राज्य)	1.23	–	49.79	–
रेंज	.69–2.38	–	45.27–57.43	–

समग्र हिन्दी प्रदेश
का
पठन शब्द भंडार
सार रूप आँकड़े

सार-1 शब्दों की संख्या ओर स्तरीकरण

	औसत (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)
कुल प्रयुक्त शब्द	10610.2	6901.6–16209.4
कुल शब्द वृद्धि प्रतिशत	108.17	49.5–269.3
विभिन्न शब्द	1772.34	1272–2261.6
पिछली शब्द वृद्धि प्रतिशत	44.93	18.14–88.8
पिछली कक्षा से आए प्रतिशत शब्द	58.32	49.86–65.86

सार-2 शब्द भार और आवृति

	औसत (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)
शब्द भार (प्रति नए शब्द के अनुपात में पुराने शब्द)	2.95	2.6–4.01
एक और दो आवृति वाले शब्द	71.77%	60.87–76.94
पाँच से अधिक आवृति वाले शब्द	12.28%	9.37–53.97

सार–3 शब्दों की उपयुक्तता

	औसत (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)
एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त शब्द	73.93	66.92–81.77
स्थानीय शब्द	2.06	1.05–3.12
सर्वोपयोगी शब्द सूचियों के शब्द		
(1) कोयईंग की सूचि	45.97	36.89–50.74
(2) जगन्नाथन की सूची	47.39	35.49–53.79
(3) शिक्षा मंत्रालय की सूची	31.89	26.85–38.62

सार–4 विभिन्न संदर्भों से संबंधित शब्द

संदर्भ	औसत (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)
सामाजिक परिवेश	40.46	32.92–45.62
प्राकृतिक परिवेश	7.76	6.72–8.55
विज्ञान	1.23	.69–2.38
अन्य	49.79	45.27–57.43

सार–5 विभिन्न संरचनावाले शब्द (कक्षा 1 + 2)

संरचना	औसत (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)	रेंज (प्रतिराज्य प्रतिकक्षा)
मूल शब्द	339.75	270–392
तिर्यक शब्द	982.25	722–1137
मात्रा विहीन शब्द	187.37	156–211
एक मात्रा युक्त शब्द	810.62	627–942
दो मात्रा युक्त शब्द	777.87	600–975
तीन अथवा अधिक मात्रा युक्त शब्द	155.75	101–192
संयुक्ताक्षर युक्त शब्द	179.75	124–239
अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्द	272.87	125–396

तु. 5. 11 समग्र हिन्दी प्रदेश के शब्द भंडार का तुलनात्मक मूल्यांकन
तु. 5. 11.1 शब्द भंडार का परिमाण

छात्र के पठन शब्द भंडार के परिमाण के संबंध में जानने योग्य दो मुख्य बातें है – पहली तो यह कि पूरे वर्ष में पठन सामग्री के रुप में उसे कुल कितने शब्द पढ़ने हैं तथा दूसरी बात यह कि कुल पठन सामग्री में विभिन्न शब्दों की संख्या कितनी है? छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे पूरे वर्ष में इन विभिन्न शब्दों को आवश्यक गति से पढ़ना और समझना सीख जाएंगे और इस प्रकार ये विभिन्न शब्द उनके पठन शब्द भंडार का अंग बन जाएगे । कक्षा एक से पांच तक प्रतिवर्ष इस प्रकार सीखे गये कुल शब्द प्राथमिक स्तर का पठन शब्द भंडार होगा। इस अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न राज्यों के संबंध में यह जानकारी हमें सूची नम्बर तु. 5.1 और तु. 5.2 से प्राप्त होती है ।

सूची नम्बर तु. 5.1 में पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त कुल शब्दों की संख्या दी गई है। कुल प्रयुक्त शब्दों की संख्या, पठन सामग्री की मात्रा बताती है। इस सूची पर दृष्टिपात करने पर दो बातें स्पष्ट होती हैं – पहली बात तो यह है कि विभिन्न राज्यों में इस विषय में कोई मतैक्य नहीं है कि प्राथमिक स्तर पर विभिन्न कक्षाओं में कितनी–कितनी पठन सामग्री छात्रों को दी जानी चाहिए। हिमाचलप्रदेश की पहली पुस्तक में कुल 500 शब्द हैं जबकि राजस्थान और केन्द्रीय विद्यालय की पुस्तकों में ढाई–ढाई हजार से भी अधिक शब्द हैं । बिहार, उत्तरप्रदेश और दिल्ली में यह संख्या 1600 शब्दों के आसपास है जबकि मध्यप्रदेश की पुस्तक में लगभग 2000 शब्द हैं । हरियाणा की पुस्तक में हिमाचलप्रदेश की भांति ही काफी कम शब्द हैं । संतोष की बात है कि कक्षा एक और दो की संयुक्त पठन सामग्री के संबंध में इतनी अधिक विभिन्नता दृष्टिगोचर नहीं होती है। राजस्थान की कक्षा तीन और चार की पुस्तकों में क्रमशः 13 और 15 हजार शब्द है किन्तु कक्षा पांच की पुस्तक में लगभग 23 हजार। सभी राज्यों की विभिन्न कक्षाओं की पठन पुस्तकों में शब्दों की संख्या के विषय में इतनी अधिक विभिन्नता इस बात का द्योतक है कि सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश में प्राथमिक स्तर की विभिन्न कक्षाओं के लिए पठन सामग्री की मात्रा का निर्धारण किसी पूर्व निश्चित योजना अथवा नियम के अनुसार नहीं होता।

इस अध्ययन के अनुसार विभिन्न राज्यों में लगभग 40–60 हजार शब्दों की पठन सामग्री कक्षा एक से पांच तक की पुस्तकों में दी जाती है। जहां तक राज्यों की तुलनात्मक स्थिति का प्रश्न है हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में सबसे कम पठन सामग्री है और बिहार में सबसे अधिक। दिल्ली राज्य की पठन सामग्री को इसलिए सब से अधिक नहीं माना जा सकता क्योंकि इन पठन पुस्तकों में सभी विषयों की पठन सामग्री सम्मिलित है। हिमाचलपदेश की पुस्तकों में पूरे पांच वर्षो में (कक्षा एक से पांच) जितनी पठन सामग्री छात्रों को दी जाती है उसमें कुल 34508 शब्द प्रयुक्त हुए हैं जबकि बिहार की कक्षा एक से पांच तक की पठन सामग्री में इससे लगभग दुगने शब्द हैं।

कुल प्रयुक्त शब्दों से भी अधिक महत्वपूर्ण संख्या विभिन्न शब्दों की है क्योंकि शब्द भंडार का निर्धारण विभिन्न शब्दों की संख्या के आधार पर किया जाता है। विवेच्य पुस्तकों में विभिन्न शब्दों की

भी वही स्थिति है जो कुल प्रयुक्त शब्दों की है। हिमाचलप्रदेश की पहली पुस्तक में केवल 364 विभिन्न शब्द प्रयुक्त हुए हैं जबकि दिल्ली की पुस्तक में विभिन्न शब्दों की संख्या 905 है जो हिमाचलप्रदेश की पुस्तक के शब्दों की संख्या से लगभग ढाई गुना अधिक है। कक्षा दो की पुस्तक में विभिन्न शब्दों की संख्या के संबंध में इतना अधिक वैभिन्य देखने को नहीं मिलता। किन्तु अन्य कक्षाओं में विभिन्न शब्दों की संख्या में कक्षा एक की भांति ही पर्याप्त वैभिन्य प्राप्त होता है। हरियाणा, हिमाचलप्रदेश और केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा एक से पांच तक की पुस्तकों में 6000–7000 हजार विभिन्न शब्द प्रयुक्त हुए हैं। किन्तु उत्तरप्रदेश, राजस्थान और मध्यप्रदेश में 9000 से कुछ अधिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। बिहार और दिल्ली में विभिन्न शब्दों की संख्या लगभग 11,000 है। इस प्रकार कक्षा एक से पांच तक के शब्द भंडार को संयुक्त रुप से देखने पर वही बात दृष्टिगोचर होती है जो कुल प्रयुक्त शब्दों के संबंध में दिखलाई देती थी अर्थात इस संबंध में कोई मतैक्य नहीं दृष्टिगोचर होता कि कक्षा पांच के अंत में छात्र का पठन शब्दभंडार कितना बड़ा होना चाहिए अर्थात वह कितने विभिन्न शब्दों को उपयुक्त गति से पढ़ने और पहचानने में सक्षम होना चाहिए।

तु. 5. 11. 2 शब्द भंडार में योजनाबद्ध वृद्धि और उसका स्तरीकरण

जैसे इस संबंध में कोई मतैक्य दृष्टिगोचर नहीं होता कि प्राथमिक विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं की पठन पुस्तकों में कितने विभिन्न शब्द होने चाहिए और कुल कितने शब्द, उसी प्रकार इस संबंध में भी किसी नियम का अनुसरण किया प्रतीत नहीं होता कि प्रत्येक कक्षा में पिछली की तुलना में कितनी पठन सामग्री की वृद्धि होनी चाहिए। छात्र के शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए बहुत आवश्यक है कि उसमें योजनाबद्ध ढंग से वृद्धि की जाए। पहली कक्षा में छात्र पढ़ना सीखना प्रारम्भ करता है। अतः उसकी पठन गति काफी धीमी होती है। किन्तु ज्यों ज्यों विभिन्न लिपि संकेतों संबंधी उसकी पहचान पुष्ट होती जाती है, उसकी पठन गति में वृद्धि होती जाती है। कक्षा एक के अंत में छात्र बहुत से शब्दों को उपयुक्त गति से पहचानने लगता है। अतः यह स्वाभाविक है कि कक्षा दो में उसकी पठन गति और तीव्र हो जाए और वह बहुत से नए शब्दों को पहचानने लगे। इस प्रकार कक्षा दो की पुस्तक में कुल प्रयुक्त शब्दों और विभिन्न शब्दों की संख्या कक्षा एक की पुस्तक की तुलना में अधिक होनी स्वाभाविक तथा अनिवार्य है। यही बात कक्षा तीन, चार और पांच पर भी लागू होती है। किन्तु यह वृद्धि कितनी होनी चाहिए इस संबंध में कोई निश्चित नियम बनाना संभव नहीं है। हां, यह आवश्यक है कि शब्द भंडार में जो भी वृद्धि हो वह योजनाबद्ध ढंग से हो। यह न हो कि किसी कक्षा की पुस्तक में तो नए शब्दों की संख्या नाममात्र हो और किसी में पिछली कक्षा की पुस्तक से दुगनी–तिगुनी। इस अध्ययन के अंतर्गत सूची नम्बर तु. 5.3 के अनुसार राजस्थान की कक्षा दो की पुस्तक में कक्षा एक की तुलना में केवल 45% शब्द अधिक प्रयुक्त हुए है अर्थात राजस्थान की कक्षा दो की पुस्तक कक्षा एक तुलना में लगभग डेढ़ गुना बड़ी है जबकि हिमाचलप्रदेश की कक्षा दो की पुस्तक में कक्षा एक की तुलना में लगभग 1000% शब्दों की वृद्धि हुई है । यह दोनों ही अनुपात अनुपयुक्त प्रतीत होते हैं । कक्षा एक में छात्र पढ़ना सीखना प्रारम्भ करता है और हिन्दी भाषा के लगभग सभी लिपि संकेतों की पहचान करने में उसे प्रायः सारा वर्ष लग जाता है और उसका पठन

शब्द भंडार सीमित ही रहता है। किन्तु जब कक्षा दो के प्रारम्भ में वह सभी लिपि संकेतों को पहचानने लग जाता है तो उसके पठन शब्द भंडार में बड़ी तीव्रता से वृद्धि होती है अतः डेढ़ का अनुपात अनुपयुक्त है । इसके विपरीत हिमाचलप्रदेश की भांति एक और दस का अनुपात भी अनुपयुक्त है क्योंकि कक्षा दो में छात्र की पठन योग्यता न तो दस गुना बढ़ती है और न ही दोनों पुस्तकों का इतना अन्तर वांछनीय है। योजनाबद्ध वृद्धि संबंधी यह दोष कक्षा तीन, चार और पांच की पुस्तकों में और भी अधिक है। सभी राज्यों की कक्षा पांच की पुस्तकों में कुल शब्दों की संख्या का वृद्धि प्रतिशत कक्षा तीन और चार की तुलना में कम है । अर्थात कक्षा तीन और चार की पुस्तकें पिछली कक्षा की पुस्तकों से जितनी बड़ी थीं, कक्षा पांच की पुस्तकें उतनी नहीं। यहां तक कि उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश की कक्षा पांच की पुस्तकें कक्षा चार की तुलना में छोटी हैं। हिमाचलप्रदेश की कक्षा 4 की पुस्तक कक्षा तीन की पुस्तक से छोटी है और कक्षा पांच की पुस्तक में पिछली दोनों कक्षाओं से कम शब्द हैं। केन्द्रीय विद्यालय की भी कक्षा 5 की पुस्तक में पिछली कक्षाओं की तुलना में सब से कम कुल शब्दों की वृद्धि हुई है। इस अस्वाभाविक स्थिति का क्या कारण हो सकता है ?

कुल पठन सामग्री की भांति विभिन्न शब्दों की वृद्धि के संबंध में भी वही बात दृष्टिगोचर होती है। राजस्थान में कक्षा दो की पुस्तक में कक्षा एक से भी कम विभिन्न शब्द हैं जबकि हिमाचलप्रदेश की कक्षा दो की पुस्तक में कक्षा एक की पुस्तक से तिगुने विभिन्न शब्द है। कक्षा तीन, चार और पांच की पुस्तकों में विभिन्न शब्दों का वृद्धि प्रतिशत इतना अधिक नहीं है। कक्षा दो की सभी राज्यों की पठन पुस्तकों में विभिन्न शब्दों के वृद्धि प्रतिशत की औसत 120.74 है जबकि कक्षा 5 की पुस्तकों की औसत केवल 5.99 है। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि कक्षावार शब्द भंडार की वृद्धि की दृष्टि से कक्षा दो और पांच की पुस्तकें सब से अधिक अनुपयुक्त है। पहली में वृद्धि बहुत अधिक है जबकि दूसरी में बहुत कम। इस संदर्भ में हरियाणा, हिमाचलप्रदेश और केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा तीन की पुस्तकें सबसे अधिक अनुपयुक्त हैं। सूची नम्बर तु. 1, 2 और 3 के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी प्रदेश के विभिन्न राज्यों में बनने वाली हिन्दी पठन पुस्तकों में न तो पठन सामग्री की मात्रा के संबंध में किसी निश्चित और निर्धारित नियम का पालन किया जाता है और न ही मात्रा की दृष्टि से विभिन्न कक्षाओं की पठन सामग्री का स्तरीकरण किया जाता है। इन तीनों सूचियों में विभिन्न राज्यों की पुस्तकों में जों विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है वह इस बात की सूचक है कि पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते समय उनमें प्रयुक्त होने वाले शब्द भंडार के संबंध में कोई पूर्व निश्चित योजना नहीं होती है।

तु. 5. 11. 3 शब्दों की आवृति और शब्द भार

मात्रा और स्तरीकरण के पश्चात प्राथमिक कक्षाओं के पठन शब्द भंडार के संबंध में महत्वपूर्ण बिन्दु है – शब्दों की आवृत्ति का। कक्षा 1 और 2 में छात्र पठन संबंधी कुशलता को सीखना प्रारम्भ करते हैं। इन कक्षाओं में मुख्य बल छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि करने से अधिक इस बात पर होता है कि वे जिस शब्द को भी पढ़ें उसको झटपट पहचान लें । इस योग्यता के विकास के लिए यह आवश्यक है कि भाषा की पुस्तकों में उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाए जिन्हें छात्र मौखिक रूप से

पहले से जानते हो और उनका लिखित रूप छात्रों की दृष्टि के सामने बार–बार आए, जिससे वे उन्हें पहचानने का खूब अभ्यास कर सकें।

छात्र द्वारा शब्दों की पहचान के लिए पुस्तक में उनकी बार–बार आवृति होने का अवश्यंभावी परिणाम यह होगा कि पुस्तक में कुल शब्दों की संख्या तो अधिक होगी किन्तु विभिन्न शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत कम होगी। शब्द की पहचान के समुचित अभ्यास के लिए पठन सामग्री में प्रत्येक शब्द की दस बार की आवृत्ति आदर्श मानी जाती है किन्तु पांच से कम बार की आवृत्ति तो किसी भी शब्द की होनी ही नहीं चाहिए। आवृत्ति की यह संख्या प्रत्येक कक्षा में समान होनी आवश्यक नहीं है । पठन शिक्षण के लिए आवश्यक है कि प्रारम्भ में छात्र को बहुत कम शब्द दे लेकिन उन्हें बार–बार दें जिससे कि छात्र उन्हें अच्छी तरह से पहचान लें । इस प्रकार आठ या दस बार की आवृत्ति की आवश्यकता कक्षा 1 में ही सबसे अधिक होती है जिससे हर शब्द बार–बार छात्र की दृष्टि के सामने आए और वह उसे पहचानने लगे। कक्षा 2 तथा बाद वाली कक्षाओ में जब छात्र कुछ शब्दों को अच्छी तरह पहचानने लगता है और अर्थबोध की दृष्टि से भी पहले से अधिक परिपक्व हो जाता है तो कुछ शब्दों की कम आवृत्ति से भी काम चल सकता है। इस अध्ययन के अंतर्गत शब्दों की आवृत्ति की बारंबारिता संबंधी आँकड़े सूची नम्बर तु. 5.5 तथा इसकी उपसूचियों में प्रस्तुत किये गए हैं। ये आँकड़े कक्षा 1 और 2 के लिए अलग–अलग तथा सयुक्त रूप से भी दिए गए हैं। इन सूचियों में विभिन्न आवृत्ति वाले शब्दों की संख्या प्रतिशत के रूप में भी प्रस्तुत की गई है जिससे विभिन्न राज्यों में प्रयुक्त शब्दों की बारम्बारिता की तुलना हो सके। इन सूचियो के आधार पर हम पाते हैं कि विभिन्न राज्यों में कम आवृत्ति वाले शब्दो की संख्या कक्षा 1 मे अधिक और कक्षा 2 तथा अन्य कक्षाओ में कम है जबकि होना इसके विपरीत चाहिए था। ऐसा शायद इसलिए हुआ है कि अधिकांश लेखको का यह आग्रह रहता है कि कक्षा 1 में ही भाषा के सभी लिपि सकेतो का परिचय छात्र से करवा दिया जाये और वह भी ऐसे शब्दों द्वारा जो प्रत्येक लिपि संकेत विशेष से आरम्भ होते हैं। पठन शिक्षण की दृष्टि से ऐसा आग्रह उचित नहीं माना जा सकता। इस प्रकार की त्रुटि दिल्ली, हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की पुस्तक में विशेष रूप से देखने को मिलती है। इन राज्यों की कक्षा 1 की पुस्तक में 82 से 92 प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति केवल एक या दो बार ही हो पाई है। इसके अतिरिक्त लगभग 10% शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति अधिक से अधिक 5 बार हुई है। इन राज्यों में केवल 2 से 4 प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति 5 से अधिक बार हुई है। स्पष्टतः यह स्थिति संतोषजनक नहीं है। कक्षा तीन से पांच तक की पुस्तको में 5 से अधिक आवृति वाले शब्दों का मध्ययमान लगभग 14% है जो कि संतोषजनक माना जा सकता है। आवृत्ति की दृष्टि से केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली पुस्तकें अन्य राज्यों की पुस्तको से श्रेष्ठ हैं। उनमें शब्दों का प्रयोग आवृत्ति की आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया प्रतीत होता है। दूसरी ओर हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में शब्दों की आवृति की स्थिति सर्वाधिक अनुपयुक्त है। इस प्रदेश की विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में पांच अथवा अधिक आवृत्ति वाले शब्दों की रेंज 1.8% से 12.87% है जिसमें ऐसे 1.9% शब्द कक्षा एक की पुस्तक में हैं।

इन सूचियों पर दृष्टि डालने पर ऐसा प्रतीत होता है कि लेखकों की योजना संभवतः यह रही है कि कक्षा एक में तो विभिन्न लिपि संकेतों को प्रस्तुत करने वाले बहुत सारे शब्द छात्र के सामने

उपस्थित कर दिए जाएं और कक्षा दो में फिर उनके अभ्यास पर बल दिया जाए। यदि ऐसा है तो कक्षा एक और दो में शब्दों की आवृत्ति को संयुक्त रुप में देखना होगा। इस संबंध में आँकड़ें सूची नम्बर तु. 5.5. के अंतर्गत दिए गए हैं। इन आँकड़ों के आधार पर हम पाते हैं कि कक्षा एक और दो की पठन सामग्री को संयुक्त रुप में लेने पर भी सभी राज्यों में एक और दो बार प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या 70% से अधिक है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ है कि अधिकांश लेखक एक ही लिपि संकेत को विभिन्न शब्दों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं और उनका ध्यान शब्द विशेष के स्थान पर लिपि संकेत विशेष पर अधिक रहता है। पठन शिक्षण की दृष्टि से यह समीचीन नहीं हैं। छात्रों के लिए शब्द सार्थक होते हैं, लिपि संकेत नहीं और उनके लिए विभिन्न शब्दों को उनके समग्र रुप में पहचानना सरल होता है और अर्थहीन लिपि संकेतों को पहचानना कठिन।

शब्दों की बारम्बारिता के संबंध में संपूर्ण हिन्दी प्रदेश की स्थिति को भी जानने का प्रयत्न किया गया है। इस संबंध में आँकड़े तु. 5.5.3.1–तु. 5.5.3.3 तक प्रस्तुत किये हैं। इन आँकड़ो के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि 8 राज्यों की कक्षा 1 और 2 की 18 पुस्तकों में कुल मिलाकर लगभग 46% शब्द ऐसे हैं जो केवल एक बार प्रयुक्त हुए हैं। लगभग 18% शब्द और हैं जो कि इन सब पुस्तकों में दो बार प्रयुक्त हुए हैं। इस प्रकार इन 18 पुस्तकों के दो तिहाई शब्द की आवृत्ति एक दो बार से अधिक नहीं हुई है। इसका अर्थ यह निकला कि कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में अधिकांश शब्द ऐसे है जो केवल उसी प्रदेश की पुस्तकों में ही नहीं बल्कि अन्य हिन्दी राज्यों की पुस्तकों में भी एकाध बार ही प्रयोग किए जाते हैं। यह स्थिति भी अपने आप में बहुत ही चिंतनीय है।

शब्दों की आवृत्ति से ही जुड़ा हुआ एक प्रश्न और है – शब्द भार का। पठन सामग्री के सभी विभिन्न शब्द प्राथमिक साक्षात्कार के समय छात्र के लिए अपरिचित अथवा नए होते हैं किन्तु लेखक थोड़ी–थोड़ी देर बाद उन्हीं शब्दों को पुनः पुनः उपस्थित करता चलता है जिससे वे छात्रों के लिए सुपरिचित हो जाएं। प्रत्येक शब्द जब पहली बार छात्र के सामने आएगा तो अपने लिखित रूप में वह छात्र के लिए नया अथवा अपरिचित होगा किन्तु कुछ शब्दों के बाद जब वह छात्र के सामने दुबारा आएगा तो उसे कुछ परिचित लगेगा । इस प्रकार प्रत्येक नया अथवा अपरिचित शब्द थोड़े पठन अभ्यास के पश्चात पुराना अथवा सुपरिचित हो जाएगा। पठन सामग्री में इन अपरिचित तथा पूर्व परिचित शब्दों का अनुपात क्या होना चाहिए ? सिद्धांत रूप से माना जाता है कि कक्षा 1 की पुस्तक मे पूर्व परिचित और अपरिचित शब्दों का अनुपात 20 और 1 होना चाहिए अर्थात पठन सामग्री का औसतन हर 20वां शब्द छात्र के लिए नया होना चाहिए । संसार की विभिन्न भाषाओं में कक्षा 1 और 2 के लिए तैयार की गई पुस्तकों में यह अनुपात 12 से 14 : 1 तक पाया जाता है। ऐसी स्थिति में औसतन हर 12वां अथवा 14वां शब्द छात्र के लिए नया होता है। नए और पूर्व परिचित शब्दों का यह अनुपात शब्द भार कहलाता है। पुस्तक में अपरिचित शब्दों की तुलना में परिचित शब्द जितने अधिक होंगे, शब्द भार अंक उतना ही अधिक होगा। इसके विपरीत होने पर शब्द भार अंक कम होगा। शब्द भार अंक कम होने पर छात्रों के लिए पठन प्रक्रिया अरूचिकर और कठिन हो जाती है क्योंकि किसी भी पुस्तक में शब्द भार अंक कम होने का एक अवश्यंभावी परिणाम यह होगा कि प्रत्येक विभिन्न शब्द की आवृत्ति कम बार हो पाएगी और जब आवृत्ति कम बार होगी

तो छात्रों को पठन अभ्यास का अवसर कम मिलेगा। ऐसा होने पर छात्र शब्दों को जल्दी जल्दी पहचानना नही सीख पायेगें जो कि पठन योग्यता की पहली शर्त है। इसलिए आवश्यक है कि कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में शब्द भार अधिक से अधिक रखा जाए।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतगर्त हिन्दी की पठन पुस्तकों में नए और पुराने शब्दों का अनुपात ज्ञात कर उनके शब्द भार के निर्धारण का प्रयत्न किया गया है। शब्द भार संबंधी आँकड़े सूची नम्बर तु. 5.4 प्रस्तुत किए गए है। इसके आधार पर हम पाते है कि विवेच्य पुस्तकों में शब्द भार अंक बहुत कम हैं। हरियाणा, हिमाचलप्रदेश और दिल्ली की कक्षा 1 की पुस्तक में पुराने और नए शब्दों का यह अनुपात लगभग 2 : 1 अर्थात इन पुस्तकों में हर तीसरा चौथा शब्द नया अथवा अपरिचित है। अन्य राज्यों में भी स्थिति लगभग यही है। केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली पठन सामग्री में यह शब्द भार लगभग 4 है अर्थात इन पुस्तकों में हर 5वां शब्द नया है। कक्षा 1 और 2 के शब्द भंडार को संयुक्त रूप में देखने पर भी हम पाते हैं कि सभी राज्यों में सभी कक्षाओं का औसतन शब्द भार अंक लगभग 3 है। इस प्रकार सभी विवेच्य पुस्तकों में शब्द भार अंक असंतोषजनक है।

तु. 5. 11. 4 शब्द भंडार की उपयुक्तता

पठन योग्यता के विकास के लिए किसी पुस्तक में कितने शब्द होने चाहिए इससे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि पुस्तक में कौन से शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए । इस संबंध में सर्वमान्य सिद्धान्त यह है कि कक्षा 1 और 2 की पाठ्यपुस्तकों में उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो पहले से ही छात्र के मौखिक शब्द भंडार का अंग हों और जिन्हें छात्र श्रव्य रूप में जानते हों। जिस समय छात्र स्कूल में प्रवेश लेता है उसका मौखिक शब्द भंडार काफी बड़ा होता है। उसके मौखिक भंडार के सभी शब्दों को पाठ्य सामग्री में शामिल करना न तो संभव होता है और न ही आवश्यक। अतः पाठ्य पुस्तक लेखक के सामने यह प्रश्न उठता है कि वे किन शब्दों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित करें और किन को छोड़े । इस संबंध में कोई भी निर्णय लेने का प्रथम आधार होना चाहिए – उपयोगिता । छात्र के मौखिक शब्द भंडार के जो शब्द जितने अधिक उपयोगी हो उन्हें उतनी अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कक्षा 3, 4, 5 की पुस्तकों में भी उन्हीं नए शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो भविष्य में छात्रों के लिए उपयोगी हों।

प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग जीवन की विभिन्न स्थितियों तथा विभिन्न संदर्भो में बार–बार होता है। इसके अतिरिक्त भाषा विशेष के संरचनात्मक शब्द भी बार–बार प्रयोग में आते हैं क्योंकि उनके बिना वाक्य की रचना ही नहीं हो पाती। इस प्रकार प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे बहु प्रयुक्त और बहु उपयोगी शब्द होते हैं जिन्हें उस भाषा की आधारभूत शब्दावली कहा जाता है। इस आधारभूत शब्दावली के अधिक से अधिक शब्दों को सबसे पहले पढ़ना सीखना छात्र के लिए बहुत उपयोगी है। इस शब्दावली के पठन पर अधिकार हो जाने पर छात्र को यह सुविधा हो जाती है कि वे थोड़े से बहु उपयोगी शब्दों के बल पर ही विभिन्न प्रसंगों और स्थितियों से संबंधित सामग्री पढ़ सकता है। अतः पाठ्यपुस्तकों के लिए शब्दों का चयन करते समय लेखकों को ऐसे शब्दों को प्राथमिकता

देनी चाहिए जो भाषा की आधारभूत शब्दावली तथा छात्रों के मौखिक शब्द भंडार का अंग हों। चूंकि आधारभूत शब्दावली का निर्धारण विभिन्न प्रकार की सामग्री का विश्लेषण करने के पश्चात् बारम्बारिता और उपयोगिता के आधार पर किया गया होता है उसके शब्दों को पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित करने का अवश्यंभावी परिणाम यह होता है कि बहुत से शब्द एकाधिक कक्षाओं और राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में समान रूप से प्रयुक्त हुए मिलते है। ऐसा होना वांछनीय भी है क्योंकि ऐसे शब्दों का पठन सीख लेने पर छात्र को एकाधिक कक्षाओं और राज्यों की पुस्तकों को पढ़ने में कठिनाई अनुभव नहीं होती।

पठन सामग्री के चयन का एक अन्य आधार है उसकी कठिनाई का स्तर। छात्र के मौखिक भंडार के कुछ शब्द रूपात्मक दृष्टि से कठिन होते है और कुछ सरल। प्रारंभिक कक्षाओं में रूपात्मक दृष्टि से सरल शब्दों का ही पठन सिखाना शिक्षण विधि की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। अतः इस अध्ययन के अंतर्गत हमने शब्द भंडार की उपयुक्तता का मूल्यांकन जिन आधारों पर किया है, वे इस प्रकार है :

तु. 5.11.4.1 विभिन्न कक्षाओं में प्रयुक्त शब्दों की दृष्टि से उपयुक्तता।

तु. 5.11.4.2 विभिन्न राज्यों में प्रयुक्त शब्दावली की दृष्टि से उपयुक्तता।

तु. 5.11.4.3 आधारभूत शब्दावली की दृष्टि से उपयुक्तता।

तु. 5.11.4.4 पठन शिक्षण विधि की दृष्टि से उपयुक्तता।

तु. 5. 11. 4. 1 विभिन्न कक्षाओं में प्रयुक्त शब्दावली की दृष्टि से उपयुक्तता

पहली कक्षा की पठन पुस्तक में उन शब्दों का समावेश किया जाना चाहिए जो उस भाषा के प्रयोग में सर्वाधिक उपयोगी पाए गए हों। ऐसा करने से यह लाभ होगा कि अगली कक्षा की पठन पुस्तक में उनके समावेश की संभावना स्वतः सिद्ध रहेगी और उनके समावेश से अगली कक्षा की पाठ्य सामग्री छात्रों के लिए अधिक सरल हो जाएगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कक्षा की पठन पुस्तक में प्रयुक्त होने वाले नए शब्दों को यदि पिछली कक्षा में सीखे गए सुपरिचित तथा पुराने शब्दों के साथ प्रस्तुत किया जाएगा तो छात्र का शब्द भंडार स्वाभाविक गति से उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाएगा। अच्छी पठन पुस्तक वही मानी जाएगी जिसके शब्द भंडार का स्तरीकरण इस प्रकार किया गया हो कि उसमें बहुत से शब्द पिछली कक्षा की पठन पुस्तक से लिए गए हों तथा ऐसे नए शब्दों को भी पर्याप्त संख्या में सम्मिलित किया गया हो जो अगली कक्षा की पठन सामग्री के लिए उपयोगी सिद्ध हों। ऐसा होने पर हर कक्षा में पहले सीखे गए शब्दों का पुनः पुनः अभ्यास भी होता चलेगा और छात्र नए शब्द भी सीखता जाएगा । विवेच्य पुस्तकों के शब्द भंडार की उपयुक्तता का निर्धारण इस दृष्टि से करने के लिए जो विश्लेषण किया गया उससे संबंधित आँकड़े सूची नम्बर तु 5.6 में दिए गए हैं। इस सूची में प्रत्येक कक्षा में प्रयुक्त उन शब्दों की संख्या तथा प्रतिशत दिया गया है जो पिछली कक्षा में भी प्रयुक्त हुए है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कक्षा की पुस्तकों के उन शब्दों की संख्या का प्रतिशत

भी दिया गया है जो अगली कक्षा की पुस्तक में प्रयुक्त हुए हैं। इस प्रकार यह सूची विद्यालयी परिवेश और संपूर्ण पठन पुस्तक–माला के संदर्भ में पठन पुस्तक विशेष में प्रयुक्त शब्दों की उपयोगिता बतलाती है। इसके अतिरिक्त इस सूची के आधार पर यह भी जाना जा सकता है कि विभिन्न कक्षाओं की पठन पुस्तकों के शब्द भंडार का स्तरीकरण ठीक प्रकार से किया गया है अथवा नहीं।

इस सूची को देखने पर ज्ञात होता है कि उत्तरप्रदेश और केन्द्रीय विद्यालयों को छोड़कर अन्य सभी राज्यों की पहली कक्षा की पुस्तकों के शब्द भंडार का लगभग एक चौथाई ही कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त हो पाया है। हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की पुस्तकें इस दृष्टि से सर्वाधिक असंतोषजनक है। मध्यप्रदेश की कक्षा एक की पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या केवल 25% है, जो संतोषजनक नहीं है। हिमाचलप्रदेश में कक्षा दो की पुस्तक के केवल 8% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग कक्षा तीन की पुस्तक में हुआ है। राजस्थान में कक्षा एक और दो को अविभक्त इकाई के रूप में देखा जाता है। अतः कक्षा एक और दो की स्थिति को संयुक्त रुप से देखने पर हम पाते हैं कि राजस्थान में उपयोगिता की दृष्टि से शब्दों का चयन काफी संतोषजनक है। दिल्ली की पुस्तकों की भी यही स्थिति है। जहां तक कक्षा दो की पुस्तकों के शब्द भंडार का प्रश्न है, हिमाचलप्रदेश तथा मध्यप्रदेश को छोड़कर अन्य सभी राज्यों में कक्षा दो की पुस्तकों के लगभग आधे शब्द कक्षा तीन की पुस्तकों में भी प्रयुक्त हुए हैं। विभिन्न राज्यों की कक्षा चार और पांच की पुस्तकों में लगभग 60–70 प्रतिशत शब्द पिछली कक्षा की पुस्तकों से लिए गए हैं। इस संबंध में स्मरण रखने योग्य एक बात यह भी है कि कक्षा तीन से पांच तक की पुस्तकों के विभिन्न शब्दों की सूची में उन संरचनात्मक शब्दों की गणना नहीं की गई है जो कक्षा दो की पुस्तक में प्रयुक्त हो चुके हैं।

तु. 5. 11. 4. 2 विभिन्न राज्यों में प्रयुक्त शब्दों की दृष्टि से उपयुक्तता

सूची नम्बर तु. 5.7.1 में उन शब्दों की संख्या और प्रतिशत दिया गया है जो एकाधिक राज्यों में प्रयुक्त हुए है। अपने मानक रुप में हिन्दी बिहार में पढ़ी जाए अथवा राजस्थान में, उसकी आधारभूत शब्दावली तो लगभग एक जैसी रहेगी। तभी तो यह संभव होगा कि सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश में किसी भी राज्य में रहने वाला व्यक्ति अन्य हिन्दी राज्यों के लोगों से संभाषण कर सकेगा तथा अन्य राज्यों में छपी चीजें पढ़ सकेगा। सूची नम्बर तु. 5. 7. 1 के आँकड़ों के आधार पर इस बात का मूल्यांकन किया जा सकता है कि संपूर्ण हिन्दी प्रदेश और छात्र की भावी पठन आवश्यकताओं के संदर्भ में विवेच्य पुस्तकों का शब्द भंडार कहां तक उपयुक्त है।

सूची नम्बर तु. 5. 7. 1 को देखने से ज्ञात होता है कि दिल्ली की कक्षा एक की पुस्तक में 39% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग अन्य हिन्दी राज्यों की कक्षा एक की पुस्तकों में नहीं होता। यह स्थिति संतोषजनक नहीं है क्योंकि कक्षा एक की पुस्तकों में तो उन हिन्दी शब्दों का प्रयोग होना चाहिए जो उसके कोर अथवा केन्द्र में हों, जिन्हें हिन्दी के प्रयोग में सबसे पहले सीखना अपरिहार्य हो। बिहार की कक्षा पांच के अतिरिक्त सभी कक्षाओं की पुस्तकों में भी ऐसे शब्दों की संख्या लगभग 35% है । इस दृष्टि से हरियाणा और केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली पुस्तकें सर्वाधिक

संतोषजनक कही जा सकती है क्योंकि इनकी विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या की रेंज केवल क्रमशः लगभग 27–15 और 25–11 प्रतिशत ही है। हिमाचलप्रदेश और उत्तरप्रदेश की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या क्रमशः लगभग 25 और 26% है जो संतोषजनक मानी जा सकती है।

सूची नम्बर तु. 5. 7. 1 को समग्र रुप से देखने पर एक अन्य तथ्य यह उभरता है कि सभी राज्यों में निचली कक्षाओं की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या अधिक है जो राज्य विशेष के अतिरिक्त अन्य राज्यों में प्रयुक्त नहीं हुए हैं। ये शब्द स्थानीय नहीं हैं। हैं तो वे मानक, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि संबंधित राज्यों में वे अधिक प्रचलित हैं। कक्षा तीन की पुस्तकों से ऐसे शब्दों की संख्या में उत्तरोत्तर कमी होती चली गई है और कक्षा पांच की लगभग सभी राज्यों की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है जो अन्य राज्यों की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए हैं। इस दृष्टि से हरियाणा, हिमाचलप्रदेश और केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा पांच की पुस्तकें सर्वश्रेष्ठ ठहरती हैं। निचली कक्षाओं में राज्य विशेष में प्रचलित और कक्षा तीन, चार और पांच में अन्य हिन्दी राज्यों में प्रचलित शब्दों का बाहुल्य पठन शिक्षण की दृष्टि से उपयुक्त है। इन सूचियों से पूर्व लक्षित इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि सामान्यतः कक्षा एक की पुस्तकों के लिए शब्दों का चयन इस दृष्टि से अधिक किया जाता है कि उसके द्वारा हिन्दी के सभी लिपि चिन्हों को प्रस्तुत किया जाए और उनकी उपयोगिता और बहुप्रचलन पर कम ध्यान दिया जाता है। कक्षा दो के पश्चात पठन पुस्तक लेखक यह मान कर चलते हैं कि कक्षा एक में छात्र हिन्दी के सभी लिपि चिन्हों को पहचानना सीख चुका है और इस पहचान के आधार पर नए शब्दों को भी पढ़ने लगा है। अतः वे शब्दों का चयन अधिक स्वाभाविक ढंग से करते हैं, परिणामस्वरुप कक्षा दो के बाद की पुस्तकों में हिन्दी प्रदेश में बहु प्रचलित और बहु उपयोगी शब्दों की संख्या संतोषजनक पाई जाती है।

इस प्रतिवेदन के प्रारम्भ में इस बात का उल्लेख किया गया है कि प्रस्तुत अध्ययन का विशेष संदर्भ प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीनीकरण प्रायोजना है। इस प्रायोजना के अंतर्गत इस बात पर बल दिया गया था कि छात्रों की शिक्षा सामग्री में स्थानीय संदर्भो पर अत्याधिक बल दिया जाए जिससे विद्यालयी शिक्षा अधिक प्रासंगिक और रूचिकर हो सके। पठन सामग्री में स्थानीय प्रसंगों और संदर्भो को सम्मिलित करने का एक अवश्यंभावी परिणाम यह भी होना चाहिए था कि पाठ्य सामग्री में स्थानीय शब्दों का प्रयोग बाहुल्य हो जाता। यह ठीक है कि विद्यालयी शिक्षा का उद्धेश्य छात्र को मानक भाषा से परिचित कराना तथा उसके प्रयोग में दक्ष करना है किन्तु परिचित से अपरिचित की ओर जाने के सिद्धान्त के अनुसार यह आवश्यक है कि प्राथमिक कक्षाओं में छात्र की पठन सामग्री में स्थानीय शब्द पर्याप्त मात्रा में हों और फिर धीरे–धीरे उनमें कमी और मानक शब्द रूपों के प्रयोग में वृद्धि की जाए। इस प्रकार शिक्षण विधि रूचिकर तथा अधिक सरल बनाई जा सकती है किन्तु खेद की बात है कि सूची नं. तु. 5.7.2 के द्वारा ज्ञात होता है कि उत्तरप्रदेश को छोड़कर अन्य सभी राज्यों में स्थानीय शब्दों का प्रयोग बहुत कम किया जाता है। इस दृष्टि से ये पुस्तकें प्रायोजना के उद्देश्य पर तो खरी उतरती ही नहीं है, पठन शिक्षण विधि के अनुसार भी बहुत संतोषजनक नहीं कही जा सकती हैं।

सूची न. तु. 5.7.1 और 5.7.2 से एक अन्य बात भी स्पष्ट होती है कि शब्दों का चयन करते समय लेखक इस बात की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं कि चयित शब्द हिन्दी के सर्वोपयोगी शब्द हैं या नहीं। इसी का परिणाम है कि इन पुस्तकों में केवल संबंधित राज्य की पुस्तक में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की संख्या तो 30–40% है किन्तु उनमें स्थानीय शब्दों की संख्या बहुत ही कम है।

तु. 5. 11. 4. 3 आधारभूत शब्दावली की दृष्टि से उपयुक्तता

इस बात को स्पष्ट किया जा चुका है कि प्राथमिक कक्षाओं की भाषायी पुस्तकों में उन शब्दों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो उस भाषा की आधारभूत अथवा बेसिक शब्दावली के अंग हों। विवेच्य पुस्तकों में ऐसा किया गया है अथवा नही इस बात की जांच के लिए प्रत्येक राज्य की पुस्तकों के शब्द भंडार को हिन्दी की तीन आधारभूत तथा सर्वोपयोगी शब्दावलियों से मिला कर देखा गया है। ये सूचियां हैं कोयईंग की सर्वोपयोगी चार हजार शब्दों की सूची, डा. जगन्नाथन की हिन्दी की आधारभूत शब्दावली और शिक्षा मंत्रालय की बेसिक शब्दावली। सूची तु. 5.8.1 में विभिन्न प्रदेशों के शब्द भंडार को फादर कोयईंग द्वारा बनाई गई शब्द सूची से मिलाने पर प्राप्त आँकड़े प्रस्तुत किए गए है। इन आँकड़ों को देखने पर हम पाते हैं कि हरियाणा राज्य की कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में सर्वाधिक (36.1%) शब्द ऐसे हैं जो कोयईंग द्वारा प्रस्तुत प्रथम दो हजार सर्वोपयोगी शब्दों की सूची में प्राप्त होते हैं। किन्तु यह शब्द इन दो हजार शब्दों का केवल 26% है अर्थात केवल एक चौथाई। अन्य राज्यों में भी यही स्थिति है अर्थात सभी राज्यों (हिमाचलप्रदेश और मध्यप्रदेश को छोड़कर) की कक्षा 1 तथा 2 की पुस्तकों के लगभग एक तिहाई शब्द अथवा 30% शब्द ऐसे हैं जिन्हें कोयईंग ने हिन्दी के सर्वोपयोगी दो हजार शब्दों की सूची में सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त कोयईंग ने जिन दो हजार शब्दों को बारम्बारिता के आधार पर सर्वाधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण माना है उनमें से केवल 25–26 प्रतिशत शब्दों का ही प्रयोग अधिकांश राज्यों में हिन्दी की कक्षा 1 तथा 2 की पठन पुस्तकों में हुआ है। हां, बिहार, उत्तरप्रदेश तथा दिल्ली की पुस्तकों में कोयईंग की प्रथम दो हजार शब्दों की सूची के 30% शब्दों का प्रयोग हुआ है।

इस सूची के आधार पर एक अन्य महत्वपूर्ण सूचना यह भी प्राप्त होती है कि इन राज्यों की पुस्तकों में केवल 5–7% शब्द ही ऐसे है जो कोयईंग की दूसरी सूची अर्थात तीसरे और चौथे हजार शब्दों की सूची का अंग है। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि कोयईंग ने जिन शब्दों को अपेक्षाकृत कम सर्वोपयोगी पाया है उन शब्दों में से बहुत ही कम शब्दों का प्रयोग कक्षा 1 तथा 2 की पाठ्यपुस्तकों में हुआ है । यह स्थिति काफी संतोषजनक है।

कोयईंग की 4000 शब्दों की संपूर्ण सूची से कक्षा एक से पांच तक की शब्द सूचियों का मिलान करने पर हम पाते हैं कि सभी राज्यों की पठन पुस्तकों में 36% से अधिक शब्द ऐसे हैं जिन्हें कोयईंग ने सर्वोपयोगी तथा महत्वपूर्ण माना है। यह स्थिति एक सीमा तक संतोषजनक मानी जा सकती है। किन्तु इसके साथ ही यह तथ्य कि कक्षा एक और दो की पुस्तकों के औसतन 36% अथवा अधिक शब्द कोयईंग की सूची के केवल 17–18% शब्द हैं, चिन्ताजनक है। कक्षा एक और दो की पुस्तकों में

सर्वोपयोगी शब्दों की संख्या निश्चय ही इससे अधिक होनी चाहिए। इस संबंध में हरियाणा और हिमाचलप्रदेश राज्यों की स्थिति विशेष रुप से उल्लेखनीय है। इन राज्यों की सभी कक्षाओं की पठन पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या सबसे अधिक है जो कोयईंग की सूची में सूचीबद्ध किए गए हैं। इस तथ्य को यदि हम पिछले पृष्ठों में दिए गए इस तथ्य के साथ मिलाकर विचार करें कि हिमाचलप्रदेश तथा हरियाणा की पुस्तकों में अपेक्षाकृत कम शब्दों का प्रयोग हुआ है तो एक निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि इन दो राज्यों की पुस्तकों में हिन्दी के केवल बहुप्रयुक्त शब्दों को ही पठन सामग्री में सम्मिलित करने पर बल दिया गया है। किन्तु इन पुस्तकों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की संख्या इतनी कम है कि ये बहुप्रयुक्त शब्द सर्वोपयोगी शब्दावली के केवल 20–21% शब्द हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि इन 20–21 प्रतिशत शब्दों में तीन चौथाई शब्द वे हैं जिन्हें कोयईंग ने प्रथम दो हजार सर्वोपयोगी शब्दों की सूची में रखा है। एक अन्य उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कक्षा तीन, चार, पांच की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है जिन्हें कोयईंग ने द्वितीय 2000 सर्वोपयोगी शब्दों की सूची में रखा है।

तु 5. 8. 2 के अंतर्गत विवेच्य पुस्तकों के शब्द भंडार का मिलान केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी की आधारभूत शब्दावली से किया गया है । इस शब्दावली के अंतर्गत डा. जगन्नाथन ने बारम्बारिता और उपयोगिता के आधार पर शब्दों को दो सूचियों में रखा है। पहली सूची में सर्वाधिक उपयोगी 2000 शब्द हैं । आँकड़े देखने पर ज्ञात होता है कि विवेच्य पुस्तकों के केवल एक तिहाई शब्द ऐसे हैं जो जगन्नाथन द्वारा तैयार की गई 2,000 सर्वोपयोगी शब्दों की सूची में सूची–बद्ध किए गए हैं। दूसरी सूची लगभग 3000 शब्दों की है। यह 3000 शब्द भी हिन्दी के सर्वोपयोगी शब्द हैं किन्तु इनका प्रयोग पहली सूची के 2000 शब्दों की तुलना में कम होता है। विवेच्य पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या लगभग 15–16% है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कोयईंग की सूची की तुलना में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की आधारभूत शब्दावली के संदर्भ में स्थिति अपेक्षाकृत कम संतोषजनक हैं। इस संबंध में स्मरणीय बात यह है कि कोयईंग ने अपनी सूची का निर्माण प्राथमिक कक्षाओं की पुस्तकों के शब्द भंडार के आधार पर किया था जबकि जगन्नाथन की आधारभूत शब्दावली का निर्माण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आए, विभिन्न स्थितियों में प्रयुक्त शब्द भंडार के आधार पर किया गया है। कोयईंग की सूची का संदर्भ प्राथमिक कक्षाओं के छात्र हैं, जबकि जगन्नाथन की सूची का संदर्भ संपूर्ण जीवन जीता हुआ वयस्क व्यक्ति।

इस संबंध में एक उल्लेखनीय बात यह है कि हरियाणा तथा हिमाचलप्रदेश की पठन पुस्तकों में अन्य राज्यों की अपेक्षा ऐसे शब्दों की संख्या अधिक है जो कोयईंग की सूची की भांति इस सूची में भी हैं। इन तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि हरियाणा तथा हिमाचलप्रदेश की पठन पुस्तकों में नित्य प्रति प्रयुक्त होने वाली भाषा का विशेष प्रयोग हुआ है। किन्तु जहां तक नित्य प्रति प्रयुक्त होने वाले शब्दों की कुल संख्या का प्रश्न है उसका केवल 16–17% अंश ही इन पुस्तकों में आ पाया है जो कि संतोषजनक नहीं है । ये दोनो तथ्य इस बात के द्योतक हैं कि इन राज्यों की पठन सामग्री में इतने कम शब्द हैं कि उसमें बहुप्रयुक्त शब्दों का प्राचुर्य होने पर भी वे काफी नहीं है। इसके विपरीत दिल्ली की पठन सामग्री का केवल 44% अंश आधारभूत शब्दावली का अंग है किन्तु यह

44% शब्द आधारभूत शब्दावली के सबसे अधिक उपयोगी 25% शब्दों को समेटे हुए हैं। यह स्थिति काफी संतोषजनक है। ऐसा इसलिए संभव हो पाया है कि दिल्ली की पठन सामग्री में कुल और विभिन्न शब्दों की संख्या काफी अधिक है।

विवेच्य पुस्तकों के शब्द भंडार का मिलान शिक्षा मंत्रालय की शब्द सूची में पाए जाने वाले शब्दों से भी किया गया। शिक्षा मंत्रालय की प्रथम सूची में 500 और दूसरी में 1,500 कुल 2,000 सर्वाधिक उपयोगी शब्द हैं। इनके संबंध में कहा गया है कि ये वे न्यूनतम शब्द है जिनके द्वारा हिन्दी भाषा का प्रारंभिक विद्यार्थी अपने सरलतम विचारों को व्यक्त कर सकता है। इस सूची निर्माण का एक उद्वेश्य यह भी था कि इसकी सहायता से अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए पहली पठन पुस्तक अथवा प्रवेशिका बनाई जा सके। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ये 2000 शब्द पठन की दृष्टि से इतने महत्वपूर्ण है कि हिन्दी ही नहीं अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए भी सबसे पहले इन्हें ही सीखना आवश्यक है। शिक्षा मंत्रालय की इस सूची से मिलान करने पर पाया गया कि विवेच्य पुस्तकों के शब्द भंडार के केवल एक तिहाई शब्द ऐसे है जो इस सूची में भी सूचीबद्ध हुए हैं। ये शब्द इस सूची के 34–35% हैं अर्थात शिक्षा मंत्रालय ने जिन 2000 शब्दों को सर्वाधिक उपयोगी शब्द माना है सामान्यतः उनमें से केवल एक तिहाई ही विवेच्य पुस्तकों में प्रयुक्त हुए है। बिहार की पुस्तकों में शिक्षा मंत्रालय की सूची के 40% शब्द प्रयुक्त हुए जबकि हरियाणा हिमाचल की पुस्तकों में ऐसे शब्द केवल 25–26% ही है।

इस संबंध में एक और बात ध्यान देने योग्य है। शिक्षा मंत्रालय की सूची अन्य सूचियों से कहीं अधिक छोटी है, अतः होना तो यह चाहिए था कि पठन पुस्तकों में इसी सूची के सर्वाधिक शब्द मिलते किन्तु ऐसा नहीं हुआ। हरियाणा, हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में कोयईंग और जगन्नाथन की सूचियों के तो सर्वाधिक शब्द प्राप्त होते हैं किन्तु शिक्षा मंत्रालय की सूची के सब से कम। शिक्षा मंत्रालय की सूची का निर्माण प्रयोग की बारम्बारिता के आधार पर नहीं हुआ था। हरियाणा हिमाचलप्रदेश के शब्द भंडार संबंधी विषमता का संभवतः यही कारण हो।

तु. 5. 11. 4. 4 पठन शिक्षण विधि की दृष्टि से उपयुक्तता

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि कक्षा एक और दो के शब्द भंडार का चयन पठन शिक्षण विधि की उपयुक्तता के आधार पर भी किया जाना चाहिए। देवनागरी लिपि में मात्राओं, संयुक्ताक्षरों और अनुस्वार के प्रयोग के कारण छात्र पठन संबंधी कठिनाई अनुभव करते है। अतः इनके संबंध में लेखकों को निर्णय लेना होता हे कि इन लिपि चिन्हों का परिचय छात्रों को कब करवाया जाए और कितने शब्द इनसें संबंधित होने चाहिए। इस संबंध में कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों के आँकड़े सूची नम्बर तु. 5.9 में दिए गए हैं। इन सूचियों को देखने पर हम पाते हैं कि हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की कक्षा एक की पुस्तक में संयुक्ताक्षर युक्त शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर हुआ है। किन्तु उत्तरप्रदेश तथा दिल्ली की पुस्तकों में दस प्रतिशत शब्द संयुक्ताक्षर युक्त पाए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों प्रदेश में शब्दों की उपयुक्तता उनके अर्थो के आधार पर निर्धारित की गई है

संरचना के आधार पर नहीं। अन्य राज्यों में ऐसे शब्दों की संख्या 3–5% रही है जो कम होते हुए भी उचित कही जा सकती है।

कक्षा दो में प्रायः सभी राज्यों की पुस्तकों में संयुक्ताक्षर युक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है। केन्द्रीय विद्यालयों की पुस्तकों के संबंध में ऐसे शब्दों का प्रतिशत केवल 7 है जो कि सबसे कम है। हिमाचलप्रदेश, हरियाणा और राजस्थान की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। हिमाचलप्रदेश की कक्षा एक की पुस्तक में केवल 1% शब्द संयुक्ताक्षर युक्त है जबकि कक्षा दो की पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या 15% से भी अधिक है। हरियाणा की कक्षा एक की पुस्तक में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की संख्या 1% से भी कम है किन्तु कक्षा दो की पुस्तक में ऐसे शब्द लगभग 10% हैं। इसी प्रकार राजस्थान की कक्षा एक की पुस्तक में केवल 4% शब्द संयुक्ताक्षरयुक्त हैं जबकि कक्षा दो में ऐसे शब्दों की संख्या 11 प्रतिशत है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन तीनों राज्यों में कक्षा एक की पुस्तक बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि जहां तक संभव हो पुस्तक में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का प्रयोग न किया जाए। बिहार की पुस्तक में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों में वृद्धि हुई है किन्तु अधिक नहीं। उत्तरप्रदेश और दिल्ली की कक्षा दो की पुस्तकों में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का प्रतिशत लगभग वही रहा है जो कक्षा एक में था।

जहां तक अनुस्वार और अनुनासिक का प्रश्न है इनसे युक्त शब्द प्रारंभ से ही शब्द भंडार का अंग बने हैं। कक्षा एक में ऐसे शब्दों का प्रतिशत अधिकांश राज्यों में 10–11 है तथा दो में 15 प्रतिशत के आसपास। आश्चर्य की बात यह है कि हिमाचलप्रदेश को छोड़ अन्य सभी राज्यों में अनुस्वार–अनुनासिक युक्त शब्दों का प्रयोग लगभग समान रूप से हुआ है। इस का कारण संभवतः यह रहा हो कि पठन–सामग्री के शब्दों का चयन करते समय इस बात को महत्व नहीं दिया गया है कि प्रयुक्त होने वाले शब्द अनुनासिक युक्त है अथवा नहीं। परिणामस्वरूप ऐसे शब्द सहज और सामान्य रूप से स्वतः ही पठन–सामग्री में सम्मिलित हो गए हैं।

हिन्दी लिखने–पढ़ने वाले लोगों को सबसे अधिक कठिनाई मात्राओं के प्रयोग के संबंध में आती है। इसके अतिरिक्त जिन शब्दों में वर्णो की संख्या अधिक होती है उन्हें पढ़ना–लिखना सीखने में बालकों को कठिनाई होती है तथा जिन में कम, वे सरल प्रतीत होते हैं। आलोच्य पुस्तकों के विश्लेषण पर ज्ञात हुआ कि प्रायः सभी राज्यों की कक्षा एक की पुस्तक में एक मात्रा और एक वर्ण वाले शब्द तथा ऐसे शब्द जिसमें तीन से अधिक मात्रा का प्रयोग हुआ हो, की संख्या अपेक्षाकृत, कम है। बिना मात्रा वाले शब्दों की संख्या भी कम है। किंतु एक अथवा दो मात्रा वाले शब्दों की संख्या अधिक है। इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिन्दी में बिना मात्रा वाले परिचित शब्द कम है और पठन–शिक्षण के प्रारंभ में दो ही मात्रा युक्त शब्द पढ़ाने आवश्यक हो जाते हैं। कक्षा दो में बिना मात्रा वाले और एक मात्रायुक्त शब्दों की संख्या अन्य सभी प्रकार के शब्दों से कम है। कक्षा दो के संदर्भ में ऐसा होना समुचित है। कक्षा एक और दो के शब्द भंडार को संयुक्त रूप से लेने पर भी यही स्थिति दृष्टिगोचर होती है।

सभी राज्यों में एक ही प्रकार के शब्दों की संख्या में कमी अथवा अधिकता इस बात की भी द्योतक है कि सभी राज्यों में एक ही पठन शिक्षण विधि का व्यवहार होता है।

छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि कक्षा दो के अंत तक वे हिन्दी के सभी लिपि चिन्हों को पहचानने लगेगें और मात्रायुक्त, संयुक्ताक्षरयुक्त और अनुनासिक अनुस्वार युक्त शब्द सहज रूप से पढ़ सकेगें अतः कक्षा तीन, चार, पांच के पठन शब्द भंडार का संरचना की दृष्टि से विश्लेषण नहीं किया गया ।

तु. 5. 11. 5 शब्द भंडार की समृद्धता

केवल शब्दों की संख्या की अधिकता से ही शब्द भंडार समृद्ध नहीं होता। उसमें विविधता भी होनी चाहिए। ये विविधता जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आती है। छात्र के शब्द भंडार में जीवन के जितने अधिक विविध क्षेत्रों से संबंधित जितने अधिक शब्द होगें उतने ही अधिक क्षेत्रों में उसे पठन–मनन की सुविधा होगी, अतः आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकों के लिए शब्दों का चयन जीवन के विविध पक्षों से किया जाए। आलोच्य पुस्तकों का इस संबंध मे जो विश्लेषण किया गया है उसके आंकड़े सूची नम्बर तु. 5.10 में दिए गए है। इन आँकड़ों के आधार पर हम पाते है कि सभी राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में सर्वाधिक शब्द सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं। इसके पश्चात् अधिकांश शब्द छात्र के घर, परिवार और प्राकृतिक परिवेश से लिए गए हैं क्योंकि अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षो में छात्र इन्हीं क्षेत्रों में सबसे अधिक भाषा व्यवहार करता है किन्तु कक्षा 3 से 5 तक की पुस्तकों में घर, परिवार और प्रकृति के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों से संबंधित शब्दों की वृद्धि होनी अपेक्षित है।

छात्र के जीवन में खेलकूद का बहुत महत्व है। बचपन तो है ही मानों खेल का पर्याय। ऐसी स्थिति में छात्रों के शब्द भंडार में खेलकूद संबंधी शब्द होना स्वमाविक है किन्तु आलोच्य पुस्तकों में खेलकूद संबंधी शब्दों की संख्या सबसे कम है। यह स्थिति असंतोषजनक है। ऐसा लगता है मानों पठन शिक्षण के द्वारा हम छात्रों पर कोई गुरु गंभीर काम लाद रहे हैं और उन विषयों की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं जो छात्रों के हृदय के सबसे निकट होते हैं।

पशु–पक्षियों से संबंधित शब्द भंडार की भी वही स्थिति है। अन्य क्षेत्र जिनसे संबंधित कुछ कम शब्द पठन पुस्तकों में पाए गए वे स्वास्थ्य, शिक्षा और मनोभावों से संबंधित हैं। आज के युग में विज्ञान और टेक्नोलाजी की चर्चा किये बिना पठन सामग्री अपूर्ण रहती है किन्तु आलेच्य पुस्तकों में विज्ञान और टेक्नोलाजी संबंधी शब्द बहुत कम है। समग्र रुप से सभी राज्यों का शब्द भंडार वैविध्य की दृष्टि से समृद्ध है।

—0—

अध्याय - 6

पाठ्य पुस्तक लेखकों के लिए मार्गदर्शक सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का एक उद्देश्य यह भी था कि लेखकों को ऐसी सामग्री और मार्गदर्शक सुझाव दिए जाएं जिनकी सहायता से वे पठन पुस्तकों में सही मात्रा में उपयुक्त शब्दों का उपयुक्त ढंग से प्रयोग कर सकें। पिछले पृष्ठों में किए गए शब्द भंडार के विश्लेषण और मूल्यांकन के आधार पर कुछ ऐसे सामान्य सुझावों का निर्धारण करना संभव हो गया जिन्हें पठन पुस्तकों के लेखकों और अध्यापकों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इन सुझावों को शिक्षा तथा भाषाविदों की एक समिति के समक्ष रखा गया और पर्याप्त चर्चा के पश्चात उन्हें अंतिम रूप प्रदान किया गया। अध्यापक और लेखकगण यदि इन निर्देशों को ध्यान में रखेगें तो ऐसी हिन्दी पुस्तकों का निर्माण करना संभव होगा जिनके द्वारा छात्र जल्दी से जल्दी पढ़ना सीख जाएं, उन के पठन भंडार में योंजनाबद्ध ढंग से उपयुक्त शब्दों की उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सके और विभिन्न पठन–कौशलों के प्रति उनमें अभिरुचि जागृत हो सके।

सुझाव :-

6.1 पठन पुस्तकों का निर्माण पूर्व निश्चित योजना के अनुसार होना चाहिए।

6.2 पठन पुस्तक लिखना प्रारम्भ करने से पहले उपरोक्त पूर्व निश्चित योजना द्वारा इस बात को निश्चित कर लेना चाहिए कि विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में कुल, विभिन्न, नए तथा पुराने शब्द कितने होंगे।

6.3 इस बात को भी पहले ही निश्चित कर लेना चाहिए कि सर्वोपयोगी शब्दों की सूची में से किन शब्दों का प्रयोग किन कक्षाओं की पठन पुस्तकों में होगा।

6.4 कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में विभिन्न शब्दों की संख्या कम से कम होनी चाहिए किन्तु उनकी आवृत्ति अधिक से अधिक होनी चाहिए।

6.5 कक्षा 1 की पुस्तक में लगभग 2-3 हजार शब्दों की कुल पठन सामग्री होनी चाहिए।

6.6 कक्षा 1 की पुस्तक में लगभग 500 विभिन्न शब्द होने चाहिए।

6.7 कक्षा 1 की पुस्तक में प्रयुक्त हर विभिन्न शब्द कम से कम चार बार अवश्य प्रयुक्त होना चाहिए ।

6.8 कक्षा 1 की पुस्तक में प्रयुक्त सब शब्द छात्र के लिए मौखिक रूप से पूर्व परिचित होने चाहिए।

6.9 शब्दों का चयन करते समय इस बात का प्रयत्न करना कि हिन्दी के लगभग सभी संरचनात्मक तथा अन्य बहुप्रयुक्त शब्दों का प्रयोग कक्षा 1 की पुस्तक में ही हो जाए तो अच्छा है।

6.10 कक्षा 1 की पुस्तक में अधिकांशतः ऐसे शब्दों का समावेश होना चाहिए जो प्रायः सभी शोधों तथा अनुभवी शिक्षकों के मत के आधार पर हिन्दी के सर्वोपयोगी तथा सरल शब्द हैं।

6.11 हिन्दी के सभी लिपि संकेतों को कक्षा 1 में ही पहचानना सीखना आवश्यक नहीं है। प्रयत्न यह होना चाहिए कि उपरोक्त निर्देशों को ध्यान में रखते हुए रुचिकर पठन सामग्री तैयार की जाए। ऐसा करने में यदि कोई लिपि संकेत छूट भी जाए तो कोई हानि नहीं होगी।

6.12 कक्षा 1 में यदि अनुस्वार, अनुनासिक और संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों को पढ़ाना न भी सिखाया जाए तो कोई हानि नहीं होगी पर कक्षा 2 के अंत तक छात्र को हिन्दी के सभी लिपि संकेतों से परिचित हो जाना चाहिए।

6.13 विभिन्न लिपि संकेतों को शब्द के प्रारंभ, मध्य और अंत में प्रस्तुत करने के स्थान पर बल इस बात पर होना चाहिए कि प्रत्येक लिपि संकेत अन्य विभिन्न लिपि संकेतों के भिन्न-भिन्न प्रयोगों के साथ आए। उदाहरणतः क अक्षर को पहचानना सिखाने के लिए आवश्यक नहीं है कि वह प्रयुक्त शब्दों में प्रारंभिक, अंतिम और मध्य स्थिति में हो, बल्कि होना यह चाहिए कि वह कभी ई मात्रा सहित, कभी आ की मात्रा सहित, कभी ज के बाद, तो कभी त या ड इत्यादि के साथ प्रयुक्त हो।

6.14 कक्षा 1 की पुस्तक में हिन्दी के विभिन्न लिपि संकेतों की पहचान करवाने के लिए मानक हिन्दी शब्दों के स्थान पर स्थानीय शब्दों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

6.15 उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखने के पश्चात यह देखना चाहिए कि कौन से शब्द संरचना की दृष्टि से सरल हैं, इन शब्दों को कक्षा 1 की पुस्तक के प्रारम्भ में लेना चाहिए।

6.16 कक्षा 2 की पुस्तक में लगभग साढ़े चार अथवा पांच हजार शब्दों की पठन सामग्री होनी चाहिए।

6.17 कक्षा 2 की पुस्तक में लगभग 1500 विभिन्न शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। उनमें से 70–80 प्रतिशत शब्द पहली बार पठन सामग्री में प्रयुक्त होने चाहिए।

6.18 कक्षा 2 की पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न नवीन शब्दों में से अधिकांश का प्रयोग पुस्तक में कम से कम चार-पांच बार होना चाहिए।

6.19 कक्षा 1 की पुस्तक में प्रयुक्त 500 शब्दों में से अधिकांश शब्दों का प्रयोग कक्षा 2 की पुस्तक में भी होना चाहिए।

6.20 कक्षा 1 से 5 में ऐसे मानक शब्द रूपों का व्यवहार अधिक उपयुक्त रहेगा जो संपूर्ण हिन्दी प्रदेश के विभिन्न राज्यों में समान रूप से प्रचलित हों।

6.21 कक्षा 3, 4, 5 के लिए प्रत्येक पठन पुस्तक में तीन चार हजार विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाए जिनमें लगभग 60 प्रतिशत शब्द ऐसे हों जो पिछली कक्षाओं की पठन पुस्तकों में प्रयुक्त हो चुके हो।

6.22 कक्षा 1 से 5 तक की पुस्तकों में कुल मिलाकर लगभग 50-60 हजार शब्द होने चाहिए। पहली कक्षा की पुस्तक में सब से कम और पांचवी कक्षा की पुस्तक में सब से अधिक कुल शब्द-सामग्री होनी चाहिए।

6.23 कक्षा 3 से 5 की पुस्तकों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की बारम्बारिता से अधिक बल इस बात पर दिय जाना चाहिए कि वे विविध संदर्भों में तथा आवश्यक हो तो विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हों।

6.24 कक्षा 1 से 5 तक की कुल पठन सामग्री में, शोध आधारित आधारभूत शब्दावलियों के 80-90 प्रतिशत शब्द प्रयुक्त हो जाने चाहिए।

अध्याय - 7

प्राथमिक कक्षाओं के लिए सर्वोपयोगी शब्द

पठन योग्यता के विकास के लिए पठन पुस्तकों में किन शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए इस संबंध में सर्वमान्य सिद्धान्त यह है कि कक्षा 1 और 2 की पठन पुस्तकों में उन्ही शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो पहले से ही छात्र के मौखिक शब्द भंडार का अंग हों और जिन्हें छात्र श्रव्य रूप में जानते हों । जिस समय छात्र स्कूल में प्रवेश लेता है उसका मौखिक शब्द भंडार काफी बड़ा होता है । इस शब्द भंडार के सभी शब्दों को पठन सामग्री में सम्मिलित करना न तो संभव होता है और न ही आवश्यक । इसके अतिरिक्त पठन पुस्तकों में छात्र के पठन की भावी आवश्यकताओं को भी दृष्टि में रखना आवश्यक है । कक्षा 3 से छात्र सामाजिक ज्ञान, सामान्य विज्ञान इत्यादि विषयों की पुस्तकें पढ़ना भी आरम्भ कर देता है । इसके अतिरिक्त कक्षा 3 से उसे विभिन्न विषयों के संबंध में लिखित परीक्षा में भी बैठना होता है । वह जल्दी से जल्दी लिखने पढ़ने में सक्षम हो जाए इसकी तैयारी भी कक्षा 1 और 2 पठन पुस्तकों में करनी आवश्यक हो जाती है । इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक कक्षाओं की पठन पुस्तकों के लेखकों के सामने बार बार यह प्रश्न उठता है कि वे विभिन्न कक्षाओं के लिए अपनी पुस्तकों में किस शब्द भंडार का प्रयोग करें ।

संसार की विभिन्न भाषाओं मे ऐसी शोध आधारित शब्दावलियाँ उपलब्ध हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि स्कूल की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों का पठन शब्द भंडार क्या होना चाहिए। इनमें से अधिकांश शब्दावलियाँ प्रयोग की बारम्बारिता के आधार पर तैयार की गई हैं । इस आधार के अनुसार जिस शब्द का प्रयोग किसी भाषा विशेष के व्यवहार में जितनी बार अधिक होता है, शिक्षण की दृष्टि से वह उतना ही अधिक महत्वपूर्ण माना गया है ।

हिन्दी भाषा की पठन पुस्तकों के निर्माण के लिए ऐसी शब्दावली की आवश्यकता बहुत समय से महसूस की जा रही है । अतः प्रस्तुत अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी था कि प्राथमिक

कक्षाओं की पठन पुस्तकों के लिए शोध आधारित तथा बारम्बारिता की दृष्टि से उपयुक्त शब्दावली तैयार कर इस कमी को पूरा किया जाए ।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न राज्यों की पठन पुस्तकों के शब्द भंडार का विश्लेषण कर उसे बारम्बारिता के आधार पर सूचीबद्ध किया गया । इस सूची में से बहु बारम्बारिता वाले ऐसे शब्दों को निकाल कर पुनः सूचीबद्ध किया गया जिनका प्रयोग एकाधिक कक्षाओं और एकाधिक राज्यों की पुस्तकों में हुआ है । इस बहु बारम्बारिता वाली सूची को अधिकाधिक प्रामाणिक बनाने के लिए इसका कोयईग, जगन्नाथन तथा शिक्षा मंत्रालय द्वारा तैयार की गई सूचियों से मिलान किया गया तथा इस के शब्दों के कठिनाई स्तर को, विभिन्न शोधों के आधार पर सुनिश्चित किया गया । अंत में इस सूची को भाषा शिक्षण के विद्वानों की एक समिति के समक्ष रखा गया इस समिति के सुझावों के प्रकाश में इस सूची को अंतिम रूप दिया गया ।

इस प्रकार ऐसे 5300 (लगभग) शब्दों की सूची तैयार हो गई, जो विभिन्न राज्यों में और विभिन्न कक्षाओं में बार बार प्रयुक्त हुए हैं। जिन्हें कोयईग, जगन्नाथन और शिक्षा मंत्रालय ने भी महत्त्वपूर्ण माना हैं, जिनका कठिनाई का स्तर विभिन्न शोधों के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त है तथा जिनकी उपयुक्तता का अनुमोदन भाषा शिक्षण के विद्वानों ने भी किया है। यह सूची परिशिष्ट 1 पर दी गई हैं। इन 5300 शब्दों की सूची के साथ ही एक अन्य सूची में लगभग 500 ऐसे प्रयोगों, मुहावरों इत्यादि को भी सूचीबद्ध किया गया है जो आलोच्य पुस्तकों में बार–बार प्रयुक्त हुए हैं। प्रस्तुत शब्द सूची पठन पुस्तकों के लिए ही नहीं अन्य विषयों की पाठ्य पुस्तकों तथा बालकों के सामान्य पठन के लिए बनाई जाने वाली पुस्तकों के लेखकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

इस सूची के संबंध में एक बात ध्यान रखनी आवश्यक है । यह सूची छात्रों के पठन शब्द भंडार से संबंधित है, अतः इसमें बहुत से ऐसे शब्द सम्मिलित हैं जो विशेष रूप से पठन–सामग्री में ही प्रयुक्त होते हैं, बोल–चाल में उनका प्रयोग उतनी प्रचुरता से नहीं होता ।

इस शताब्दी के चौथे दशक में बनाई गई फादर कोयईग की सूची के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत सूची की मुख्य विशेषताएं ये हैं कि यह सूची––

7.1 आज के परिप्रेक्ष्य में अधिक समीचीन है,

7.2 सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश (आठों हिन्दी भाषी राज्यों) की पठन पुस्तकों के आधार पर बनी है,

7.3 बारम्बारिता के साथ–साथ शिक्षाविदों के मत को भी ध्यान में रखकर बनाई गई है,

7.4 शब्दों के कठिनाई स्तर को सुनिश्चित कर बनी है

अध्याय-8

सिंहावलोकन

जीवन तथा विद्यालयी शिक्षा में पठन के महत्व को देखते हुए यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि प्राथमिक विद्यालय की भाषा पुस्तकों का निर्माण बहुत सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। प्राथमिक विद्यालय वह स्थान हैं जहां छात्र पढ़ना सीखना प्रारम्भ करते हैं। इन प्रारम्भिक वर्षों में यदि उन्हें सावधानीपूर्वक तैयार की गई पठन सामग्री नहीं मिलेगी तो पठन संबंधी कुशलताओं का विकास भलीभांति नहीं हो पायेगा। पठन शिक्षण का पहला सोपान शब्द की पहचान है। वास्तव में, पठन का अर्थ ही है शब्दों को पहचानना और उनके अर्थ समझना। अतः भाषा की पुस्तक तैयार करते समय सबसे पहले यह प्रश्न उठता है कि छात्र को कितने और कौन-कौन से शब्द पढ़ने सीखने चाहिए।

हमारे देश मे पिछले लगभग 150 वर्षो से विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी में भाषा की पुस्तकें तैयार की जा रही हैं। किन्तु आज भी जब कोई लेखक प्राथमिक कक्षाओं के लिए भाषा की पुस्तकें तैयार करने बैठता है तो उसके पास कोई भी ऐसी शोध आधारित सामग्री नहीं होती जिसके आधार पर वह यह निश्चय कर सके कि वह अपनी विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में कुल कितने और कौन-कौन से शब्दों का प्रयोग करे। उनमें कितने शब्द नए हों और कितने पुराने। पठन शिक्षण के लिए प्रत्येक शब्द की कितनी बार पुनरावृति की जाए इत्यादि । इस अध्ययन में ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने की दिशा मे एक लघु प्रयास किया गया है ।

पठन शिक्षण की दृष्टि से हिन्दी भाषा की पुस्तक में क्या होना चाहिए- इस बात का निर्धारण करने के लिए आवश्यक है कि पहले यह जाना जाए कि वर्तमान हिन्दी भाषा की पुस्तकों के शब्द भंडार की क्या स्थिति है तथा वह कहां तक उपयुक्त हैं। इस प्रकार इस अध्ययन के तीन मुख्य उद्देश्य हैं :

(1) वर्तमान हिन्दी भाषा की पुस्तकों के भंडार की उपयुक्तता जाँचना,

(2) इस जांच के आधार पर भाषा की पुस्तकों के लेखकों के लिए शोध आधारित सुझाव तथा निर्देश प्रस्तुत करना, और

(3) ऐसे शब्दों की सूची तैयार करना जो प्राथमिक कक्षाओं के लिए बेसिक पठन शब्दवाली कही जा सके।

इन उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर सबसे पहले वर्तमान हिन्दी भाषा की पुस्तकों के शब्द भंडार का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के अंतर्गत बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान तथा केन्द्रीय विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं की पुस्तकों का अध्ययन किया गया। इनमें से अधिकांश पुस्तकें मूलतः प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीनीकरण परियोजना के अंतर्गत तैयार की गई थीं । दिल्ली के अतिरिक्त अन्य सभी राज्यों में प्रत्येक कक्षा में एक-एक भाषा पुस्तक का व्यवहार होता है। किन्तु दिल्ली में समाहित पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक कक्षा के लिए दो पुस्तकों का निर्माण किया गया। इस प्रकार प्रत्येक कक्षा की 9-9 पुस्तकों, कुल 45 पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत उपरोक्त 45 पुस्तकों के लगभग चार लाख शब्दों का विश्लेषण-अध्ययन किया गया है। इस विश्लेषण-अध्ययन के लिए इन पुस्तकों के लगभग सभी शब्दों को सूचीबद्ध किया गया। कक्षा 1 और 2 में चूंकि छात्र पढ़ना सीखना प्रारंभ करता है, उसकी पठन पुस्तक का प्रत्येक शब्द, चाहे वह अपने मूल रूप में हो अथवा तिर्यक रूप में छात्र के लिए अधिगम बिन्दु होता है । अतः कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों के प्रत्येक शब्द को अलग अधिगम इकाई के रूप में सूचीबद्ध किया गया। किन्तु कक्षा 3 से 5 तक की पुस्तकों के शब्दों को सूचीबद्ध करते समय उनमें प्रयुक्त संरचनात्मक शब्दों को छोड़ दिया गया। यह निर्णय इस आधार पर लिया गया कि कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में हिन्दी के लगभग सभी आधारभूत संरचनात्मक शब्द सम्मिलित हो चुके थे। इसके अतिरिक्त कक्षा 3 से 5 तक की पुस्तकों के शब्दों को सूचीबद्ध करते हुए, प्रत्येक शब्द के मूल और तिर्यक रूप को केवल एक ही इकाई मान कर एक शब्द के रूप में सूचीबद्ध किया गया। प्रयुक्त शब्दों को सूचीबद्ध करते समय प्रत्येक पुस्तक में प्रत्येक प्रयुक्त शब्द की बारम्बारिता भी नोट की गई। इस प्रकार आठों राज्यों की प्रत्येक कक्षा के संबंध में आठ-आठ सूचियां तैयार की गईं। तत्पश्चात इन आठों सूचियों को मिलाकर, प्रत्येक कक्षा की एक मास्टर सूची तैयार की गई । इस मास्टर सूची में किसी भी कक्षा की सभी नौ पुस्तकों में प्रयुक्त शब्दों को एक साथ सूचीबद्ध किया गया, तथा प्रत्येक शब्द के सामने यह दर्शाया गया कि अमुक शब्द किस-किस राज्य में और कितनी-कितनी बार प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार पांचों कक्षाओं के लिए पांच मास्टर सूचियां तैयार की गई और शब्द सूचियों का समूचा अध्ययन इन पांचों सूचियों के आधार पर किया गया।

कक्षावार मास्टर सूचियों के विश्लेषण के आधार पर विभिन्न राज्यो की विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों के पठन भंडार का मूल्यांकन किया गया। इस मूल्यांकन के पांच पक्ष थे–शब्द भंडार का परिमाण, स्तरीकरण, आवृत्ति, समृद्धता और उसकी उपयुक्तता। इन पांचों बातों के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रत्येक कक्षा के पठन शब्द भंडार का विश्लेषण निम्नलिखित बिन्दुओ के संबंध में किया गया:–

(1) कुल शब्दों की संख्या

(2) विभिन्न शब्दों की संख्या,

(3) शब्द भार,

(4) शब्द भंडार मे वृद्धि तथा उसका कक्षावार स्तरीकरण

(5) शब्दो की बारम्बारिता,

(6) पुराने और नए शब्दों की संख्या,

(7) एकाधिक राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द,

(8) आधारभूत और सर्वोपयोगी शब्दों की सूचियों में पाए जाने वाले शब्द,

(9) विभिन्न संरचना वाले शब्दों की संख्या (केवल कक्षा 1 और 2 के सबंध मे) और

(10) विभिन्न जीवन संदर्भो से संबंधित शब्दो की संख्या ।

इस विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित बातें सामने आई :–

भाषा की पाठ्यपुस्तकों में कितने शब्द लिए जाएं, कौन से शब्द लिए जाएं तथा प्रत्येक शब्द की कितनी बार पुनरावृत्ति की जाए इत्यादि बातों के संबंध में कोई पूर्व निर्धारित मत नहीं है। हिमाचलप्रदेश की कक्षा 1 की पुस्तक मे कुल 500 शब्द है तो केन्द्रीय विद्यालयो की पुस्तक में 2676 शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार केन्द्रीय विद्यालयों मे प्रयुक्त होने वाली कक्षा 1 की पुस्तक हिमाचलप्रदेश की तुलना में पांच गुनी बड़ी है। यही स्थिति विभिन्न शब्दो की है। हिमाचलप्रदेश की उक्त पुस्तक में सिर्फ 364 ही विभिन्न शब्दो का प्रयोग हुआ है किन्तु दिल्ली की पुस्तकों में 905 शब्दों का। यही स्थिति अन्य कक्षाओं की पुस्तकों की भी है।

कक्षा 1 से 5 तक के शब्द–भंडार को सम्मिलित रूप में लेने पर हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की पुस्तकें अन्य राज्यों की पुस्तकों से छोटी हैं। सबसे अधिक शब्द बिहार राज्य की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए है। (दिल्ली की पुस्तको को इस तुलना में इसलिए नहीं गिना गया क्योंकि उनकी पठन सामग्री भाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों के शिक्षण के लिए भी है।) बिहार राज्य की कक्षा 1 से 5 तक की पुस्तकों में कुल शब्दों की संख्या 68,256 है। सबसे कम शब्द हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में

हैं। इन पुस्तकों में कुल शब्दों की संख्या 34,508 है। इस प्रकार विभिन्न शब्दों की संख्या भी हिमाचलप्रदेश में सबसे कम अर्थात 6,360 तथा बिहार में सबसे अधिक अर्थात 11,105 शब्द हैं।

पठन शिक्षण के लिए आवश्यक है कि प्राथमिक कक्षाओं की भाषा पुस्तकों में जिन शब्दों का प्रयोग किया जाए उनकी पुनरावृत्ति काफी संख्या में हो, जिससे छात्रों को पठन अभ्यास करने का समुचित अवसर मिले परन्तु आलोच्य पुस्तकों में सामान्यतः इस प्रकार का प्रयास दृष्टिगोचर नहीं होता। बहुत थोड़े शब्द ऐसे है जिनकी आवश्यक पुनरावृति हुई है। हिमाचलप्रदेश की कक्षा 1 की पुस्तक में 92% शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग पूरी पुस्तक में केवल एक बार हुआ है। शब्दों की यथासंभव पुनरावृत्ति का प्रयास केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली कक्षा 1 की पुस्तक में हुआ है किन्तु उसमें भी 71% से अधिक शब्द ऐसे हैं जो पूरी पुस्तक में केवल एक बार ही आए हैं।

पुस्तकों में पुनरावृति के अभाव का परिणाम यह हुआ है कि विभिन्न शब्दों की संख्या कुल शब्दों के अनुपात में काफी अधिक है जिससे शब्द भार अंक काफी कम हो गया है। कक्षा 1 और 2 की अधिकांश पुस्तकों में सम्मिलित रूप से यह शब्द भार अंक 3 या 4 है अर्थात आलोच्य पुस्तकों में हर चौथा पांचवा शब्द नया है। यह स्थिति पठन शिक्षण की दृष्टि से अवांछनीय है।

सभी राज्यों में कक्षा 2 की तुलना में कक्षा 1 की भाषा पुस्तकों में कुल तथा विभिन्न शब्दों की संख्या काफी अधिक है तथा शब्द भार अंक भी काफी कम है। होना तो यह चाहिए कि कक्षा 1 में कुल शब्दों के अनुपात में विभिन्न शब्द बहुत कम हों और प्रत्येक शब्द की खूब पुनरावृत्ति हो जिससे छात्र समुचित पठन अभ्यास कर सकें। एक बार पठन में रूचि उत्पन्न हो जाने पर तथा थोड़े से शब्दों की भलीभांति पहचान हो जाने पर कक्षा 2 की पुस्तक में विभिन्न नए शब्दों का अनुपात बढ़ाया जा सकता है किन्तु आलोच्य पुस्तकों में स्थिति इसके विपरीत है अर्थात कक्षा 1 की पुस्तक में कक्षा 2 की तुलना में नए शब्द बहुत अधिक है और उनकी पुनरावृत्ति बहुत कम हुई है। दिल्ली, हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की कक्षा 1 की पुस्तकों में शब्द भार अंक लगभग एक है तथा केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली पुस्तकों में यह सबसे अधिक अर्थात लगभग तीन है। अन्य राज्यों की पुस्तकों में यह शब्द भार अंक लगभग दो है। इसक अर्थ यह हुआ कि सभी राज्यों की कक्षा 1 की हिन्दी पुस्तकों में लगभग हर दूसरा तीसरा शब्द नया है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ है कि लेखकों का आग्रह कक्षा 1 की भाषा पुस्तक में हिन्दी के सभी लिपि संकेतों का परिचय देने पर है। इस प्रकार संपूर्ण हिन्दी प्रदेश में पठन शिक्षण के अंतर्गत अक्षर विधि को ही प्राथमिकता देने और कक्षा 1 में ही हिन्दी के सभी लिपि संकेत सिखला देने के प्रयास में, हिन्दी की पुस्तकें पठन शिक्षण की दृष्टि से बहुत ही अनुपयुक्त बन पड़ी हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में छात्र को ऐसे शब्द पढ़ने के लिए दिए जाने चाहिए जो उसके परिवेश से संबंधित हों तथा जिनसे वह सुपरिचित हो किन्तु आलोच्य पुस्तकों में स्थानीय शब्दों की संख्या पर्याप्त नहीं है। अन्य राज्यों की तुलना में उत्तरप्रदेश की कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में सब से अधिक

स्थानीय शब्दों का प्रयोग हुआ है किन्तु वह भी इन कक्षाओं के कुल पठन शब्द भंडार का केवल 3.81% ही है। अन्य राज्यों में ऐसे शब्द 2 से 6% तक हैं, केन्द्रीय विद्यालयों में प्रयुक्त होने वाली पुस्तकों में तो स्थानीयता का प्रश्न ही नहीं उठता। कक्षा 1 से 5 तक की पुस्तकों के समग्र शब्द भंडार की दृष्टि से सब से अधिक स्थानीय शब्दों का प्रयोग बिहार राज्य की पुस्तकों में हुआ है।

किसी कक्षा विशेष की पुस्तक के लिए शब्द भंडार का चयन करते हुए सबसे पहले यह देखना आवश्यक है कि पिछली कक्षा में छात्र कौन से शब्द पढ़ चुका है तथा अगली कक्षा में उसे किन शब्दों की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक पुस्तक में ऐसे शब्दों की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए जो या तो पिछली कक्षा की पुस्तक में विद्यमान थे या फिर वे अगली कक्षा के लिए उपयोगी और आवश्यक हों। किन्तु आलोच्य पुस्तकों में इस दृष्टि का अभाव पाया गया है। राजस्थान की कक्षा 2 की पुस्तक में केवल 27% शब्द ऐसे है जो कक्षा 1 की पुस्तक में प्रयुक्त हो चुके थे। इसी प्रकार हिमाचलप्रदेश की कक्षा 2 की पुस्तक में केवल 33 प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग कक्षा 3 की पुस्तक में हुआ है। इस दृष्टि से सबसे उत्तम स्थिति उत्तरप्रदेश की है। यहां की कक्षा 2 की पुस्तक में 48% शब्द ऐसे है जो छात्र कक्षा 1 में पढ़ चुका था तथा 41% शब्द ऐसे है जो कक्षा 3 की पुस्तक में प्रयुक्त हुए है। कक्षा 4 और 5 की पुस्तकों में पिछली कक्षाओं के शब्द कक्षा 3 की पुस्तकों से सामान्यतः अधिक हैं।

इस अध्ययन के अंतगर्त सात हिन्दी राज्यों और एक संघ शासित प्रदेश की पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। इन आठों में दिन प्रतिदिन व्यवहार में आने वाली तथा शिक्षा और प्रशासन की भाषा हिन्दी है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि इन प्रदेशों में हिन्दी के बहुत सारे शब्द समान रूप से सुपरिचित हों तथा उस नाते विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में समान रूप से विद्यमान हों। किन्तु विश्लेषण करने पर ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम पाई गई। दिल्ली और बिहार की कक्षा 1 की पुस्तकों में लगभग 40% शब्द ऐसे है जो केवल उन्हीं पुस्तकों में प्रयुक्त हुए है, अन्य राज्यों की पुस्तकों में नहीं। कक्षा 2 की प्रायः सभी राज्यों की पुस्तकों में एक चौथाई शब्द ऐसे है जो केवल उन्हीं पुस्तकों में प्रयुक्त हुए हैं। कक्षा 3, 4, 5 की पुस्तकों की भी यही स्थिति है।

प्रत्येक भाषा की एक बेसिक शब्दावली होती है। इस बेसिक शब्दावली के अंतर्गत वे शब्द आते हैं जिनका प्रयोग उस भाषा के व्यवहार में सर्वाधिक बार होता है। बेसिक शब्दावली भाषा विशेष की व्यवहार की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण शब्दों की सूची है। शैक्षिक दृष्टि से आवश्यक है कि कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में इस सूची के शब्दों को प्राथमिकता दी जाए क्योंकि इन महत्वपूर्ण शब्दों का पठन सीख लेने पर छात्र के पठन भंडार में अधिक सुचारू रूप से उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सकती है।

हिन्दी की भाषा पुस्तकों में जिस शब्द भंडार का प्रयोग किया गया है उसको चयन की उपयुक्तता की दृष्टि से देखने के लिए उसका मिलान तीन बेसिक शब्द सूचियों से किया गया है। इनमें से पहली सूची फादर कोयईंग की थी। इस सूची में फादर कोयईंग ने बारम्बारिता के आधार पर

प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए 4,000 सर्वोपयोगी शब्दों को सूचीबद्ध किया है। दूसरी सूची केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित डा. जगन्नाथन की 5,000 शब्दों की है जिसे हिन्दी की आधारभूत शब्दावली का नाम दिया गया है। यह सूची केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि सभी हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए 5,000 सर्वोपयोगी शब्दों को रेखांकित करती है। तीसरी सूची शिक्षा मंत्रालय की है जिसमें 2,000 शब्दों को सूचीबद्ध किया गया है और माना गया है कि यह 2000 शब्द हिन्दी बोलने-पढ़ने-लिखने के लिए इतने आवश्यक है कि यदि अहिन्दी भाषी लोगों को भी हिन्दी सीखनी हो तो सबसे पहले इनको सीखना आवश्यक होगा। मिलान करने पर ज्ञात हुआ कि हरियाणा की पुस्तकों में 50-51% शब्द ऐसे है जिन्हें कोयईंग ने महत्वपूर्ण माना है। इस दृष्टि से बिहार की पुस्तकों का शब्द भंडार सबसे कम उपयुक्त है। उनमें केवल 37% शब्द ही ऐसे है जिन्हें कायेईंग ने भी महत्वपूर्ण माना है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित बेसिक हिन्दी शब्दावली से मिलान करने पर भी हरियाणा की पुस्तकों का शब्द भंडार सर्वाधिक उपयुक्त और दिल्ली का सर्वाधिक अनुपयुक्त ठहरता है। हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में 52% शब्द ऐसे हैं जो आधारभूत शब्दावली में सूचीबद्ध किए गए है किन्तु दिल्ली की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या केवल 44% ही है। शेष राज्यों की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या 45-46% है किन्तु ये सब शब्द बेसिक शब्दावली का केवल 16-20% ही हैं।

शिक्षा मंत्रालय के परिप्रेक्ष्य में आलोच्य पुस्तकों की स्थिति कुछ अच्छी है। इस सूची के लगभग 33% शब्द प्रत्येक पुस्तक मे विद्यमान है। दिल्ली की पुस्तकें इस सूची से मिलान करने पर सर्वश्रेष्ठ ठहरती है, क्योंकि उनमें 38% शब्द ऐसे है जो शिक्षा मंत्रालय द्वारा महत्वपूर्ण माने गए है।

सामान्य रूप से आलोच्य पुस्तकों में 44% शब्द ऐसे हैं जिनको इन सूचियों में भी सर्वोपयोगी माना गया है किन्तु इन 44% शब्दों में इन सूचियों के औसतन 88% शब्द सम्मिलित हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि विभिन्न पुस्तकों में उपयोगी शब्दों का प्रयोग संतोषजनक है।

सम्पूर्ण प्राथमिक विद्यालय काल में जिस पठन शब्द भंडार को सिखलाना अभीष्ट हो, उसका कक्षावार स्तरीकरण बहुत आवश्यक है। नीचे की कक्षा में थोड़े से किन्तु अत्याधिक उपयोगी और सुपरिचित शब्दों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इसके अतिरिक्त पहली कक्षा की भाषा पुस्तक में प्रयुक्त होने वाले शब्द प्रत्यय और सरंचना की दृष्टि से भी सरल होने चाहिए। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में शब्दों की संख्या में वृद्धि भी योजनाबद्ध ढंग से होनी चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं लगता कि आलोच्य पुस्तकों में वांछनीय स्तरीकरण हुआ है। हिमाचलप्रदेश की पुस्तक में कक्षा 2 की पुस्तक में कक्षा 1 की तुलना में लगभग 1000% शब्दों की वृद्धि हुई है जबकि दिल्ली की कक्षा 2 की पुस्तक में यह वृद्धि केवल 25% है। बिहार, उत्तरप्रदेश और हरियाणा में भी यह वृद्धि 200 से 400% है। यही स्थिति विभिन्न शब्दों की है। राजस्थान की कक्षा 2 की पुस्तक में कक्षा 1 की पुस्तक से कम विभिन्न

शब्द हैं जबकि बिहार और उत्तरप्रदेश की पुस्तकों में 134% विभिन्न शब्दों की वृद्धि हुई है। हिमाचलप्रदेश की पुस्तक में तो इस वृद्धि का प्रतिशत 384 है। कक्षा 4 और 5 की कई राज्यों की पुस्तकों में पिछली कक्षा से कम शब्द हैं।

हिन्दी पढ़ना सीखने के लिए छात्र को बहुत से लिपि चिन्हों को सीखना होता है। हिन्दी के लिखित रूप में मात्राओं और संयुक्ताक्षरों के प्रयोग की भरमार, प्रारम्भ में छात्रों के लिए कठिनाई उत्पन्न करती है। अतः पठन शिक्षण की दृष्टि से प्रारम्भ में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना श्रेयस्कर है जिनमें बहुत से अक्षर, मात्राएं तथा संयुक्ताक्षर न हों। आलोच्य पुस्तकों के शब्द भंडार का संरचना की दृष्टि से विश्लेषण करने पर पाया गया है कि उत्तरप्रदेश और दिल्ली की पुस्तकों को छोड़कर अन्य सभी राज्यों की कक्षा 1 की पुस्तकों में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का व्यवहार बहुत कम किया गया है, हरियाणा और हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द नहीं के बराबर ही हैं। कक्षा 2 की पुस्तकों में पहली कक्षा की तुलना में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की संख्या अधिक अवश्य है किन्तु केन्द्रीय विद्यालयों की पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या सबसे कम 7.5% है जबकि हिमाचलप्रदेश की कक्षा 2 की पुस्तक मे ऐसे शब्दों की संख्या दुगनी है।

जहां तक मात्राओं के प्रयोग का प्रश्न है सभी राज्यों की कक्षा 1 की पुस्तकों में एक मात्रायुक्त शब्दों की संख्या, एकाधिक मात्रायुक्त शब्दों से बहुत अधिक है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि आलोच्य पुस्तकों में पठन शिक्षण में 'सरल से कठिन की ओर' सिद्धांत का पालन किया गया है किन्तु पहली कक्षा में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का बहिष्कार तथा कम वर्ण और मात्राओं वाले शब्दों का प्रयोग इस बात की पुष्टि करता है कि सभी राज्यों में पठन शिक्षण के अंतर्गत अक्षर विधि को ही अपनाया गया है।

शब्दों के चयन में रूप से भी अधिक महत्व संदर्भों का है। आलोच्य पुस्तकों में सर्वाधिक संख्या ऐसे शब्दों की है जो बालक के सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं। बिहार राज्य की पुस्तकों में लगभग 33% शब्द सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं। अन्य सभी राज्यों में ऐसे शब्दों की संख्या 40–45% है। सामाजिक परिवेश के बाद दूसरा स्थान घर परिवार का है। केन्द्रीय विद्यालय में प्रयुक्त पुस्तकों में ऐसे शब्दों की संख्या अन्य राज्यों की पुस्तकों से कुछ अधिक (10.7%) है। तीसरा स्थान प्राकृतिक परिवेश से संबंधित शब्दों का है। सभी राज्यों में ऐसे शब्दों की संख्या लगभग एक जैसी (6 से 8) ही है। खेल कूद और स्वास्थय ऐसे क्षेत्र हैं जिनसे संबंधित शब्द आलोच्य पुस्तकों में सबसे कम प्रयुक्त हुए हैं। शौक या हॉबी से संबंधित शब्दों की भी कमी है। केन्द्रीय विद्यालयों और राजस्थान की पुस्तकों में खेलकूद संबंधी शब्दों की संख्या लगभग 1% है जबकि अन्य राज्यों में इतने शब्द भी नहीं है। स्वास्थ्य संबंधी शब्द भी बिहार और हिमाचलप्रदेश की पुस्तकों में 1% है, शेष राज्यों में इससे भी कम।

उपर्युक्त विवेचन से जो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, वे इस प्रकार हैं :

(1) इस समय हिन्दी भाषा की पुस्तकों का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से नहीं हो रहा है। हिन्दी भाषा की पुस्तकों में किन शब्दों को प्रयोग किया जाना चाहिए, उनमें कुल और विभिन्न शब्द कितने होने चाहिए, प्रत्येक शब्द की कितनी बार पुनरावृत्ति होनी चाहिए, इत्यादि महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के संबंध में या तो कोई निर्णय ही नहीं लिया जाता अथवा जो भी निर्णय लिया जाता है, वह कुछ लोगों के व्यक्तिगत मतों कें आधार पर ले लिया जाता है, किसी शोध आधारित सूचना के आधार पर नहीं। स्पष्टतः यह स्थिति वांछनीय नहीं है।

(2) प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर एक अन्य निष्कर्ष यह भी निकला कि वर्तमान कक्षा 1 और 2 की पठनपुस्तकों में जिस शब्द भंडार का प्रयोग होता है, वह उपयोगिता और पठन शिक्षण की दृष्टि से विशेषरूप से अनुपयुक्त है।

(3) प्राप्त आँकड़ो से यह भी सिद्ध हुआ कि विभिन्न कक्षाओं की भाषा पुस्तकों में शब्दों का स्तरीकरण भी नहीं किया जाता। प्रत्येक कक्षा में पिछली कक्षा की पुस्तक की तुलना में कितने कुल, विभिन्न और नए शब्दों की वृद्धि की जाएगी, ये शब्द संदर्भ, अर्थ और संरचना की दृष्टि से कितने कठिन अथवा सरल होंगे इत्यादि बातों के संबंध में भी किसी नियम का पालन नहीं किया जाता।

(4) सभी राज्यों में कक्षा 1 की पुस्तक के लिए शब्दों का चयन मुख्य रूप से इस दृष्टि से किया जाता है कि कौन से और कितने शब्द पठन शिक्षण की अक्षर विधि के लिए उपयुक्त हैं। स्पष्टतः यह निकष बहुत ही अनुपयुक्त है।

इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी भाषाविदों की एक समिति के सामने रखी गई। इस समिति ने प्राप्त जानकारी के आधार पर भाषा पुस्तकों के लेखकों के लिए कतिपय सुझाव प्रस्तुत किए। इन सुझावों के अनुसार भाषा पुस्तकों के लिए शब्द भंडार का चयन और प्रयोग योजनाबद्ध ढंग से होना चाहिए। लेखक को पहले से ही निश्चय कर लेना चाहिए कि वह कितने और कौन से शब्दों का प्रयोग अपनी पुस्तक में करेगा। जिन शब्दों का चयन किया जाए उनमें से प्रत्येक की पुनरावृत्ति पुस्तक में 4–5 बार अवश्य होनी चाहिए। हर पाठ में कम से कम हर नवें दसवें पुराने शब्द के बाद एक शब्द नया होना चाहिए, इससे पहले नहीं। जिन शब्दों का चयन किया जाए उनमें से 80–90% शब्द संपूर्ण हिन्दी प्रदेश में सुपरिचित, बेसिक शब्दावली का अंग और छात्रों के सामाजिक–पारिवारिक परिवेश से संबंधित होने चाहिएं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कक्षा की पुस्तक में पिछली कक्षा की तुलना में कुल और विभिन्न शब्दों की संख्या में भी वृद्धि पूर्व निशिचित योजना के अनुसार ही होनी चाहिए।

इस अध्ययन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण उद्देश्य ऐसे शब्दों की सूची तैयार करना था जो हिन्दी भाषा की पुस्तकों के लेखकों के लिए उपयोगी हों। भाषा की पुस्तकों में स्पष्टतः प्रथम कक्षा में उन्हीं शब्दों का प्रयोग होना चाहिए जो कि हिन्दी भाषा के सर्वोपयोगी शब्द हों, जिनका बार–बार प्रयोग होता

हो तथा वे छात्र के परिवेश से संबंधित हों। ऐसे शब्दों को सूचीबद्ध करने के लिए सबसे पहले इस अध्ययन द्वारा प्राप्त आठ राज्यों की शब्द सूचियों में से उन शब्दों का चयन कर लिया गया जो दो तीन अथवा अधिक राज्यों की पुस्तकों में प्रयुक्त हुए हैं तथा जिनकी बारम्बारिता भी अपेक्षाकृत अधिक है। इस सूची का मिलान फिर फादर कोयईग, डा. जगन्नाथन और शिक्षा मंत्रालय की सूचियों से किया गया और जो शब्द इन चारों सूचियों में से दो अथवा अधिक सूचियों में पाए गए उन्हें अलग से सूचीबद्ध किया गया। इस सूची के प्रत्येक शब्द का विभिन्न कक्षाओं के लिए शोध आधारित कठिनाई स्तर ज्ञात किया गया और जिन शब्दों को अनुपयुक्त पाया गया उन्हें सूची से हटा दिया गया। तत्पश्चात इन शब्दों को भाषाविदों और शिक्षाविदों के समक्ष रखा गया और इन शब्दों की उपयुक्तता के संबंध में उनका मत ज्ञात किया गया। इस प्रकार 5300 ऐसे शब्दों की सूची बनाई गई जिनका प्रयोग एकाधिक राज्यों में होता है, जिन्हें शोधकर्ताओं तथा विद्वानों ने सर्वोपयोगी और उपयुक्त स्तर का माना है तथा जिन्हें शिक्षाविदों ने भी महत्वपूर्ण माना है। इस अध्ययन के आधार पर ये 5300 शब्द पठन शिक्षण की दृष्टि से हिन्दी के सर्वाधिक उपयोगी शब्द है और प्राथमिक कक्षाओं की पुस्तकों में उनका अधिकाधिक प्रयोग होना चाहिए ।

— o —

परिशिष्ट

परिशिष्ट–1

(क)

सर्वोपयोगी शब्द

अंक
अंकित
अंग
अंगडाई
अँगारा
अँगीठी
अँगुली
अँगूठा
अंगूर
अंग्रेज
अंग्रेजी
अंडा
अंत
अंततः
अंतर
अंतरिक्ष
अंतरिक्षयान
अंतर्गत
अंतर्ध्यान
अंतर्राष्ट्रीय
अंतिम
अंदर
अंदाज
अंधकार
अंधा
अँधेरा
अंबर
अंबार
अंश
अकड़
अकड़ना

अकस्मात
अकाल
अकेला
अक्तूबर
अक्ष
अक्षर
अक्सर
अखबार
अखरना
अखरोट
अखाड़ा
अगणित
अगर
अगला
अगस्त
अगाध
अग्नि
अग्रणी
अघाना
अचरज
अचल
अचानक
अचार
अचूक
अच्छा
अच्छाई
अछूता
अजनबी
अजीब
अज्ञान
अज्ञानता

अटल
अटूट
अट्ठारह
अड़
अड़चन
अड़ना
अडिग
अड्डा
अणुशक्ति
अति
अतिथि
अतिरिक्त
अतीत
अत्यन्त
अत्याचार
अत्याचारी
अत्याधिक
अत्यावश्यक
अथक
अदम्य
अदरक
अदा
अदालत
अद्‌भुत
अधनंगा
अधपका
अधमरा
अधर्म
अधिक
अधिकाधिक
अधिकार

अधिकारी
अधिवेशन
अधीन
अधीनता
अधीर
अधूरा
अध्यक्ष
अध्यक्षता
अध्ययन
अध्यापक
अध्यापन
अनगिनत
अनजान
अनजाने
अनदेखा
अनन्त
अनन्य
अनपढ़
अनमोल
अनसुना
अनाचार
अनाज
अनाथ
अनाथालय
अनादि
अनायास
अनार
अनिवार्य
अनुकूल
अनुचित
अनुज
अनुपम
अनुभव
अनुभवी
अनुमान
अनुराग
अनुरूप
अनुरोध
अनुशासन
अनुसंधान
अनुसार
अनूठा
अनेक
अनेकता
अनोखा
अन्न
अन्नदाता
अन्य
अन्याय
अपना
अपनाना
अपनापन
अपनाया
अपमान
अपराध
अपराधी
अपरिचित
अपार
अपावन
अपूर्ण
अपूर्व
अपेक्षा
अपेक्षित
अप्रैल
अप्सरा
अफसर
अफसोस
अब
अबोध
अब्बाजान
अभाव
अभिनन्दन
अभिनय
अभिन्न
अभिन्नता
अभिमान
अभिमानी
अभिलाषा
अभिवादन
अभिशाप
अभी
अभ्यास
अमर
अमरता
अमरूद
अमावस
अमावस्या
अमिट
अमीर
अमीरी
अमूल्य
अमृत
अम्माँ
अयोध्या
अरब
अरमान
अरहर
अर्जुन
अर्थ
अर्पण
अर्पित
अलख
अलग
अलमारी
अल्प
अल्लाह
अवकाश
अवगुण

अवधि
अवनति
अवशेष
अवश्य
अवसर
अवस्था
अवाक
अविचल
अविरल
अशोक
अष्टमी
असंख्य
असंभव
असत्य
असफल
असभ्य
असम
असमर्थ
असर
असल
असली
असहयोग
असहाय
असावधानी
असीम
असुर
असुविधा
अस्त
अस्तित्व
अस्पताल
अस्वस्थ
अस्वीकार
अस्सी
अहसान
अहाता
अहिंसा

आँकड़े
आँख
आँगन
आँच
आँचल
आंतरिक
आंदोलन
आँधी
आँसू
आओ
आओगे
आकर्षक
आकर्षण
आकर्षित
आकांक्षा
आकार
आकाश
आकृति
आकृष्ट
आक्रमण
आक्रमणकारी
आक्सीजन
आखिर
आखिरी
आग
आगमन
आगरा
आगे
आग्रह
आचरण
आचार
आचार्य
आज
आजकल
आजाद
आजादी

आजीवन
आजीविका
आज्ञा
आज्ञाकारी
आज्ञापालन
आटा
आठ
आठवाँ
आड़
आड़ी
आतिथ्य
आतिशबाजी
आत्मकथा
आत्मनिर्भर
आत्मसमर्पण
आत्मसम्मान
आत्मा
आदत
आदमी
आदर
आदर्श
आदि
आदिकाल
आदिवासी
आदेश
आदेशानुसार
आधा
आधार
आधारित
आधुनिक
आनंद
आनंददायक
आनंदपूर्ण
आनंदमय
आनंदित
आन

आना
आप
आपत्ति
आपत्तिजनक
आपस
आपसी
आफिस
आबादी
आभार
आभास
आभूषण
आम
आमदनी
आय
आया
आयु
आयोजन
आयोजित
आरती
आरम्भ
आराधना
आराम
आरामदायक
आरी
आरोग्य
आरोप
आर्थिक
आर्य
आलस
आलसी
आलू
आलोक
आलोकित
आल्हाद
आवभगत
आवश्यक

आवश्यकता
आवागमन
आवाज
आवास
आवाहन
आविष्कार
आवेदन
आशंका
आशा
आशीर्वाद
आशीष
आश्चर्य
आश्चर्यजनक
आश्चर्यचकित
आश्रम
आश्रय
आश्वस्त
आश्वासन
आषाढ़
आस
आसन
आसमान
आसान
आसानी
आस्था
आहट
आहत
आहार
आहुति
इंकार
इंजन
इंजीनियर
इंतजाम
इंतजार
इंद्रियाँ
इंसान

इंसाफ
इकट्ठा
इकलौता
इकहरा
इक्का
इच्छा
इच्छित
इच्छुक
इजाजत
इज्जत
इज्जतदार
इठलाना
इतना
इतिहास
इधर
इन
इनाम
इन्हें
इमली
इमारत
इरादा
इलाका
इलाज
इलायची
इशारा
इस
इसलिए
इसी
इस्तेमाल
इस्पात
इस्लाम
ईंट
ईंधन
ईख
ईद
ईदगाह

ईमानदार
ईमानदारी
ईर्ष्या
ईश्वर
ईसाई
ईसामसीह
ईस्वी
उँगली
उकताना
उखड़ना
उखड़वाना
उखड़वाया
उखड़ा
उखाड़ना
उगना
उगलना
उगाना
उगाया
उचक
उचकना
उचका
उचक्का
उचित
उच्च
उच्चता
उच्चारण
उछल
उछलना
उछला
उछाल
उछालना
उछाला
उजड़ना
उजड़वाना
उजला
उजाड़
उजाड़ना
उजाड़ा
उजाला
उज्जवल
उठ
उठना
उठा
उठाना
उठाया
उड़
उड़ना
उड़ा
उड़ान
उड़ाना
उड़ाया
उतना
उतर
उतरना
उतरा
उतराई
उतारना
उतारा
उतावला
उत्तम
उत्तर
उत्तराधिकारी
उत्तरोत्तर
उत्तीर्ण
उत्तेजित
उत्पन्न
उत्पात
उत्पादन
उत्सर्ग
उत्सव
उत्साह
उत्साहित
उत्सुक
उत्सुकता
उदय
उदार
उदारता
उदास
उदासी
उदाहरण
उद्देश्य
उद्धार
उद्यम
उद्यान
उद्योग
उधर
उधार
उन
उन्नत
उन्नति
उन्नीस
उन्हीं
उन्ही
उन्हें
उन्होंने
उपकरण
उपकार
उपकारी
उपचार
उपज
उपजाना
उपदेश
उपद्रव
उपद्रवी
उपयुक्त
उपयोग
उपयोगिता
उपयोगी

उपरान्त
उपलब्ध
उपवन
उपस्थित
उपस्थिति
उपहार
उपाधि
उपाय
उपेक्षा
उपेक्षित
उफनना
उफान
उबलना
उबाल
उबालना
उभरना
उभरा
उभार
उभारना
उमंग
उमड़ना
उमड़ा
उम्मीद
उम्मीदवार
उम्र
उलझ
उलझन
उलझाना
उलटना
उलटा
उलाहना
उल्लघंन
उल्लास
उल्लू
उल्लेख
उषाकाल

उस
उसी
उसे
उस्तरा
उस्ताद
ऊँघ
ऊँघना
ऊँचा
ऊँचाई
ऊँट
ऊन
ऊपर
ऊपरी
ऊब
ऊबना
ऊर्जा
ऊष्मा
ऋण
ऋतु
ऋषि
एक
एकता
एकत्र
एकत्रित
एकदम
एकमात्र
एकरूपता
एकाएक
एकाग्र
एकादशी
एकान्त
ऐजन्ट
ऐतिहासिक
ऐनक
ऐसा
ओजस्वी

ओझल
ओट
ओढ़ना
ओढ़नी
ओढ़ा
ओढ़ाना
ओर
ओस
औंधा
औजार
औद्योगिक
और
औरत
औषधि
औसत
कंकड़
कंकरीट
कंकरीला
कंघा
कंचन
कंचा
कंजूसी
कँटीला
कंठ
कंडक्टर
कंदमूल
कंधा
कंपनी
कंबल
कई
कक्षा
कचहरी
कचोट
कच्चा
कछुआ
कटघरा

कटना
कटवाना
कटार
कटोरा
कट्टर
कठिन
कठिनता
कठिनाई
कठोर
कड़कना
कड़वा
कड़वाहट
कड़ा
कड़ाई
कण
कतार
कत्था
कथन
कथा
कद
कदम
कद्र
कन्या
कपड़ा
कपास
कपूत
कप्तान
कब
कबड्डी
कबूतर
कब्जा
कभी
कम
कमजोर
कमर
कमरा
कमल
कमाई
कमाना
कमाया
कमाल
कमी
कमीज
कमीशन
कमेटी
कर
करघनी
करना
करनी
करवाना
करवाया
कराना
करामात
कराया
करीब
करुण
करुणा
करोड़
करोड़पति
कर्ज
कर्ण
कर्णभेदी
कर्त्तव्य
कर्म
कर्मचारी
कर्मठ
कर्मवीर
कलंक
कल
कलकत्ता
कलक्टर
कलम
कलह
कला
कलाई
कलाकार
कली
कलेजा
कल्पना
कल्याण
कल्याणकारी
कवायद
कवि
कविता
कष्ट
कष्टदायक
कसक
कसना
कसर
कसरत
कसवाना
कसवाया
कसा
कसौटी
कस्बा
कहना
कहलवाना
कहलवाया
कहलाना
कहाँ
कहा
कहानी
कहावत
कहीं
कहो
कांग्रेस
काँटा
कांड

काँप
काँपना
काँसा
का
काका
काकी
कागज
कागजी
काज
काजल
काटना
काटा
काठ
कातना
कान
कानन
काना
कानून
कापी
कॉफी
काबू
काम
कामकाज
कायम
कायर
काया
कायाकल्प
कार
कारखाना
कारण
कारावास
कारीगर
कारीगरी
कार्ड
कार्तिक
कार्य
कार्यक्रम
कार्यभार
कार्यालय
काल
काला
कालान्तर
कालिख
कालिमा
कालेज
काव्य
काश
कि
कितना
किताब
किधर
किन
किनारा
किरण
किराया
किलकारी
किला
किलोग्राम
किलोमीटर
किलोल
किवाड़
किशोर
किशोरावस्था
किस
किसान
किसी
किसे
किस्म
किस्सा
कीचड़
कीट
कीटनाशक
कीड़े
कीमत
कीर्तन
कीर्ति
कील
कुंड
कुआँ
कुचलना
कुछ
कुटिया
कुटी
कुटुम्ब
कुटुम्बी
कुत्ता
कुदरत
कुदाल
कुपित
कुप्पी
कुबेर
कुमार
कुम्हार
कुरान
कुरीति
कुर्ता
कुर्सी
कुल
कुलपति
कुली
कुल्हाड़ी
कुश
कुशल
कुशलता
कुश्ती
कुसंग
कुहुक
कूक

कूच
कूटना
कूटा
कूड़ा
कूड़ेदान
कूदना
कृतज्ञ
कृत्रिम
कृपा
कृषक
कृषि
कृष्ण
केंद्र
केतली
केला
केवल
केश
कैंची
कैद
कैदखाना
कैदी
कैसा
कैसे
कोई
कोट
कोटा
कोटि
कोठरी
कोठी
कोना
कोमल
कोमलता
कोपल
कोयला
कोरा
कोर्स

कोलाहल
कोल्हू
कोश
कोशिश
कोष
कोसना
कोहरा
कौआ
कौड़ी
कौन
कौशल
क्या
क्यारी
क्यों
क्योंकि
क्रम
क्रमशः
क्रान्ति
क्रान्तिकारी
क्रिकेट
क्रिया
क्रिसमस
क्रीड़ा
क्रूर
क्रोध
क्रोधित
क्रोधी
क्लब
क्विंटल
क्षण
क्षत्रिय
क्षमता
क्षमा
क्षमायाचना
क्षितिज
क्षीण

क्षेत्र
खंड
खंडहर
खंभा
खच्चर
खजाना
खजूर
खटकना
खटका
खटखटाना
खट्टा
खड़ा
खड्ड
खत
खतरनाक
खतरा
खत्म
खनिज
खपत
खपरैल
खबर
खरगोश
खरब
खराब
खराबी
खरी
खरीद
खरीदना
खरीदवाना
खरीदा
खर्च
खर्चा
खर्चीला
खाई
खाट
खाड़ी

खातिर
खाद
खादी
खाद्य
खान
खाना
खामोश
खाया
खाल
खाली
खास
खिंचना
खिंचवाना
खिचड़ी
खिड़की
खिदमत
खिन्न
खिलखिलाना
खिलना
खिलाड़ी
खिलाना
खिलाफ
खिलाया
खिलौना
खिसकना
खिसकाना
खींच
खींचना
खींचा
खीर
खील
खुजलाना
खुजली
खुजाना
खुद
खुदवाना

खुदा
खुदाई
खुरदरा
खुरपी
खुराक
खुलना
खुलवाना
खुला
खुश
खुशहाल
खुशहाली
खुशी
खूँखार
खूँटा
खून
खूनी
खूब
खूबसूरत
खूबसूरती
खूबी
खेत
खेती
खेद
खेमा
खेल
खेलना
खेला
खैर
खोखला
खोज
खोजना
खोट
खोटा
खोदना
खोदा
खोना

खोया
खोलना
खोह
खौलना
ख्याति
ख्याल
गंगा
गंगाजल
गंतव्य
गंदगी
गंदा
गंध
गंभीर
गँवाना
गगन
गगन चुंबी
गज
गजब
गठन
गठरी
गड़गड़ाहट
गड़ना
गड़बड़
गड़बड़ी
गड़ा
गड्डा
गढ़ना
गढ़वाना
गढ़ा
गणतंत्र
गणना
गणित
गति
गतिविधि
गतिशीलता
गत्ता

गद्गद
गद्दा
गद्दारी
गद्दी
गधा
गन्ना
गपशप
गमला
गया
गरज
गरजना
गरजा
गरदन
गरम
गरमी
गरीब
गरीबी
गर्जना
गर्व
गलत
गलती
गलना
गला
गलाना
गली
गलीचा
गहना
गहरा
गहराई
गाँठ
गाँव
गाइड
गाजर
गाड़
गाड़ना
गाड़ा
गाड़ी
गाढ़ा
गाथा
गाना
गाय
गायक
गायब
गाया
गाल
गिड़गिड़ाना
गिद्ध
गिनती
गिनना
गिनाना
गिरजाघर
गिरना
गिरफ्तार
गिरफ्तारी
गिरवी
गिरा
गिराना
गिराया
गिरि
गिलास
गीत
गीदड़
गीला
गुंजन
गुंजाना
गुच्छा
गुजरना
गुजरा
गुजारना
गुजारा
गुठली
गुड़
गुड़िया
गुड्डा
गुण
गुणगान
गुणवान
गुणी
गुनगुना
गुनगुनाना
गुना
गुनाह
गुप्त
गुप्तचर
गुफा
गुब्बारा
गुम
गुमना
गुमसुम
गुमाना
गुरु
गुरुकुल
गुरुजन
गुरुदक्षिणा
गुरुदेव
गुरुद्वारा
गुरुनानक
गुरुभक्ति
गुलाब
गुलाबी
गुलाम
गुलामी
गुल्लीडंडा
गुस्सा
गूँज
गूँजना
गूँथना
गृह

गृहकार्य
गृहस्थी
गृहिणी
गेंद
गेट
गेहूँ
गैस
गोंद
गोता
गोद
गोपाल
गोबर
गोरखा
गोरा
गोल
गोलाई
गोलाकार
गोली
गौरव
गौरवमय
गौरैया
ग्यारह
ग्रंथ
ग्रह
ग्रहण
ग्राम
ग्रामवासी
ग्रामीण
ग्रीष्म
ग्वाल
घंटा
घटना
घटा
घटाना
घड़ा
घड़ी
घनघोर
घना
घनिष्ट
घबराना
घबराया
घबराहट
घमंड
घमंडी
घमासान
घर
घरवाली
घराना
घसीटना
घाट
घाटी
घातक
घायल
घाव
घास
घिरना
घिरा
घिसना
घिसवाना
घिसवाया
घिसा
घी
घुँघरु
घुटना
घुड़सवार
घुड़सवारी
घुमाना
घुमावदार
घुलना
घुसना
घुसाना
घूँसा
घूमना
घूमा
घूरना
घूरा
घृणा
घृणित
घेरना
घेरा
घोंसला
घोड़ा
घोर
घोलना
घोला
घोषणा
घोषित
चंचल
चंदन
चंद्रगुप्त
चंद्रग्रहण
चंद्रमा
चंदा
चकराना
चकाचौंध
चकित
चक्कर
चक्का
चक्की
चक्र
चखना
चखा
चखाना
चखाया
चचेरा
चटकना
चटकाना
चटनी

चटपट
चटपटी
चटवाना
चटाई
चटाना
चट्टान
चढ़ना
चढ़वाना
चढ़वाया
चढ़ा
चढ़ाई
चढ़ाना
चढ़ाया
चतुर
चतुरता
चतुराई
चना
चपटा
चपत
चपरासी
चपेट
चप्पल
चबाना
चबाया
चबूतरा
चबेना
चमक
चमकना
चमकवाना
चमकवाया
चमका
चमकाना
चमकाया
चमकीला
चमचमाना
चमड़ा

चमत्कार
चम्मच
चरखा
चरखी
चरण
चरना
चरवाहा
चराना
चरित्र
चर्च
चर्चा
चर्चित
चलचित्र
चलना
चलवाना
चला
चलाना
चलाया
चश्मा
चहकना
चहचहाना
चाँद
चाँदनी
चाँदी
चाकू
चाचा
चाची
चाटना
चाटा
चादर
चाय
चार
चारपाई
चारा
चारों
चाल

चालक
चालाक
चालाकी
चालीस
चालू
चाव
चावल
चाशनी
चाह
चाहना
चाहा
चाहिए
चाहे
चिंगारी
चिंतन
चिंता
चिंतित
चिकना
चिकनाई
चिकनाहट
चिकित्सा
चिकित्सालय
चिट्ठी
चिड़िया
चिड़ियाघर
चिढ़
चिढ़ना
चिढ़ाना
चिढ़ाया
चिता
चित्र
चित्रकार
चिपकना
चिपक
चिपकना
चिपका

चिपकाना
चिरंजीवी
चिल्लाना
चिल्लाया
चिल्लाहट
चिह्न
चींटी
चीख
चीखना
चीज
चीड़
चीता
चीत्कार
चीनी
चीरना
चीरा
चुकना
चुका
चुकाना
चुगना
चुगाना
चुटकी
चुनना
चुना
चुनाव
चुनौती
चुप
चुपके
चुपचाप
चुभना
चुभा
चुभाना
चुभाया
चुराना
चुराया
चुहिया

चूक
चूकना
चूना
चूमना
चूर्ण
चूल्हा
चूसना
चूसा
चूहा
चेचक
चेतना
चेन
चेष्टा
चेहरा
चैत
चैन
चोंच
चोट
चोटी
चोर
चोरी
चोला
चौकना
चौंका
चौंकाना
चौकड़ी
चौकसी
चौकी
चौकीदार
चौखट
चौगुना
चौड़ा
चौड़ाई
चौथा
चौथाई
चौदह

चौधरी
चौपाल
चौमासा
चौरस
चौराहा
छः
छँटना
छटपटाना
छटा
छठा
छड़
छड़ी
छत
छतरी
छत्र
छपना
छपवाना
छपा
छपाना
छपाया
छप्पर
छमछम
छमाछम
छल
छलना
छलाँग
छला
छवि
छाँट
छाँटना
छाँटा
छाँव
छाँह
छाछ
छाती
छात्र

शब्द	
छाना	[illegible]
छाप	[illegible]
छापना	[illegible]
छापा	[illegible]
छाया	[illegible]
छायादार	[illegible]
छाल	[illegible]
छाला	[illegible]
छावनी	[illegible]
छिड़कना	[illegible]
छिड़कवाना	[illegible]
छिड़कवाया	[illegible]
छिड़का	[illegible]
छिड़ना	[illegible]
छिनना	[illegible]
छिपना	[illegible]
छिपाना	[illegible]
छिलका	[illegible]
छींक	[illegible]
छींटा	[illegible]
छीन	[illegible]
छीनना	[illegible]
छीना	[illegible]
छुआ	[illegible]
छुआछूत	[illegible]
छुआना	[illegible]
छुटना	[illegible]
छुटवाना	[illegible]
छुटाना	[illegible]
छुटाया	[illegible]
छुट्टी	[illegible]
छुड़वाना	[illegible]
छुड़ाना	[illegible]
छुड़ाया	[illegible]
छुप	[illegible]
छुपना	[illegible]
छुपा	[illegible]
छुपाना	[illegible]
छुपाया	[illegible]
छुरा	[illegible]
छूट	[illegible]
छूटना	[illegible]
छूटा	[illegible]
छूत	[illegible]
छूना	[illegible]
छेड़ना	[illegible]
छेड़ा	[illegible]
छेद	[illegible]
छोटा	[illegible]
छोड़	[illegible]
छोड़ना	[illegible]
छोड़ा	[illegible]
जंगल	[illegible]
जँचना	[illegible]
जंजीर	[illegible]
जंतु	[illegible]
जकड़ना	[illegible]
जकड़ा	[illegible]
जग	[illegible]
जगत	[illegible]
जगना	[illegible]
जगमग	[illegible]
जगमगाना	[illegible]
जगह	[illegible]
जगाना	[illegible]
जटिल	[illegible]
जड़	[illegible]
जड़ता	[illegible]
जड़ी	[illegible]
जताना	[illegible]
जताया	[illegible]
जन	[illegible]
जनक	[illegible]
जनकल्याण	[illegible]
जनजाति	[illegible]
जनजीवन	[illegible]
जनता	[illegible]
जनना	[illegible]
जननी	[illegible]
जनरल	[illegible]
जनवरी	[illegible]
जनसंख्या	[illegible]
जनसेवा	[illegible]
जन्म	[illegible]
जन्मदिन	[illegible]
जन्मसिद्ध	[illegible]
जन्मस्थल	[illegible]
जन्मा	[illegible]
जब	[illegible]
जबान	[illegible]
जबानी	[illegible]
जमना	[illegible]
जमा	[illegible]
जमात	[illegible]
जमाना	[illegible]
जमाया	[illegible]
जमींदार	[illegible]
जमींदारी	[illegible]
जमीन	[illegible]
जय	[illegible]
जयघोष	[illegible]
जयजयकार	[illegible]
जयमाला	[illegible]
जयहिंद	[illegible]
जरा	[illegible]
जरूर	[illegible]
जरूरत	[illegible]
जरूरी	[illegible]

जल
जलन
जलना
जलपान
जलप्रपात
जलवाना
जलवायु
जला
जलाना
जलाया
जलूस
जल्दी
जवान
जवानी
जवाब
जवाबदेही
जहर
जहरीला
जहाँ
जहाज
जाँच
जाँचना
जाँचा
जागना
जागरण
जागीर
जागीरदार
जागृति
जाड़ा
जातपाँत
जाति
जादू
जादूगर
जान
जानकारी
जानना
जानवर
जाना
जायदाद
जाया
जारी
जाल
जाला
जालिम
जाली
जिंदगी
जिंदा
जिंदाबाद
जिक्र
जिज्ञासा
जिज्ञासु
जितना
जिधर
जिन
जिन्हें
जिम्मा
जिम्मेदार
जिम्मेदारी
जिया
जिला
जिलाना
जिलाया
जिस
जिसे
जी
जीजी
जीत
जीतना
जीता
जीना
जीप
जीव
जीवधारी
जीवन
जीवनयापन
जीवनलीला
जीवनी
जीवाणु
जीवित
जुआ
जुआरी
जुकाम
जुग
जुगाड़
जुटना
जुटा
जुटाना
जुटाया
जुड़ना
जुड़वाना
जुड़वाया
जुड़ा
जुताई
जुर्माना
जुलाई
जुलाहा
जुलूस
जुल्म
जूझना
जूठन
जूठा
जूता
जून
जेठ
जेब
जेल
जेलखाना
जेलर

जेवर
जैसा
जैसे
जो
जोखिम
जोड़
जोड़ना
जोड़ा
जोड़ी
जोतना
जोता
जोर
जोश
जौ
ज्ञात
ज्ञाता
ज्ञान
ज्ञानवर्द्धक
ज्ञानी
ज्ञानेन्द्रिय
ज्यादा
ज्यादातर
ज्यों
ज्योंही
ज्योति
ज्योतिषी
ज्वर
ज्वार
ज्वाला
ज्वालामुखी
झंझट
झंडा
झंडी
झकझोरना
झगड़ना
झगड़ा

झट
झटकना
झटका
झटपट
झड़ना
झड़प
झड़वाना
झड़वाया
झड़ी
झनकार
झपकना
झपकाना
झपकी
झपटना
झपटा
झपट्टा
झरना
झलक
झलकना
झल्लाना
झाँकना
झाँका
झाँकी
झाड़ना
झाड़ा
झाड़ी
झाड़ू
झिझकना
झिड़कना
झिड़का
झिड़की
झिलमिल
झील
झुँझलाना
झुँझलाहट
झुंड

झुकना
झुका
झुकाना
झुकाया
झुकाव
झुठलाना
झुठलाया
झुरमुट
झुलसना
झुलाना
झुलाया
झूँझल
झूठ
झूठा
झूम
झूमना
झूलना
झूला
झेंप
झेंपना
झेलना
झोंक
झोंकना
झोंका
झोंपड़ी
झोली
टंकी
टँगना
टकटकी
टकराना
टकराया
टकराहट
टक्कर
टट्टू
टनटन
टपकना

टपकना
टपकवाना
टपकवाया
टपका
टपकाया
टमाटर
टलना
टहनी
टहलना
टहलाना
टहलाया
टाँग
टाँगना
टाँगा
टालना
टाला
टिकट
टिकटघर
टिकना
टिका
टिकाना
टिकाया
टिमटिमाना
टीका
टीन
टीम
टीला
टुकड़ा
टूटना
टूटा
टेक
टेकना
टेका
टेढ़ा
टेलीफोन
टोकना

टोकरी
टोका
टोपी
टोली
ट्रक
ट्रेन
ट्रैक्टर
ठंड
ठंडा
ठग
ठगना
ठगा
ठहरना
ठहरा
ठहराना
ठहराया
ठाठ
ठानना
ठाना
ठिकाना
ठिठुरना
ठीक
ठुकराना
ठुकराया
ठुमकना
ठोकर
ठोस
डंक
डंका
डंडा
डटना
डर
डरना
डरपोक
डराना
डराया

डरावना
डलवाना
डलवाया
डाँटना
डाँटा
डाक
डाकखाना
डाकघर
डाकिया
डाक्टर
डायरी
डाल
डालना
डाला
डालियाँ
डिग्री
डिबिया
डिब्बा
डीजल
डुबकी
डुबाना
डुबाया
डुबोना
डूबना
डूबा
डेढ़
डेरा
डोर
डोरी
डोरे
डोल
ड्राइवर
ढंग
ढँढोरा
ढकना
ढका

ढकेलना
ढकेला
ढकोसला
ढक्कन
ढलकना
ढलना
ढलान
ढाई
ढाढ़स
ढाना
ढाल
ढालना
ढाला
ढालू
ढिंढोरा
ढीठ
ढील
ढीला
ढुँढवाना
ढूँढ़ना
ढूँढा
ढेर
ढेला
ढोंग
ढोंगी
ढोना
ढोर
ढोल
ढोलक
तंग
तंगी
तंबू
तक
तकनीक
तकलीफ
तकिया

तख्त
तख्ता
तगड़ा
तट
तड़प
तड़पना
तड़पा
तड़पाना
तड़ाक
तड़ातड़
तत्काल
तत्पर
तत्परता
तत्पश्चात
तत्व
तथा
तथापि
तथ्य
तन
तनना
तना
तनाव
तनिक
तप
तपन
तपना
तपस्या
तपस्वी
तपाक
तपाना
तब
तबला
तबाह
तबाही
तबीयत
तभी

तम
तमतमाना
तमतमाया
तमाचा
तमाशा
तय
तरंग
तर
तरकारी
तरकीब
तरक्की
तरफ
तरफदारी
तरल
तरस
तरसना
तरसा
तरसाना
तरसाया
तरह
तराई
तराजू
तरीका
तरु
तर्क
तल
तलवार
तलहटी
तला
तलाश
तलाशी
तले
तवा
तसला
तसल्ली
तस्वीर

तहलका
तहसील
तहाँ
ताँगा
ताँता
ताँबा
ताक
ताकत
ताकतवर
ताकना
ताका
ताकि
ताजा
ताड़
तात्पर्य
तान
तानना
ताना
ताप
तापना
तार
तारघर
तारा
तारीख
तारीफ
ताल
तालमेल
ताला
तालाब
ताली
ताव
तिकोना
तिजोरी
तितली
तिथि
तिनका

तिरंगा
तिरछा
तिरस्कार
तिल
तिलक
तिलमिलाना
तिस
तिहाई
तीक्ष्ण
तीखा
तीन
तीनों
तीर
तीर्थ
तीर्थयात्रा
तीर्थयात्री
तीर्थस्थल
तीव्र
तीव्रगामी
तीव्रता
तीस
तीसरा
तुक
तुच्छ
तुम्र
तुड़वाना
तुड़वाया
तुड़ाना
तुड़ाया
तुम
तुम्हारा
तुम्हीं
तुम्हें
तुरंत
तुलना
तुलवाना

तुलवाया
तुलसी
तू
तूफान
तृप्ति
तेज
तेजस्वी
तेजी
तेरह
तेरा
तेल
तैयार
तैयारी
तैरना
तैरा
तैराकी
तैसा
तो
तोड़
तोड़ना
तोड़ा
तोता
तोप
तोल
तोलना
तोला
तौलिया
त्याग
त्यागना
त्यागपत्र
त्यागा
त्यागी
त्यों
त्योंही
त्योरी
त्यौहार

त्रास
त्रिवेणी
त्रिशूल
त्रुटि
त्वचा
थकना
थकान
थकाना
थकावट
थन
थपथपाना
थप्पड़
थमना
थमा
थमाना
थरथराना
थल
था
थाना
थामना
थामा
थाल
थाली
थूकना
थैला
थैली
थोड़ा
दंग
दंड
दंपति
दक्षिण
दफ्तर
दबना
दबवाना
दबवाया
दबाना

दबाया
दबाव
दबोचना
दबोचा
दम
दमक
दमकना
दमकाना
दमकाया
दमन
दया
दयालु
दयावान
दरबान
दरबार
दरबारी
दरवाजा
दरार
दरिद्र
दरिद्रता
दर्जी
दर्द
दर्शक
दर्शन
दर्शनीय
दल
दलदल
दलबल
दवा
दवाई
दवाखाना
दवात
दशक
दशहरा
दशा
दस

दसवाँ
दहलना
दहलाना
दहाड़
दहाड़ना
दही
दाँई
दाँत
दाँव
दाखिल
दाग
दाढ़ी
दादा
दादी
दान
दानव
दाना
दानी
दाम
दारोगा
दाल
दास
दासता
दाहिनी
दिक्कत
दिखना
दिखवाना
दिखवाया
दिखा
दिखाना
दिखाया
दिन
दिनचर्या
दिनभर
दिनांक
दिनोदिन

दिमाग
दिया
दिल
दिलवाना
दिलवाया
दिलाना
दिलाया
दिल्ली
दिवस
दिवाली
दिशा
दिसम्बर
दीजिए
दीदी
दीन
दीपक
दीपावली
दीया
दीवान
दीवार
दुःख
दुःखद
दुःखित
दुःखी
दुआ
दुकान
दुकानदार
दुखना
दुखाना
दुखिया
दुगना
दुतकारना
दुत्कारा
दुनिया
दुबकना
दुबला

दुबारा
दुम
दुर्गंध
दुर्ग
दुर्गम
दुर्गापूजा
दुर्गुण
दुर्घटना
दुर्बल
दुर्भर
दुर्भाग्य
दुर्भाग्यवश
दुर्लभ
दुलराना
दुलार
दुलारना
दुलारा
दुल्हन
दुश्मन
दुश्मनी
दुष्ट
दुष्टता
दुष्टतापूर्ण
दुहरा
दुहराना
दूत
दूध
दूभर
दूर
दूरदर्शन
दूरदर्शी
दूरी
दूषित
दूसरा
दृढ़
दृढ़ता

दृढ़तापूर्वक
दृश्य
दृष्टि
दृष्टिगोचर
देख
देखना
देखभाल
देखा
दें
दे
देन
देना
देर
देरी
देव
देवता
देवदार
देवी
देश
देशद्रोही
देशप्रेम
देशभक्त
देशभक्ति
देशवासी
देशसेवक
देशसेवा
देशहित
देह
देहांत
देहात
देहाती
दैत्य
दैनिक
दो
दोनों
दोपहर

दोबारा
दोस्त
दोस्ती
दोहरा
दोहराना
दोहा
दौड़
दौड़ना
दौड़ा
दौरा
द्रवित
द्रव्य
द्वार
द्वारा
द्वितीय
द्वीप
द्वेष
धंधा
धँसना
धँसाना
धकेलना
धकेला
धक्का
धड़
धड़कन
धड़कना
धन
धनराशि
धनवान
धनसंपत्ति
धनी
धनुर्विद्या
धनुष
धनुषबाण
धन्य
धन्यवाद

धब्बा
धमकाना
धमकी
धमाका
धरती
धरना
धरा
धरातल
धराशायी
धरोहर
धर्म
धर्मशाला
धर्मात्मा
धवल
धाक
धागा
धातु
धान
धाम
धार
धारण
धारणा
धारा
धार्मिक
धावा
धिक्कार
धिक्कारना
धिक्कारा
धीमा
धीर
धीरज
धीरे
धुन
धुरी
धुलवाना
धुलवाया

धुला
धुलाना
धुलाया
धूप
धूम
धूमधाम
धूर्त
धूल
धेनु
धैर्य
धोखा
धोना
धोबी
धोया
धौंस
ध्यान
ध्यानपूर्वक
ध्येय
ध्रुव
ध्वज
ध्वजारोहण
ध्वनि
ध्वनिसंकेत
ध्वस्त
नंगा
नंद
न
नई
नए
नकल
नकली
नक्शा
नक्षत्र
नगर
नगरपालिका
नगरवासी

नगाड़ा
नचाना
नजदीक
नजर
नट
नटखट
नतमस्तक
नतीजा
नदी
ननिहाल
नन्हा
नफरत
नब्बे
नभ
नम
नमक
नमकीन
नमन
नमस्कार
नमस्ते
नराज
नमी
नमूना
नम्र
नम्रता
नया
नर
नरक
नरम
नरमाई
नरमी
नरेश
नर्तक
नल
नलकूप
नली

नव
नवजीवन
नवम्बर
नवयुवक
नवाँ
नवाना
नवाब
नवाया
नशा
नश्वर
नष्ट
नस
नसीब
नस्ल
नहर
नहलाना
नहाना
नहाया
नहीं
ना
नाई
नाक
नागरिक
नाच
नाचना
नाज
नाटक
नाड़ी
नाता
नाथ
नाद
नादान
नाना
नानी
नाप
नापना

नापसंद
नाम
नामक
नामांकन
नायक
नारंगी
नारद
नारा
नाराज
नाराजगी
नारायण
नारियल
नारी
नाला
नाली
नाव
नाश
नाश्ता
निकटता
निकल
निकलना
निकलवाना
निकलवाया
निकला
निकालना
निखरना
निखारना
निगरानी
निगलना
निगाह
निचाई
निज
निजी
निडर
निडरता
नित

नित्य
नित्यकर्म
निधन
निधि
निपुण
निपुणता
निभाना
निभाया
निमंत्रण
नियंत्रण
नियति
नियम
नियमपूर्वक
नियमानुसार
नियमित
नियुक्त
नियुक्ति
निरंतर
निरक्षर
निरर्थक
निराला
निराशा
निरीक्षण
निर्जन
निर्झर
निर्णय
निर्दोष
निर्धन
निर्धनता
निर्धारित
निर्बल
निर्बलता
निर्भय
निर्भर
निर्भीक
निर्मम

निर्मल
निर्माण
निर्माता
निर्मित
निर्वाचन
निवास
निवासी
निवेदन
निशान
निशाना
निशानी
निःशुल्क
निश्चय
निश्चल
निश्चिंत
निश्चित
निष्कर्ष
निष्ठा
निष्ठुर
निहत्था
निहारना
निहारा
निहित
नींद
नींबू
नींव
नीच
नीचा
नीचे
नीति
नीम
नीर
नीरस
नीरोग
नीला
नुकसान

नुकीला
नृत्य
ने
नेक
नेकर
नेता
नेतृत्व
नेत्र
नेपथ्य
नैतिक
नोट
नौ
नौकर
नौकरी
नौका
नौजवान
नौबत
नौवां
न्याय
न्यायधीश
न्यारा
न्योछावर
पंक्ति
पंख
पंखा
पंखुड़ी
पंच
पंचायत
पंछी
पंजा
पंडित
पंथ
पंद्रह
पकड़
पकड़ना
पकड़वाना

पकड़वाया
पकड़ा
पकड़ाना
पकड़ाया
पकना
पकवान
पकवाना
पकवाया
पका
पकाना
पक्का
पक्ष
पक्षी
पखवाड़ा
पग
पगडंडी
पगड़ी
पगला
पचना
पचाना
पचास
पच्चीस
पछताना
पछतावा
पटकना
पटका
पटरी
पटा
पटाखे
पट्टी
पठान
पड़ना
पड़ा
पड़ाव
पड़ोस
पड़ोसी

पढ़ना
पढ़वाना
पढ़वाया
पढ़ाई
पढ़ाना
पढ़ाया
पतंग
पतझड़
पतन
पतला
पता
पति
पतीली
पत्तल
पत्ता
पत्थर
पत्नी
पत्र
पत्रिका
पथ
पथरीला
पद
पदक
पदवी
पदार्थ
पनपना
पन्ना
पर
परख
परखना
परछाई
परत
परदा
परदेश
परदेशी
परन्तु

परम
परमात्मा
परमार्थ
परम्परा
परवाह
परसों
परस्पर
पराई
पराक्रम
पराक्रमी
पराग
पराजय
पराजित
पराधीन
परामर्श
पराया
परिक्रमा
परिचय
परिचित
परिणाम
परिवर्तन
परिवर्तित
परिवार
परिवेश
परिश्रम
परिश्रमी
परिस्थिति
परी
परीक्षण
परीक्षा
परे
परेड
परेशान
परेशानी
परोपकार
परोसना

पर्यटन
पर्याप्त
पर्व
पर्वत
पर्वतमाला
पर्वतशिखर
पलंग
पल
पलक
पलटन
पलटना
पलटवाना
पलटवाया
पलटा
पलना
पवन
पवित्र
पवित्रता
पशु
पश्चात्
पश्चाताप
पश्चिम
पसंद
पसारना
पसारा
पसीजना
पसीना
पहचान
पहचानना
पहचाना
पहनना
पहनाना
पहनाया
पहनावा
पहर
पहरा
पहरेदार
पहल
पहलवान
पहला
पहले
पहाड़
पहिया
पहुँचना
पहुँचवाना
पहुँचवाया
पहुँचा
पहुँचाना
पहुँचाया
पहेली
पाँच
पाँचवाँ
पाँव
पाइप
पागल
पाट
पाठ
पाठशाला
पात्र
पान
पाना
पानी
पाप
पापी
पार
पारितोषिक
पारिवारिक
पार्क
पार्सल
पालकी
पालतू
पालन
पालना
पाव
पावन
पाषाण
पास
पिंजरा
पिंड
पिकनिक
पिघल
पिघलना
पिघला
पिघालना
पिचकारी
पिछड़ा
पिछला
पिटना
पिटवाना
पिटवाया
पिटा
पिटाई
पिताजी
पिन
पिया
पिलाना
पिलाया
पिसना
पिसवाना
पिसवाया
पिस्तौल
पीछा
पीछे
पीटना
पीटा
पीठ
पीड़ा
पीड़ित

पीढ़ी
पीना
पीपल
पीर
पीला
पीसना
पुंज
पुकार
पुकारना
पुकारा
पुचकारना
पुचकारा
पुछवाना
पुछवाया
पुजारी
पुण्य
पुतला
पुत्र
पुत्री
पुनः
पुनीत
पुरखे
पुरवैया
पुरस्कार
पुराण
पुराना
पुरुष
पुल
पुलकित
पुलिस
पुष्ट
पुष्टि
पुष्प
पुस्तक
पुस्तकालय
पूँछ

पूँजी
पूछताछ
पूछना
पूछा
पूजन
पूजना
पूजा
पूज्य
पूत
पूरनमासी
पूरब
पूरा
पूर्ण
पूर्णतया
पूर्णिमा
पूर्ति
पूर्व
पूर्वज
पूस
पृथक
पृथ्वी
पृथ्वीराज
पेंदा
पेंसिल
पेट
पेटी
पेट्रोल
पेड़
पेन
पेश
पैगम्बर
पैतृक
पैदल
पैदा
पैदावार
पैना

पैमाना
पैर
पैसा
पोंछना
पोंछा
पोत
पोता
पोथी
पोशाक
पोषक
पोषण
पौध
पौधा
पौना
पौराणिक
पौरुष
पौष्टिक
प्यार
प्यारा
प्याला
प्यास
प्यासा
प्रकट
प्रकार
प्रकाश
प्रकाशित
प्रकृति
प्रकोप
प्रक्रिया
प्रगति
प्रचलन
प्रचलित
प्रचार
प्रजा
प्रण
प्रणाम

प्रणाली
प्रताप
प्रति
प्रतिज्ञा
प्रतिदिन
प्रतिनिधि
प्रतिपल
प्रतिभा
प्रतिमा
प्रतियोगिता
प्रतियोगी
प्रतिवर्ष
प्रतिशत
प्रतिष्ठा
प्रतीक
प्रतीक्षा
प्रतीत
प्रत्यक्ष
प्रत्येक
प्रथम
प्रथा
प्रदर्शन
प्रदान
प्रदूषण
प्रदेश
प्रधान
प्रधानमंत्री
प्रधानाध्यापक
प्रबंध
प्रबल
प्रभात
प्रभाव
प्रभावित
प्रभु
प्रमाण
प्रमाणित

प्रमुख
प्रयत्न
प्रयास
प्रयोग
प्रयोगशाला
प्रलय
प्रलोभन
प्रवचन
प्रवाह
प्रवाहित
प्रवृत्ति
प्रवेश
प्रवेशद्वार
प्रशंसनीय
प्रशंसा
प्रशासन
प्रशिक्षण
प्रश्न
प्रसंग
प्रसन्न
प्रसन्नता
प्रसाद
प्रसार
प्रसिद्ध
प्रसून
प्रस्ताव
प्रस्तुत
प्रस्थान
प्रहरी
प्रहार
प्रांगण
प्रांत
प्राइमरी
प्राकृतिक
प्राचीन
प्राचीनता

प्राण
प्राणदंड
प्राणरक्षा
प्राणी
प्राणीमात्र
प्रातःकाल
प्राथमिक
प्राध्यापक
प्राप्त
प्रायः
प्रायद्वीप
प्रारम्भ
प्रार्थना
प्रिय
प्रियतम
प्रिया
प्रेम
प्रेमी
प्रेरणा
प्रेरित
प्रोटीन
प्रोफेसर
प्लास्टिक
प्लेटफार्म
फंदा
फँसना
फँसा
फँसाना
फँसाया
फकीर
फटकार
फटकारना
फटकारा
फटना
फटवाना
फटवाया

फड़क
फड़कना
फड़का
फड़फड़ाना
फड़वाना
फड़वाया
फफोले
फरनीचर
फरवरी
फरार
फरिश्ता
फर्क
फर्ज
फर्श
फल
फलतः
फलस्वरूप
फलाहार
फव्वारा
फसल
फहरना
फहराना
फाँक
फाँदना
फाँदा
फाँस
फाँसी
फागुन
फाड़ना
फाड़ना
फाटक
फार्म
फावड़ा
फिंकवाना
फिक्र
फिनायल
फिरंगी
फिर
फिरना
फिरवाना
फिराया
फिसलन
फिसलना
फिसला
फ्रिज
फीका
फीता
फीस
फुट
फुटबाल
फुदकना
फुर्ती
फुर्तीला
फुलझड़ी
फुलवाड़ी
फुलाना
फुसफुसाना
फुसफुसाहट
फुसला
फुसलाना
फुसलाया
फुहार
फूँक
फूँकना
फूट
फूटना
फूटा
फूल
फूलदान
फूलना
फूस
फेंक
फेंकना
फेर
फेरना
फैक्टरी
फैल
फैलना
फैलाना
फैलाव
फैसला
फोटो
फोड़
फोड़ना
फोड़ा
फौज
फौजी
फौरन
बँगला
बंजर
बँटवारा
बँडल
बंद
बंदर
बंदरगाह
बंदी
बंदूक
बंध
बंधन
बँधना
बँधवाना
बँधवाया
बंशी
बकरी
बक्शा
बखान
बगल
बगिया

बगीचा
बगुला
बचत
बचना
बचपन
बचाना
बचाव
बच्चा
बछड़ा
बजना
बजवाना
बजवाया
बजाना
बजाया
बजे
बटन
बटना
बटवाना
बटवाया
बटवारा
बटुवा
बटोरना
बटोरा
बड़
बड़प्पन
बड़ा
बड़ाई
बढ़ना
बढ़वाना
बढ़वाया
बढ़ाना
बढ़ावा
बढ़िया
बतख
बतलाना
बतलाया

बताना
बताया
बत्ती
बथुआ
बदन
बदनाम
बदबू
बदलना
बदलवाना
बदलवाया
बदला
बँधवाना
बँधवाया
बधाई
बनना
बनवाना
बनवाया
बनाना
बनाया
बनावट
बबूल
बम
बम्बई
बयान
बरगद
बरतन
बरतना
बरताव
बरबस
बरबाद
बरस
बरसना
बरसात
बरसाती
बरसाना
बरात

बराबर
बराबरी
बरामदा
बर्फ
बर्फी
बर्फीला
बल
बलवान
बला
बलि
बलिदान
बलिष्ठ
बलिहारी
बल्कि
बल्ब
बसंत
बस
बसना
बस स्टैंड
बसाना
बसा
बसाया
बस्ता
बस्ती
बहन
बहना
बहरा
बहलाना
बहलाया
बहस
बहादुर
बहाना
बहाया
बहार
बहाव
बहिन

बहुत
बहुमूल्य
बहुरंगी
बहू
बँट
बँटना
बँटा
बँदी
बँध
बँधना
बँधा
बँस
बँसुरी
बँह
बाएँ
बाकी
बाग
बागडोर
बागी
बाघ
बाज
बाजरा
बाजा
बाजार
बाजी
बाजू
बाढ़
बाण
बात
बातचीत
बाद
बादल
बादशाह
बादाम
बाधा
बानी

बाप
बापू
बावा
बाबू
बायाँ
बार
बारह
बारिश
बारी
बारीक
बारूद
बारे
बाल
बालक
बालटी
बाला
बालिका
बाली
बालू
बाँस
बासी
बाहर
बाहरी
बिंदु
बिकना
बिकवाना
बिकवाया
बिका
बिक्री
बिखरा
बिखरना
बिखराना
बिखेरना
बिखेरा
बिगड़ना
बिगाड़ना

बिगुल
बिचारा
बिच्छू
बिछवाना
बिछवाया
बिछा
बिछाना
बिछाया
बिछुड़ना
बिछुड़ा
बिछौना
बिजली
बिजलीघर
बिटिया
बिठा
बिठाना
बिठाया
बिताना
बिताया
बिना
बिरला
बिल
बिलखना
बिलाव
बिल्कुल
बिल्ली
बिस्तर
बीच
बीज
बीतना
बीता
बीबी
बीमार
बीमारी
बीस
बुआ

बुखार
बुझना
बुझवाना
बुझवाया
बुझा
बुझाना
बुझाया
बुढ़ापा
बुढ़िया
बुदबदाना
बुद्ध
बुद्धि
बुद्धिमान
बुधवार
बुनना
बुना
बुनवाना
बुनवाया
बुरा
बुराई
बुलवाना
बुलवाया
बुलाना
बुलाया
बुलावा
बुवाई
बूँद
बूझना
बूझा
बूढ़ा
बूढ़ी
बेकार
बेखटके
बेंचना
बेचा
बेचारा

बेचैन
बेटा
बेटी
बेड़ी
बेर
बेला
बेवकूफी
बेसुध
बेहद
बेहाल
बैंक
बैंड
बैंगन
बैटरी
बैठना
बैठा
बैर
बैलगाड़ी
बैसाख
बोझ
बोतल
बोना
बोया
बोरी
बोलचाल
बोलना
बोला
बोली
बौछार
बौद्ध
ब्याह
ब्रह्म
ब्रह्मा
ब्राह्मण
ब्रुश
ब्लेड

भंग
भंडार
भइया
भक्त
भक्ति
भगत
भगाना
भजन
भटक
भटकना
भटका
भटकाना
भट्टी
भतीजा
भयंकर
भय
भयानक
भरना
भरपूर
भरपेट
भरमार
भरवाना
भरवाया
भरसक
भरा
भरोसा
भर्ती
भला
भलाई
भलामानस
भली
भलीभांति
भवन
भविष्य
भविष्यवाणी
भव्य

भस्म
भाँति
भाई
भाग
भागना
भागा
भाग्य
भाग्यशाली
भात
भाला
भादों
भानजा
भाना
भाभी
भाप
भाया
भार
भारत
भारतमाता
भारतवासी
भारतीय
भारी
भाला
भालू
भाव
भावना
भावी
भाषण
भाषा
भिक्षा
भिक्षु
भिखारी
भिगोना
भिगोया
भिजवाना
भिजवाया

भिड़ना
भिनभिनाना
भिन्न
भी
भीख
भीगना
भीगा
भीड़
भीड़भाड़
भीतर
भीम
भील
भीषण
भीष्म
भुजा
भुलाना
भुलाया
भूखंड
भूख
भूखा
भूगोल
भूत
भूतपूर्व
भूमि
भूमिका
भूरा
भूल
भूलना
भेंट
भेजना
भेजा
भेड़
भेद
भेदभाव
भेष
भैंस

भैया
भोग
भोज
भोजन
भोर
भोला
भौंरा
भौचक्का
भौतिक
भ्रम
भ्रमण
मंगल
मंगलवार
मँगवाना
मँगवाया
मँगाना
मँगाया
मंजरी
मंजिल
मंजूर
मँडराना
मंडली
मंडी
मंत्र
मंत्री
मंद
मंदबुद्धि
मंदिर
मई
मकान
मक्का
मक्कार
मक्खन
मक्खी
मखमल
मखमली

मगन
मगर
मगरमच्छ
मचना
मचलना
मचाना
मचाया
मच्छर
मछली
मछुआ
मजदूर
मजदूरी
मजबूत
मजबूर
मजहब
मजा
मजाक
मटकना
मटका
मटकाना
मटकाया
मटर
मत
मतलब
मतलबी
मतवाला
मदद
मदिरा
मधु
मधुमक्खी
मधुर
मधुरता
मध्य
मन
मनमाना
मनमोहक

मनवाना
मनवाया
मना
मनाना
मनाया
मनीआर्डर
मनुज
मनुष्य
मनुष्यता
मनोरंजक
मनोरंजन
मनोरथ
मनोरम
मनोहर
मनौती
ममता
मम्मी
मरना
मरवाना
मरवाया
मरम्मत
मरुभूमि
मरुस्थल
मर्द
मर्यादा
मलमल
मलाई
मलिन
मलिनता
मलेरिया
मल्लाह
मशहूर
मशाल
मशीन
मसाला
मस्जिद

मस्त
मस्तक
मस्तिष्क
मस्ती
महँगा
महँगाई
महक
महकना
महका
महकाना
महकाया
महत्व
महत्वपूर्ण
महर्षि
महल
महसूस
महा
महाजन
महात्मा
महादेव
महाद्वीप
महान्
महापुरुष
महाभारत
महामंत्री
महायुद्ध
महाराजा
महाराणा
महारानी
महासागर
महिमा
महिला
महीन
महीना
महोत्सव
महोदय

माँ
माँग
माँगना
माँगा
माँस
माई
माघ
माचिस
माटी
माता
मातृभाषा
मातृभूमि
मात्र
मात्रा
माथा
मादा
माध्यम
मान
मानचित्र
मानना
माननीय
मानव
मानवजीवन
मानवता
मानवप्रेम
मानसिक
मानो
मान्य
माफ़
माफी
मामला
मामा
मामूली
मायका
माया
मार

मारना
मारा
मार्ग
मार्गदर्शक
मार्च
मार्मिक
माल
माला
मालिक
मालिन
माली
मालूम
मास
मासिक
मास्टर
मिटना
मिटा
मिटाना
मिटाया
मिट्टी
मिठाई
मिठास
मित्र
मित्रता
मिनट
मिर्च
मिल
मिलन
मिलना
मिलवाना
मिलवाया
मिला
मिलाना
मिलाया
मिश्रण
मिस्त्री

मीटर
मीठा
मीत
मीनार
मील
मुँडेर
मुँह
मुँहतोड़
मुँहबोली
मुकदमा
मुकाबला
मुकुट
मुक्त
मुक्ति
मुख
मुखिया
मुख्य
मुख्यतः
मुख्याध्यापक
मुख्यालय
मुग्ध
मुझे
मुट्ठी
मुड़ना
मुड़वाना
मुड़वाया
मुड़ा
मुनाफा
मुनि
मुन्ना
मुफ्त
मुरझाना
मुरब्बा
मुर्गा
मुलायम
मुल्क

मुश्किल
मुसलमान
मुसाफिर
मुसीबत
मुस्कराना
मुस्कराया
मुस्कराहट
मुस्कान
मुस्काना
मुस्लिम
मुहम्मद साहिब
मुहल्ला
मूँछ
मूँदना
मूक
मूर्ख
मूर्खता
मूर्च्छा
मूर्च्छित
मूर्ति
मूल
मूली
मूल्य
मूल्यवान
मूसलाधार
मृग
मृत
मृतक
मृत्यु
मृत्युदंड
में
मेंह
मेंहदी
मेघ
मेज
मेड़

मेढ़क
मेधावी
मेरा
मेल
मेलजोल
मेला
मेवा
मेहनत
मेहनती
मेहमान
मेहरबानी
मैं
मैत्री
मैदा
मैदान
मैना
मैया
मैल
मैला
मोची
मोटर
मोटरसाईकिल
मोटा
मोटापा
मोड़
मोड़ना
मोढ़ा
मोती
मोम
मोमबत्ती
मोर
मोर्चा
मोल
मोह
मोहरें
मोहरम

मोहित
मौका
मौज
मौजूद
मौत
मौन
मौसम
मौसमी
मौसा
मौसी
म्यान
यंत्र
यज्ञ
यत्न
यथास्थान
यथेष्ट
यदि
यद्यपि
यमराज
यमुना
यश
यह
यहाँ
यहीं
यही
या
याचक
याचना
यातना
यातायात
यात्रा
यात्री
याद
यादगार
यान
यार

युक्त
युक्ति
युग
युद्ध
युद्धकला
युद्ध कौशल
युद्धक्षेत्र
युद्धपोत
युद्धभूमि
युधिष्ठर
युवक
युवती
युवराज
युवा
ये
यों
योगदान
योगी
योग्य
योग्यता
योजना
योद्धा
यौवन
रंग
रँगना
रंगमंच
रँगाना
रंगीन
रंगीला
रईस
रकम
रक्त
रक्तकण
रक्षक
रक्षा
रखना

रखवाना
रखवाया
रखवाला
रखवाली
रखा
रगड़
रगड़ना
रगड़वाना
रगड़वाया
रगड़ा
रचना
रचा
रचाना
रचाया
रजाई
रत्न
रथ
रबड़
रमजान
रमणीक
रमना
रवाना
रविवार
रस
रसीला
रसोई
रसोईघर
रस्सी
रहना
रहस्य
राकेट
राक्षस
राख
राखी
राग
राज

राजकीय
राजकुमार
राजकुमारी
राजगद्दी
राजगुरु
राजतिलक
राजदरबार
राजधानी
राजपूत
राजमहल
राजमार्ग
राजर्षि
राजवंश
राजा
राजी
राज्य
राज्यपाल
रात
रात्रि
रानी
राम
रामचन्द्र
राय
रावण
राशन
राशि
राष्ट्र
राष्ट्रगीत
राष्ट्रचिह्न
राष्ट्रध्वज
राष्ट्रपति
राष्ट्रपिता
राष्ट्रभाषा
राष्ट्रीय
राष्ट्रीयता
रास

रास्ता
राह
राहत
रिकार्ड
रिमझिम
रियासत
रिश्ता
रिश्तेदार
रिसना
रीछ
रूँधा
रुई
रुकना
रुकवाना
रुकवाया
रुका
रुकावट
रुखा
रुचि
रुचिकर
रुलाना
रूग्ण
रूठना
रूढ़ि
रूप
रूपया
रूपरेखा
रूमाल
रेखा
रेगिस्तान
रेडियो
रेत
रेतीला
रेल
रेलगाड़ी
रेलवे

रेशम
रेशमी
रोक
रोकथाम
रोकना
रोका
रोग
रोगी
रोचक
रोज
रोजा
रोजाना
रोजी
रोटी
रोड
रोना
रोपना
रोपा
रोम
रोमांचकारी
रोया
रोशनी
रौनक
लँगड़ा
लँगड़ाना
लंगूर
लंबा
लंबाई
लकड़हारा
लकड़ी
लक्ष्मण
लक्ष्य
लगन
लगना
लगभग
लगवाना

लगवाया
लगा
लगाया
लगातार
लगान
लगाना
लघु
लज्जा
लज्जित
लटकना
लटकवाना
लटकवाया
लटका
लटकाना
लटकाया
लट्टू
लट्ठा
लड़का
लड़खड़ाना
लड़ना
लड़वाना
लड़वाया
लड़ा
लड़ाई
लड़ाना
लड़ाया
लड्डू
लता
लदना
लदवाना
लदवाया
लदा
लदाया
लपकना
लपका
लपेटना

लपेटा
लबालब
ललक
ललकारना
ललचाना
लस्सी
लहर
लहराना
लहलहाना
लहू
लहूलुहान
लाँघना
लाइन
लाई
लाख
लागत
लागू
लाचार
लाचारी
लाज
लाठी
लाडला
लात
लादना
लादा
लाना
लापरवाही
लाभ
लाभकारी
लाभदायक
लायक
लाया
लाल
लालच
लालची
लालटेन

लालसा
लाला
लाली
लाश
लिए
लिखना
लिखवाना
लिखवाया
लिखा
लिखाई
लिखाना
लिखाया
लिटाना
लिटाया
लिपटना
लिपटा
लिपटाना
लिपि
लिफाफा
लिया
लिवाना
लिहाज
लीजिए
लीला
लुटना
लुटवाना
लुटवाया
लुटा
लुटाना
लुटाया
लुढ़कना
लुढ़कवाना
लुढ़कवाया
लुढ़का
लुढ़काना
लुप्त

लुभाना
लुहार
लू
लूट
लूटना
लूटा
लेंस
लेकिन
लेख
लेटना
लेटा
लेना
लोक
लोककथा
लोकगीत
लोकतंत्र
लोकनृत्य
लोकप्रिय
लोकप्रियता
लोग
लोटा
लोभ
लोभी
लोमड़ी
लौ
लौटना
लौटा
लौटाना
लौटाया
वंचित
वंदना
वंश
वंशज
वकालत
वकील
वक्त

वक्ता
वगैरह
वचन
वजन
वजीफा
वजीर
वज्रपात
वटवृक्ष
वतन
वत्स
वध
वन
वनप्रांत
वनफूल
वनमहोत्सव
वनसंपदा
वनस्पति
वन्य
वर
वरदान
वरन
वरुण
वर्ग
वर्गाकार
वर्ण
वर्णन
वर्णमाला
वर्तमान
वर्दी
वर्ष
वर्षगांठ
वर्षा
वर्षीय
वश
वसंत
वसुधा

वसूल
वसूलना
वस्तु
वस्तुतः
वस्त्र
वह
वहाँ
वहीं
वही
वाक्य
वाटिका
वाणी
वातावरण
वानर
वापस
वापसी
वायदा
वायु
वायुप्रदूषण
वायुमंडल
वायुमार्ग
वायुयान
वायुसेना
वारंट
वार
वारिस
वाला
वास
वासी
वास्तव
वास्तविक
वाह
वाहन
विकट
विकल
विकलता

विकसित
विकास
विक्रय
विख्यात
विघ्न
विचरण
विचलित
विचार
विचित्र
विचित्रता
विजय
विजयदशमी
विजयी
विजेता
विज्ञान
विज्ञापन
विटामिन
वितरण
विदा
विदाई
विदित
विदेश
विदेशी
विद्यमान
विद्या
विद्यापीठ
विद्यार्थी
विद्यालय
विद्युत
विद्रोह
विद्रोही
विद्वान
विद्वता
विधवा
विधान
विधानसभा

विधि
विनती
विनम्र
विनम्रता
विनय
विनाश
विनाशकारी
विपक्षी
विपत्ति
विपद
विपरीत
विभाग
विभिन्न
विमल
विमान
विराजना
विराजमान
विराजा
विरूद्ध
विरोध
विरोधी
विलाप
विलायत
विवरण
विवश
विवाह
विवाहित
विविध
विविधता
विशाल
विशालता
विशिष्ट
विशुद्ध
विशेष
विशेषज्ञ
विशेषता
विशेषतः
विश्राम
विश्रामगृह
विश्व
विश्वविद्यालय
विश्वसनीय
विश्वस्त
विश्वास
विष
विषय
विषैला
विष्णु
विस्तार
विस्तृत
विस्फोट
विस्मय
विस्मित
विहार
वीणा
वीर
वीरगति
वीरता
वीरांगना
वृक्ष
वृद्ध
वृद्धि
वृहस्पतिवार
वे
वेग
वेतन
वेद
वेश
वेषभूषा
वैज्ञानिक
वैद्य
वैभव
वैर
वैसा
व्यंग्य
व्यक्त
व्यक्ति
व्यक्तित्व
व्यतीत
व्यथा
व्यर्थ
व्यवसाय
व्यवस्था
व्यवहार
व्यस्त
व्याकुल
व्याकुलता
व्याख्यान
व्यापार
व्यापारिक
व्यापारी
व्याप्त
व्यायाम
व्रत
शंकर
शंका
शंख
शक
शक्कर
शक्ति
शक्तिशाली
शक्ल
शत
शताब्दी
शत्रु
शत्रुता
शनि
शनिवार

शपथ
शब्द
शरण
शरद
शरम
शरीफ़
शरीर
शर्त
शर्बत
शव
शशि
शस्त्र
शहजादा
शहद
शहर
शहरी
शहीद
शांत
शांति
शाकाहारी
शाखा
शादी
शान
शानदार
शाबाश
शाबाशी
शाम
शामिल
शायद
शारीरिक
शाल
शासक
शास्त्र
शाही

शिकायत
शिकार
शिकारी
शिक्षक
शिक्षण
शिक्षा
शिखर
शिला
शिल्पकला
शिविर
शिशु
शिष्टाचार
शिष्य
शीघ्र
शीघ्रता
शीत
शीतकाल
शीतल
शीतलता
शील
शीश
शीशा
शीशी
शुक्र
शुक्रवार
शुक्ल
शुद्ध
शुद्धता
शुभ
शुभकामना
शुरू
शून्य
शृंगार
शेखी

शेर
शेष
शैतान
शैतानी
शौक
शोभा
शोर
शोक
शौकीन
शौचालय
शौर्य
श्याम
श्यामपट्ट
श्रद्धा
श्रम
श्रीमती
श्रीमान
श्रेणी
श्रेय
श्रेष्ठ
षडयंत्र
संकट
संकरा
संकल्प
संकुचित
संकेत
संकोच
संख्या
संग
संगठन
संगठित
संगति
संगम
संगमरमर

संगीत
संग्रहालय
संग्राम
संघ
संघर्ष
संचार
संचालक
संचालन
संचित
संजोना
संजोया
संत
संतरा
संतान
संतुलन
संतुलित
संतुष्ट
संतोष
संदूक
संदेश
संदेशा
संदेह
संधि
संध्या
संपत्ति
संपदा
संपन्न
संपर्क
संपूर्ण
संप्रदाय
संबंध
संबंधित
संबंधी
संबोधित

संभलना
संभलवाना
संभलवाया
संभव
संभवतः
संभाल
संभालना
संभाला
संभावना
संयम
संयोग
संरक्षण
सँवरना
संवाद
सँवारना
संविधान
संविधान सभा
संसदभवन
संसार
संस्कार
संस्कृत
संस्कृति
संस्था
सकता
सकना,
सकुचाता
सकुचाना
सकुचाया
सकेगा
सखी
सखा
सगा
सगाई
सघन

सच
सचमुच
सच्चा
सच्चाई
सजग
सजना
सजल
सजवाया
सजा
सजाना
सजाया
सजावट
सजीव
सज्जन
सज्जा
सड़क
सतर्क
सतह
सताना
सताया
सत्कार
सत्तर
सत्ता
सत्तू
सत्य
सत्यवादी
सत्याग्रह
सत्यानाश
सत्रह
सदस्य
सदा
सदाचार
सदाचारी
सदी

सदुपयोग
सदैव
सद्भाव
सद्भावना
सद्व्यवहार
सन्
सन्नाटा
सपना
सपाट
सपूत
सप्ताह
सफर
सफल
सफलता
सफाई
सफेद
सफेदा
सफेदी
सब
सबक
सबल
सबेरा
सब्जी
सभा
सभापति
सभी
सभ्य
सभ्यता
समझ
समझदार
समझना
समझा
समझाना
समझाया

समतल
समता
समय
समर्थ
समर्थक
समर्पित
समस्त
समस्या
समाँ
समाचार
समाचार पत्र
समाज
समाधान
समाधि
समान
समानता
समानांतर
समाना
समाप्त
समाप्ति
समाया
समारोह
समिति
समीप
समीपता
समुचित
समुदाय
समुद्र
समूचा
समूह
समृद्ध
समृद्धि
समेटना
समेटा

समेत
सम्मान
सम्मिलित
सम्मुख
सम्राट
सयाना
सर
सरकना
सरकस
सरकाना
सरकाया
सरकार
सरकारी
सरदार
सरदी
सरपंच
सरल
सरलता
सरस
सरसता
सरसों
सरस्वती
सरीखा
सरोवर
सर्वत्र
सर्वथा
सर्वनाश
सर्वप्रथम
सर्वश्रेष्ठ
सर्वस्व
सर्वाधिक
सर्वोच्च
सर्वोत्तम
सलाख

सलाम
सलामी
सलाह
सलोना
सवार
सवारी
सवाल
सवेरा
ससुर
ससुराल
सस्ता
सहकारी
सहज
सहन
सहनशक्ति
सहना
सहपाठी
सहमत
सहमति
सहमना
सहमा
सहयोग
सहयोगी
सहर्ष
सहलाना
सहलाया
सहसा
सहस्त्र
सहानुभूति
सहायक
सहायता
सहार
सहारना
सहारा

सहित
सही
सहेजना
सहेजा
सहेली
साँच
साँझ
साँड़
साँप
साँस
सांसारिक
सांस्कृतिक
सा
साइकिल
साकार
साक्षात्
साग
सागर
साज
साठ
साड़ी
साढ़े
सात
सातवाँ
साथ
साथी
सादगी
सादर
सादा
साध
साधन
साधना
साधा
साधारण

साधु
सानी
साफ
साबुत
साबुन
सामग्री
सामना
सामने
सामर्थ्य
सामाजिक
सामान
सामान्य
सामूहिक
साम्राज्य
सायंकाल
सारा
सार्थक
सार्वजनिक
साल
सालाना
सावधान
सावधानी
सास
साहब
साहस
साहसी
साहित्य
साहित्यकार
साहू
साहूकार
सिंचाई
सिंह
सिंहासन
सिकन्दर

सिक्का
सिक्ख
सिखलाना
सिखाना
सिखाया
सितम्बर
सिद्ध
सिद्धांत
सिधारना
सिधारा
सिनेमा
सिपाही
सिफारिश
सिमटना
सिमटा
सियार
सिर
सिरहाना
सिरा
सिल
सिलसिला
सिलाई
सिवा
सिसकना
सींग
सींचना
सीख
सीखना
सीखा
सीट
सीटी
सीढ़ी
सीता
सीधा

सीना
सीमा
सीमिंट
सुँघाना
सुँघाया
सुंदर
सुंदरता
सुई
सुख
सुखद
सुखपूर्वक
सुखमय
सुखाना
सुखाया
सुखी
सुगंध
सुगंधित
सुचारू
सुझाना
सुझाया
सुझाव
सुडौल
सुथरा
सुधरना
सुधरा
सुधार
सुधारना
सुनना
सुनवाना
सुनवाया
सुनसान
सुनहरा
सुनहरी
सुना

सुनाई
सुनाना
सुनाया
सुबह
सुमन
सुयश
सुरंग
सुरक्षा
सुरक्षित
सुरम्य
सुराख
सुराही
सुरुचि
सुलगना
सुलगा
सुलगाना
सुलगाया
सुलझना
सुलझाना
सुलझाया
सुलभ
सुलाना
सुलाया
सुलेख
सुविधा
सुशील
सुशीलता
सुशोभित
सुसज्जित
सुस्ताना
सुहाना
सुहाया
सुहावना
सूँघना

सूँघा
सूँड
सूक्ष्म
सूखना
सूखा
सूचक
सूचना
सूचित
सूजन
सूजना
सूजा
सूझ
सूझना
सूझबूझ
सूझा
सूत
सूती
सूत्र
सूना
सूबेदार
सूरज
सूरत
सूर्य
सूर्यग्रहण
सूर्यास्त
सूर्योदय
सृष्टि
सेंकना
सेंटीमीटर
से
सेठ
सेना
सेनानायक
सेनानी

सेनापति
सेर
सेवक
सेवा
सैकड़ों
सैकिंड
सैनिक
सैर
सोंधा
सोखना
सोखा
सोच
सोचना
सोचा
सोना
सोमवार
सोया
सोलह
सौंदर्य
सौंप
सौंपना
सौंपा
सौ
सौगात
सौदा
सौदागर
सौभाग्य
सौरभ
सौरमंडल
स्कूटर
स्कूल
स्टील
स्टूल
स्टेडियम

स्टेशन
स्टेशन मास्टर
स्टोव
स्तंभ
स्तब्ध
स्तर
स्तुति
स्तूप
स्त्री
स्थगित
स्थल
स्थान
स्थानीय
स्थापना
स्थापित
स्थायी
स्थित
स्थिति
स्थिर
स्नान
स्नानाघर
स्नेह
स्पर्श
स्पष्ट
स्फूर्ति
स्मरण
स्मारक
स्मृति
स्याही
स्त्रोत
स्लेट
स्वच्छंद
स्वच्छता
स्वतन्त्र

स्वतन्त्रता
स्वतन्त्रता आंदोलन
स्वतन्त्रता दिवस
स्वतन्त्रता संग्राम
स्वतः
स्वेदश
स्वेदशी
स्वप्न
स्वभाव
स्वयं
स्वर
स्वराज्य
स्वरूप
स्वर्ग
स्वर्गलोक
स्वर्गवास
स्वर्गीय
स्वस्थ
स्वागत
स्वाद
स्वादिष्ट
स्वाधीन
स्वाधीनता
स्वाभाविक
स्वाभिमान
स्वामी
स्वार्थ
स्वार्थी
स्वास्थ्य
स्वास्थ्य केन्द्र
स्वास्थ्यप्रद
स्वास्थ्यवर्धक
स्वीकार
स्वीकृति

स्वेच्छा
स्वेटर
हंस
हँसना
हँसा
हँसाना
हँसाया
हँसी
हक
हजार
हजूर
हट
हटना
हटवाना
हटवाया
हटा
हटाना
हटाया
हठ
हठी
हड़ताल
हड़पना
हड़बड़ाना
हड़बड़ी
हड्डी
हताश
हत्या
हत्यारा
हथकड़ी
हथियाना
हथियार
हथेली
हथौड़ा
हद

हम
हमला
हमारा
हमें
हमेशा
हर
हरएक
हरदम
हरपल
हरबार
हरा
हराना
हराया
हरिजन
हरियाली
हर्ष
हर्षित
हल
हलका
हलचल
हलदी
हलवाई
हलुवा
हल्का
हल्ला
हवन
हवनकुँड
हवलदार
हवा
हवाईजहाज
हवादार
हवेली
हस्ताक्षर
हाँ

हाँकना
हाँडी
हाँफना
हाकी
हाजिर
हाथ
हाथापाई
हाथी
हाथीदांत
हानि
हानिकारक
हाय
हार
हारना
हारा
हार्दिक
हाल
हालचाल

हालत
हाहाकार
हिंदू
हिंसक
हिंसा
हित
हिमपात
हिमालय
हिम्मत
हिरण
हिलना
हिला
हिलाना
हिसाब
हिस्सा
ही
हीन
हीरा

हुँकार
हुक्का
हूँ
हूक
हैं
है
हैजा
हैरान
हैसियत
होटल
होड़
होनहार
होना
होनी
होली
होश
होशियार
हौसला

(ख)

सर्वोपयोगी प्रयोग तथा मुहावरे

अच्छी खासी
अच्छी तरह
अच्छे अच्छों
अड़ोस पड़ोस
अधिक से अधिक
अनमना सा
अपना अपना
अपनी अपनी
अपने अपने
अपने आप
अभी अभी
अलग अलग
अस्त्र शस्त्र
आँखमिचौनी
आकार प्रकार
आगे आगे
आगे पीछे
आ घेरा
आटा दाल
आते जाते
आदर सत्कार
आदान प्रदान
आनबान
आनाकानी
आना जाना
आपस में
आमतौर पर
आमने सामने
आरपार
आस पास
इधर उधर

उठ जाना
उठा लाना
उद्योग धंधा
उलट पलट
उलटना पलटना
उल्टा सीधा
ऊँच नीच
ऊँची ऊँची
ऊँची नीची
ऊँची से ऊँची
उबड़खाबड़
ऋषि मुनि
एक आध
एक एक
एक दूसरे
एक न एक
एक सा
एक साथ
एक से बढ़कर एक
ऐसा वैसा
कंकड़ पत्थर
कण कण
कदम कदम
कब कब
कब तक
कभी कभी
कम से कम
कलकल
कलम दवात
कहाँ कहाँ
कहीं कहीं

कानाफूसी
कामकाज
काम तमाम करना
काम धंधा
काली काली
काले काले
कितनी कितनी
कितने ही
किनारे किनारे
किसी न किसी
किस्से कहानी
कीड़े पतंगे
कीड़े मकोड़े
कुछ कुछ
कुछ न कुछ
कुत्ते बिल्ली
कूट कूटकर
कूड़ा करकट
कूदना फाँदना
कोई कोई
कोई न कोई
कोने कोने
कौन कौन
कौन सा
क्या क्या
क्रय विक्रय
क्षण भर
खचाखच
खटखट
खटपट
खड़खड़
खड़ी की खड़ी
खनिज पदार्थ
खलबली
खानपान
खाना पीना
खाते पीते
खिला खिला
खिलाना पिलाना
खुशी खुशी
खेत खलिहान
खेलकूद
खेलते कूदते
खैरखबर
गरमागरम
गला सड़ा
गले मिलना
गांव गांव
गाना बजाना
गाय भैंस
गृहस्थ जीवन
गोलमाल
गोल गोल
घटना स्थल
घर आंगन
घर घर
घर द्वार
घर परिवार
घर बाहर
घासफूस
घिर आए
घुलमिल
घूम घूम कर
घूमते घूमते
घूर घूर कर देखना
चटक मटक
चमक दमक
चलते चलते

चलते फिरते
चल बसना
चहलपहल
चारों ओर
चारों तरफ
चालढाल
चुपके चुपके
चुपके से
छा जाना
छीनाझपटी
छुप छुप
छोटा सा
छोटी छोटी
छोटी बड़ी
छोटी मोटी
छोटे छोटे
छोटे बड़े
छोटे से छोटा
जगह जगह
जड़ चेतन
जड़ी बूटी
जन जन
जब जब
जब तक
जब तब
जरा सी
जल्दी जल्दी
जल्दी से जल्दी
जहाँ जहाँ
जहां तहाँ
जात पात
जान पहचान
जानना बूझना
जानी मानी
जा पकड़ना
जा पहुँचना
जा मिलना
जिधर जिधर
जिन जिन
जिस तिस
जी जान
जीताजागता
जीवजन्तु
जीवन भर
जी हाँ
जैसे जैसे
जैसे तैसे
जैसे को तैसा
जो जो
जोर जोर से
जोरदार
जोर शोर
ज्यों त्यों
ज्यों का त्यों
झूम झूम कर
टपटप
टहलते टहलते
टाल मटोल करना
टुकड़े टुकड़े
टूट पड़ना
टूटा फूटा
टूटी फूटी
टेढ़ामेढ़ा
ठाठ बाट
ठिकाना न रहना
ठीकठाक
ठीक ठीक
डाक तार

डाल डाल
ढंढोरा पीटना
ढलते ढलते
ढीला ढाला
ढेर सारा
तन मन
तरह तरह
तहस नहस
ताना बाना बुनना
ताकझाँक
ताकना झाँकना
ताक लगाना
ताक में रहना
तोड़ फोड़
तौरतरीके
त्राहि त्राहि करना
त्राहि त्राहि मचाना
थका माँदा
थोड़ा थोड़ा
थोड़ा बहुत
थोड़ा सा
थोड़ा ही
दंग रह जाना
दाँवपेच
दाएँ बाएँ
दाना पानी
दिन प्रतिदिन
दिन भर
दिन रात
दिनोंदिन
दीन दुखी
दुख दर्द
दुबला पतला
दूध दही
दूर करना
दूर दूर
देखते ही देखते
देखभाल
देखरेख
देरसवेर
देश विदेश
दो दो
दौड़धूप
धड़ाधड़
धनधान्य
धरतीमाता
धर्म कर्म
धाक जमाना
धीरे धीरे
धीरे से
धूपछाँह
नदी नाले
नन्ही नन्ही
नया नया
नर नारी
नाच नचाना
नाचना गाना
निराई गुड़ाई
निशिदिन
नौकर चाकर
नौनिहाल
पग पग
पति पत्नी
पत्र पत्रिकाएँ
पल पल
पलभर
पशु पक्षी
पहल करना

पहलेपहल
पाप पुण्य
पालन पोषण
पास पड़ोस
पीछे पीछे
पी जाना
पीढ़ी दर पीढ़ी
पूजापाठ
पूरा पूरा
पूरा हो जाना
पेड़ पौधे
फफक फफक कर रोना
फलना फूलना
फलफूल
फुर्र हो जाना
फूँक मारना
फूट डालना
फूट पड़ना
फूट फूटकर रोना
फूल उठना
फूल पत्तियाँ
फूला न समाना
बचेखुचे
बड़ा सा
बड़े बड़े
बड़े से बड़े
बड़े बूढ़े
बक़ चक़ कर
बाग बगीचा
बाप बेटे
बार बार
बारी बारी
बाल बच्चे
बाहर भीतर
बीच बीच
बीचोबीच
बुदबुदाना
बूँद बूँद
बच्चे बूढ़े
बोटी बोटी
भजन कीर्तन
भरण पोषण
भर भर कर
भरा पूरा
भरा हुआ
भाँति भाँति
भाईचारा
भाई बहन
भाई भाई
भाई भौजाई
भारी भारी
भिन्न भिन्न
भीड़भाड़
भुरभुरी
भूख प्यास
भेड़ बकरियाँ
भोलाभाला
मंदिर मस्जिद
मनपसंद
मरमर
माँस पेशियाँ
माता पिता
मार खाना
मालामाल
मिल जुलकर रहना
मिलता जुलता
मिलना जुलना
मिलाजुला

मीठी मीठी
मुहँ हाथ
मुट्ठी भर
मेलजोल
मोटे मोटे
मौज मस्ती
युग युग
रंग बिरंगी
रंग रंग
रंग रूप
रहनसहन
राजकाज
राज पाट
राजा महाराजा
राजा रानी
रात दिन
रात भर
रातोंरात
रीति रिवाज
रुक रुक कर
रुपया पैसा
रूखा सूखा
रोज रोज
रोजी रोटी
रोता रोता
रोना बिलखना
रोम रोम
लंबा चौड़ा
लंबी लंबी
लड़ाई झगड़ा
लाड़ प्यार
लाल लाल
लालन पालन
लिपाई पुताई
लिपापुता
लुकना छिपना
लेन देन
ले भागना
ले रखना
वन उपवन
वर्ष भर
विचार विमर्श
वैसे वैसे
वैर भाव
शत शत
शादी ब्याह
शान शौकत
शोरगुल
संगी साथी
सगे सम्बन्धी
सच सच
सजी धजी
सजी सँवरी
सड़ीगली
समय समय
सलाह मशवरा
सौंय सौंय
सागपात
साग सब्जी
साज सज्जा
साज सामान
साथ साथ
साधु संत
साफ सुथरा
सिंगार पटार
सीधा सादा
सुख दुख
सुख सुविधा

सुबह सुबह
सूझ बूझ
सेठ साहूकार
सोचते सोचते
सोचना समझना
सोचना विचारना
सोना चाँदी
स्त्री पुरुष
स्वागत सत्कार
हँस खेल कर
हँसती बोलती
हँसता हँसता
हँसी हँसी
हक्का बक्का
हट्टा कट्टा
हराभरा
हरा हरा
हाथ पैर
हाथ बढ़ाना
हाथ मुँह
हिन्दू मुस्लिम
हिलमिल कर
हीरे जवाहरात
हृष्ट पुष्ट
होते होते

परिशिष्ट–2

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. कपूर, बद्रीनाथ : बेसिक हिन्दी : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, 1965
2. गौड़, गणेशदत्त : हिन्दी शब्द तथा उनकी अनुपातिक गति : ए. एच. व्हीलर, लंदन
3. जगन्नाथन, वी. रा. : हिन्दी की आधारभूत शब्दावली : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1981
4. भाटिया, कैलाश चन्द्र : हिन्दी की बेसिक शब्दावली : अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, 1968
5. शिक्षा मंत्रालय : बेसिक हिन्दी शब्दावली : भारत सरकार, 1958
6. Buch, M.B. (Ed): A Survey of Research in Education; Centre of Advanced Study in Education, M.S. University of Baroda, Baroda, 1974.
7. Buch, M.B. (Ed): Second Survey of Research in Education; Society for Educational Research and Development, Baroda, 1979.
8. KOEING, J.C.: Teachers' and Authors' List of four Thousand Important Hindi Words; Mission Press, Jabbal Pur, 1937,
9. Mc Nally, J. and Murry, W. (Ed): Key words to Literacy; The School Masters Publishing Co., U.K. 1962.
10. Rinsland, H.D.: Basic Vocabulary of Elementary School Children; The Macmillan Company, New York, 3rd Edi. 1950.
11. Rukmani, R.C.: A Study of Children's Vocabulary; Ph.D. Thesis; Rajasthan University, 1960.
12. Spache, G.D. and Spache, E.V.: Reading in the Elementary School; Allyn and Bacon, Boston, 1969.
13. Thorndike E.L. and Irving Lorge: The Teacher's Word Book of 30,000 words; Bureau of Publications, Teachers College, Columbia University, New York, 1944,
14. Udaishankar and Kaushik, J.N.: Consolidated Basic Vocabulary; National Publishing House, New Delhi, 1982.

परिशिष्ट–3

अधीत पाठ्य–पुस्तकों की सूची

बिहार	भारती भाग–1	भारती भाग–3
	भारती भाग–2	भारती भाग–4
		भारती भाग–5
उत्तरप्रदेश	भाषा दीप–1	भाषा दीप–3
	भाषा दीप–2	भाषा दीप–4
		भाषा दीप–5
मध्यप्रदेश	बाल भारती–1	बाल भारती–3
	बाल भारती–2	बाल भारती–4
		बाल भारती–5
	कक्षा पहली	कक्षा तीसरी
दिल्ली	मेरी अपनी पुस्तिका भाग–1	मेरी पाठमाला भाग–1
	मेरी अपनी पुस्तिका भाग–2	मेरी पाठमाला भाग–2
	कक्षा दूसरी	कक्षा चौथी
	मेरी अपनी पुस्तिका भाग–1	मेरी पाठमाला भाग–1
	मेरी अपनी पुस्तिका भाग–2	मेरी पाठमाला भाग–2
	कक्षा पांचवी	
	मेरी पाठमाला भाग–1	
	मेरी पाठमाला भाग–2	
हरियाणा	बाल भाषा–1	बाल भाषा–3
	बाल भाषा–2	बाल भाषा–4
		बाल भाषा–5

हिमाचलप्रदेश	हिम बाल माला–1 हिम बाल माला–2	हिम बाल माला–3 हिम बाल माला–4 हिम बाल माला–5
राजस्थान	हिन्दी पहली पुस्तक हिन्दी दूसरी पुस्तक	हिन्दी तीसरी पुस्तक हिन्दी चौथी पुस्तक हिन्दी पांचवी पुस्तक
केन्द्रीय विद्यालय (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)	बाल भारती भाग–1 बाल भारती भाग–2	बाल भारती भाग–3 बाल भारती भाग–4 बाल भारती भाग–5

परिशिष्ट–4

सलाहकार समिति के सदस्य

1. डा. एम. जी. चतुर्वेदी
   प्रोफेसर एवं प्रभारी
   केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
   श्री अरविन्द मार्ग
   नई दिल्ली

2. डा. त्रिलोचन पांडेय
   प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
   हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग
   रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
   जवलपुर, मध्यप्रदेश

3. डा. वी . आर. जगन्नाथन
   निदेशक,
   स्कूल आफ ह्यूमेनिटीज़
   इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
   नई दिल्ली

4. डा. के. सी. भाटिया
   पूर्व प्रोफेसर
   हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाएँ
   लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
   मसूरी उत्तरप्रदेश

5. प्रो. उदय शंकर
   पूर्व डीन एवं विभागाध्यक्ष
   शिक्षा विभाग,
   कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
   कुरुक्षेत्र हरियाणा

6. डा. जगमल सिंह
   प्रोफेसर
   हिन्दी विभाग
   मणिपुर विश्वविद्यालय
   इम्फाल, मणिपुर

परिशिष्ट–5

विभागीय शोधकर्त्ता

डा. (श्रीमती) वि. स. आनन्द

डा. अमर सिंह सचान

श्रीमती अंचला माथुर

श्रीमती सीता पंवार

परिशिष्ट-6

शोधकर्त्ता प्रतिभागी

1. डा. अरूण प्रकाश ढौंडियाल
   प्रवक्ता
   इंटर कालेज, उफरैंखाल,
   गढ़वाल

2. श्री ऐंशीराम हुरिया
   व्याख्याता
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा
   गुड़गांव

3. श्री जगदम्बा प्रसाद
   प्रधानाचार्य
   नोनापुर इंटर कालेज
   कानपुर

4. डा. जगमोहन सिंह
   व्याख्याता
   राज्य शिक्षा संस्थान
   इलाहबाद

5. डा. डी. डी. कुलश्रेष्ठ
   व्याख्याता
   राज्य शिक्षा संस्थान
   भोपाल

6. श्री नारायण दत्त शर्मा
   व्याख्याता
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा
   गुड़गांव

7. श्रीमती प्रवीणा बुद्धदेव
   व्याख्याता
   सौराष्ट्र विश्वविद्यालय
   राजकोट, गुजरात

8. श्री मोतीलाल विजयवर्गीय
   प्रधानाचार्य
   राज. उ. मा. विद्यालय
   हरसाना (अलवर)
   राजस्थान

9. श्रीमती आर. के. पटनी
   प्रभारी एवं प्रधानाचार्य
   राज्य आई. वी. ई. टी.
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद् हरियाणा
   गुड़गांव

10. श्री रमेश चन्द्र दुबे
    व्याख्याता
    राज्य शिक्षा संस्थान
    भोपाल

11. डा. रणधीर श्रीवास्तव
    प्रवाचक, (अवकाश प्राप्त)
    डी. ए. वी. कालेज
    कानपुर

12. श्री राजकुमार सचान
    प्रवक्ता
    पटेल विद्यापीठ इंटर कालेज
    कानपुर

13. श्री राजकुमार सिंह
    अध्यापक
    पटेल विद्यापीठ, इंटर कालेज
    कानपुर

14. डा. रामलखन सचान
    अध्यापक
    नौनापुर इंटर कालेज
    कानपुर

15. डा. संकटाप्रसाद उपाध्याय
    प्रोफेसर, (अवकाश प्राप्त)
    इलाहबाद

16. श्रीमती आशा रेम्बल
    शिक्षा अधिकारी
    बीकानेर

17. श्री चन्द्रशेखर शर्मा,
    प्रधानाचार्य (अवकाश प्राप्त)
    सार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल
    बीकानेर

18. श्री सुरेश पंत
    अध्यापक
    राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय,
    दिल्ली

19. श्री भास्करानद भट्ट
    अध्यापक
    राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय,
    दिल्ली

20. श्रीमती मीनू रावत
    अध्यापिका
    नगर निगम स्कूल
    दिल्ली